

ज्ञानतरङ्ग ॥

کمال تحریک
جیسکو
کمال تحریک

आहजहाँपौरीय सरहीग्रामनिवासि कायस्थ वंशो-
द्भव बखशीरामात्मज मंगलदास ने अत्युत्तम
तीन खण्डों में निर्मित किया

जिसके

प्रथम खण्ड अर्थात् ज्ञानतरंगमें मन बुद्धि के सम्बाद
द्वारा प्रश्नोत्तर की रीतिसे संसार और तज्जनित प-
दार्थ के अनित्यत्व का वर्णन—द्वितीय खण्ड अर्थात्
मंगलविनोदमें सगुणपक्ष निर्वाण शिक्षाका सविस्तार
वर्णन—तृतीयखण्ड अर्थात् सर्वसिद्धांत सप्तशक्तिकामें
प्रकृति पुरुषका सम्यक् विचार वेदांत ज्ञान उत्तम २
छन्दों में वर्णित है

वही

आर्य्यजनपूजित वैदिकमततत्पर श्रीमान् मुंशी
नवलकिशोरने आर्य्यवर्त्तनिवासी ज्ञानाभिलाषियों
के हितार्थ

लखनऊ

स्वकीय यन्त्रालय में मुद्रित करवाया

जून सन् १८८६ ई० ॥

दूसरीबार ३०००

इस मतवे में जितने प्रकार के वेदान्त भाषा की पुस्तकें छपी हैं उनमें से कुछ इसमें लिखी हैं ॥

योगवाशिष्ठभाषा

दोभागोंमें जिसमें वाशिष्ठजीने रामचन्द्रजीसे वैराग्य, मुमुक्षु, उत्पत्ति स्थिति, उपशम, निर्वाणादि छः प्रकरणोंमें आत्मयोग ब्रह्मज्ञानलखाव सन्देह दूर किया है, और यह पुस्तक आदिकवि वाल्मीकि जीकी बना हुई है कि उन्होंने भरद्वाजसे उपदेश किया है संस्कृतमें श्लोकबद्ध रथ पर पहले जब यह भाषाग्रन्थ हमको मिला था भाषा इसकी ठीक न रथ सोकारखाने की तरफ से पण्डित प्यारेलालजीसे इसकी बोलियां सुध रवाकर और उनके पुनः अवलोकनमें छापा गया जिससे यह ग्रन्थ अत्यन्त सुगम हो गया ॥

पारसभाग

जिसमें वेदान्तमतानुसार काम, क्रोध, मद, लोभ, मोहाहकार व नाशका उपाय और दान व्रत करनेके लाभ और प्रीति, दया, सत्यासत्य, चार ईर्ष्यादि बहुतमेदें इस सम्बन्धी कर्मोंका निर्णय, इतिहास, कथा और दृष्टांत युक्त हैं जो छापेखानेको अयोध्यानिवास युगलानन्दशरणवैकुण्ठवासी के पुस्तकालयसे उनके स्थानापन्न महात्मा जानकीवरशरणजीके द्वारा बड़े परिश्रमसे प्राप्त हुई अब हम थोड़ीसी बातें इस पुस्तकके अन्तर्गत विषयोंकी महात्माओंकी रुचिकेलिये लिखते हैं साधनके कालका वर्णन, आत्ममत्ताके अभ्यसका वर्णन, जीवकी मिना, जीवका स्वभाव, जीवकी पराधीनताका वर्णन, भगवत्की पहिचान, भगवत्की निर्लेपताका कथन, तत्त्व और नक्षत्रोंका व्याख्यान, मायाका विस्तार, छल और उसका खण्डन, परलोककी पहिचान, मृत्युका कथन, जीवकी अखण्डताका वर्णन, प्राण चेतना, चैतन्यकलाकी कथा, यममार्गके कष्ट, नास्तिकोंके मतका खण्डन, भगवत्की प्रतीति, आचारधर्म, ज्ञानदेने, दानव्रतकरने, पाठकरने, ध्यान लगाने, स्मरणकरने, साधुमङ्गति, एकान्तमें भजन करनेका वर्णन, कठो वचनके त्यागनेका कथन, कामवासना और इच्छाके त्याग करनेके शुभफल अधिक बोलनेके विघ्न, क्रोध, ईर्ष्या, मायाकी प्रीति, तृष्णा, कृपणता



अथ ज्ञानतरंग ॥

—०—

सो० ॥ शीतनाथकीवाल तासुतनयगिरचन्द्रधर । बाँधवता-
रककाल तिहुँपुरपूज्यसुविघ्नहर ॥ वन्दत तवपदधूरि करौ कृपा
वारणधवन । उपजै आनंदभूरि देहुसुगति हरिकुमतितन ॥ दो० ॥
है अखण्ड अविनाशजो पुरुषपुरातनईश । वेददेव मानसउरग
ध्यावत जाहिमुनीश ॥ चौ० ॥ वेदचारि जेसबजगजानै । ऋगयजु
सामअथर्व वखानै ॥ जोऋगवेद सोऔरवतावै । यजुर्वेद कुछ
औरसुनावै ॥ सामवेदकी अरुथकहानी । समुझहिंचतुर न जाइ
वखानी ॥ कहैअथर्वण आनप्रकारा । एकब्रह्मकृत चारिविचारा ॥
दो० ॥ चारौध्यावत एकही वरणतगुणगंभीर । उग्रहिमारग संचु-
पावज्यहि गहेसुमारगधीर ॥ चौ० ॥ नहिंआरुपर्य बिबुधमनलावै ।
चारौमारग सत्यवतावै ॥ ऋषयतपेश्वरादि संन्यासी । वैष्णवमु-
डिया औरउदासी ॥ निजमति सरिसताहि सवगावै । कोऊतासु
पार नहिप्रावै ॥ देवसुरेश आदिबुधिमाना । गावहिंजासु प्रताप
प्रमाना ॥ प्रेसहसयुग रसनाजाही । वरणतजाहि नअन्तक-
हाही ॥ व्यासआदि मानन तनुधारी । विविधभाति जिनकथा
पतारी ॥ तिनहुनभेदपाव ज्यहिकेश । तपकीन्होसहिदंडधनेरा ॥
निशिचरआदि महाबलवाना । यवनादिक जे अधिक सुजाना ॥
जिनकी संज्ञा असुरन माहीं । वेदपन्थडोउतते नाहि

भांति तिनखोजलगायो । जाकरकतहु खोजनहिं पायो ॥ अपरौ
चतुर जगत बहुतेरे । यतनकिये ज्यहिहेतु घनेरे ॥ पाव न जासु,
खोज कहुंभांती । जासुनाम हरजप दिनराती ॥ दो० ॥ जीपरमा-
तम एकरस व्यापक जलयल माहि । अजयअनीह अमानज्यहि
द्वैतभाव ककुनाहिं ॥ तासुचरण बन्दौलसुद देहुसुमति करतार ।
नघैसकलअथ कालिमा वाढैबुद्धिबिचार ॥ चौ० ॥ पुनिबंदौअजच-
रण गुणाकर । कुमतिभिंरकहँ ज्ञानदिवाकर ॥ ज्यहिवहुभाति
सृष्टिउपजाई । अतिअमकरि-रचिरुत्रिचनार्थ ॥ सेवतजासु
कमल पद वानी । करतजो अज्ञानी कहँज्ञानी ॥ सचराचरसम-
स्ततनुधारी । रचेकमलभवसकल बिचारी ॥ तामुपदारविंदशिर
नाऊँ । हरैकुमति निर्मल बुधिपाऊँ ॥ पुनिप्रणवों गरुडारान स्वा-
मी ॥ कृपाउदधि डर अन्तर्यामी ॥ सदादाम निजरक्षा करई ।
सुखद सदैव दुःखबहु हरई ॥ जवजव असुर अनीति प्रचरैं । धर्म
क्रियाकर मूल उखरैं ॥ निन्दैवेढ विश मखआधा । दुष्टअनेक
लगावै बाधा ॥ तबतव मनुजरूपकरि धारा । मारिखलन पुनि
धर्म प्रचारा ॥ लक्ष्मीजासु चरणनित सेवै । महा अनद वदिप्रद
लेवै ॥ थावर जंगम जीवघनेरे । रक्षकरमानाथसबकेरे ॥ दो० ॥
'ताकारणमायापते विष्णु पुरातनरूप । बन्दौ पादसरोज तुव
दे बुधि तिहुंपुर भूप ॥ चौ० ॥ पुनिबन्दौ शंकर सुखकारी । चन्द्र-
भालजो उमाविहारी ॥ भोलानाथ कृपाअबकीजै । हरिदुखकुम-
ति सुखबुधि दीजै ॥ फिरिविनवों धारदा भवानी । कुमतिनाश
निर्मलकर वानी ॥ जाहिप्रसन्न गिरातू होई । यश भाजन जगमें
भोतोई ॥ दो० ॥ इष्टदेवमम कीशपति महावीर सुखदाय । हरौ
विघ्नदुख दासके सुमति देहु कपिराय ॥ लहो विभीषणराजभल
अरु सुग्रीवकपीश । तवदाया दायानिधे महावीर ममईश ॥
चौ० ॥ बन्दौ गुरु पिता अरु माता । ज्ञान सुमति अरु जन्मके
दाता ॥ मित्रआदिजेममहितकारी । प्रणवोंतिनकेचरणविचारी ॥
कोविद भसर जेजगमाही । जिनकेषत्र मित्रकोउनाही ॥ तिन

के चरणरुमल धरि ध्याता । निर्णयकरौ मनोहर ज्ञाना ॥ दो० ॥
 वर्तमान अरु भूतकवि होनहार जेकोय । प्रणवों सबके पदपदुम
 कृपाकरौ अब सोय ॥ चौ० ॥ दुष्ट प्रकृति जिनकी जगमाही ।
 परभल जेनहि देखि सकाहीं ॥ और के यशहि जे दोष लगाव
 हि । धर्मकथा पहुँ भूलि न जावहि ॥ जौ चोरी अपकारीपावहिं ।
 तौ निज देवहि अजा चढ़ावहिं ॥ यहि प्रकार औरौ खलकैते ।
 वर्णन करौ कहां लगि तेते ॥ वन्दौ ते सब निज हित लागी ।
 होहु प्रान्न राकल छल त्यागी ॥ निजे कर्तव्य ममहेतु विसारी ।
 देहु अमीष मनोरथकारी ॥ विधि निर्माण सृष्टि जहँताई । प्रण-
 वो सबहि सुप्रेम बढ़ाई ॥ मोहिं प्रान्न चराचर होहु । आशिष
 देहु सुखद करि छोडू ॥ दो० ॥ पुनि अब वन्दौ शारदा जो सुधि
 बुधिदातार । सदा सहायक होहु अब वरणीग्रन्थ विचार ॥ चौ० ॥
 सबत विक्रम करौ विचारा । हनुमत पिता शत्रु पतितारा ॥ नि-
 राकार गाभी महिधारी ॥ अब शक्र कहँ अग्रविचारौ । रावण
 शिपु अरुदति समेता । क्रय धरीयुत कवि गनिलेता ॥ माधव
 अक्षयतीज शशिबारा । तादिन ग्रन्थलीन अवतारा ॥ अबहौ नाम
 कहौ शुभ याको । कविजन अर्थ विचारौ ताको ॥ चाहत जाहि
 सुभग योगीजन । प्रथमहि ताहि लिखो स्थिरमन ॥ तापाछेलै
 उदधि हिलोरा । सुन्दर सुखद नाम कविजोरा ॥ राज्य सुभग
 गौरव विराजै । नीति सहित परजा सुखराजै ॥ दो० ॥ अबधरि
 ध्यान प्रवीणजन सुनो पुरातन ज्ञान । मनको बुद्धि प्रबोधजिमि
 मनमानी परमान ॥ एक समय मन बुद्धिद्वड भयउ एकदिग
 आय । मन पूछै तव बुद्धिसो कहतू मोहिवुझाय ॥ (मनउवाच)
 चौ० ॥ कहुबुधि कवते ईश्वर भयऊ । कवते सकल सृष्टि निर्म-
 यऊ ॥ वेदा विष्णु सुशंकरजोई । का ईश्वर कहियतहैं सोई ॥
 (बुद्धिरुवाच) सुनमन ईश्वरकीन प्रमाणा । आपहि आपभयो
 निर्माणा ॥ भेदकाहु पायो नहिं वाको । रूपरेखकहुगेह न ताको ॥
 अजय निरंजन अगुण अपारा । अंगजग दुहुवातते न्यारी ॥ नहि

मानस नहिं पशु नहिं देवा । नहीं भुजंग करिय ज्यहि सेवा ॥
 व्यापक सकल सृष्टिमहँ ऐसे । शोणित सब शरीर महँ जैसे ॥
 सबके गुण अवगुणसो देखै । पाप पुण्यकी लखनी लेखै ॥ पापी
 नहिं धर्मात्तम सोई । चाहत जौन तुरतसो होई ॥ जोतुम ब्रह्मा
 विष्णु बखाने । शंकर कहँ ईश्वर करिजाने ॥ तेपरमात्तम पद अ-
 धिकारी । सो निर्णय सब कहवँ अगारी ॥ अब सुन, ज्यहिविधि
 सों येभयऊ । जौनी विधि ईश्वरपद लयऊ ॥ अरु ज्यहिभांति
 सृष्टिनिर्माणा । करिचौरासीयोनि प्रमाणा ॥ जवनधरा ब्रह्माण्ड
 पतारा । सत रज, तम गुण कोउ न प्रचारा ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर
 नाहीं । गणपति फणपति कोउ न तहांही ॥ अग्नि वायु
 जलदेव न नागा । वेद ग्रंथ कोउ नहिं अनुरागा ॥ नहिं मानस
 नहिंसर्प कराला ॥ जीवजतु नहिंकाक मराला ॥ दो० ॥ विद्या
 चौदह तवनही नहिं हनुमत न सुरेश । नहिं नारद शारद चतुर
 नहींभये असुरेश ॥ चौ० ॥ वरुणकुबेर न तब यमराजा । जाति
 धर्म नहिं एकौसोजा ॥ तपीजपी नहिं मुनि संन्यासी । उदय न
 चन्द्र सूर सुखरासी ॥ सकल पसार, तिहूपुर जोई । तब न कछू
 जानो मनसोई ॥ इन्द्रीआदि ज्ञान विज्ञाना । मोहक्रोध कछु
 नाहिं बखाना ॥ तब निज एक चराचर साई । निराकार महँ
 बैठगुसाई ॥ स्वइ परब्रह्म वेद जो गावै । बार बार ज्यहि शम्भु
 मनावै ॥ इच्छा कुछ ताके जो आई । सोमायो यह जगत कहा-
 ई ॥ फिरिके सुखदं शब्दयकबोला । ओंकार यह मन्त्र अमोला ॥
 दो० ॥ ताते ब्रह्मा विष्णु अरु उपजे शुभत्रिपुरारि । निराकार
 महँ वासलिय तीनोंजन सुखकारि ॥ चौ० ॥ मायावहु विचा-
 रिकरिहारी । तावथ भयो न एक मुरारी ॥ तब ओंकार वेदलै
 आई । तिन कहँ द्वै ज्यहिविधि समुझाई ॥ कह्यो सृष्टिकी रचना
 करहू । आज्ञावेद शीशपर धरहू ॥ ब्रह्माहि कीन्ह बनावनहारा ।
 शंकर शिरहन्तक पदचारा ॥ विष्णु महा ज्ञानी गुणरासी ।
 प्रतिपालक भी । रमाविलासी ॥ पांच तत्त्वकरि सृष्टिउपाई ।

विविध भाति कोन्ही निपुणार्थ ॥ तब त्रैगुण दिख वेद वतार्थ ।
 ब्रह्मा रजगुण लीन्ह सिधार्थ ॥ तमगुण शिव किय अंगीकारा ।
 सतगुण हरि तनु कीन्ह प्रचार ॥ दो० ॥ यहि विधि तिहुगुण तिहु
 पुरुष एक एक महँ लीन । ब्रह्मपुरी महँ बैठि पुनि विश्व रचन
 धित दीन (मनउवाच) ॥ चौ० ॥ जो तुम कहौ ब्रह्मपुर नामा ।
 जहाँ बिरचि कीन्ह निजधामा ॥ को सो पुरी रहै विधि आगे ।
 बैठि जहाँ निज कारज लागे (बुद्धिरुवाच) प्रथम ब्रह्मपुर लीन
 वतार्थ । तापाछे पुनि सृष्टिउपाई ॥ वरुण कुबेर इन्द्र समिराजा ।
 अग्नि वायु शशि सूर समाजा ॥ धरा पताल स्वर्ग इत्यादी । इंचे
 देव अरु दैत्य विषादी ॥ मनुज उरगपशु खग सुवनाये । वेदधर्म
 कहि सकल बुझायो ॥ जाकहँ जौन ठामा विधि दयऊ । तहाँ
 सुशोभित सो पुनि भयऊ ॥ यहि विधि सृष्टि सकल उपजाई ।
 बहुत भांति करि विधि निपुणार्थ (मनउवाच) दो० ॥ प्रथम
 कहा तुम कहौ पुनि विष्णु भयो जिमि ईश । सो अब मोहिं विचारि
 कहु नावों तब पद शीश (बुद्धिरुवाच) प्रथम वेद यह कहत है
 तीनि वात को ज्ञान । तत्त्व मतीये तीनि पद जानत कोइ सुजान ॥
 चौ० ॥ तत्पद ईश महा सुखकारी । जीव भयो त्वंपद अधिकारी ॥
 अतिपद ब्रह्म जो प्रथम बखानात निर्गुण निराकार भगवाना ॥
 जाहि जपहि हरि हर विधि देवा । निशि दिन जासु करै अति
 सेवा ॥ सबमें लिख सब नते दूरी । सब जीवन कर जीवन मूरी ॥
 दो० ॥ ये तीतो पुनि एक है भेद नहीं है नेक । जिमि छाया द्रुम
 जगतमे कोकरि सकै विवेक ॥ चौ० ॥ भयो परन्तु मेद यहि तेरे ।
 भापे कविन सो लखे वनरे ॥ हरि माया ज्यहि जगत नचायो । काहु
 जीव जीति नहि पायो ॥ भे मायावश विषय बिलासी । तमगुण
 गहे भये दुखरासी ॥ आपुहि भूलि मया लपिटाने । मोह आदि
 जिन देह समाने ॥ सुनु मनते सब जीव बखाने । कर्ता क्रिया कर्म
 नहि जाने ॥ ज्यहि माया निज बंध करि लीन्ही । विविध भाति
 शिव जीवहि दीन्ही ॥ तम रज त्यागि गहोगुण साँचा ॥ विषय राग

मन जासु न राँची ॥ कामक्रोध मोहादिक बांधे । आपन पद निज
 करतल सांधे ॥ सो सच्चिदानन्द गुणरासी । तत्पद कहो सो रमा
 विलासी ॥ यहिविधि विष्णुईश पदपायो । ज्यहियस वेदपुराणन
 गायो ॥ स्वई अवतार सृष्टिमहँ धरई । विविध भांति लीला सो
 करई ॥ जब बहुपाप धरा असिलेई । सकैन भार पाप्र सोखेई ॥
 तब नारायण पास पुकारै । विविध भांति अस्तुंति अनुसारै ॥
 तासु देरिसुनि रमाविहारी । धरैमनुज तन जनदुख हारी ॥ ज्य-
 हि विपरीत वेदतेपावै । ताकहँ हति यमलोक पठावै ॥ देईवताइ
 सुपंथ जीवकहँ । बहुज्ञानी गुणखानि जगतमहँ ॥ दो० ॥ अब सुनु
 असिपद ब्रह्मको निर्णयमन चितलाय । जाहिसुने संदेहतुव वि-
 विध भांतिवहिजाय ॥ असिपद पूरणब्रह्महै निराकार जुनिरेह ॥
 व्यापक सबजगमे रहै सत्यजानु मनयेह ॥ चौ० ॥ जीवईश दूनों
 महँ व्यापै । ज्यहि बहुभांति सुवेद प्रलापै ॥ ईशजीवजो समकहि
 दीजै । तो बडदोष शीशपरे लीजै ॥ तत्पदमनो सिन्धु परमाना ।
 विदु समान जीव अनुमाना ॥ असि पद मनो नीर बुधिमाना ।
 दोनोंमांझ नमान समाना । अथवा तत्पदज्यो नरभूषा । त्वंपदहै
 किसानकेरूपा ॥ मानस असिपद कहतसुजाना । यहिविधिती-
 नोंपद परमाना ॥ निजआतुमं खोजैजो भाई । सो निरगुण पद
 महँ ठहराई ॥ अद्वा सहित विष्णुलवलावै । सोई सैगुण पथ
 कहावै ॥ दो० ॥ दूनोंपंथ पुनीतअति भक्तिमुक्ति दोतार । अब जो
 मनसंदेह कछु कहुलो कहौविचार ॥ (मनउवाच) अधिक भयो
 संदेहभवहिँ अबसुनु बुधि मनलाय ॥ करि विस्तारि बताइये सब
 शंका मिटिजाय ॥ भापोसबमें एकरस पारब्रह्म भगवान । दैत
 भाव वाके तही सो मानी परमान ॥ अब कहु रूपस्थूलतैं ईश
 धरेहैजोय । कैसेवाकी देहमे तिहुँपुर वर्तनहोय ॥ (बुद्धिरुवाच) ।
 सुनुतोसों अबकहौं बुझाई । जिनिसस्थूल रूपकृत साई ॥ शीश
 तासुआकाश विराजै । पवन श्वासमहँ शोभासुजै ॥ सूरज चंद्र
 नयन उजियारा । कालरूप भ्रुवंक पसारा ॥ पलकचालिनिशि

द्यौस कहावै । अग्नि तामुमुख शोभा पावै ॥ मांसहि धरारुधिरजल
 धाग । पर्वत अस्थि वनस्पति वारा ॥ चरण पताल हृदय कर-
 तारा । द्वैभुज हरिहररूप सम्हारा ॥ सकललोकता उदरसमाने ।
 माला मेघशुक्रतजिजाने ॥ अलख अरूप अनादि कृपाला । धरे
 विराटरूपकृत ख्याला ॥ दो० ॥ होय विधाता आपु स्वइ रचै सृष्टि
 धहुभांति । थावर जंगमजीव जे बहु विधि नानाजाति ॥ बहुरि
 आपु द्वैरमापति रक्षत संवको धाय । शंकरद्वै संहारकृत सो प्रभु
 त्रिभुवनराय ॥ (मनउवाच) याविधि धरकेरूपको करत ख्याल
 बहूआहि । यहमोजो समुझाय कहु कवत्यागतहैं ताहि ॥ (बुद्धि-
 रुवाच) चौ० ॥ भलिपूछसितै वातविचारी । हैं यह वात कहैं
 निरधारी ॥ यिरहै सुनुतजि दुविधाजीकै । जस जानोत सकहैं मली
 कै ॥ जाहि विरचि कहत कवि ज्ञानी । तामु आयुपर घटित क-
 हानी ॥ आयुर्दाय वर्ष शतकेरी । पाई विधि काली न घनेरी ॥
 सतयुग प्रेताद्यापर जानो । कलियुग राहित प्रमाण बखानो ॥ स-
 त्रह लाख वसुविश हजार । कृतयुग की परमाण विचारा ॥ जह
 चहुं चरण धर्मके राजे । सुखद चारि अवतार विराजे ॥ सहस्रछा-
 नवे द्वादश लाखो । प्रेतायुग परमाण सुभाखा ॥ तीनिपाद शुभधर्म
 गमेता । त्रैयवतार धरे हरि प्रेता ॥ चौगठि सहस्र लक्षवसु जा-
 हीं । द्वापरयुग येवर्थ सिराहीं ॥ द्विपद धर्म तह वैदवताये । द्वै
 स्वरूप हरि धरे सुहाये ॥ वनिस सहस्र लाख पुनि चारी । कलियुग
 की परमाण विचारी ॥ धर्म चरणतह एक कहोई । एकवार अव-
 तार सुहोई ॥ जामह नरयुवतीहें जोई । मारग वेद चलत कोइ
 कोई ॥ रहै न लीक धर्मकी भाई । महादुखित नरनारि तहाई ॥
 निजेनिजे धर्म सबै परित्यागे । आय धर्मके मारग लागे ॥ दो० ॥
 तेंतालिस लाख सहस्र नख वर्ष जवचलिजाय । एरुचतुर्युग होत
 तव कहत सकउ किराय ॥ चौ० ॥ जाय हजार चतुर्युग बीतीर
 होय ब्रह्मदिन तव कहनीती ॥ कल्पकहत विधिके दिन फाहीं ॥
 चौदह इंद्रमैर ज्यहिमाही ॥ दिवस प्रमाण कहीहैं जेती । अरख

त विबुध निशा पुनितेती ॥ दिनभरि जो विधि सृष्टि बनावै । निशा
 समय माया मह जावै ॥ जा कहै प्रलय कहत कविजानी ॥ सो
 ब्रह्माको रैनि बखानी ॥ जा दिन जन्म बिधातालेई । आज्ञा वेद
 ताहि दिनदेई ॥ बाही दिनते जग उपजावै । विविध प्रकार सजीव
 बनावै ॥ पुनि जब अन्त हीड विधिकेरा । तवहीं महाप्रलयकी
 वेरा ॥ तब त धरा इत्यादिक रहई । यह विधि सत्य सत्य अति
 कहई ॥ निशा दिवरा ब्रह्माको जोई । बहे जात तामें सबकोई ॥
 दिवस जन्म निशि काल कलेवा । क्यहि विधि पारजाय भवखेवा ॥
 मानस कहौ करै काभाई । आयुर्दाय नेक सी पाई ॥ दो० ॥ विधिके
 उपभूत हीं प्रसन्न तन विराट भगवान । तासु मरत ही तजत त्यहि
 तै निज जिय अनुमान ॥ (मन उवाच) उत्पत्ति स्थिति नाश जो
 जगको वर्णन कीन । सो जमुझो भलि भांति हीं रही न शंका पीन ॥
 अत्र परतु समुझाय कहु मानस तनु की भेव । कौन तत्त्व करि सो
 बनो यह मेटौ अहमेव ॥ (बुद्धिरुवाच) द्योम वायु अरु अग्नि
 जल पृथ्वी युत पै पांच । इन तत्त्व न करि तनु बन्यो वरणत बुधजन
 सांच ॥ पांच तत्त्व ये जो कहै पांच तत्त्व गुण और प षडस्वरूप
 रस गन्धिकहैं कविमौर ॥ चौ० ॥ नासानयन जीभ त्वक जानो ॥
 अतिसह इन्द्रिय ज्ञान बखानी ॥ गुदा लिंग कर पद मुख जोई ।
 इंद्रिय पांच कर्म की सीई ॥ प्राण अपान रुधिरा न समाना । और
 उदान मनो बुधि साना ॥ पांच तत्त्व सूक्ष्म तनु पाई । सत्रह
 धूल प्रकट ये भाई ॥ इन करि सब देहिन की शोभा । इन ही ते
 नर तनु सुख दीभा ॥ इन करि पाप सुकृत तर करई । इन करि क्रिया
 कर्म अतुल राई ॥ इन ते स्मृति रक्पये धावै । इन करि हरि पुर शोभा
 पावै ॥ इन ही ते ससार पसारो । पांच तत्त्व ये प्रकट निहारो ॥
 (मन उवाच) दो० ॥ पांच तत्त्व करि जो भये सत्रह सूक्ष्म नाउ ।
 कौन कहतै का सो गुण यह सो को समुझाउ ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥
 धाणी कान द्योम ते भाई । एक कहै दूजे सुनि पाई ॥ त्वचा हस्त
 पै प्रकृति समीग । दोउ स्पर्शहि जानत धीरों ॥ नयन चरण इंद्री

है जोई ॥ प्रकटी अग्नितत्त्वते सोई ॥ नयनचहै ज्यहिरूपहिदेखा ।
 पाततहा पहुँचाव विशेषा ॥ लिङ्गजीभ जलते बुधभाषै । दोऊ
 रस विलास अभिलाषै ॥ गुदानाक पृथ्वी अनुमानै । गन्धि करै
 यक दूजी जानै ॥ प्राण अपान समान बखानो । व्यान उदान
 पाँच्ये जानो ॥ पाचठौर ते गुण पुनिपाँचा । एकैपवन अंश यह
 साँचा ॥ दो० ॥ धरातोयवाताग्निमिलि व्योमतत्त्वयेपाच । पाँचौ
 के शुभ अशकरि मनबुधि उपजेसाँच ॥ जेती इन्द्रो देहकी भोग
 करै कहूँकोय । स्वादनजानै तासुको मनबुधि जानैसोय ॥ मनहूँते
 पुनि अतुरजन बुद्धि महासिरदार । होइ सुमति जादेहमें करै
 ताहि भवमार ॥ (मनउवाच) यह सूक्ष्म इन्द्रोको है बखान
 किय जौन । धूलभई जाभाँति मों वर्णनकीजै तौन (बुद्धिरु-
 वाच) चौ० ॥ पाचतत्त्व ऊपर जे गाथे । तिनहीं ते तन धूल
 बनाये ॥ एकएकके करिकरि पाँचा । रचेपचीस भणतबुधसाचा ॥
 सोयहपचीकरणकहावै । भगवतगीताभलिकरिगावै ॥ अस्थित्वचा
 रोमानसमासा । धरातत्त्वते करतप्रज्ञासा ॥ स्वेद भीष पितलाररुरे-
 ता । तत्त्वोदकरुविपंचरुहेता ॥ क्षुधातपामुख कांतिकहावै । नींद
 और आलसबुध गावै ॥ इनकीउपपत्ति सिखितेभाखी । विदित
 करीकुछ गुप्तनराखी ॥ धाइकूदिचलि कुरिकरियोई । और पसा-
 रनि पौनकहोई ॥ दो० ॥ भीष कठ हिय उदरकटि व्योम तत्त्व
 करि होइ । यह समुद्रौ पचीकरण कही पचीसौ जोइ ॥ कही
 यचीसौ प्रकृति ये धूल जीव तन माहि । सुनुतिनको पुनि भेद
 कहु जो तू जानत नाहि ॥ चौ० ॥ यद्यपि पाच पाँचकरि गाई ।
 तदपि कहौ जो ज्यहि अपनार्ह ॥ अस्थि मुख्य पृथ्वीपल नीरा ।
 अग्नि नाटिका त्वचा समीरा । रोम व्योम जल रेत विचारी ॥
 पित तेज अरु स्वेद वियारी ॥ रुधिर मही अरु लार अक्रासा ।
 क्षुधा तेज पुनि पौन पियासा ॥ सुखमा जल अरु चालमधरनी ।
 नींद अक्राय अंशतेवरनी ॥ धावनिवायु पसारनिनाका । कूदनि
 सिखि गावत कविबाका ॥ इहाँ सकोच चलनि जलजानो । शिर

नभ स्वच्छ वायुपहिंचानी ॥ हियेसिखि उदर नीवकटि धरनी
 जोज्यहि तत्त्व मिली सोवरनी ॥ दो० ॥ अस्तिरेत अरु भूख पुनि
 धावनि शिरये पांच । डलानीर निखि पवन नभ क्रमते खालि
 साच । याविधि धूल शरीरधरि जीवकरत बहुभोग । दुखसुख
 नरकरुस्वर्गपुनि पावतरीग निरोग ॥ इनहीतेकरिसुकृतनरमैदि
 देततन पाप । पारब्रह्मईश्वर भजत देखत प्रकटप्रताप ॥ सूक्ष्म
 धूलशरीरहौ कहे तीहि समुझाय । अबजोपूछै सोकहौ श्रीहरि
 पद शिर नाय ॥ (मनउवाच) प्रथमकहे तुम तीनिगुण सत रज
 तमयेनाम । परख कहा जाविधिलहैं नरतनमे धियाम (बुद्धि
 रुवाच) चौ० ॥ सकलवस्तुकरहोवैज्ञाना । अतिसुशीलवहुभाति
 सुजाना ॥ निर्मल बुद्धि भजै भगवाना । मोहादिक जातननसमा
 ना ॥ मायाजाहि नसकै भ्रमाई । स्वई सतगुण जानिय भाई ।
 ज्ञानहोइ निर्मलतन जासू । सबविधि विद्या विनयप्रकासू ॥ लो
 भसहित पुनिसब व्योहारा । सोरजगुण बुधकरतविचारा ॥ आपु
 हिभूलि ईशवितरायो । कामादिक मदतें बौरायो ॥ अदयाचित
 महा कटुबानी । ज्ञानविवेक बातनहिजानी ॥ मायामोहलोभकै
 बाधा । रामभजनलगि कांधनकाधा ॥ अपरौदोष अधिक तनदे
 खौ । ताहितमोगुण चितमहँ लेखौ ॥ जो सतगुणकी मारगगहई ।
 अन्तसमय हरिपुरसोलहई ॥ रजगुणहूँकी यहगतिभाई । दृढ़मति
 रहै तौस्वर्गहिजाई ॥ तमतेकेवल नरकवसेरा । अपित वर्षलहुनहिं
 निरवेरा ॥ दो० ॥ निजआतम चीन्ह्योनहो रहोमोह आधीन । महा
 कृतग्री जानियम डारिनिरै मनदीन (मनउवाच) मोहिंभईशंका
 सुनत जीवनरकमें बात । प्रथमभन्यो तुमब्रह्मलव अवकतनरक
 निवास(बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ आदिअन्त अब्रकहौ कहानी । करणी
 तुमलीजो पहिंचानी ॥ मित्रि त्रियपुरुष अशदुहुकेरा । उषजत
 सुतसुखदाय घनेरा ॥ त्रियशरीर महँ मलजो रहई । अतिअप
 विप्र त्रेव बुधकहई ॥ पूरुषतन करकाम अघोरा । विधि संयोग
 तियनर करजोरा ॥ मित्रि नरमल तियमल जमिगयऊ । हरि

इच्छा निर्मिततन भयऊ ॥ उदरहृदय भुजकंठ धर्नायो । सुख
नामिका नयन भुजभायो ॥ शीघ्र सुढौलरच्यो जगनाथा । गुदा
लिंग इत्यादिक साया ॥ कीन्ह सजीव प्रभा निजडारी । नाटक
विद्याकरि असुरारी॥दो० ॥ बाधिअधोमुख दयोत्यहि नहिंपायो
अवकास । निजसेवा यहखेलहित करिहरि चित्तहुलासा ॥ चौ० ॥
अधमुख बंधे विकलभो जीवा । सबशरीर लिपटी मलपीया ।
अतिदुर्गंधि अन्नपच केरी । विह्वल प्राणन सकति निवेरी ॥ भक्ष
मातुकटु जादिन काहू । उठीउदर ज्वाला तनदाहू ॥ जठरानल
अतिकठिन बखानी । जावथ विकलहोत सवप्रानी ॥ परबध
परो न मारगकोई । निजमन कृत विचारभो सोई ॥ विदित
घात यहसबजग अहई । दंडपरे नरहरि हरि कहई ॥ नहिरक्षक
कउ गर्भवसेरे । सूझेपाप जन्म बहुकेरे ॥ कहै प्रथम जो पातक
कीन्हा । ताकारण श्रीहरि दुखदीन्हा॥ दो० ॥ अबनारायण कृपा
करियहिदुखते निरवारु । त्यागि सर्व भवकामना करिके ज्ञान
विचारु ॥ करिहौसब जपयोग अरुभक्ति कृपानिधि तोरि । सत्य
सत्य यहसत्य प्रभु करुरक्षा अवमोरि ॥ सुनिनिबन्ध दायानिधे
प्रभुमानी परमान । तारक्षाहित आपुहीआये श्रीभगवान ॥चौ०॥
धीत उष्ण माता जोखावै । प्रभु निजकरसों ताहि बरावै ॥ जो
कछुकुष्ट जीवकहँ होई । नाथैसकल कृपानिधि सोई ॥ रूपचतु-
र्भुज धरे खरासी । सन्मुख तासुरहँ सुखकारी ॥ जस जननी
पालै निजबाला । तसजीवहि रक्षक गोपाला ॥ देखाचहै भजन
यहु करिहै । भक्तिहेतु जगसुख परिहरिहै ॥ जवते ईश भयो
खवारा । तवते तन न कलेश प्रचारा ॥ गर्भदिवस यहिविधि
घलियगठ । जन्मलेनकर अवसर भयऊ ॥ व्यथित शरीरगई
सुविभूली । पच्यमानतनभेजिमिशूली ॥ दो० ॥ मुर्छितभो क्षण-
मात्रतव जन्मलेतकी वार । चेतसमय चहुंदिगनहीं देखा निज
खवार ॥ अतिअधीरहै जीवतव कीन्हो कठिन बिलापि । कहां
कहां यहबदज्यों करैलाग निजजाप॥चौ०॥ धाईधाई असनान

कराई । कीन्हो स्वच्छ शरीरहिजाई ॥ जवलनि नहिं कीन्होपय
 पाना । तवलनि नहिंभूलो भगवाना ॥ क्षीरपान कीन्हो ज्यहि
 बेरा । मोहराज तनकीन्ह बरोरा ॥ विसरि निबन्धरही सुधि
 नाही । माया जवहिंगही हितवाही ॥ तेल फुलेल शरीर ल-
 गावै । जननी हलरावै दुलरावै ॥ उघटितनहिं चौतनि शिरदा-
 रहिं । सुभग पलंगपर लै पौढ़ारहि ॥ आपु काजगृह लगैसोई ।
 सोहत घालंशुद्धि तनखोई ॥ स्वेदज जीवकीट इत्यादी । काट-
 हितन दुखदाय बिप्रादी ॥ दो० ॥ जब शरीर कीटनगह्यो रोयो
 घाल अधीर । वैनकहै समरथनहीं जोभापै निजपीरा ॥ चौ० ॥ करै
 ब्रिलाप सुनैतहिं कोई । दुखद कीटलागे तनसोई ॥ कतहुमातु
 सुनिपाय जोवाती । लियोउठायहरो दुखआनी ॥ क्षुधावंत आकुल
 तनभयऊ । मातु सदनकारज चितदयऊ ॥ सूझत इतउत नयन
 पसारा । हैअधीर तबरोयपुकारा ॥ सुनिसुतरुदनमातुचलिआई ।
 सुखी कीन्हपयपान कराई ॥ कुछ दिनवादि चले निजपयन ।
 मातुपिताकहैं अतिसुख दायन ॥ जहंतहैं खेलनमहैं चितदयऊ ।
 तपाक्षुधा भूलतहैं भयऊ ॥ नहिंभावत गृहखेल बिसारी । फिरैसंग
 बालकहैंचारी ॥ दो० ॥ मातुपिता दिनशोधिकै गुरुपहं दीन्हपठा-
 य । पढ़ैलाग विद्यातहां नैकनैक चितलाय ॥ चौ० ॥ जो उत्तमकुल
 भ्रौ अवताश । तौ विद्यागुण कीन्ह विचारा ॥ जोपै तोचगृह ज-
 न्मत भयऊ । तौ यहदशा खेलमहैं गयऊ ॥ यहिविधि बालापन
 गा घीती । नाकीन्हयसि जो प्रथम कहीती ॥ नर उपकारकरत
 जोकोई । मानतसकल जन्मभरिसोई ॥ महाकष्टते ईश्वरपायो ।
 ताकहैं कतहुन शोधनवायो ॥ तरुण अवस्था तनमहैंआई ॥ सैन
 व्यधाते तनतपछाई ॥ ज्ञातबन्धु मिलिकीन्ह विवाहा । मनप्रस-
 न्न तनवड उरसाहा ॥ बहु आभरण सजेतनमाहीं । लखि निज
 रूपन अंगसमाहीं ॥ दो० ॥ मैनफूले मारग चलत देखत अपनी
 छांहि । कहत महासुदरबने कौकहमसम नाहिं ॥ चौ० ॥ जो कुछ
 ज्ञानचित्तमहैंआयो । तौ कारजमहैं जिय बहिलायो ॥ जोमूरख

विद्यादिक हीना । कामविवश तौ फिरै मलीना ॥ ताके परतिय
 लाजविसारे । धर्मकथाते चलहि नियारे ॥ कहैजो कोउ यहकाज
 ननीका । तौ सुनिवैन करै मुख फीका ॥ जो कदाचि सम्पति
 विधि दयऊ । तौ फिरिअविक गर्वउर छयऊ ॥ गालफुलाय चलै
 मगमाही । जनुतिहुँ पुरीभूपये जाहीं ॥ मित्रनहू सन मीठी वा-
 नौ । संपति मदन कहैअज्ञानी ॥ काहुइकहै न मधुरीवाता । अ-
 हंकारवश उरन समाता ॥ दो० ॥ साधुसंतकहँ देखिकर करैहँसी
 तेमूढ़ । बाढिसुझायो मूढतुमलहोनअर्थअगूढ़ ॥ चौ० ॥ ज्यहिविधि
 जन्मदीन नरकेरा । त्यहिजग भोगरच्यो बहुतेरा ॥ तजिपाखण्ड
 करौ जगभोगा । वे कारणयह सहौब्रियोगा ॥ सुनतहि वचनसाधु
 मुसुकाही । जिनके क्रोधलोभ कछुनाहीं ॥ जोविधि जन्मरकगृह
 दयऊ । तौचिन्तावहुविधि तनछयऊ ॥ प्रमदातनय सुताहितला-
 गो । फिरैजहां तहँ रंकअभागी ॥ करैकूपी अथवा व्योपारा । पर
 सेवाकरि दिवस निवारा ॥ अथवा भिक्षाटन नितकरही । जग
 छलिभूति उदरनिज भरहीं ॥ त्रिय सुत फाँसि मोह गलढारी ।
 भजैज हरिपद भयोदुखारी ॥ दो० ॥ गई भूलिसबचतुरई चिन्ता
 मसितशरीर । मिलैनधन उरगातिनहिं जहँतहँ फिरैअधीर ॥ पेट
 खलाये जगफिरै त्रियातनय के हेत । हरिमाया अतिप्रबलज्यहि
 कश्यो सचेत अचेत ॥ प्रभुसों कियो निबंध जो भूलि गयो जड
 सोय । कहौजगतमहँ आइफिरि कसन दंडबुधहोय ॥ चौ० ॥ भट-
 कतही धीती तरुणार्द्ध ॥ जरादेह मधि तेव निथरार्द्ध ॥ तृष्णावढी
 अमलतन भयऊ । तवहूँनईश चरण मनदयऊ ॥ अल्प दृष्टि पद
 दौधर हरहीं । बैठिउठहि तब अतिबलकरही ॥ इन्डीसकल भई
 बलहीना । कामादिकातनते भोक्षीना ॥ पौरुषविन उद्यमनहि
 होई । प्रिययाउक पूँछत नहि कोई ॥ क्रोधवढो नहि धरणि सि-
 राही । कहैतीति त्यहिअति अलसाही ॥ बैठरहँ जडरूप दुवारे ।
 जातनिकट कोउनाहिं पुकारे ॥ गयोबुढ़ाय गिधिल तन भयऊ ।
 ईश्वरचरण धिंतनहिं व्रमऊ ॥ दो० ॥ पद विकार जे देहमें धीती

तिनमहँपांच । छठी आइ नियराइ रहि तवहुँन हरिपद पांच ॥
 (मनउवाच) पट विकार कासो कहत कहौ मोहि समुझाय ।
 जिन्हैंजातिकै मानिभय हौंसुमिरौ सुरराय (बुद्धिरुवाच) नौ० ॥
 जन्म होत यह प्रथम विकारा । दूसर तनकर बढ़त विचारा ॥
 तीसर बालअवस्था भाई । चौथीभणत विवेध तरुणाई ॥ पंचम
 जरा अवस्था सोई । पष्ठम अन्तकाल जोहोई ॥ पट विकार ये
 कहीबखानी । तेतुम सत्यलेहु मनमानी ॥ इनमहँ पंचम बीतै
 लागी । भयो न जीव ईश अनुरागी ॥ बीती जरा अन्त
 नियराना । जगगति भई सो करौ बखाना ॥ बाण्यो कफ लाग्यो
 गलतोई । अन्न पानि कहै रुचि नहि होई ॥ ऊरधश्वासचली तन
 माहीं । चन्द्रसूर सन्मुख कउनहीं ॥ जहँ तहँ कफ उगिलहि
 उबकाहीं । पड़ेरहैं जल अन्न न खाहीं ॥ प्रमदा पुत्र सकल अन-
 खाहीं । कहैं ईश अवये मरिजाही ॥ यह विनोनपन अवन मु-
 हाई । हारिगये करिवैद्य उपाई ॥ कठिनकराल दशायह भाई ।
 धर्मन करो जो होइ सहाई ॥ जस माखी मधु जोरि न खाई ।
 छीनेकोल मनहि पछिताई ॥ तिमिसंपदा जोरि गृहमाहीं । दई
 बराटिक हरिहित नाहीं ॥ प्रथमजीव ऐसो अघखानी । तासु
 पाप किमि कहौ बखानी ॥ जन्म समस्त वृथा जड खोयो । सं-
 पतिहित सुखनीद न सोयो ॥ दो० ॥ जोदश दोषनसों भरी देह
 जीव उपहिवासु । समनचार करिकोप त्यहि चहैछडावनआसु ॥
 मुदगर फाँसी हाथलै आये यमके चार । तिनके देखतही विबुध
 रहीन नेकसम्हार ॥ चौ० ॥ द्वैभयभीत तुरत मलमोचा । ता-
 हूसमय न हरिहित शोचा ॥ हनि मुदगरन डाल गल फाँसी ।
 काण्योजीव दशौदिशि गाँसी ॥ प्रियातनय सेवक परिवारा । ख-
 डे सकलकृत शोच विचारा ॥ नेकन वश काहूको चाला । यमदू-
 तन कीन्हो बेहाला ॥ मारिकूटि यमत्यहि लैगयऊ । संगी तासु
 कोउनहिं भयऊ ॥ जिनहित सिंगरो जन्मगँवाया । प्रियसुतकोउ
 कामेनहिं आया ॥ यमपुर भयो न्याय जवजई । रक्षक धर्म न

ठहरो भाई ॥ नहिं हरिभजन न परउपकारा । तीरथ बत नहिं
 नेक अवारा ॥ दो० ॥ सतसंगति इत्यादिजे उत्तम जगमें काज ।
 तेनेकहु पायेनही तबशेचे यमराज ॥ चौ० ॥ महा अगम यह
 जीव चढारा । हरिहित नेकन कीन्ह विचारा ॥ कहा दण्ड दीजे
 यहशाचै । ताअवगमुझि नैनजल मोचै ॥ फिरिहरि मायहि शीघ
 नवायो । भीमरूप निजदूत बुलायो ॥ कहो डारु यहि कुम्भी-
 पाका । हनै चोच शिर खुलतै काका ॥ धरि भुजदूत डार तहँ
 जाई । जामधिपरे जीवअकुलाई ॥ अमकरणी कीन्हीजगमाही ।
 कहौजीव कसनरक न जाहीं ॥ यहिविधिजीव नरकमहँ वासा ।
 रक्षक तासु न कउ दशआसा ॥ ब्रह्मक्रांति यहजीव बरवानो ।
 निजकरणीते नरकहि सानो ॥ दो० ॥ वरणि समस्तकही सुहै
 जीवनरक उनींवासा । अब जोपूछै सोकहीं कूटै भवभय प्राप्त ॥
 (मनउवाच) कहे दोपदश प्रथमतुम सो भवहिकहौ बुझाइ ।
 संशय तनको जाइमिटि ज्ञान अधिक सरसाइ ॥ (बुद्धिरुवाच)
 चौ० ॥ सुनुदश दोय सहित विस्तारा । योगीजन जो करत वि-
 चारा ॥ प्रथम शौचभापत बुधिवाना । द्वितियेतनहि अशुधता
 साना ॥ तृतियेतन दुर्गन्धि कहावै । चौथे बहुत खण्ड बुधगावै ॥
 पंचम रोगग्रस्तै तनयेहा । षष्ठमजै काष्ठवत देहा ॥ सप्तम मरै
 देह सबजानै । अष्टम शिथिलहोय पहिचानै ॥ नवम बहुरिहोवै
 यहजानो । दशम स्थूलरूप अनुमानो ॥ अब जो अपर चहैसो
 गाऊं । निर्मलमति विज्ञान सुनाऊं ॥ येदशदोष बसै तनमाही ।
 अन्तसमय समस्त मिटिजाही ॥ (मनउवाच) दो० ॥ क्यहि
 विधिकूटै नरकते कहुतू मोहि बुझाइ । कासायै यहिदेहमें जासो
 हरिपुरजाइ ॥ (बुद्धिरुवाच) जो पटउर्मी जीतई मिटै सकल
 तनताप । होवै जीवनमुक्तनर देखै आपाआप ॥ (मनउवाच)
 सो० ॥ पट उर्मीका आहि यहमोको समुझाइ कहु । फिरिहौ
 जीतौ ताहि मेटीतनकी तापसब ॥ (बुद्धिरुवाच) ॥ चौ० ॥
 प्रथमकाम अतिबिदुय कराला । जावथ सबजगजीव विहाला ॥

द्वितिये क्रोध पापकरखानी । विकलहोत जावय, सबप्रानी ॥
 तृतिये लोभ महादुखरासी । सकल जगत गलडाल स्वफांसी ॥
 मोह चतुर्थ वृजन गृहजानो । नरकजीव तावय अनुमानी ॥
 पंचम भानवसै तनमाही । हरिचरित्र ज्यहि कुछ न सुहीही ॥
 षष्ठमतन अपमान कहोई । ज्यहिते जीवहि अति दुखहोई ॥
 ये पटउमीमंतवरानै । समुझहि चतुर जेज्ञानहिजानै ॥ जीवन-
 मुक्तहोइ इनजीते । नरकजाइ इनके हितहीते ॥ (मनउवाच)
 बोहा ॥ मोहादिक जे तुमकहे व्यापत सबकीवेह । का उतपति
 किमि जीतिये कहिये सहित सनेह ॥ (बुद्धिरुवाच) ॥ चौ० ॥
 सुनुउतपति इनकीचितलाई । सबप्रतांग तुहिंकहीं बुझाई ॥ वेश
 शरीर बसैमन भूषा । तासुत्रिया द्वैमहा स्वरूपा ॥ एकप्रवृत्ति दु-
 र्भगा नारी । द्वितिय निवृत्ति महासुखकारी ॥ मोहलोभ अरुक्रोध
 कराला । काम कुभोग दुष्टसबकाला ॥ अहंकार मिथ्या द्विजदो-
 पा । हिंसा दम्भआदिसहरोपा ॥ पुनि अविवेककहो पाखण्डा ।
 तृष्णा दुःशीलता प्रचडा ॥ मान अलज्जा आदिकजोई । भयेप्र-
 वृत्ति जातसब सोई ॥ ज्ञान विवेकाचार विचारा । दान धर्म वै-
 राग्य सम्हारा ॥ दो० ॥ शांति दया अरु शीलता समसंतोष अ-
 लोभ । लज्जा क्षमासु चातुरी मनजानिये अक्षोभ ॥ सो० ॥ प्रणय
 न्याय अरु योगसुख इत्यादिक बसैतन । निवृत्ति जातये लोग
 समुझतज्ञानी योगिजन ॥ (मनउवाच) दो० ॥ द्वैमाता एक
 पिताते भयेप्रकंटयेतर्व । वैरभावो कारणकहा मेटौ सख्यखर्व ॥
 (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ विदितवात यहसबजग अहई । वैर
 विमातनमे कुछरहई ॥ और अधिक याते यहकारण । चहैविवेक
 जीवकह तारण ॥ मोहवहै निजपितु सुखदीन्हा । ताते वैरभाव
 उनलीन्हा ॥ जो विवेककी पकरै शरणा । सोखैवै श्रीहरिके च-
 रणा ॥ चलैमोह मारगजोभाई । धर्मरहित नरकहि चलिजाई ॥
 जे पडितजन जगतसयाने । ते विवेककेमारगसाने ॥ अंतसमय
 पावै सोई पद । जो ऋषिराज वेद आगम धद ॥ चलै मोहवश

मूरखजोई । अबशिहोहि नरकागमितोई ॥ दो० ॥ धिरवितकरि
 सजि दुर्मतिहि सुनु विवेक की जीति । ज्यहि विधि हाथ्यो मोह
 बल भाग्योहै भयभीति ॥ चौ० ॥ पूरब कहो बैरकर हेता । अरु
 उत्पत्ति सुप्रेम समेता ॥ अब सुनु कथा रमाल सोहावनि । वि-
 ज्ञानिन कहै अति मनभावनि ॥ गहो जीव जब पंथ विवेका ।
 हरिहि मिलन हित देख्यसि टेका ॥ त्याग्यसि सकलविषयपरि-
 चारा । ज्ञान धर्मकर कीन्ह पसारा ॥ तबहीं शोच मोह मन
 ठयऊ । काम क्रोधकह बोलत भयऊ ॥ अरु पाखंड शोक सता-
 पा । लोभादिकजिन अधिक प्रतापा ॥ सबसंनमिलि यहसम्मत
 फीना । हतौ विवेक दंडदै पीना ॥ तासु सकलदल बांधिसुलेहू ।
 अधवादेश निकारा देहू ॥ दो० ॥ नाइ चरण शिरमोहसो बोला
 सुभट पावड । जीवकरौहैं आपूवंग जीतिविवेक प्रचड ॥ सो० ॥
 आपु धरौ उरधीर कितीवार्त यह कृपानिधि । लै असत्यरणधीर
 जीतिसमर बाधौरिपुन ॥ चौ० ॥ असकहि चलो सुभटपावडा ।
 निज स्वरूप तब रचो अखंडो ॥ झूठा शिष्य संग त्यहि ढोलै ।
 जो प्रतिक्षण असत्य बच बोलै ॥ रचे विभूति सर्व तन माहीं ।
 सुन्दर जटा सुशीघ्र स्वहाहीं ॥ माला गले परी है चारी । कान
 शीघ्र बहु नाल सम्हारी ॥ मध्य दंड माला भुज छोरा । छाती
 कांथ माल है जोरा ॥ टोपा लाल शीघ्रपर सोहै । सुभग कम-
 ढल कर मधि जोहै ॥ आवत देखि जीव सतभावा । मध्यवाट
 गृगचर्म डसावा ॥ निज माया पाखंड पसारी । झूठशिष्यसो
 बैठ अगारी ॥ जिमि बक रंगे चोचिपद नैना । वनै हस कछुहै
 न वैना ॥ निर्णय जल पय जव परिजाई । तब सिंगरे जग होइ
 हँसाई ॥ तसपाखंड कीन यह माया । लखि स्वरूप जीवहिभल
 भाया ॥ कीन्ह दंडवत पद शिरनाई । चहै किंचलि आसनढिग
 जाई ॥ दो० ॥ कही तबहि ता शिष्यने सुनुरे मूढ़ गवार । पाछू
 गुरु ढिग जायमी प्रथमहि चरणपखारि ॥ नेकहु कीन्ह विचार
 नहि निराचार तू आहि । पदवी शिष्टाचारकी सोतू जानत नाहि ॥

चौ० ॥ ब्रह्म सभा शुभ देव समाजा । शोभित जहां दशौ दिगरा-
जा ॥ एक समय तेहि सभा गये गुर । देखतही उठठाढ़ भये सुर ॥
ब्रह्मा बहु विचार उरलावा । इनहि योगनहिं आसन पावा ॥ तव
पद बंदि दीन कमलासन । दौकर जोरि मांगि अनुशासन ॥ सो
सुर पूज्यगुरु ममराजै । पुण्यस्वरूप महाछवि छाजै ॥ तिन ढिग
धलपद बिना पखारे । तैमूरख अज्ञान महारे ॥ यह सुनि जीव
सत्यकरि जाना । तासु वचनकी कीन्ह प्रमाना ॥ शोचकरै शिक्षा
यहिलेऊं । अपरवात सिगरीतज्जि देखूं ॥ दो० ॥ जव जान्यो जीवहिं
भ्रमत तव पाखो सझाव । हारिविवेक विचारि उर समुझि आपनो
दाव ॥ चौ० ॥ सुनुरे जीव भूलमति भाई । जनियाकी बातन पर
जाई ॥ शिष्य झूठ अरु गुरु पाखण्डी । लोकलाज सिगरी यहि
छयण्डी ॥ जगत सकल छलिवेके काजा । कीन्ह सम्हार देह करसा-
जा ॥ जोलखि भूलि जाहि जग लोग । सहै महा दुखदाय वियो-
गा ॥ यह सुनि दम्भ आपु इमिकहई । बडसझाव छलीतू अहई ॥
प्रकट कहानी यह जगमाही । आपन सम कोउ दूसरनाही ॥ सुनु
तो कहूँ भलिवात बताऊं । पुनि अपने मारगमहूँ लाऊं ॥ प्रथमहिं
तन कहूँ नीक सम्हारै । ता पाछे पुनि वेद पसारै ॥ दो० ॥ अशुभ
रूप जग जेधरे, यद्यपि महा प्रवीन । आदरतदपि न करत कउ करत
सभाते भीन ॥ चौ० ॥ याते भल शरीरका साजै । विविध भांति
आनंदसो राजै ॥ दानदेइ जग लहै बड़ाई । परधन हरै हेत
गुरुताई ॥ बिन स्नान न जल मुखमेलै । करि पूजन पापन कहूँ
ठेलै ॥ यज्ञकरै जप भांति अनेका । नेम सहित कूटैनहिं टेका ॥ तू
कुवेप अरु धर्मन जानै । कहुकहनी तोरी कोमानै ॥ धनाचार तव
संग नशाई । बिन अहार वसनन विनु भाई ॥ काहि स्वाहा ऐस
दुखसाधा । सुनतै वचन पीठिये माथा ॥ तव सझाव नीति मय
बानी । कही विवेक विरागइ सानी ॥ दो० ॥ सुनु कहनी मम
ध्यानधरि कहों तोहि समुद्राय । भूषण वसन अनेकविधि त्रियतन
अधिक सोहाय ॥ चौ० ॥ तनशोभा अरु अधिक बङ्गारा । कैशो-

भक्त नृपकै धनवारा ॥ दीन चहै नृप समतन साजा । निज दिशि
 देखिल है षडिलाजा ॥ कहां वसन भूषण वेपावै । जो शरीर नृपसम
 सजिलावै ॥ नृपसो वत भलिसेज धनाई । दीनधरा पर प्यार द-
 साई ॥ भूपति सुखित जन्म सबकाटै । दुखिया तन चिन्तानित
 चाटै ॥ रहै सदा स्वाधीन नरेणा । पराधीन परजासु कलेशा ॥ वर्तै
 मध्यभाग हरिदासा । नहि भूपेति नहि दीन दुरासा ॥ जसमहि परै
 सेज तससोवै । दुखसुख दुहुं धातको खोवै ॥ दो० ॥ कवहुं भो-
 जनभूपसम कवहुं क फल आहार । दुहुं वातते रहित कहु ब्रतहरि
 हित अनुसार ॥ चौ० ॥ कहु शुभ वस्त्र नग्न कहुं रहई । वस्त्रकल
 कतहुं पहिरि सुद लहई ॥ दुख कहु सुख पावै जगमाहीं । मान
 अमान विचारत नाही ॥ जव यह दयाजीव कहँ आवै । तव हरि
 मारग भल लखि पावै ॥ जन्ममनुष्य भयो यहि हेता । भजै ईश करि-
 कै चितचेता ॥ नहि यहि हेत जो चहै बड़ाई । भूषण वसन न स्वांग
 धनाई ॥ निज शरीर कर करत सन्हारा । ईशभजन सब भाति बि-
 सारा ॥ करि पाखण्ड जगत छलियावै । सो प्रभु नहि ठगनी महँ
 आवै ॥ देखै तिहू लोक बिन अंजन । यहि कारण हरिनाम निरंज-
 न ॥ ईश्वर नहिरीझत लखिरूपा । मोहत लखि निज दासकुरूप ॥
 रूपधंत धनवत नरेणा । होत न संत समान विदेशा ॥ जो पाखण्ड
 पथतव गहई । निश्चय अंतनग्न सोलहई ॥ पुनिकरि कोप कहै
 यह दुम्भा । बलिहरि हितकिय यज्ञचरंभा ॥ दो० ॥ दान दियो
 बहु यज्ञ करि बलिहरिचन्द नरेश । दयाभई सो विदित जग सुनि
 पाइयत कलेश ॥ चौ० ॥ व्याध अधम सहजै गति पाई । गृद्ध
 सेवरी हरिपुर धाई ॥ गणिका अजासील अवखानी । जिनन
 विवेक वात कउ जानी ॥ कुजर पशु इत्यादि अनेता । लही
 सुगति तजि पथ विवेका ॥ वेदशास्त्र सब करै विवादा । समुझत
 जीवहि होत विपादा ॥ कोऊ ईश शंभु कहँ टेरै । कोऊ जगत
 मात दिशि हँरै ॥ विप्रकोऊ हरि गणपति भाखै । कोऊ टेक सूरपे
 राखै ॥ वसत जीवदेही महँ जोई । कस बेदान्त ईश है सोई ॥

झेगरा यह न होय निरुवारा । ताते कुछ नहि पंथ तुम्हारा ॥
 ॥ दो० ॥ कहु पुनि गहि केहि पंथको लेवै ईशरिझाइ । तव स-
 द्भाव अनंदयुत कही ताहि समुझाइ ॥ चौ० ॥ तजि इच्छा अरु
 मान गुमाना । गहै बुद्धिकर ज्ञान कृपाना ॥ कोटि मोह फांसी
 निज हाथा । ज्ञानी मुरूपनको करि साथा ॥ भजै ईश दुखसुख
 दौ त्यागी । दया धर्म सौहं, अनुरागी ॥ योगभाव आत्म निज
 हेरै । अदा सहित ईश कहै टैरै ॥ यहि विधि सो तजि राख पा-
 खंडा । अन्त मुक्ति सोलहै अखंडा ॥ सुनिपाखंड घयनसद्भाव ।
 लज्जायुत अध शीघ्र नवावा ॥ बहुविधि मन विचारकर सोई ।
 तूझिपरा नहि उत्तर कोई ॥ अतिदुख सह मृगचर्म उठावा ।
 अमित भांतिकृत मन पछितावा ॥ दो० ॥ हारिपरा खलबला
 गृह मिल्यो मोहको जाय । समाचार सद्भावकर सर्व कहा समु-
 द्भाव ॥ मोहराज अति दुखित है कामहिं कहा बुझाय । जाहु
 तात पौरुष करो जीव लेहु अपनाय ॥ जीव संग सद्भावइत कह
 विवेक सो गाथ । हारि जानि पाखंड की हर्षितभो संघ राथ ॥
 सुनो घृतांत विवेकजू काम कीन्ह दल साज । तब विचारको प्र-
 बल लखि पठया जानि अकाज ॥ चौ० ॥ चला कामकरि आपु
 वनावा । सुमनवान निज धनुष चढ़ावा ॥ संग ऋतुराज उर्वशी
 नारी । राग शनिनी ताल सम्हारी ॥ कोकिल पिक अरु तिहु
 गति घाता । मदन दाह उपजै लखि गाता ॥ देखि जीव भल
 ठाठ घनावा । यहि अवगार विचार तहँ आवा ॥ ललि विचारि
 बोल्यो तव कामा । सुनरे जीव वचन सुखधामा ॥ सुना तु भो
 सद्भाव संगती । तजि सुख संग घैठदुखपांती ॥ विधि तनदीन्ह
 भोग हित लागी । तू मतिमद दीन्ह त्यहि त्यागी ॥ ताते प्रवधि
 त्यागि सद्भाव । त्यहिं शिपदेन हेतुहैं आवा ॥ दो० ॥ घृष्टा
 विष्णु हरादि सुर सर्व करत त्रियभोग । जाते अधिऊन औरकउ
 सुखभाषत बुध लोग ॥ चौ० ॥ ॥ तब विचार कह सुनु रतिना-
 यक । अति निलज्ज तव संग कुभायक ॥ जो बडनीक भोगतुम

कहऊ । जासु गर्व अति भूलत अहऊ ॥ तासु वृतांत सुनौ वित
 लाई । पाछू जीवहि देहु भुमाई ॥ त्रियभग अवितरक्तमोरहई ।
 अरु मल मूत्रभरी बुध कहई ॥ जासु दयासुनि मनछिन आवै ॥
 परसतही नर नरक सिधावै ॥ ऋतु वसंत अरु तीनि वतासा ।
 सुमन बाण लखि मोहिनप्रासा ॥ परतिय रमण करतजेप्राणी ।
 दुहुं लोक कृत निज करहानी ॥ इत नृप सुनै तुरत धरि मारै ।
 उत यमदूत नरक गहिदारे ॥ दो० ॥ हँसीहोयदुहुं लोकमें कहा
 भोग या माहिं । करै कही तुव जीवसौ हमनहोहिज्यहिपाहिं ॥
 यह सुनि खल निज हारिं लखि गयो गेह अकुलाय । मोहराज
 सौं हारि निज कही महा दुखप्राय ॥ चौ० ॥ धोला नृपतिक्रोध
 अपुपासा । कहो मेदु अन्न मम परिहासा ॥ नीति चमू बांधिये
 विवेका । करिय जीव निज वधरहै टेका ॥ छूटै पिताकरै बहुभो-
 गा । नतवियोग यहिमरिहैं लोगा ॥ चलयोक्रोध आजातामानी ।
 अदया हिंसादिक मन आनी ॥ समाचार यह पाव विवेका ।
 धोलि क्षमा कहूँ जोकर नेका ॥ क्षमा अहिंसा आदिक धाई ।
 जहां जीव तहँ तुरतहि आई ॥ क्रोध क्षमालखि नवअसकहई ।
 मोदेखत तुवधर्म नरहई ॥ अर्जुनअसज्जानी जगख्याता । निज
 कर आपन कुलहि निपाता ॥ दो० ॥ परशुराम माताहनी ब्राह्म-
 ण मारो राम । शंकर सुत माथा हरो कीन्ह्यो बड़ो अकास ॥
 सो० ॥ यह पौरुष है मोर मोविन जग जीवै न कउ । मारग
 चलै न तोर मो सन्मुख कोटिहु किमे ॥ चौ० ॥ तपसी सुनिहीं
 पने बिडारे । आन जीव जग कहा विचारे ॥ क्षममहं क्षमा
 दयाधरि मारी । बाधि विवेक धंदि रहडारी ॥ पलहित पशु
 पक्षीपरहेता । द्रव्य लागि मानस हनि लेता ॥ पौरुष कौन
 जीव अपनायो । मोर नाम कहूँ सुनि उनपायो ॥ तबहि क्षमा
 क्रोधहि समुझायो । सत्य वचन तुममोहि सुनायो ॥ जहँ हम
 जाहि तहाँ तुम नाही । विदित अन्य सिंगरे जगमाही ॥
 हरिश्चन्द्र क्रोधहिनिहिं लावा । चांडाल रहआपु बेचावा ॥ मोर-

ध्वज निज शीघ्रचिरावा । धर्मराखि तन क्रोधदुरावा ॥ जव कउ
 आय मुष्टिकामरै । तासन लकुटी हनन प्रचारै ॥ जो दुरिआय
 देयकरि क्रोधा । जायपास विनती करिबोधा ॥ सधसन मधुरी
 भाषैवाता । शत्रुमित्र करलखैन नाता ॥ परदुख देखि दुःख मन
 लावै । सेवाकरि ता दुखहि दुरावै ॥ दो० ॥ तपसीमुनि घण्डाल
 नर पशुपक्षी अरुकीट । येसमस्तहैं ब्रह्मलव हनैयोगसुनु ठीट ॥
 नैनलालउर कोपबड होरिचला गृहसूत । ज्यों पौरुष लघुकहैवडि
 लज्जालहैं कपूत ॥ चौ० ॥ जाइक्रोध निजहाल सुनावा । मोह
 राजमनभा पछितावा ॥ ताहीसमय लोभ हँकरावा । काम क्रोध
 वृत्तांत वतावा ॥ सुनतलोभ तनभा अति कोपा । क्षण महुँ करौ
 विवेकहि लोपा ॥ धाड़चल्यो जीवहि अपनावै । अरु विवेक ढल
 समर हरावै ॥ जव विवेकने यहसुधिपाई । सपदि दीन्ह सन्तोष
 पठाई ॥ लखि सन्तोष लाभयह भाखै । मो तन्मुख तोकहैं को
 रावै ॥ ब्रह्मचर्य वैरागीमेही । लोभलालसा लागि न केही ॥ जव
 वराटिकाकी भैचाहा । ईश्वरकीन्ह तोपैसालाहं ॥ तबमुद्रायाचैभ-
 वप्रानी । मुद्रास्वर्ण पावसुख खानी ॥ नहिसन्तोष सम्पदा चाहा ।
 मिलै अधिक धनसो उरदाहा ॥ यद्यपि क्षयपतिपद मिलिजाई ।
 तदपिन उर सन्तोष दृढ़ाई ॥ दुखियायह विचार नितकरई । परो
 मिलै कीपरधन हरई ॥ दो० ॥ पशुपक्षी इत्यादिजे मोहितत्यागत
 प्राण । मोविन सुखपावत नही तोहि तजतकहि रंघान ॥ ताते
 जाहुपराय गृहहानि आपनी जानि । जीवलियो अपनाइ हेम
 त्यागीतेरी कानि ॥ चौ० ॥ तव सन्तोष कहैसुनु भाई । ऐसियहै
 तुम्हरी प्रभुताई ॥ बलिराजा पहुँ गयउत भूले । रह्योसिराय भये
 अनभूले ॥ हरिश्चन्द्र करदुख नहिलागा । लोभनारि सुततन जिन
 त्यागा ॥ परशुराम कहैं नहिअपनावा । यक विद्यतिथा धरा बहा-
 वा ॥ स्वर्ण अतौल लड्डू रघुनाथा । दीन दान जग गावत गाथा ॥
 करणहि कय नहि आनि सिखावा । प्रात नित्य अर्जुनहिं लुटा-
 वा ॥ मूरख अविवेकी अज्ञानी । तुष पथ चरण देतते प्राणी ॥

सपति दुख सुख लिखा लिलारा । विधि-अक्षरको मेटनहारा ॥
 दो० ॥ देवत ईश्वर लहतमो करत ईशतो होत । यांचतवाप्रभु
 सोमदा सकल हमारी गोत ॥ विपतिपरे सब धन नष्ट दुख उ-
 पजै भरपूरि । लोभ न लावै भजै प्रभु राम सजीवन मूरि ॥ यह
 सुनि लोभ परायचल विजय लही संतोष । गहो जीव मारग
 सुभग जाते पावै मोष ॥ चौ० ॥ लोभ अजय सुनि मोह रिता-
 ना । पठवाई अहंकार बलवाना ॥ इतहु विनय आपनदलसाजा ।
 विजय विवेक होत मन भूजा ॥ को घहु बकै हार अहंकारा ।
 प्राहि प्राहि ढिग मोह पुकारा ॥ अकथ दुःख पायो तब मोहा ।
 निजदल सकल अवलकरि जोहा ॥ तब आपुहि उठिबला नृपा-
 ला । तासु चलत तन भूतल हाला ॥ सुन्यो विवेक मोह चलि
 आवा । प्रथमहि धीरज आपु पठावा ॥ तापश्चात् शोचकृत आपू ।
 मोहराज कर अधिक प्रतापू ॥ अस न होइ कहुं धीरज हारै ।
 करि प्रपंच भूपति त्यहि टारै ॥ दो० ॥ उचित मोहि पाछे चलीं
 हनौ सकल आराति । उत धीरज कहूँ देखकर मोहराजमुसका-
 ति ॥ सो० ॥ सुन धीरज ममबैन कहौ जाय निजनाथसों । उचित
 बात यह हैन धा० यो पिता अनोति करि ॥ चौ० ॥ अस भणि
 मोह कोह उरलायो । करिबल अमित जीव अपनायो ॥ अरु
 धीरज प्रतिकहूँ असि बानी । जाहु तात नतपैहौ हानी ॥ जो
 तुम्हार पयसग्रह करई । प्रियातनय निज धन परिहरई ॥ वा-
 हन वसन विविध भंडारा । राज्य द्रव्य भूषण परिचारा ॥ सोदर
 अति प्रियसदन समाजा । मिश्र पिता माता सुखसाजा ॥ तुरी
 भूमिगज अखसमेता । दासीदास जेनितमुखदेता ॥ गोधन आदि
 विभूति अनेका । इनतजिलै काकरिय विवेका ॥ हिलिमिलि
 सबसन कीजियनेहा । कर्बजानिय छूटै यहदेहा ॥ दो० ॥ सब
 कर करि प्रतिपाल नित धनपरिवार बढ़ाय । निजधन सो अप-
 नाइये औरकी लेइपचाय ॥ सो० ॥ मोहवचनसुन जीव तामार-
 गसेवन चहत । त्यागन सुखकी सीवतब धीरज असकहतभो ॥

चौ० ॥ सुन हमार मत मोहसयाने । ममवेखत तुम आशुपराने ॥
 शूरन सग सदा हम ढोलैं । मोहलीन जे बचन न बोलैं ॥ काकी
 त्रियकको सुतगेहा । समरभूमि त्यागत निजदेहा ॥ कायरकूर
 तुम्हार संगती । जे हमरी पावत नहिं भांती ॥ सतीशरीर हमारुच-
 वासा । भस्मकरत तनतजि सब आसा ॥ संपतिघटै बटैचहुं भाई ।
 मनहमार नहि ककुअकुलाई ॥ यहिविधि धीरमोह बतलाता ।
 एक एक की सुनतन वाता ॥ त्यहि अवसर विवेकर्तहूँ आयो ।
 विविध भांति जीवहि समुआयो ॥ दो० ॥ जन्महोत तननग्नहीं
 अंतहुं चलतउधार । ध्यानधरौ ममवचनपर नशैमोहव्योहार ॥
 चौ० ॥ जवरण अत्रुनसो कठिनाई । त्रियात्मनय सब छूटतभा-
 ई ॥ धीरजही तब आवतफामा । सपति भवनरहै सबदामा ॥
 अतसमय जब यमचर आवैं । मात पिता दासीन बचावैं ॥ धा-
 हन तुरीगयन सबछूटैं । पटभूषण आपुहिते टूटैं ॥ यमचर वा-
 यि दशौदिशिघेरी । दुर्गतिकरै जीव सुनतेरी ॥ जिह्मेमोह आपनो
 बतवै ॥ तेसिगरे यहनै कुटिजावैं ॥ आपनि नारि बतवावत जाही ।
 पुत्रकहत माता निजवाही ॥ तासोवर निज भगिनि बतवै ।
 तासुपिता कन्याकरि गावै ॥ ऐस्यइ पितुमाता सुतबाला । कल
 तुम्हार साझिनकर जाला ॥ सदन आपनो जाकहूँ भापौ । की-
 टालय ताकहूँ अभिलापौ ॥ पशुजानत निजगृह करि ताही ।
 पक्षीश्वान मूषबध जाही । मंजारी आदिकजे देही । निजघर स-
 मते सकल सनेही ॥ दो० ॥ कहौ तुम्हारा कैस गृह ये समस्त
 सझियार । त्यागि मोह ताते चतुर करु हरिमिलन बिचा-
 र ॥ मोहपराजयप्राप्तभो भैविवेककीजीत । जीवगहो तबसरथ
 पथ हरिसो वाढी प्रीत (मनउवाच) ॥ चौ० ॥ गहो जीवजबमारग
 साँचा । पुत्तिकसकीन्ह कहौ मतराँचा ॥ (बुद्धिरुवाच) जब विवेक
 जीवहि अपनायो । तब ताकहूँ निजपत्न्य बतायो ॥ कहिनि सा-
 धनाचारि विचारी योगी जन जेकरत नियारी ॥ प्रयस विरा-
 गरूवसिखरावा । ता पाके निज अंग बतवा ॥ अम दम कहि

मुमुक्षु पददयऊ । जीव कृतारथ असकरि भयऊ ॥ पुनिमनप्रश्न
 कीन्ह शिरनाई । सकल वृतांतकहौ समुझाई ॥ का विराग का
 अहै विवेका । का शमदम मुमुक्षु का टेका ॥ करै साधना ये नर
 जोई । परख कहा लक्षणकहु सोई ॥ दो० ॥ सुनो तात दृष्टान्त
 शुभ परख साधनाचारि । अस्तव्यस्त निर्णयनकछु कहौ सकल
 निरधारि ॥ चौ० ॥ ब्रह्मादेव राज अहिराजा । यक्षप वरुण सूर
 यम भ्राजा ॥ भूपति रक्धनी सुखखानी । कामी कुटिल गुणी
 अज्ञानी ॥ तिहुँपुर देहधारि जे प्राणी । जो कृतभोग अधिक सुख
 मानी ॥ सो सभस्त दुखदा अनुरागी । काकविष्ट सम लखै वि-
 रागी ॥ अस्मिति जासु देखियेभाई । सो वैराग्य योग स्वयका-
 ई ॥ देह अनित्य सदा छलकारी । आत्म नित्य स्वच्छंद बिहारी ॥
 सारासार शुभाशुभ जानै । सो विवेक मारग पहिचानै ॥ सकल
 वासना तजिससारी । शम दम दान दया अधिकारी ॥ दो० ॥
 विषयदोष निरखै नही दुखसुख लखै समान । आज्ञा गुरु श्रुति
 शीघ्रधारि विचरै जगत सुजान ॥ अति अद्धा यक चित्त है ध्यान
 समाधि लगाय । ताहि समाधी कहत जग योगिराज सुखपाय ॥
 चौ० ॥ आवागमन त्यागहितभाई । बहुविधि करै योग चितलाई ॥
 वासररैनि ईशपद ध्यावै । सो मुमुक्षु पदधारि कहावै ॥ यहि विधि
 सकल साधनासाथै । भजे आपु आत्मनिरुपाधै ॥ पूंछि बहुरि मन
 यह बुधिपाहीं । चित्त अहमन बुधितन माहीं ॥ वसत सकल गावत
 कविराजा । निर्णयकरि वरणीतिनसाजा ॥ सुनो तात तिहुँपुरकर
 ज्ञाना । वसत चित्त बुधकरत बखाना ॥ प्रथमहिं जो विचार कछु
 आवा । चित्त वहै अहिजीव चितावा ॥ करिलेहौं देहौं मैयेही ।
 शोचत यहै अहकहु तेही ॥ दो० ॥ बहुविधिकरै विचार जो काज
 सिद्धिकेहेत । सोहै मनमन जानिये वरणत बुद्धिनिकेत ॥ सब
 को धिरकरिदेइ जो सुन्दरसिखदैतात । सो बुधि जाउ पदेशते काज
 सिद्धि है जात ॥ येई अतः करणमन भापत बुधजनचारि । अन्य
 भावना होय जो सो वरणी निरधारि (मनउवाच) लोग कहत सं-

सारके करणयोग तिथिवार । ऋक्षसहित पंचांगशुभ करतसुसिद्धि
 विचार ॥ चौ० ॥ जबपंचांग अशुभ यहहोई । सिद्धिकाज तवहो-
 य न कोई ॥ तहां कौनविधि करिज करई । होइ न हानि लाभ
 संवरई ॥ सोविचार म्वहिकहौ कृपाकरि । द्वै प्रसन्न उरअधिक
 दयाधरि ॥ दिशाशाल योगिनी बतवै । चन्द्र राहु शुभ अशुभल-
 खावै ॥ करै न गौन हानि अनुमानी । जंबये अशुभलखै जगप्रा-
 नी ॥ विष्टमुहूर्त विचारत पंडित । कारज कृतलोह सगुन अखं-
 डित ॥ योगीजनन विचारत सोई । गौनसिद्धि कारज सिद्धि
 होई ॥ यहसिद्धांतकहौ समुझाई । ममदुविधा सबजाइ नशाई ॥
 दो० ॥ गेहीजन रोगहिलहत औपधि करत अनेक । रुष्टपुष्टयोगी
 रहत विनऔपधि गहिटेके ॥ मज्जन भोजन येन लघुशका शंका
 जौन । इनहीके विपरीतता होत रोग रह तौन ॥ इन सबको
 मिद्वान्त जो मोम्वहिकहौ बुझाय । पांचतत्त्वको रमणतन ताहि
 येह समुझाय (बुद्धिरुवाचे) चौ० पूछसि भलविचार सुखखानी ।
 कहिहौ सकल सुमिरि पदवानी ॥ यहपंचांग सत्यकरि जानों ।
 शुभअरु अशुभहिचे अनुमानों ॥ ज्योतिषमत न योगमतभाई ।
 सबविधि सिद्धिसिद्धि मनपाई ॥ तिथि अरुवार योगशुभहोई ।
 सकल सिद्धिदा अशुभ न कोई ॥ सबहि उचित सबकरै विचारा ।
 ग्राहीकर विशेष निरधारा ॥ ज्यहि मतयेन शुभाशुभ भापै । सब
 विधि मंगलसिद्धि प्रकारै ॥ सो सुरज्ञान सुखद सबभांती । ध-
 रिय ध्यान तापर दिनराती ॥ वरणी सुरज्ञानहि बिस्तारी । निज
 मतिसम लखि ग्रय पछारी ॥ दो० ॥ यह समुद्रवत ज्ञानहै बीच
 थासको गौन । निर्णय कारज जगतको जलजीवन समतौन ॥
 तत्त्वनको निरधारजो सो अगाधता जानु । बहु प्रकारके भेदते
 मिलत सरितवत मानु ॥ तासमुद्रके पारको जानचहै नरकोय ।
 दोहित विन आरुढमे पारजाय किमिसोय ॥ चौ० ॥ एकपरतु
 मोहिं बलुभाई । करैस्वामि गुरुमोरि सहाई ॥ आशिष तरणि
 आपुके बारा । बनेतो बेगिहि होइ उतारा ॥ करिहै सो सहाइ

जनजानी । भवहिंभरोस यहमनक्रम वानी ॥ ताते । बन्दिजलज
पद गुरुकै । निर्णयकरै ज्ञान सुरफुरकै ॥ सुनो गुरोदय ज्ञान
रसाला । कहो उमापति शंभु कृपाला ॥ नाडी धित बहुविधि
तनमाहीं । जानतबुध मूरख जननाही ॥ नाभि अश्रोखग अंड
समाना । सबनाडिनकर स्वडअस्थाना ॥ अथ ऊरध तिछीं घहुं
घाई । सहम बहत्तरि नाडि सिर्धाई ॥ दो० ॥ तिनमहँ दशअति
अष्टहैं प्राणस्थित सोजानु । दशमहँ त्रैसुखदा इडा पिंगल सुख-
मनमानु ॥ चौ० ॥ चौथी गंधारी अनुमानो । हस्त जिह्वा पुनि
पूपाजानो ॥ यशस्वनी सातवीं बखानौ । अलंबुपा अरु कूहू
मानौ ॥ और शखिनी कहत सुजाना । येदशनाडी सहित प्र-
माना ॥ अब इनकर विश्राम बताऊ । जगत काजहित ज्ञानल-
खाऊ ॥ इडावाम नासा पुटमाहो । वसत पिंगला दक्षिणताही ॥
द्वौसुर पूरणकरै प्रवाहा । रो सुरुमनो कहत कविनाहा ॥ गंधारी
वामाक्षि निवासी । हस्त जिह्वा दक्षिण हंगवासी ॥ पूपा दक्षिण
श्रुत विश्रामी । वामेऊरण यशस्वनि धामी ॥ दो० ॥ अलंबुपा
मुख बातिनी कूहूलिग विराम । शखिनि मूल स्थानबस दश
नाडी दशमास ॥ त्रैनाडी अतिअष्टजे प्रथमहि कही बखानि ।
तिनहीको सबख्यालहै शुभविचार अनुमानि ॥ चौ० ॥ गायत्री
अजंपा सुखदाई । मोहहमः दुविध बताई ॥ नित प्रतिगौन श्वास
मगहोई । यकइस सहस छत्ती कहु सोई ॥ निरगम श्वाभहँकार
विचारै । सहितविन्दु कोजैनिस्थारै ॥ विसरंगसहितसकारप्रवेश ।
शुभगमत्रयहअहै गवेश ॥ यहिसम मंत्रन जपनहि ज्ञाना । तपन
कर्मविद्यानहि ध्याना ॥ सकल भ्रमना जेजगमाही । जपत मंत्र
ते सर्व विलाहीं ॥ सो वृतात कहिहीं ककुआगे । सुनोतातज्यहि
हित अनुरागे ॥ इडा पिंगला सुखमन जीई । सकल सिद्धि वा-
यक है सोई ॥ दो० ॥ इडावाम पिंगलइहिन नासारंभनिवाम ।
दोनो सुरपूरण चलै तब सुखनना प्रकास ॥ चौ० ॥ इडा चन्द्र
धिर कारज दायक । पिंगल रविचर कारज लायक ॥ सुखमन

सकल काजकी भंगिनि ॥ केवल ईश भजन की संगिनि ॥ जब
 सुखमना श्वासमग होई । तब न काजकीजो जगकोई ॥ सुखमन
 ध्यानअग्नि धितरहई । कारज धिर चरसब सो दहई ॥ इडाचंद्र
 समरूप बखानो । पिंगल भानु बिषम पहिचानो ॥ इडा नारि
 पिंगला पुमाना । सितशशि अस्ति रूपसो भाना ॥ अबसुनुइडा
 काज चितलाई । धिरकारज कीजिय सुखप्राई ॥ अभूषण गढ़
 गढ़ी बनावै । यात्रादान विवाह करावै ॥ दो० ॥ अलंकार मणि
 वस्त्रको वनवाउव तनधार । दानदेव प्रेतिककरम काष्ठकर्मनिर-
 धार ॥ चौ० ॥ स्वामिदरश कीजिये मिताई । वणिज वित्त गृह
 प्रविशिय भाई ॥ सेवा कर्म कृपी आरंभा । बीज बवन मखकर
 प्रारंभा ॥ दिक्षादेइ मंत्रकहुं जपई । विद्यारंभ गेहनिज धपई ॥
 दरश बन्धुअरु बारि प्रधाउव । रस साधन शुभ वाग लगाउव ॥
 बापीकूपसमहल तडागा । करु शशिचार सहित अनुगगा ॥ गीत
 वाद्य नृत्यादिक कीजै । निधिमहि थापि सकल सुख लीजै ॥
 भूमिलेव अरु नगर वसाउव । बहु प्रकार जग धर्म चलाउव ॥
 अपरौकाज लखौधिर जोई । चन्द्रप्रवाह कीजिये सोई ॥ दो० ॥
 इडाकाज वर्णनकिये सुनुपिंगलके काम । दूर होय भ्रम जगत
 हिय होवैज्ञान विराम ॥ चौ० ॥ शास्त्रार्थपुनिकरिय विवादा ।
 चोरीअरु अखेट परसादा ॥ गजबाजी रथवाहनलीजै । दक्षिणचार
 प्रयोगहि कीजै ॥ पाट पटाम्बर शस्त्र मंगावै । भेषज करि विप्र
 भूतहटावै ॥ युद्धगमन दक्षिण सुरकरई । निश्चय जीति शत्रुपद
 हरई ॥ त्रिय प्रसंग करु भानु प्रवाहा । सोवन भोजनादि सुख
 लाहा ॥ क्रयविक्रय सुपुण्य अस्नाना । भयमारग व्योहार सु-
 जाना ॥ मोहन उच्चाटन ब्रह्मकर्मा । अस्तंभन मारणजे धर्मा ॥ खर
 उष्ट्रादि महिष असवारी । गज अश्वारोहण सुखकारी ॥ दो० ॥
 तीरथवत इत्यादिजे चरकारज जगमाहि । रविनाडी महं मिद्धि
 ते होवत संशयनाहिं ॥ सो० ॥ जबसुखमना प्रवाह होवै दोनो
 सुरनमहं । तबनकाज कहजाह अर्थहानि जिय हानिलखि ॥

चौ० ॥ शुभ अरु, अशुभ चरस्थिरकाजा । सुखद दुखद दुहुँ भांति
समाजा ॥ काजन प्रश्न न गौनियभाई । जब सुखमना वाह द-
रशाई ॥ कहूँ दक्षिण सुर वायो कवहीं । लखु सुखमना रूपयह
तत्रहीं ॥ केवलकीजिय आतम ध्याना । उठि न थान ते करिय
प्रयाना ॥ दूरिपन्थ स्वारथ अनुरागे । चन्द्रचारलखिचलौ सभागे ॥
होमसिद्धि सब विघ्ननशावै । अर्थसहित निज गृह फिरि आवै ॥
वामकि दक्षिण जोसुर चलई । ताहि विचारि विबुध मन गुणई ॥
वाम वामपद दक्षिण दाहिनि । द्वेइ प्रथम सब दिशि दुखनाहिन ॥
द्वौ० ॥ ॥ वामचार समपदधरै जैसेद्वै अरु चारि । भानु विप्रम
जिमि तीनिशर यात्रासिद्धि विचारि ॥ वामकि दक्षिण जौन सुर
पूरण होवै तात । तौनी दिशि पूछैचतुर काजसिद्धिहै जात ॥ चौ०
वामअग्र ऊरध दिशिहोई । वहैचन्द्र सुरपूछै कोई ॥ कारजसकल
सिद्धि पहिंचानै । शुभकारी इमि ताहि बखानै ॥ पृष्ठ ओर
दक्षिण अव आशा । प्रश्न करै सुर भानु प्रकाशा ॥ सिद्धि
सर्व ताकहै कहिदीजै । मंगल समुझि सुरोदय लीजै । चहुँदिशि
गौनकरिय क्रमयेही । योगिराज ब्रह्मते हैं तेही ॥ पूरब, उत्तर
रविकीनाडी । गमनकरै तोहोय सुखारी ॥ पदिचम दक्षिण शशि
परवाहा । जाय पुरुष उपजै सुखलाहा ॥ यहि विपरीत गमन
जोकरई । प्राणजायकै संकट परई ॥ दो० ॥ शशिमैं सम अक्षर
कहै जिमि दश द्वादशवीश । वाही दिशिहै प्रश्नकृत होय काज
कहईश ॥ विप्रमवरण होलैचतुर उर्यो नव ग्यारह सात । भानु
उदय दक्षिणदिशा सकल सिद्धिकहु तात ॥ उदय सुखमनाहोय
जब तत्रपूछै जोकोय । अफलहोय कारजसबै कहकवि ग्रन्थनि
टोय ॥ चौ० ॥ ॥ अथ तिथिआदि लग्न अरुवारा । चन्द्र सूरसंग
करौ विचारा ॥ शुक्लपक्ष प्रतिपदा जोपावै । तादिनते शशिउदय
घटावै ॥ तीतिदिवस शशिउदय प्रधाना । पुनि रविबहुरि चंद्र
फिरिभाना ॥ यहिविधि कृष्णपक्ष दिनतीनी । परिव्राते रविति-
थि गनिदीनी ॥ फिरि चन्दा पुनि भानु प्रकाशा । समुद्रत यो-

गिराज सुखवासा ॥ परिवा शुक्लपक्ष शशिराजा । वहै चंद्र उपजै सुखसाजा ॥ कृष्णपक्ष परिवा रवि वहई । सकलानंद दायक कवि कहई ॥ शशितिथि रवि रवि तिथि शशिचारा । अतिकलेश तबचतुर विचारा ॥ दो० ॥ वहै क्षपाकर द्वैजतिथि शुक्लपक्षभरि पूरि । मंगलमत मुरज्ञानके सुख उपजै तनभूरि ॥ चौ० ॥ प्रात समय शशिनाडि प्रकाशा । अरु मध्याह्नहु चन्द्र विलाशा ॥ संध्यकाल दिवाकर चारा । सबविधि सुखद मिटै दुखभारा ॥ रहै दिवसे भक्ति शशि सुरमाही । अन्यभाव डोलै जव नाही ॥ निशिभरि उदय भानुकर होई । अल्पकाल नाशक है सोई ॥ यह संयोग जानि परिहरई । सहि दुख अल्पकाल नरु मरई ॥ पुरुषवत शशि सूर चलावै । पूरण आयुहोय सुखपावै ॥ पांच तत्त्व पूरव जेगाये । जिनकरि सब जीवन तनपाये ॥ क्रम क्रम बहत स्वात्महैं सोई । महिजल पवने शिखी नभजोई ॥ दो० ॥ अहनिशि द्वादश वारतन संक्रम होवत भाय । जगत काजहित हेत सबकहौ सर्व समुझाय ॥ चौ० ॥ द्वादश राशि जगत सब जानै । उदितहोत रवि चतुर बखानै ॥ दृप अरु कर्क कन्यका जोई । वृश्चिक मकर मीनयुतसोई ॥ इनषट लग्ननमहैं शशि वासा । करिय काजलखि लग्न प्रकासा ॥ मेघ मिथुन हरितुला बखानौ । वने घटराज भानु जियआनौ ॥ जो निर्णय आछी विधि करई । तौ येराशि त्रिया उच्चरई । मेपरु कर्क तुला खग जानौ । इनमहैं रविकर योग बखानौ ॥ दृप केशरी कुम्भअलि जोई । योग निशाकर शुभेठा सोई ॥ मीन मिथुन कन्या धन राशी । द्विःस्वभाव सुखमना निवासी ॥ दो० ॥ चन्द्रयोग धिर काजकरु भानुयोग घरसाधु । सुखमनमें सब त्यागिकै निजआ-

भृगु शशिदिन सितपाखा । चन्द्रउदय उपजै सुखलाखा ॥ अस्ति
 पक्ष रवि शनिमहि वालक । डोलै भानु मनौ दुखघालक ॥ यहि
 विधि लग्नवार तिथि जानी । रवि शशियोग सो कहौ बखानी ॥
 काज शुभाशुभ जगके जेते । पूरवयोग जानि करुतेते ॥ होइ न
 हानि कोजकहु भांती । आस निरत जो रह दिनराती ॥ मूरख
 न रह नयहमतदीजै । प्राणहानि धनहानि सहीजै ॥ दो० ॥
 लघुशंका बामेसुरहि शंका दहिने माहि । भोजन सुरपिंगल विपे
 कीजिय सख्य नाहि ॥ बामे करवट शयननित कीजै चतुर
 विचार । यहिविपरीत किये बिबुध होय रोग अधिकार ॥ दश
 दिनके विपरीतते अधिक रोग तनहोय । सो विचार उरराखिये
 हानि लहै नहिं कोर ॥ जौनराशिके होहिं रवि तास उदय
 पहिचानि । लग्न विचारै सहजमत मंगलदास बखानि ॥ चौ० ॥
 अबसुनु तत्त्व विचार रसाला । कहोजौन विधि शंभुकपाला ॥
 पांचौतत्त्व आसमग बहई । सुखद दुखद दोनो विधिअहई ॥
 परखव कठिनयोग विनुजाने । सरल परख जो कहत सयाने ॥
 सोही बदेत सुनो चितलाई । तजि दुविधा देखौ सुर भाई ॥
 द्वादश अंगुल जवसुरडोलै । तवमहितत्त्व भलीविधि बोलै ॥
 पौडशअंगुल होय प्रवाहा । आस तत्त्व जल कह कविनाहा ॥
 अंगुलाष्ट मारुत निरधारा ॥ चतुरांगुल सुरअग्नि विचारा ॥ पूरण
 द्वांसर बाहिरनाही । गगनतत्त्व कवि भणत तहांही ॥ दो० ॥
 अपरौपरख जो योगमत ताहिसुनो चितलाय । तत्त्वपरख पुनि
 काजकुरु हानिनहोवै भाय ॥ चौ० ॥ मध्यमगौन भूमिसुरमाही
 अगौन सुरनीर लखाही ॥ ऊरध गौन आस शिखि बासा ।
 त्रिजगवायु अरु शून्यअकाशा ॥ महिजल तत्त्व दुवौ शुभ भाई ।
 मध्यमफल शिखिचार बताई ॥ गगनमारुत अतिअशुभ बखाने ।
 हानि मृत्युदायक पहिचाने ॥ मध्य अचल सुखदा सुरजानौ ।
 अरु आनन्द रूप अनुमानौ ॥ ऊरधआस निधनकी दाता । ति-
 र्यगमे उजाट कहाता ॥ गगन सदा सब काज नशावत । कौनो

सिद्धि न जगकउ पावत ॥ यहिविधि जानितत्त्व कृतकाजा । लहै
 हानि, कोउरंकु, राजा ॥ दो० ॥ शीशवास नभकंधशिवि । वायु
 नाभिमहँ वास । जानुदेश महँभूमिजल पाददेशसविलास ॥ सो० ॥
 गगनतत्त्व जवजानुसकलकाज तव त्यागिवुध । मनथिरकरिधरि
 ध्यानु भजुपरमात्म परमनिधि ॥ दो० ॥ मंगल शिखिमय रवि
 धरा अनिजलमय जलराह । दक्षिणनाडी योगंशुभ भणतसर्वकवि
 नाह ॥ सोमनीर मयइलाबुध गुरुमय पवनसुजान । शुक्र अग्नि
 मयकहत बुध वामनाटिका जान ॥ चौ० ॥ तत्त्वपरख अवरोसुनु
 भाई । कहौबहुत विधि त्वहिं समुझाई ॥ चतुष्कोण डोलैरंगपी-
 ता । मधुरस्वाद भोगदा अभीता ॥ यहगति धरातत्त्वकी होई ।
 कहौ उमा प्रति शंकरसोई ॥ रक्तरंग कटुस्वाद वखानो । करध
 गौन अग्नि पहिचानो ॥ श्वेतवरण अरु स्वाद सुखारा । वर्तुल
 गौन जानुजलधारा ॥ रंगसितासित अमिल सुस्वाद । तिर्यगौ-
 न पौन सुरनादा ॥ जलकल स्वाद रंगतस जाको । सर्वगौन सुर
 तभकहुवाको । यहिप्रकार लखि तत्त्वत भाई । सर्व काज तजु
 गगनहि पाई ॥ दो० ॥ महिगुरु गुरु जलेशनिभृगौ शिखि-गुरुर-
 विमहितात । पवनकोगुरुबुध गगनकेशनिअरु राहुकहात ॥ पूरुव
 ते जानितचतुर समुझौयाहि बहोरि । पुनिकारज कछुकीजियेमि-
 टै विघ्न शतकोरि ॥ सो० ॥ आगमकहत विचारि योगीजनजे योग
 वित । कहौसकल निरधारि सुनो चतुर जनग्रन्थ लखि ॥ चौ० ॥
 चैतगुल्ल परिव्राजब आवै ॥ प्रातसमय निजसुरचितलावै ॥ लगै
 मेघ संक्रांती जवही । बेलाप्रात विचारै तबही ॥ संबत भुरिकै
 कर्मवतावै । विनायोग लखि कोउ न पावै ॥ यहिप्रकार योगी-
 जन जानत । ते निजश्वास निरतसुख मानत ॥ पृथ्वीतत्त्व जो
 बहै प्रभाता । तौ यहि भांति चतुर कहुवाता ॥ जग सुभिक्षवृद्धि
 नृपहोई । अधिक वृष्टि सुख पूरण सोई ॥ उपजै अधिक अन्न
 जग माहीं । सकल उपद्रव रहित तहाहीं ॥ वामेसुर विशेषफल
 वायक । दक्षिणचार समा सम लायक ॥ श्वासा मग जलतत्त्व

विलोकै । समय सुखद सुख उपजै लोकै ॥ होय वृष्टि बहु विधि
 जग भाई । अरु सुभिष निरोगहि पाई ॥ गृहगृह मंगल चार ब-
 तावै । जत्र जल तत्त्व चन्द मग पावै ॥ मध्यम फल सुर भानु
 प्रवाहा । भापत सकल विबुध कविनाहा ॥ दो० ॥ डोलै श्वास
 जो अग्नि मय राजभंग तत्र जानु । कालपरै भयभीत जग रोग
 अनित अनुमानु ॥ अल्पवृष्टि अन्नादिहू उपजै अल्पजहान । समय
 निविद्ध विचारिये गावत योगि सुजान ॥ चौ० ॥ होय प्रातः सुर
 पवन प्रवारा । ईति भीति जल अल्प विचारा ॥ अति उत्पात
 जगतमह होई । समय दुखद कहूँ सुखद न सोई ॥ वहीँ मेरा सं-
 क्रांति अकाशा । हृत्प फलहु अन्नादिक नाशा ॥ अतिहि कसल
 समय तत्र जानिये । दुखद समस्त भाति अनुमानिय ॥ नीरमही
 सुखदायक होई । अन्य तत्त्व नहिं सुखकर कोई ॥ यह मत क-
 ठिन न सब सन होई । चतुरसुजान लखत कोइ कोई ॥ अत्र आगे
 पुनि आन विचारा । करिहौ निज मति सरिस पुकारा ॥ जाके मन
 आवै सो कोजो । योग कर्म करिताहि लेखीजो ॥ दो० ॥ श्वास
 निरत अहि निशिरहै समुद्रै । सो सुरज्ञान । साधन दिन गुह्यनि
 चतुर खोजी सकल जहान ॥ मंगल जानत योगनहि लोग कहत
 स्वइवात । मो मनमें विश्वास नहि और न के मततात ॥ चौ० ॥
 सुनो जगतके फल अनेका । चितथिर करिपुनि सहित विवेका ॥
 जल महि तत्त्व बाम सुरपाई । थिरकारज कृतसंब सुखदाई ॥
 प्राक्कपवन संग रविनारी । चरकारज करिहोइ सुखारी ॥ तत्त्व
 बार तिथि राशि गनाई । सुर अरु पक्ष होइ यकठाई ॥ चन्द्रयोग
 अथवा रवियोग । थिरचरकाज करै जंग लोगा ॥ सिद्धि समस्त
 सर्व सुख होई । हानिकाहु विधि लहैन कोई ॥ जापर कृपा करै
 जगपालक । यह विधि लखै युवा अरु बालक ॥ तजि मान्यता
 बड़ाई दोई । कहौ न जानि सुरोदय कोई ॥ दो० ॥ जब आखी
 विधि योगमत जानिलेहु यहि भाय । तब जहुकाहु चतुरको बुधजन
 देहु यताप ॥ सकल सिद्धिकी सिद्धिहै सब योगनको योग । मूरु-

खे त्यहि जानैतनहीं लेखत सुलक्षणलोग ॥ चौ० ॥ मरुत तरेव
 महैगर्भजो रहई । दुखीविदेशी उपजै कहई ॥ बहितस्व के धो-
 गहिपाई । अवैगर्भ सुतजियै न भाई ॥ धरातरेव मधिगर्भ प्रवे-
 शा । उपजै बालक सुखदधनेशा ॥ भोगवन्ते सुन्दर तन होई ।
 प्रीति करै वासंग सब कोई ॥ नीर मध्य भोगी धनवाना । होवै
 बालक चतुर सुजाना ॥ प्रगट विनाशक व्योम वखाता । सुख-
 मन के रासंगहि जानी ॥ आवित राजसुवन कर योगा । खगपति
 राजसुता कथे लोणा ॥ सुखमन मध्य नपुंसक भापत । जे जन
 योगधर्म अभिलापत ॥ दो० ॥ यहि विधि भोगिय नारि निज
 तनया सुत हित लागि । तत्त्वविशेष विचारिय देखियहिय नि-
 जजागि ॥ प्रभगर्भकी करैकउ प्रथम स्वास्त निजदेखु । तापाछे
 उत्तरकहिय सरमधिज्ञान विशेष ॥ चौ० ॥ पृथ्वीजल सेत योगी
 प्रकाशै । मरुत सुता शिखि गर्भ विनाशै ॥ होवै गगन अथवा
 सुकुमारी । अवनिर्णय सुनुचतुरभंगारी ॥ निजदक्षिण सरप्रच्छेक
 दाहिन । नृप समस्त उपजै भ्रम नाहिन ॥ प्रच्छेकचंद स्वचंद
 प्रधाना । कन्याविदित करौ बुधवाना ॥ निजसर झर निशाकर
 बाकी । होयकुमार सदृढकहु ताकी ॥ बाकरभानु क्षपाकर आपू ।
 पतन जन्म ते शोक सतापू ॥ निजवाकी एकसर होई । सुखद
 विचार भनौबुध सोई ॥ गुरुबिन कठिन जातनहि जानी । गुरु
 गमलकल परत पहिचानी ॥ दो० ॥ करयसमंदरशी भणत धातु
 जीव हियहेर । अयोमूल इस्थिरमनी चतुरखरामत टेर ॥ धरा
 मूल मणि उदक हरि जीवरूप पहिचानु । तजेधातु नभ चतुष्पद
 जानि स्वतस्व धखानु ॥ चौ० ॥ पूरण सर पूछे नर कोई । अन्य
 और नहिकारज होई ॥ अन्यसमय पूछे हितकारी । पुनि पूरण
 सर सुखद विचारी ॥ कहैविदेश गयी ममनेही । बहुत दिवसस-
 धि लहीन तेही ॥ दिशावार तिथि अक्षर जामो । सर सियोगहि
 पायवखानो ॥ सुभगयोग सब सुखद बताइय । यहि विपरीत
 अयोग लखाइय ॥ राकलयोग सरजकर होई । प्रचीदिधि उत्तर

शुभसोई ॥ पश्चिम-दक्षिणशशि संयोगा । आइहि सहितसमाज
 सभोगा ॥ यहि विपरीत दुखद घुघुभापत । जेनिजसुर-निजवृष
 करि साखत ॥ दो० ॥ धरातत्त्व अस्थिरसुजल आवन थोरै फाल ॥
 पवनप्रधान कृते शिखी गगननाथ तनवाल ॥ चौ० ॥ गमनहेत पूछै
 कहु आई ॥ तिथिदिन सुरविचार चितलाई ॥ दक्षिण पश्चिमशशि
 जलभूमै । फलदसुखदकोउ-दुखद न दूमै ॥ भानुयोग पूरुबउत्तर
 दिशि । देहवताइ विचारि दिवार्तिशि ॥ अवचागे रणभूमिविचारा ॥
 कहिहौं हौं निजमति अनुसारा ॥ चन्द्रयोग सब विधि शुभहोई ।
 वरुणवार तिथि पक्षौ सोई ॥ ऐसे भानु योग जवपाइय ॥ जैति
 युद्ध-महि-सकल घाताइय ॥ दोनों दिशिके पूरुष आई । करै प्रश
 द्युद्ध-युद्ध-जताई ॥ पूरण सुर ज्यहि दिशि निज होई । प्रथम
 प्रश्न तिहि दिशिकुत जोई ॥ दो० ॥ समर भूमि सो-जीति है
 आमे संशयनाहि । शून्य स्थलके ओरही पूछत दुहुंजन जाहि ॥
 जो पाछैते पुछिहै विजय तामुकी होइ । यामें लग्य नहि नैन
 कह-हर निज सुख सोई ॥ चौ० ॥ धामेसम अक्षर जयकारक ।
 दक्षिण विप्रस वरुण अरि जारक ॥ सुखमन अमितकष्ट रणदा-
 यक । काहु विधि नहि सो रण लायक ॥ दक्षिण धामे जो पूरण
 होई । त्यहि दिशि पूछै जीतै सोई ॥ जो आपुहिरणकाज प्रधरै ।
 तौ दक्षिणसुर विजय विचारै ॥ शशि सुरवाह प्रथम गहखेता ।
 विजय लहे निज भूमि समेता ॥ अग्नि तत्त्व दिन तिथि रवि
 केरा । पाइ युद्ध गमनै कबिदेरा ॥ दैवयोग अस योगहि प्रावै ।
 मनु जीति सहजै धर आवै ॥ आस-दहित ज्यहि दिशि कहकोई ।
 बहै न निज सुरतिहि दिशि सोई ॥ दो० ॥ मही तत्त्व जो होइ
 तह उबर घात तव भाप । घात वरुणजल अग्नि उर ल्यों समीर
 अभिलापु ॥ सो० ॥ गगन माझ शिर घात होवै कुच्छ संदेह नहि ।
 पांच तत्त्वकी घात सुर विचारि रणभूमि कह ॥ चौ० ॥ धरै जौने
 सुर त्यहि दिशि आई । पूछै समर धीर सुख पाई ॥ तथे विजसुर
 सह तत्त्व विचारी । कह सिद्धांत योग सुखकारी ॥ समता धरा

रसुज्ञान प्रकट ग्रहदेखौ । सुरसे परेन जगकुछ लेखौ ॥ दो० ॥
 उदये होय विपरीत । सुर एकपक्ष लगतात । रोगप्रसूतव आय
 तन सुरमत आपत वात ॥ चौ० ॥ एकमास इमि जव सुरढोलै ।
 सुदृढ बंधुको विपति अतोलै ॥ पक्षतीति में तन नशिजाई ।
 प्रकट परत विपरीत लाखाई ॥ कैचन्द्रा कैसूरजकोई ॥ बहै रैन
 दिन पूरण जोई ॥ तीनवर्षलग कालन आवै । प्राकृत होय बुध
 गात्रि ॥ बहै पिंगला द्वे दिन रासी । युगुल वर्ष पीछे मरिजांती ॥
 तीनि दिवस तिथिको सुर बहई । वर्ष प्रयंत आप तन रहई ॥
 षोडश अहितिथि, सूरप्रवाहा । मास एकलखि जीवन लाहा ॥
 मासप्रयंत चलै सुरभाना । दिवस होई भरि जीवन जाना ॥ सु-
 खमन उदय होय दृष्टि पांचा । कुटै शरीर जानिये सांचा ॥ चन्द्र
 सूर सुखमना नशाई ॥ आतन पवन चाहदरशाई ॥ तारिदसल
 गिकाशा रहई ॥ प्राकू प्राण शमन तरगहई ॥ तत्त्वकाश तिथि
 दिनतीनी । मीनुवर्षपीछे कहिदीनी ॥ दो० ॥ विनसूरजनिधि
 चन्द्रमा एकमासकृत गौन । जीवरहै पठमास लगि सत्यसत्य
 लखुतौन ॥ जानिकाल योगीचतुर प्रथम शून्य ग्रहजाय । काल
 आइ फिरिजाइतिव लेइ समाधि जगाय ॥ सो० ॥ कहौ सुरे-
 दय ज्ञान जसकुछमैं समझोहिपे । अवसुनु सहित प्रमान अज-
 प्राकी व्योहार कहु ॥ चौ० ॥ प्रथम सत्र अजपा जोभापो । वहै
 मंत्र दृढ़ जिघ्र्साभिलापो ॥ अमन बहुत योग मत्तगाये । ते
 सर्वोक्ति ध्यान लगाये ॥ तिनसह पद्म सिद्धहै जोई । एकलगा-
 तमंत्र जप सोई ॥ पद्यासुन विशेष फलवता ॥ मुनिहै मंत्रजपै
 उठि प्राता ॥ मौन जपै अहि सुनैत कोई । अतिफलप्रद जानि-
 युबुधसोई ॥ दृष्टि नासिका अग्रलगावै । सुमन जपैसुन आनन
 आवै ॥ चहुंजससीत क्रिया बिनहोई । तवपिनु तासुन भाषिय
 सोई ॥ जन्मांतर लगिजो यहसाधै । जन्म मरण की मेटैसाधै ॥
 दो० ॥ तीनिकाल तिहुं लोकमे बिदित मंत्रयह आहि ॥ साधक
 याको कौन अस सुगति मिली नहिंजाहि ॥ चौ० ॥ शंकर विधि

अवतार मुरारी । यहै मंत्रजपिभये सुखारी । अरु हनुमा-
न परमपदगामी । जपियह मंत्रभये अधिनामी ॥ ध्रुवप्रह-
लाद जप्योचितलाई । शुभगति लहीपुरानन गाई ॥ नारद
सनेकादिक विज्ञानी । भये स्वेच्छाचार प्रमानी ॥ ज्ञानी गु-
णी मुनी संन्यासी । जपतमंत्र यहै परम उदासी ॥ कलिमह
बहुतजीव जपियेही । पायसुगति भे परम सनेही ॥ रामानन्द
कधीर गोलई । सूरसधन पीपा गतिपाई ॥ और अनेक जपीप्र-
हिकरे । घसेपुरुष ते हरिकेनरे ॥ दो० ॥ ताकारण अहनिशि च-
तुर एकवारनित साधु । सुमनष्यांन धरिदुचिततजि निजआतस
आसीधु ॥ राजसुखमना कोलहै निशानाध रविनाहि । कजासन
आलहै तेषविशेष जपुवाहि ॥ मोक्षद्वारी जीवकहासुखदसुख-
मना जानु । अपरनाटिका मोक्षदा मगलद्वयन आनु ॥ (मन-
उवाच) आतमवासे शरीरमहँ सोकैसोहै भाखु । दास आपनो
जानिकै जनिंदुराव कछुराखु ॥ (बुद्धिरुवाच) चौ० ॥ आतम
केशरीर महँवासा । लिखोलिख दुहु बिधि भासा ॥ जिमि जत
जलघट अगणितभरई । सन्मुख दिनकर केसो धरई ॥ पुनिसब
पटनि धिलोकैजाई । रविवतरूप सखन महँभाई ॥ रवि समान
सो रवितेन्यारा । इमि शरीर आतम बिस्तारा ॥ अथवा जिमि
वर्षण मुखदेखै । दुविधा भाव घदन नहि लेखै ॥ ऐसेइ आतम
बसत शरीरा । लखत सुष्ठुधी परम गभीरा ॥ इन्द्रीसकल सोइ
घोरावै । सुथिर आप कहँजाइन आवै ॥ नैतादृश्य अवण विन
सुनेई । रसन रसन चोखिसुख गुनई ॥ दो० ॥ ज्ञानेन्द्रिय जे
पाँचहँ कर्मेन्द्रिय जेघाण । तिनकरि सोनहिं जानियतः सुनुमन्
सहितेप्रमाण ॥ (मनउवाच) ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रिये तिनकरिलखो
न जाय । फिरिकैसोहै सो कहौ भ्रमणासकल नथाय ॥ (बुद्धि-
रुवाच) चौ० ॥ सुनुप्रमाण तोहिकहौ बुझाई । लखिआतमगति
रहुअरगाई ॥ रूपाक्षैनिरखै रविकासा । तावित निधि बुध करत
प्रकासा ॥ सूत्रैकुछनहि नैनपसारे । संवकडलखै सूरबिनकारे ॥

रविदेखनहित रविनहिं चाहिय। इमिआतम स्वभास, तनुआहि-
 य॥ औरवस्तुखोजै लिंगभाई । दीप- प्रकाश कीजियत-भाई॥
 प्रज्वलितदीप-खोजियेकाजहि । कोप्रकाश दासक-सुखभाजहि॥
 वस्तुसमस्त नैन-रो देखै । नैनलखन हितकहहि, अत्ररेखै ॥ है
 प्रकाश निधिआतमऐसो । दीपकहक्ष, भानुभन जैसो ॥ दो०॥
 रविरविदीपक दीपसों नैन-नैनसोदेखु । और वस्तुनहि चाहिये
 इमिआतम निजलेखु ॥ चौ०॥ मैतूचित अहंकार कहावे । चारों
 एक रूपहै जावे ॥ यकमति थकगति, है जवदूढ़ । तब निरुपाधि
 लखैगतिगूढ़ै ॥ इन्द्रीसूर्व, सोमन आधीना । मनसो बुद्धिअधीन
 प्रवीना ॥ जीवाधीन बुद्धिबुध, कहई । विन-सूक्ष्मधी-अलखन
 गहई ॥ तजिप्रमर्षी-दुविधासंसारी । मारगज्ञान, लखैसुखकारी॥
 उदयज्ञान, हैतैतनसाहीं । दुखदासकल व्यकार नशाही ॥ याव-
 द्भ्रमणा नथै न भाई । तावदमोह, अशी न नशाई ॥ मोह-तशे-
 विनसुबुधि न होई ॥ बुधिविन आतम लखैन, कोई ॥ दो०॥
 आतम निजधीनहेविना जरामरणन, नगय । जन्ममृत्युके, ताथ
 विनु लहै न ईश्वरसाय ॥ (मनउवाच) सो०॥ ब्रह्मसोकैसीआहि
 यहमीकोसमुझायकहु । निगुणगुण, अवगाहि तूसमर्थ सप्त, भाति
 बुधिना (बुद्धिरुवाच) चौ०॥ कहीं कौन विधि ब्रह्मस्वरूपहि ।
 कहंतवनत, नहिरंकन भूपहि ॥ प्रजाकहीतौ भूपति-कोहै । भूप
 कहंतपुनि प्रजानसोहै ॥ अलखकहीं, तौ लखकोउ औरै । लख
 किमिकहीं अलख, शिरमौरै ॥ जोअरूप भाजौभगवानै । रूपपान
 कोउदूसरो जानै ॥ गुणनिधि-कहीं अगुणकहिकहऊ । अगुणकहत
 फिरिगुणनहि लहैऊ ॥ वरणिकहीं कर्ताहैसोई । तौपुनिअहै, अ-
 कर्ताकोई ॥ अनुभावभनत भेदसंभवमें ॥ संभववर्णत-गुणअनुभव
 में ॥ निरीकारजो वाकोभाषी । तौअकार गृहकहि अभिलाषी ॥
 दो०॥ कहींविसतवैकुंठमें, अथवाश्वेतदीप । तौनहिजानी आनि
 है धरेहंदयबुधिदीप ॥ चौ०॥ नारिकहीतौ, लखैप्रमहाना । मुरुष
 कहींतौ दुविधाताना ॥ कहींनपुंसक लिंगगवेषा । तौ फिरिजानी

करिहि अँदेसा ॥ सांख्यशास्त्र जो कर्मवतावै । प्रथमचतुर तिनम-
हँ मन लावै ॥ योगशास्त्र पुनि खोजै कोई । समुझै हृदय रूप
हरि सोई ॥ कवि कोविद कउ असु न जहाना ॥ परमात्माकर
करै बखाना ॥ वेदशास्त्र कहि नेति पुकारै । और कहा जग जन
अब भारै ॥ ईश्वर सब जीवन तनवासी । विमल बुद्धि यह भ-
यात उदासी ॥ आपनपौ चीन्है जो चातुर । समुझै ईशरूप वह
सातुर ॥ दो० ॥ आत्मही परमात्मा याको जानै कोय । मिलै
ईश द्वै ईशमें जलनिधि जलसम जोय ॥ ज्ञान विना तिहुँ लोक
में ताहि न जानै कोय । जो कउ ज्ञानी हियलखै कहिनसकै गो
सोय ॥ द्वैत भावते रहितहै उपमा दीजिय कौन । उपमा विन
संसारमें समुझिसकै बुधतौन ॥ चौ० ॥ जवहुँ सूक्ष्म धूल श-
रीरा । द्वै चैतन्यगहै सुखपीरा ॥ अरु जव स्वप्नमाझ धसिजाई ।
मन भ्रमाय त्रिज भ्रमणा पाई ॥ पुनि सुखोति जवहोय जीव
कह । तोनि बहिक्रमकरि विचार गह ॥ इन तीनोंमहँ आपुहि
माही । लिप्तरहै सब भ्रम मिटिजाहीं ॥ तबवैहोय तुरिय हरि
लीना । जहाहोय मन सुख दुखहीना ॥ प्रथमावस्था तीनि व-
ताई । हरिपद प्रीति रहै लवलाई ॥ जपैमत्र पूरुब जो भापो ।
सहृद बुद्धि आत्म अभिलापो ॥ तब मिटिजाय अवस्था भूरी ।
तुरियः पदहिरहै गति पूरी ॥ दो० ॥ कठिनज्ञान मारगरहै वि-
रलो कोउ ठहराय । जोसमर्थ पूरवतपी गहै सोय चितलाय ॥
जानव त्रीजगदीश को खोउव मनो अपान । को ऐसी समरथ
जगत फिरिकैकरै बखान ॥ चौ० ॥ जिमिपुतरी लौनकीभाई ॥
नोर सिधुमहँ जाय मिलाई ॥ सो द्वै जाय मिलितकीलाला ।
कहौ बहुरिको कहैहिवाला ॥ जो कोउकहै कि मै त्यहि देखा ।
सो मिथ्या पुतरी दधिलेखा ॥ दूरि दरश करि बहुरि जोआवै ।
करि अनुमान सोरूप वतावै ॥ कहिनहिसकहिरूप संघताको ।
दशदिशि भेद लहो नहिं जाको ॥ जोयेपंथ जगत महँ नाना ।
तिन सबकर मन सुनु आख्याना ॥ जसबहु अंगहैं गजधाई

भिन्नभिन्न तनकी हरपाई ॥ कउ कटि गहे कांध कउलांगो । उ-
 दरतले कीउ पव खूबै भांगो ॥ दो० ॥ कीऊगये सुपूछ त्यहि कीऊ
 पांजर लागे । हाथी छूटे करणते लगे चित्त अनुरागे ॥ चौ० ॥ य-
 कठाभये वाक् प्रतिवादा । लगे होय तिनमह संवादा ॥ जोकरि
 लगे सोकरि सम कह्ये । कांधगहो सोकांध सम लह्ये ॥ उ-
 दरगहो सो कहै छति ऐसे । वरगस्प रथस्तंभ सुजैसे ॥ पूछ गहे
 सो सर्पसम वादे । पांजर परथ सोभीति विवादे ॥ काहू लखो
 न सो सब नागो । छूठ कहै न सस्य अनुरागो ॥ मानै कोउ न
 कहे काहूके । द्रष्टा कहै देखि ताहूके ॥ कैसे फिरि समुझैगे अघे ।
 लगे न देह मथनके धंधे ॥ निज निज सांचु वाद सोभापै । रूप
 समस्त सो थो अभिलापै ॥ दो० ॥ तजि विवाद्य गजराजको
 बहुरि जोय लपि टाय । भिन्नभिन्न तन गृहतही मन भ्रमउपजै
 भाय ॥ सो० ॥ तब सो बौचै हीय पूछ गही तब पदहि अव ।
 करि कूर गह निज जोय उदर दुहंकर कुवतही ॥ चौ० ॥ इमि
 विपतीत ठामके परसे ॥ भ्रमभयकार उठै निज घरसे ॥ तब अत
 मत सब करै विशाला । द्रष्टा सो पूछे गजहाला ॥ जानि भ्रमिने
 द्रष्टा समुझावै । सहित सुनै मनधम बहिरावै ॥ भ्रम बहिरात
 होय समधीते । लहै भले शुभ मारगहीते ॥ पुनि बहोरि भ्रमणा
 तिनपाही । पतुरसुजान जातु लखु नाहीं ॥ समधी होत ज्ञान
 भलपावै । सांख्यशास्त्र तब दृढ़ करि भावै ॥ सांख्ययोग इकमत
 द्वौ अहर्ष । सांख्य दुवो मुक्त पदलह्ये ॥ अब द्रष्टाके लक्षण कह-
 ऊ । भ्रमणा सकलितर्ककी देहउ ॥ दो० ॥ ज्यहि सर्वविधि गज-
 राजको परखी होवै तात । आगे पाछे दशौ दिशि द्रष्टा ताहि कहात ॥
 चौ० ॥ अंधप्रबोध होय मन बूझै । ज्ञाननेत्र सो दृगन न सूझै ॥
 ऐश्यइ चतुर साधुजन जानौ । द्रष्टावेद गुरू कह मानौ ॥ पारब्रह्म
 परखव कठिनाई । परखतही गूंगाहै जाई ॥ धंधिर होय ध्वनि
 सुनत अनाहत । समुझि समुझि निजमने अवगाहत ॥ नहि स-
 मर्थजो वरणि वंतावै । यहिकारखे गूंगा समभावै ॥ मूकहि माहुर

देहमिठाई । किमि कहिसक भृदुता कटुताई । जो माया कृत
 होयन तिहुँपुर । उपमा योग देखी सो फुर ॥ माया कृत तिहुँ
 लोक बतावत । वेक्याख सब मत समझावत ॥ दो० ॥ माया
 पतिके रूपको कहिन लकत यहि हेत ॥ चतुर विबुध कवि कुशल
 जग अलखताहि कहि देत ॥ होत अनाहत भवति चतुर यकसुर
 रागछतीत । सातौसुर तामें उठत किमि कहिसकत गवीस ॥ राग
 द्विपके सुनतको बधिरओ होत सुजान । निर्णयलख अरु अलखको
 सुनुमन सहित प्रमान ॥ चौ० ॥ पांच ज्ञान इन्द्रिय जो गार्ह ।
 निर्णय करिकै प्रथम बताई ॥ घाणी करि जो शब्द उच्चार । सु-
 नेत अर्थ सो बैन पुकारा ॥ नैन उयोति सो लखत जो भाई ॥
 घ्राणेन्द्रिय सो गन्धिलखाई ॥ त्वचसो परश ज्ञान जो होता । सो
 सबलख मायाकर घोता ॥ अपर एक वृत्तांत महावर । कहत संत
 अरु वेद जानि फुर ॥ मन करि जो समझत बुधिसेती । मायाधर्म
 कहोलख नेती ॥ जो समस्त तिहुँपुरकर ज्ञाना । सोलखरूप
 धरे भगवाना ॥ लखविस्तारसी अपररूपारी । धरे धिशाटरूपकर-
 तारा ॥ दो० ॥ कहौ अलख अवशोचि बहु ग्रन्थसारख अरु योग ।
 रामजी चतुर न प्रथमही अवधुनि समझै लोग ॥ चौ० ॥ माया
 यह अपार कृत जाकी । समझत हिय मेरी मति चाकी ॥ फिरि
 किमि रुही अलखलख नाही । लखमें अलख लखालखमाही ॥
 भूतसंमस्त आविहै माया । यहिनिज बल सवनग उपजाया ॥
 वाके आवि रूपहै जोई । वहै अलखलख परतन सोई ॥ जोकोउ
 लखै सुटु गी ठूढ़ै । तौ समझै शुभ अलख अगूढ़ै ॥ ज्ञानरुम इन्द्रिय
 सो जोई । परखि सकत असभयो न कोई ॥ ज्ञानेन्द्रिय रुखे
 न्द्रिय जो सो । परखि परै तो अलख नहीं सो ॥ अलखै लखत
 अलखयक आपू । निमिजामत न भनिज परतापू ॥ दो० ॥ यहि
 ते सोई लखालख परमात्म यकभांति । मगुण अगुण लखअलख
 है धमविन ह्वय समाति ॥ कहो योग सिद्धांत यह निजमनि
 सरस विचारि । अवजो पूछै सो बहुरि कहौ सहित पिस्तारि (म-

नउवाच) कहौवरणि नवभक्तिजे सतसंगादिक तात । अरु नव
 विधिको भजनजो सो कहियो विख्यात- (बुद्धिरुवाच) ॥ चौ० ॥
 सुनुनव भक्तिकहीं मनतोहीं । पूछ्यो भूल प्रियलांग्यो मोहीं ॥
 जव सिद्धांत योगनि पुणार्ई । होय न प्रथम करै यह भाई ॥ नवधा भ-
 क्ति फल प्रद जोई । तिनके करत अचल मन होई ॥ सतसंगति कृत
 प्रथम सयाने । भली भक्तिनिजे जिय अनुमाने ॥ द्वितिये हरि की
 चर्चा करहीं । स्वपनों आनधर्म न हिं धरहीं ॥ तृतिये गुरु चरणन सों
 प्रीती । नेम सहित पूजत अतिरीती ॥ हरि गुणगान अछल निमोहा ।
 भक्ति चतुर्थ सुगत परद्रोहा ॥ वेद पाठ हरि मंत्र सुजापा । पंचम भज-
 न भक्ति हरतापा ॥ सज्जन धर्म निरंतर धारे । शीलवत पष्टम हरि
 प्यारे ॥ भूत सप्तमस्त ब्रह्म मय देखै । सप्तम संत ईश सप्त लेखै ॥ ला-
 भाला भूतो सप्तम संतोषी । अष्टम होय न बुध परदोरी ॥ तजि प्रपच श्री
 हरि शरणाई । नवम गहै दुबिधाइ वहार्ई ॥ दो० ॥ यहि विधि
 करि नव भक्ति बुध लहै ज्ञान सिद्धांत । लहै ज्ञान सिद्धांत के पावै मोक्ष
 नितान्त ॥ मोक्ष परे नहि आन सुख जानत हैं बुधराज । सांख्य धर्म
 धर योगरत चहत मोक्ष को साज ॥ चौ० ॥ अब सुनु भजन भावन-
 व जोई । करि विस्तार कहौ हौं मोई ॥ सुमिरण कृत हरिय सहित
 सेती । प्रथम भजन यह भणत सनेती ॥ पूजन क्रम वाणी मन
 जोई । भाव द्वितीय लहै अघ खोई ॥ करै वंदना प्रभु पद केरी ।
 तीजो भजन भणत बुध टेरी ॥ प्रीतम निज हरि कहै जे जानै ।
 भाव चतुर्थ हृदय अनुमानै ॥ अवन करै हरि यश छलहीना । पंच-
 म भजन धर्म मत चीना ॥ जो दासत्व भाव हिय धरई । पष्टम
 भजन भाव भवतरई ॥ निशि दिन हरि चरणन अनुरागी । सप्त-
 म हरि हित होय विरागी ॥ दो० ॥ कीरतन हरिय शकै दुबिधा भाव-
 हित्यागि । अष्टम भजन प्रतिद्ध यह कहत विबुध अति पागि ॥
 चौ० ॥ आतम ध्यान करै अतिरीती । नवम भजन यह सदृढ़ स-
 प्रीती ॥ यहि कृत जरामरण की फासी । मुक्त होय यह भणत
 उदासी ॥ भक्ति भजन द्वौ भाव बताये । करि विवेक हौं तोहिं

लखाये ॥ दोनोंपद निर्वाणहिं दायक । दोनोंचहु आश्रमकेला-
यक ॥ प्रथमहिं ब्रह्माचार धखानो । द्वितीयाश्रम सुगृहस्थीजा-
नो ॥ तृतिये वानप्रस्थे बुधगावै । चौथेसंन्यासहि समुझावै ॥ अ-
वचारोके कर्म घताऊं । सुनुसचेत तोहिं सुमति लखाऊं ॥ जब
किशोर धयहोवै भाई । ब्रह्माचार तवहिं मनलाई ॥ दो० ॥ समु-
झैतब शुभ अशुभजे धर्मपाप जगमाहि । त्यागासस भवमेंहुलै
तज निज धर्महिं नाहि ॥ चौ० ॥ ब्रह्मविचार हृदय, निजगुणई ।
आनधर्म सबहितसो सुनई ॥ जव दुविधा भ्रमणामिटि, जाई ।
रहै, आपुमें आपु समाई ॥ पूरण प्रथमाश्रम इमिहोई । द्वितीया
श्रमहि गहै बुयसोई ॥ कहे पुराण वेण्डतिहासा । करै गृहस्थी
धर्मप्रकासा ॥ पुत्रत्रियापरिवारहि मिलिकै । प्रीति रीति सहर-
हिये हिलिकै ॥ एकपरन्तुकरै चंतुराई । प्रिय सुत लहि न जा-
इवौराई ॥ प्रथम विचार-रैन दिनराखै । गेहाश्रम अहनिधि
अभिलाखै ॥ वानप्रस्थ फिरि होइ सयानो । प्रिय संग रहै न
प्रिय रत सानो ॥ दो० ॥ बहुरि धरै संन्यास को त्यागि सकल
परिवार । ब्रह्मभजन में रतरहै कृत आतमा विचार ॥ चौ० ॥
कतहुक अतकाल हूँ जाई । श्रमनचार सक निकट न आई ॥
स्वर्ग नर्क दोनों ते कूटै । वह समर्थ हरि मिलि सुखलूटै ॥ जुपै
गृहस्थी में सनिजाई । तौ वह ब्रह्मविचार नशाई ॥ ब्रह्मविचार
नशत सुनु ताता । इन्द्रभवन यमसदन सो जाता ॥ जो दृढ़
धर्म गृहस्थीरह्यऊ । अन्तकाल सो सुरपुर गयऊ ॥ दृढ़ता रहित
गेह आश्रता । वानप्रस्थ हूँ भौन विरक्ता ॥ रविसुत दूतवाधि
त्यहि भाई । नर्कद्वार दीन्हों ठढ़िआई ॥ ब्रह्माचार प्रथम जो
कीन्हा । ताते नर्कवास नहिं दीन्हा ॥ दो० ॥ बहुरि मनुष्यहि
योनिमें जन्मत भो सहताप । आनयोनि ते रहित भो ब्रह्मवि-
चार प्रताप ॥ स्वर्गहु ते तपक्षीण भे पुनर्जन्म जगहोई । उत्तम
कुल आनन्दमय ब्रह्मचार रतसोई ॥ तब पुनि द्वितीये जन्म में
भजन आतमा ठानि । लहै मोक्ष हरिमे मिलै पुनि नहिं जन्मै

कर्म निरवार १३ सचित पातक नशत सब उपजत अनुभवज्ञान॥
 क्रीयमान निःकाम सब होत कहत गुणवान १४ पाप पुण्य
 आशा रहित योगी कर्म कमात ॥ स्वर्ग नरक मग परिहरत अत
 सुबह्य समात १५ फलित कर्म प्रारब्धिवत याभव दुखसुखरूप॥
 समजातन सन्तोष मति व्यावत पुरुष अनूप १६ कोटि भार
 हाटक दयो मोक्ष होन हितसाह ॥ अंत वासना पाप की लैगड
 नरकतिमाह १७ किये जन्म भरि कर्मखल निंदनीय संसार ॥ कां-
 ल समय व्यायो प्रभुहि पायो स्वर्गविहार १८ स्वर्गवसै निज सु-
 कृत सम जन्म होइ परिणाम ॥ जरा मरण नाश्यो नहीं यहिते
 स्वर्ग निकाम १९ निरैवास पापी लहत पाप तुल्य सुनुमीत ॥
 नीच योनि महुँ जन्म पुनि वदत वेद यहगीत २० स्वर्ग नरकद्व
 समभये जन्म मरणके माहिं ॥ गर्भ क्लेशनाशयो नहीं मृत्यु होत
 जन्माहिं २१ अध ऊरध जे योनिमें जन्मत जीव अपार ॥ शोक
 भोग समता विषय कीवटिवटि संसार २२ जाके ध्याये क्षणक
 यक कलिमल सचित जात ॥ देहनगर मन भूष तहँ प्रावन सुखहि
 दृढात २३ मनइन्द्रिनकी भूष है त्वचां करण वषधाक ॥ घ्राणादि-
 क जानत न कहु विषयमांस मन काक २४ प्रथम जाहि निज वच
 करै परमात्म आराधि ॥ मिटै सकल चिता तिमिर ज्ञानसुर निरव्या-
 धि २५ योगविना अजपा जपे मन वष आवत नाहिं ॥ रागद्वेष त्यागे
 बिना भज न बसै मनमाहि २६ दृढ़ बुधि ज्ञान पसारिके सन शिक्षा
 देत्यागि ॥ गुह्य स्थल अनुभव उदय जाय शांति रस प्रागि २७ अर्धकूप
 पर अंय जिमि कहू दिखायो दीप ॥ पंथ न हेरो मूढ़ मति जवलंगि
 गो न समीप २८ जिमि पिपील मिष्टान में लपटी आशा पास ॥
 मुक्त नहि अतिबल करत तथा विषय दृढवास २९ अज्ञाचापक्षी
 यदा परघो वधिरुके जाल ॥ तिमि प्राणी भोगास करि मोयावध
 प्रैकाल ३० निद्रा क्षुधा वगादि जे मैथुनादिकृतवान ॥ नर प्रक्षी
 पशु कीट हू जानत सो मतिमान ३१ जडतावध वृक्षादि जे रहे धिर-
 त्वहि पाय ॥ मनुज प्राय चैतन्यता तापद वीलौ जाय ३२ सिद्धांतन

को अन्तमें प्रापकसो क्रियकार ॥ निजवश जीवन-मरण है जन्म-मृत
 किमि संसार ३३ माना मान निरादरौ आदर समता भाव ॥ शुचि
 वासंन आसत्ता कुरुचिसुरुचिसी, एकस्वभाव ३४ ईर्ष्या जगकी तीन
 तजि पटलमी अपनाय ॥ दोष शोक भय सब तजै अंतबह्यपद
 पाय ३५ जन्म-मरण निर्ददतजि जीवईश है जाय ॥ कर्मकर्म
 दुवौ नयै आपुहि आपु नथाय ३६ अहभावना परिहरै युक्तबन्ध
 कउ नाहि ॥ अकल अमेय अनीह अज निजै उर व्यावै ताहि ३७
 अरु अंक संघात करि गिद्धि प्रथम, हेरु अंक ॥ शेषवस्तु अनसिद्धि
 जो सोई रहत निशंक ३८ ऐसो पुरुष अतिद्धि जो ताजातन के
 हेत ॥ सतभारग व्यावत नहीं साधत कर्म सुखेत ३९ मेघसुधा
 घरपै विबुध कदलीफल न दुवार ॥ तथा मोक्षपद पाय किमि
 कर्म न भय संसार ४० अकर कृत्यो संसार यह रचि त्रैवरभव
 जीव ॥ क्षीण दृष्टि प्रापक नही भयो धर्मकी सीव ४१ सिन्धुप्र-
 सादहि पाय जिमि होत मेघपय खानि ॥ तथा बहाने जीवसब
 को पूरणता हानि ४२ अरु जिमि सरिता जगतकी मिलि न
 बढ़त जलराशि ॥ तिमि देही मिलि बहानहि बढ़त परत बुध
 भाति ४३ जाने बिन तारूपके रूप, न पावत जानि ॥ वृक्षतही
 निरवाणपद होत गुणनकी खानि ४४ को निसुगुण सरगुण कहा
 दुधिया भ्रमणा मूल ॥ निगुण आप मायासगुण, यहै ज्ञानकी
 मूल ४५ आवत जानत लखि परत जीव अकर्ताकार ॥ अलख
 यहै नहि दूसरा लखु करि ज्ञानविचार ४६ ज्ञानमूल सतसगुहै
 समुद्रि परत करतार ॥ अवयव अज अविनाश प्रभु जासु अंश
 अवतार ४७ ज्ञाती जो कर्मनिकरै तजै सो फलको काम ॥
 अज्ञाती फल आश करि लहत अत फलवाम ४८ ज्ञानवानको
 कर्म कउ तिद्धक वक्क नाहि ॥ जगत धर्म दढ़ता लहै करत हेत
 यहि आहि ४९ कर्म सकल धार्मिकनके करै जगतहित लागि ॥
 मो ज्ञानी संसारमें रहे अमीरस पाणि ५० यजत देवकरि ला-
 लता देवतपस फलदेत ॥ ग्राही जगमें दुःखसुख पुनिप्राणी गहि

लेत पू ११ आपन पौ भूले फिरत तिमिर अज्ञ उर छाये ॥ ज्ञान दीप
 उदयत नहीं तजते न दुविधा भाये ॥ पू १२ जित जित जीवाणों
 विवश जन्मते प्रैवर भाहि ॥ कर्मलिंग तन संग रहत धाम है सं-
 शयनाहि पू १३ तप्या कृष्ण रातिसम ज्ञान प्रकाश विहीना सत्य
 वस्तु बुधि ध्वनसों लखि किमि संकत प्रवीन ॥ पू १४ चतुर्वर्ण पू-
 रणहि ये बाहिर मूढ़ समान ॥ डोलत मोह अनी रहत सब को ल-
 खत प्रमान ॥ पू १५ ऊपरसे कछु काजनेहि अंतर प्रेम प्रकाशी ॥ इंद्रिय
 निग्रह शुद्धमति करत अविद्या नाश ॥ पू १६ संसारो व्यापारी दशा सब
 हिनको जो सार ॥ सो जानव अतिकठिन बुध जानत दृढ़ सिंगार
 पू १७ आत्म भव भुलायके भये योगमें लीन ॥ सो पूरण पावत
 नहीं अंतस्थान मलीन ॥ पू १८ गुरुवाक्य पूरण विद्यो ओंकार अंत-
 मोल ॥ खोजत तापद को न दृढ़ को ब्राह्मण को कोल ॥ पू १९ ब्राह्म-
 ण को पदवी अधिक चतुरात्रमके माहि ॥ विना धर्म ब्राह्मण्यके
 ब्राह्मण्य पदवी नाहि ॥ पू २० हंसवर्ण ब्राह्मण्यको वेदवाक्य परमान ॥
 ज्ञान मुकुट वैधेविना सो नहि होते सुजान ॥ पू २१ रांग रहित छवि
 शोभिजे दृष्टि प्रेम पद लीन ॥ हंसवरण नर नारिकृत सुष्टु कर्म
 छल लीन ॥ पू २२ तत्त्व दूर शपावत मिटत मोह क्रोध मद काम ॥
 आत्महां होवत नहीं साधक बुद्धि ललाम ॥ पू २३ भाव शुद्ध प्रथम
 करे विद्वानेव सिद्धांत ॥ साधारण दुर्बुद्धि विनु सेवत प्रैपुर कांत
 पू २४ आत्ममें जेलित है अंतर एकहि भाव ॥ तैपूरुप जीवत सुचे
 धारे सत्य स्वभाव ॥ पू २५ जानत आत्म भावको पहिचानत निर-
 वान ॥ तापदके संयोगत रहत न जीव प्रमान ॥ पू २६ अज्ञ भस्त्रोहि
 कोटि मन किहू मंदिर बीच ॥ एक निष्क लखि परखि गो भस
 नहि रह नगीचे ॥ पू २७ ब्रह्मक्रांति यह आत्म वादत वेद वेदान्त ॥
 चीन्है निज आत्म अंतर लहै ब्रह्म सिद्धान्त ॥ पू २८ सांभरिहोन सु-
 ढेरुहै अविमान धीमान ॥ निज स्वारस्य सो आइ है बुध व्यंजन पर-
 मान ॥ पू २९ आलस्य मशिली लिये प्रणि प्रतिष्ठा कीन्ह ॥ विष्णव
 सोचै भाव सो ता पूजन भज दोन्ह ॥ पू ३० सो पप्रणि सवीग है निष्टा शुद्ध

प्रताप ॥ स्वर्गवास दायक भयो अंत विवर्जिते ताप ॥ ७१ ॥ सुख-
दाता निर्जीवभो जीव मुक्तिको दाति ॥ जनक कहो मुकुटेश्वर सो
यह बुध धर्म बखानि ॥ ७२ ॥ श्रीरघोपति अर्जुनै कोन्ह ज्ञान उपदेश ॥
आतम पूजा कर्म बहु जो निःकाम निदेश ॥ ७३ ॥ तत्त्ववस्तु आतम
कहो क्षर अक्षर विस्तारि ॥ लिंग धूल वस्तु तत्त्व मिति बुधजन
लेहि विचारि ॥ ७४ ॥ चतुर्बाहु प्रैचय चतुर वदन न मोयाईय ॥ ये
पूरण आयु पलहे तजत न पुष बिसवीस ॥ ७५ ॥ जन्म भयो श्रींकार
ते वदत वायु पौराण ॥ जन्म जासुको मृत्यु त्यहाय हबुंध विदित
प्रमान ॥ ७६ ॥ पुनि वशिष्ठ पूछा जवै शकरी सो यह भेष ॥ भायो तूही
देववतहों नहि पूरण देव ॥ ७७ ॥ ब्रह्म अन्यहीं आनहीं देखु सामान्य-
ति जाय ॥ तत्त्व अति चर्चन कस्यो प्रिविधि जीव दुबिधाया ॥ ७८ ॥
अकल निरोह निबंघ विनु निर्मल ब्रह्म सुभाति ॥ जाइ ज्ञाते देव
नर त्रिपुर विभूति दिखाति ॥ ७९ ॥ चिदानंद पूजो चितहि बुद्धि आ-
सुरी त्यागि ॥ शुद्ध भाव व्यावो विबुध निज आतम मति पागि ॥ ८० ॥
पावन तप पावत चतुर आतम ज्ञान प्रताप ॥ आनभाति युंग जो रि-
लिंग नयत जन्म सँताप ॥ ८१ ॥ योग मार्ग अष्टांग है सोयक तीनि
प्रकार ॥ काव्य भाव खोजत फिरत कर्म न रहित पसा ॥ ८२ ॥ एक-
दक तिरखै नासिका नासा व्यान लगाय ॥ अत्र प्राप्त परमाणु बुध
रहै अमीरत पाय ॥ ८३ ॥ नित्य क्रिया साधन करै देह अनित्य विचा-
रि ॥ आतम घाती होइ नहि स्वयं ब्रह्म उरयारि ॥ ८४ ॥ ब्रह्मा विष्णु
महेश जो कर्ता शालकहारि ॥ तेसमाधिकरि ब्रह्मको व्यावत को नर
नारि ॥ ८५ ॥ युगानंत जा क्षणक नहि जासु न जायु प्रमान ॥ ज्योति
निरंजन ब्रह्म है सदा स्वतंत्र सुजान ॥ ८६ ॥ भयो स्वतंत्र न घुदिर-
कत वेद भेद को तात ॥ अलख अगोचर ब्रह्म बुध धर्म विनु बुद्धि
समात ॥ ८७ ॥ माया जासु अपार है पार लहत नहि कोइ ॥ प्रथम
माया भेद लखु पाके आतम सोइ ॥ ८८ ॥ तत्त्व तीरथ अर्चादि जे
ते न मुक्ति पद प्राप्ति ॥ स्वर्गादिक दायक अहं दृढ़ता मूल बखानि
॥ ८९ ॥ ज्ञान दीप उर रहै मोह तिमिर बहिजाय ॥ सार वस्तु

घासनों घोंमें मंगे जीव चलत अनचेत ॥ मरकवांसना जीवकी
 अंतकचर बुध देत ७ क्रोव संग अदया रहत हिंसकतासों नेह ॥
 हिंसादायेक अयोगति भूढधर्म न सँदेह ८ मदमदता संग्रहकिये
 नीचकंच नहिं जानै ॥ अहंभावदानिरयपद घदत गूढविज्ञान ९
 लोभसंग बसलिलसा होतसो पूरणनाहि ॥ जीवनव्यावत आत-
 मा अन्तर्घसत अथमाहि १० मोहमहा वर्जितकरत सतमारगते
 वीरगा तावश नित्यानन्द जो जीवसी होतअधीर ११ चेपांचा
 वटपारहै सतमारगके तात ॥ तूप्रथमै इनतेवचै कहुभूपति सो
 बोत १२ इक्षकयाको आपतट सुन्दररूप विराग ॥ भट विवेक
 संतोषअरु क्षमादया अनुराग १३ जोमरीरधारी त्रिपुर सो अ-
 रीर विनुहोइ ॥ संशययामें बुधकहा आउब्रह्म पदसोइ १४ जो
 नभयो उत्पन्नहै अरुनमरैगोअन्ता ॥ वोकीमुधिको कोरुहै अहैनि-
 रादि निरन्त १५ प्रेनिरुस्योनि चहुँखानिमे आपहिरहा समाधि ॥
 कोद्वितीय ज्ञानीबदत पैनाही दरगये १६ पूषणकर सयोगधन
 विन्दुधनुषे बहुरंग ॥ उपजततिमि मायीमराँ भयेजीव चहुँस-
 ग १७ धनुनरग द्वौझूठहै धनमाया नयिजात ॥ भानुउदयपूरण
 संध तथान ईषिपपात १८ कालपीय नायतनही जन्मतहू न
 स्वतंत्र ॥ कयो जानै निजछन्दको बाधेमायायंत्र १९ इच्छाजाके
 चेतकी अह्नसौख्य पदमाहि ॥ सोचीन्है निज आतमा तासुअथ
 सोआहि २० क्रमलवसत जलमध्यजिमिपातमिलित पयहोत ॥
 भेदत कैसहु ताहि नहि भीतर बाहिरपोत २१ चञ्चरीक योजन
 बहुत आवत काज सुगन्धि ॥ प्रीति सत्य त्यागतनहीं जातरैनि
 तहँवन्धि २२ जलचर जीव अपार जल वरात भीन अहिभेक ॥
 भेद न जानत गन्धिको कपोकर करै विवेक २३ लोकीरति ज्ञानी
 करते धर्मरहै जेगधाय ॥ तिनहि न बाधत कर्मते जेनि कर्म स-
 दा २४ ज्योतिनिरीह अमानहै देखिपरत परिपूर ॥ ज्ञानीचारों
 दिशि सखत देखि सिकत नहिं कूर २५ को स्वारहै दीपकी धारे
 कजल भीष ॥ टेकगही जगहेतुहित तैसेकर्मकरीष २६ सारगमें

रज रजत जिमि रहत निरादरनित ॥ सतसंगतिपवमानकी ऊँ
 ची चढ़ै अमित २७ को कविता जानत सुजन जो सवितान
 प्रकाश ॥ निरालंब निरधार मग चलत सदा दशआश २८ दुविधा
 दोहाअर्थकी ज्ञानविना न नथाय ॥ सजानी दुविधा रहित कहत
 ज्ञानगुण हाय २९ महापुरुष सो आपहै महत्तेजबहुमान ॥ महा-
 शक्ति इच्छा कहत धेये ओ परमान ३० तजै शुभाशुभवासता
 रहै एककेपास ॥ द्वैतभाव विनु जानिहै शुद्ध चितानंद भास ३१
 कर्मप्रधानी जगत यह कर्मन त्यागै बुद्ध ॥ जासु कर्मलखि सु-
 नुज जग गहै सकल मंगजुद्ध ३२ अखिल धर्मखोजै प्रथम तजि
 हठमत मतिमान ॥ संत्यगहै तजिमूल भव ताहि कहत विज्ञान
 ३३ निज धर्मन त्यागै नही जो अतिवत कृतकर्म ॥ आनमनुज
 ज्ञातिज सकल गहै सत्य निज धर्म ३४ बडेकर्म कर्ता भयेनामी
 कामीनाहि ॥ फलकी तृष्णा चित नहिं ते ज्ञानी भवमाहि ३५
 सतमारग वेदांतको ताहि निधाहै कीड ॥ बंधनति संसारतेमो-
 चिजाय नर सोड ३६ जीवन मूल स्वधासहै दया नही है तौ
 न ॥ को जानै सिद्धांत नित बढत सत्यहै जौन ३७ गमनहोत
 अक्षर शुभग प्रविशे पूरण वानि ॥ यहजानै जोजीव तौ पहिचानै
 अनुमानि ३८ जन्मसकल अर्चाकरी मूरतिमयी सुदेवा ॥ स्वर्ग
 भोग फल तौसु भो रहा मुक्तिको भेव ३९ तीरथ ध्याये आयु-
 भरि अन्तवसे सुरलोक ॥ मोक्ष पदार्थ हाथ नहिं आयो भेन
 विशोक ४० विष्णु शुभहित बतकिये रविबत साधि अपार ॥
 दृढ़ताबैशफललोकदा मोक्षन भो करतार ४१ काव्यधनामेज
 न्मभरि देव पक्षबहुभाति ॥ देवलोकभो अंतमे मोक्षनही दरशा-
 ति ४२ अतिथितोष नितप्रतिकरै दयायुक्तनिरदोष ॥ आराधै
 निज आतमा अंत सुपावै मोष ४३ प्रीतिसत्यप्रतिपालिये निर-
 गुणमेत उरधारि ॥ वेद वाक्यसत्यात सो जाय जन्म निरवारि
 ४४ चौरासी लख योनिमहँ चाखिखानिके जीव ॥ तू भस्मै सिद्ध
 मैलदो कहां मुक्तिकी सीव ४५ उद्वेग भोनिज कर्मवश बढतवेद

विज्ञान ॥ स्वर्ग नरक कर्तव्यवत होत मोक्षधीमान ४६ ज्ञानवि-
 ज्ञा बूझत नही पूरण पदको भाव ॥ बूझेविनु सूत्रत नही मोक्ष
 होतको दांव ४७ जगत प्रीतिमहं बंविगयो जीव ब्रह्मकोअण ॥
 कठिनमुक्ति सतसग विनु पढ़त नहीं हरिवंश ४८ नित प्रतिक-
 रते पुकार यहै ही परमातम आपु ॥ मानत नहि शिक्षा विना
 कृत् विपरीत अलापु ४९ राम राम ध्यावत सदा मर्म नामको
 अति ॥ सोजाने विनु स्वर्गमग जात कहत बुधिमान ५० नाम
 भेद उर अनिकै जपे सदा चितलाय ॥ पूरण ज्ञान प्रताप सों
 आप मोक्ष है जाय ५१ जीव खोज मिटिजाय जब होइ ब्रह्म-
 पद लीन ॥ जन्म मरणके दण्डने मोचि जाय सुप्रवीन ५२ कहै
 भेद नहि काहु प्रति लीनरहै सबमाहिं ॥ आतमही को ध्यान
 उर मुक्तहोइ भ्रम नाहि ५३ निप्रेही जगत्तण लखत सर्वासार
 प्रभुत ॥ लीनरहत निज आतमा प्रकटत अभी मृदुत्व ५४ जि-
 मि विरक्त वामन लखत दाताधनन स्वहात ॥ तिमि ज्ञानी त्रैलो-
 क्यको लखिनिज माहिं समात ५५ कर्म शुभाशुभबंधहै जबल-
 गि कलमें हेत ॥ निरफल कीन्है कर्म सब अतमुक्ति लहि लेत
 ५६ संभवे काको नामहै अनुभवको संसार ॥ जन्म मोक्षद्वौ जा-
 तिके यहसैवैग विचार ५७ यम आसन औ नियम कृत प्राणायाम
 प्रवीन ॥ प्रेत्यारहार सुधारणा ध्यान समाधि अक्षीन ५८ यह अ-
 णि योग हठ सिद्धि योग विज्ञान ॥ जाके उपजत चित्तमे जात अ-
 विद्यामति ५९ माया सांपिनि सर्वदा डसे जीव सबदाय ॥ विन
 गाहुरि विज्ञान गुरु को जगसंकत जिवाय ६० मालविना मिलि
 जातहै वस्तु अमोल पुरान ॥ यादेहोके भेदमें कृत निद्वैत महा-
 न ६१ परमहंसपद पायमन बस्यो हृदय महँचाय ॥ अति अच-
 रजको प्रशयहै दुविशकधीन जाय ६२ संन्यामी मतिमानजे
 त्यागे भवकी भूल ॥ लिप्त जगत नहि होत ते गहे ज्ञान तरुमूल ६३
 मारगें पंथो भ्रमिगयो निजमति भ्रमसे तात ॥ जबलगि मगद-
 र्थन मिलै तबलगि मन भग्मात ६४ सत्य सिंधु सर्वज्ञ शुचि पार-

ब्रह्म सदभाव ॥ दोषशोकते रहित है पूरित त्रिपुर प्रभाव ॥ ६३ ॥
 ज्ञानिन के तनत्राणको भेदतकाम प्रसून ॥ वैतथाव, घातकलगत
 जिमिनव कीन्हेंदून ६४ लोभक्रौंच आवत हृदय करत निरादर
 तास ॥ सद्भावो ससारमें मतदृढ़कृत निजरास ॥ ६५ ॥ समदर्शी
 विज्ञानमय परमहंस सुखरूप ॥ कीदब्रह्म समकति लखत व्या-
 वततत्त्व अनूप ॥ ६८ ॥ किप्रेतीनगुणमय त्रिपुर तीनदेवपरधान ॥
 अहंकार में अतते नाथमिलत विज्ञान ॥ ६९ ॥ पंचतत्त्वमय जीव-
 सत्र देहधरेतिहुंयाम ॥ नाथवान ये सकल हैं तूभजुं आत्म रा-
 म ॥ ७० ॥ कल्याणीतिहुंकालमें संतप्रतिष्ठादानि ॥ सगुण अगुण सभेग
 मत करत सत अनुजानि ७१ तपसावुर्तपट जन्ममलि पाप मैल
 हरिलेत ॥ धीयथांति जलस्वच्छ पुनि सकल भांति करिदेत ७२
 संतमडली बोधदा सतसारंग सोपान ॥ सेइयज्ञानी कपटतजि
 पाइयपद निर्वाण ७३ इन्द्रीबिनु जीतेकबौं द्रवत न अनुभव
 वस्त ॥ अद्वाकारण भावशुभ जायकज्ञान समस्त ७४ जीतिथ
 इन्द्री आपनी निजवश मनचललाय ॥ परसातम निज आत्मा
 भजिये चित्तलगाय ७५ अजिती ब्रह्मज्ञानरत पावतकष्ट अलेख ॥
 तत्त्वलहत नहिकोटि विधि कृतघनु कर्मविशेख ७६ कर्मसाधना
 करिगह्यो ब्रह्मज्ञानसुपन्थ ॥ मनबश भोनेन्द्रिय सकल आसिक
 नानाग्रन्थ ७७ एकपरन्तु विशेषता ब्रह्मज्ञानकी आहि ॥ अन्त
 नरकनिवसतनही अजिती स्वर्गवसाहि ७८ पुण्यवान् धनवान्
 शुचि सुकुलसुबुधि सुविचार ॥ ब्रह्मज्ञानी अष्टतप ऊरधतप अवन
 तार ७९ ब्रह्मज्ञान समानतप जपत्रिद्या कउनहिं ॥ मोक्षदात
 धननीरसम व्यापक सबधरमाहिं ८० विष्णुभक्ति सांचीकरै पूरु-
 प वैष्णवकोइ ॥ तीनजन्म के योगलों मुक्ति लहैगांसोइ ८१
 निन्दादूसरि धर्मकी करतवैष्णव जौन ॥ सोतो कोटिहु जन्मल-
 गि मोक्ष होत कबौन ८२ भक्तिअष्ट नरकैलहै स्वर्गवासदृढभक्ति ॥
 सकलवैष्णव धर्मको सारभाव शुभभक्ति ८३ विश्व विष्णुमय
 जानिकै भक्तिसद्गता साथ ॥ करतवैष्णव रैनदिन तेबुध होत

सनाथ ८४ गैवीहूयाविधि करै शक्ति उपासक जैन ॥ सत्यभाव
भवतेतरे जन्मएक है तीन ८५ ब्रह्मज्ञान सुअग्नि है जराजन्म
तत्परूप ॥ भस्मतनिकटहि जातही यह सिद्धांत अनूप ८६ को-
टिएक महँमनुज कउ उरधारत विज्ञान ॥ अनुभव दर्शन ब्रह्म
लव आतम तत्त्वसुज्ञान ८७ धिपणादढ करि आपनी कमठ तु-
ह्यगोखीचि ॥ निजआतमको उद्धरै लखैन गति कविनीचि ८८
प्रपन्नसयिमें पातपरि आप्रहि चढतवकाश ॥ ब्रह्मज्ञानोहँ जीव
परि उरधकरत प्रकाश ८९ आशभरोसविहाय जग ब्रह्मज्ञानवि-
चारु ॥ उदासीन प्रथसेइ कै निज जन्मांतनिवारु ९० घटघटब्रह्म
अव्यक्तहै अव्ययप्रकटलेखात ॥ ब्रह्मज्ञानसुदृष्टिमग दुष्ट प्रकृति
नहितंति ९१ जाकेइच्छा मोक्षकी सोयहंकरै उपाय ॥ गृहका-
ननसमताधरै मानसनेह विहाय ९२ कीटि जन्मघत बलिमरै
अजिंती अदाहीन ॥ आवागमन नपरिहरै यह सिद्धांत अक्षी-
न ९३ बालकबामा धंधुयुत प्रसैभवन मतिधीरै ॥ उदासीन
अन्तरभजै आतम मुक्तितधीर ९४ जाकीमाया अति प्रबल वि-
रचै चौदह धाम ॥ सो आतम तन ब्रह्मविद योगमध्य परिणाम
९५ समुझत वनतअनेकविधि कहतवनतनहिंसोड ॥ ब्रह्मज्ञान
परसावते गुरुमुखबूझै कोइ ९६ यथा भामिनी भोग सुख कैसे
सकै बताय ॥ करवाये विनु कर्म सो यों समुझै चितचाय ९७
सोवतमें जोहै दया ताहि वतावन काज ॥ कोसहाय करि सफल
बुध सोयी बुद्धिसमाज ९८ मोक्षदयाकोसौख्ययह जानियप्रको-
टनंतात ॥ वहिकारण कउ कोटि महँ यासगमहँ ठहरात ९९
मंगल सांझाआतमा जग असत्य साभांति ॥ असतसगति ज्ञानित
कस्त सेइयताकीपाति १०० ॥

इति श्रीमत्सकल अज्ञानहर्त्रायां सर्वगसुबुद्धिकर्तायामंगलविनोदकाया
मंगलशोसविचित्तायानिर्वाणपदवर्णना नाम द्वितीय प्रश्नोक्तः ॥
॥ १०० ॥ जोपै ब्रह्मज्ञानमें बुधि न लगेभरि पूरि ॥ तो पुनि

भक्ति सुमत्य करि गहै ज्ञानकी मूरि १ सत्य सनेह लगाइ करि
 व्यावै श्रीभगवान् ॥ आदिअंत यकर सरहे लहै परम विज्ञान २
 भक्त होइ सद्भाविका छलहठ त्यागी सत्य ॥ अत विष्णुपुरवास
 लहि मेढै भव आपत्य ३ आन ओर हेरै नहीं प्रीतम सांचा त्याग
 गि ॥ पूरण भये निर्वाहके रहे तासु तट लागि ४ वाणी परिहरि
 कपटकी दिभ भावना हीन ॥ आराधै शारंगवर होइ नयि मंदुख
 दीन ५ किकर लौं जो भाव है सो मन राखै निज ॥ अहंकार ममता
 तजै सब दिन वित्त वित्त ६ मित्र मानि सवनेह तजि वाही सों
 करु नेह ॥ अंत प्रीति वय बासना लै लै है वा गेह ७ जाको रूप अ-
 दृश्य है दृश्यमान किमि होइ ॥ सत्य प्रीतिकी रीति यह अप-
 नावै त्वहि सोइ ८ प्रीति प्रतीति स्वचित्त धरि व्यावै शारंगपा-
 नि ॥ मुक्ति पदारथ कर लगे बोकवि कहत बखानि ९ करै प्रीति
 हठ भाव सों तजै न कोटि कलेश ॥ नारायण की कृपा ते बसै मो
 वाही देख १० विघ्न भय कर देखि मग तजै न कर असि प्रीति ॥
 सारिचलै निज प्रेमपथ यहै मित्र की रीति ११ ऊपर ते हित की
 बदत अंतर आन बिचार ॥ सत्य प्रीति भाभीन उर कौन निबा-
 हन हार १२ मंगल प्रियतम सत्य जो गहै टेक सत भोय ॥ आ-
 दिअंत यक भाव सों तहि मित्र दरशाय १३ मंगल कदली दृक्ष
 ज्यों हठ तजि फलन दुवार ॥ नैव व्रतीत्यो सविंजन नहि धरत
 अवतार १४ सहन कोटि भय पंथमें मृगवन सुन्यो अलापु ॥
 प्रीति विवश आवत भयो प्रण वश नहि संतापु १५ अहि सुनि
 वाणी वेषु की निकस्यो भवन बिहाय ॥ यदपि गह्यो अहि अधिक
 त्यहि दूरे दण्ड समुदाय १६ दण्डन भंजिकिय बंध त्यहि बहुरि
 वजायो बेनु ॥ सुनै लग्यो मानन्द ही प्रीतम वाणि सुखेनु १७ को-
 ल काल का करि सकत पूरण पुरुष अनूप ॥ तासु प्रीति ते अभय
 मन पावै गो निजरूप १८ तन ते पूजत देवता मन ते विप्रयो
 ध्यान ॥ प्रीति सत्य लावन नही क्यों होवै कल्याण १९ एका-
 दशो बने रहे नारायण ब्रत जानि ॥ उर आशा भव भोग की बयो

होवै फल दानि २० जगन्नाथको जातमे मन त्रिय तनय सनेह ॥
 मन विराग आयो नही क्यों वसिहै सुरगेह २१ कंकर से जव-
 नाइ नित सोवत दुखित शरीर ॥ लाभ, लालसा, उरधसै क्यों
 सिद्धि है भव भीर २२ अग्नि चोरि दिशि ज्वलित मधि वैठित प-
 तनित दण्ड ॥ भक्ति भाव मन जुद्ध नहिं, क्यों सुख होइ श्रवण्ड २३
 विनु हाथे जल पान नहिं विनु थिल भोगन भोग ॥ तपा, क्षुधा उर
 प्रातिनी कहा मुक्ति, सयोग २४ कोमल वचन मयूर वत निर्णय
 जात अनेक ॥ काम, लोभ, अंतर वसै कस यह भक्ति धिवेक २५
 श्री गणेश अज, जोरिकै भूति मर्दि, निज अंग ॥ मौन गहे मगधा-
 नि नित निदहि तीरथ गंग २६ आप बडाई तित चहत निदति
 आन सुजान ॥ आशा घासी, अजित मन कहां मोह कल्याण २७
 बहुत घेहारी भक्त नहि निराहार नहि संत ॥ सत्य प्रेम की मग
 गहै सुख समाज, त्यहि अत २८ जानत आनन आपस म, युविके
 मारग माहि ॥ अहं भाव दुख दानि भव अंतहु, सयक नाहि २९
 प्रीति रज्जु मह घाधि मन संत मंग देह चलाय ॥ ज्यों नट वाधा-
 खा मृगहि जहां चलै लै जाय ३० कामी सेवत नारि ज्यो आन
 प्रीति को त्यागि ॥ तूम मगल मन तौन विधि रहु प्रीति मरुते पागि ३१
 दीन वस्तु विन विधिर मह ज्यो दिन करहि निहार ॥ त्यों मगल मन
 तू करै पूरण प्रीति विधा ३२ मन ते तन ते वचन ते क्रिया कर्म धन
 दाम ॥ तिस व विधिले वै सीत पग जग सुख पुनि हरि धाम ३३ कोप-
 दित फविकौ नहै को जानी गुण रूप ॥ प्रीति विना निर्जानाथ की
 पति विन न रिखतू ३४ भूप प्रतापी प्रीति भव चाहत सुख जग
 लीन ॥ छिन्न विभव पुनि ताहि सव कहत मही पद्म योग ३५ सेकले
 जगत स्वारथ मयी अन स्वारथ हितु होइ ॥ मगल मन संसार मह ते-
 ह नियाहत सोइ ३६ मृग बलि अधिक स्नेहे तु गिर मृतक चलो ध-
 रितात ॥ मूरख बन घामी कहै मनुज योथ मृग जात ३७ को
 फराल को सुगम को बुद्धि ममारक कौन ॥ मत्स्य नेह शारंग धर
 सरलो वै बुध तौन ३८ जो साचा मारग बंदत ताहि कहत है दम ॥

पूजत छलमया देवता कीन्हो कपटारंभ ३६ जवलंगि आशामो
 गकी तवलंगि मीक्षन होत ॥ आशमिटे भवकाम की अनुभव
 करत उदोत ४० मातपिता तिथसुत सखा तजिकैवने भिरवारि ॥
 गृहगृहेमान गमाइयो क्यों मोचै अविचारि ४१ केमीक्षरलोपत
 नहीं कोटिउपाय प्रवीन ॥ आतमएक विचारविन जन्म जन्म
 दुखपीन ४२ क्यों स्वप्ने महदीननर नरपति पदवीपाध ॥ ज्ञा
 मेरचक सुखविबुध तथाजगतको भाषा ४३ चारिपात्र गुणवीचमे
 विविधजन्म तूलेइ ॥ विषयवासना प्रबलमन अमितदंड त्वहि
 देइ ४४ आयावृद्धा अपारवौ आतपपूषणदेव ॥ आतप मित्र वि
 हीननहि यहै द्विपदकी भेव ४५ दानदिये धनलोभहै तृणावृद्धक
 सात ॥ ज्ञानदीप प्रवरितनहीं व्योपारीकी घात ४६ वेशभेदकी
 जानिमन खणिकभार भरिबस्त ॥ बेच्योदने दामलगि तैसेदाम
 सीमेस्त ४७ नरमेघावी कर्मकृत लाभहानि तजिदोइ ॥ पापपु
 ण्यआशातजे लहत सुक्तिपदसोइ ४८ गुरुसौ पूछ्यो सत्यवत
 कहइन्दी निजसाधु ॥ पूजनसाचे देवको आतमही आराधु ४९
 मूरखजडलौ द्वैरहे जानतज्ञानन भक्ति ॥ नाममनुष्यनिवासि है
 अंतनरेकविनुभक्ति ५० उयोसूत्रक निजउदरते तंतुसमूहवनाया
 अग्रजगध आचारसौ जातअत पुनिखाय ५१ ऐसे निजवश राखि
 कौगोखमस्त मनयुक्त ॥ बाहरभीतर कर्मकृत जीवत सीनरमु
 क्त ५२ कमठआपे इन्दीसकल स्वयंपसारत वीर ॥ पुनिकथत
 निजजगमे तथाशांत भेतिधीर ५३ खोजाचाहै ब्रह्मपद अनुभ
 वकोगुभदेश ॥ तौसतमेरिग चित्रधरु सुनिसतगुरु उषदेश ५४
 चितप्रिद्धांतक कर्मके सेयेविनुगुणपायना मुक्तहोइ मंगल नहीं
 जन्मअनंत अमाय ५५ जानतआतम अगमअति जानेआपान
 आशना यथादुग्धघटविंदुजलामिलततरगुलखाय ५६ तीनलोक
 दयापकविरुज देवतसर्वकेकाज ॥ गुप्तप्रकटा सबठाम प्रभुभजु
 कितमन निर्व्याज ५७ नारिपुरुष कहिसेकृत को अलख अहव
 धकाय ॥ ज्ञानदृष्टिब्रह्मत यदपि को सुयसकत बताय ५८ लपमा

ताकी कौन है जो न बिलोको देव ॥ अकल अभेद अद्वैत को क्यों
 करि भाँपे भेद ५८ ज्ञान सूर उदयत हृदय बुद्धि नयन सों देखु ॥
 पुर्म उद्योति अविनाश सो पूरण शब्द अलेखु ६० शब्द अनाहत
 नित करत सोवत जागत एक ॥ सुनत होइ मतवार बुधजनु मधु
 पिदे अनेक ६१ जीजो रेख संसार के सो सव तामें जानु ॥ मंगल
 मन चित द्वेत् नहि यह धौ कौन प्रमानु ६२ सात स्वर्ग वसि
 जन्मालहि पावै कर्म विभाग ॥ सुख दुख मान अमान भव विधु
 आत्म अनुराग ६३ कोटि भार हाटक धर्यो रती एक परस्पाय ॥
 जानों सब को मोल तिमि ब्रह्मजीव के भाय ६४ अक्षर एकै रूप
 है माशरूप अनेक ॥ सोमाया गुण तत्त्व बुध अक्षर ब्रह्म विवेक
 ६५ धीरवती रणचढ़ि लरत पद पाछे नहि देत ॥ तथा प्रज्ञा स-
 वाग मत हठता करि गहिलेत ६६ निज पति मरण बिलोफि
 तिया मोह विषय सति नेह ॥ समुझायो मानत नहीं जात पति
 संग देह ६७ ज्ञानवान गहि सत्य मत तैसे त्यागत नाहि ॥
 हठ करि कयावत आत्महि पूरण प्रवहि समाहि ६८ मेरे मत
 निरगुण सुगुण दोतों आत्म ज्ञान ॥ गुणज होत त्रौ निगुण
 को धूझो पूरण ज्ञान ६९ अज्ञानी को ज्ञानविद विन आत्म सुवि-
 क्षार ॥ अनुभवे तिद्धि स्वभाव है कसी कर्म विहार ७० जानि आ-
 तमा मोधवा धरि भुलने अज्ञ ॥ ताहि प्रबोध्यो ज्ञानमत द्वौ अ-
 ज्ञान अरु प्रज्ञा ७१ वृक्ष बदरि फल कीर गहि कानन गयो कुडायो ॥
 धीजगिरे जामत भयो सूर भूमि जलपाय ७२ जेपे अंश न धीज
 में परमात्म को तात ॥ तौ कत आढ्यो फल फल्यो सो सब जग
 दरशात ७३ मीन उदक ते रहित फिरि जियत न कोटि उपाय ॥
 मंगल नर जडता विषय हितत जि अहित भुलाय ७४ सुस्त्रक
 देखे लोह के कस्त जेष्टभाव ॥ मंगल मन लहि ज्ञान हितु तज्यो
 न नीच स्वभाव ७५ लिहते क प्रीतम गुणत सुनत न देखत देह ॥
 शुचि इन्द्रीयाये मनुज वसत यत्र केगेह ७६ काम क्रोध लोभा-
 दिको जानत सुखदा मित्रा ॥ क्यों समुझाई जीव कह्य इह

रीत धरित्र ७७ मोहपिंजरा दुःखसुख द्वैकपाट धर्मवध ॥ जीव
 सिंहलीवध परधो तोरत होइ स्वतंत्र ७८ दाखाद विषयको विष
 तरस खात पीठ गुणकाल ॥ जानि चवत सूजीव क्यों ध्याउ
 देव त्रैपालु ७९ विषयखाद भावत हृदय जवलनि जीवहि ॥
 हि ॥ ब्रह्मसुखहि निरखत चतुर सबलनि कैसेहुताहि ८० कीटि
 मानवै देवासकी नर आयुष परमानि ॥ अधिक प्रेकशासा मनुज
 जीवत नाहि सुजान ८१ मट खासाको एकपल गुणी दिवत
 निशिश्वास ॥ प्रदणत सहस हकीसमें जात खासा विश्वास ८२
 अंत आदि या विधिवहै जीवतजै जो देहना ॥ जीवै चकषत धीसही
 धर्म चितुर न सँ देहा ८३ मनमधि व्यंग विचारकृत दूषत शाल
 निदेश ॥ मुक्ति लहत कर्तव्य विनु तन विभूति शिर केश ८४
 बापीपाप न परिहरै धर्म सेगको हेरि ॥ तदीप दुचितई चितरहै
 चितत प्रापहि फेरि ८५ अहं विन पुलन नही जप न विना अनु
 रागो रा मोक्ष न अति मध्यान विनु सोया ८६ अविभाग ८७ और
 नको शिक्षा करत निज करणी परिदयागि ॥ शिक्षक अंध बिहीन
 जप बोठा धतावत जागि ८७ लघुता गुरुता कारखहु एकशब्द
 को सीति ॥ शब्द विचारै ज्ञानमर्म मूरखब्रह्म प्रतीति ८८ शब्द
 सुख नहि मंत्र शुभ गायत्रीहृद नाहि ॥ प्रम बुद्धिमय शब्द सो
 अज्ञान को साहि ८९ कलमल तल समान है शब्द ९० अनजय
 सिद्धि ॥ ज्ञान धामता शब्दमें लवलाये हितवृद्धि ९१ जोपे जन्म
 भरि कुमंगमें विचर्यो नर बधुपाये ९२

सम्पद विधि निज आत्मा कृत उत्पन्न नित ॥ ६॥ जो योगी
निज शब्द की परस्पर संगति लेइ ॥ भगवत्स मंहि चतुर्भुज सो
न सत्य प्रम वेइ ॥ ७॥ बाह्य अन्तरी तै श्यायुह भूतवरण ये तारि ॥
इकी दुविधा ज्ञानसंत पंडित लेहि विचारि ॥ ८॥ विष्णुसयी जग
ज्ञानिके गह वैष्णव पात ॥ ९॥ सत्य शब्द प्रभाव न करै अंत स्वप्रद
को भाव ॥ १०॥ मोति दातुहि ज्ञानिके मंगल मंत्र भजु राम ॥ इत
दत्त दोनों ओर सुख परंपरुष विचारि ॥ ११॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति श्रीमत्सकल अष्टनिहतायासवर्गमुद्युक्तताया मंगलविनादकार्यामंग-
लदास विरचितया भक्ति मार्गनिवाये पदवर्णनानामृतोद्योतक ॥ ३ ॥

॥ १॥ कोटि जन्म तीरध यज्ञे लाख जन्म मित्र अमान ॥
मंगल नहि विश्वास दद कहौ लहै कल्याण ॥ १॥ विन सतिभाव
न सिद्धि कोउ पूजन अप जग होत ॥ २॥ सत्यभाव मंगल सदा
मंगल करत उदोत ॥ ३॥ काष्ठ सृष्टिका उपलकी मूर्ति मंहि
नहि वेत ॥ सुदभाव विश्वास दद फलवा सदगुरु भेद ॥ ४॥ वर्षण
पूषण दिशि लावत उगिलत ज्वाल समूह ॥ ५॥ तिमि मन आतम
ओर लवि त्याग त विप्रयक जुह ॥ ६॥ विप्रय आसना चंचला अथा
स्वैरिणी आस ॥ कोटि प्रतिवत धर्म सुनि परपति निरखित का-
म ॥ ७॥ छल प्रपञ्च कृत गुप्तही प्रकटत काळहि पाय ॥ ८॥ प्रीति भंग
तव होति है विष्णु पैठक भाय ॥ ९॥ काकवेप करणी सुकुल पावन
पुथा मराल ॥ १०॥ मरमातंस घर हंस फल पावन वायस घाल ॥ ११॥
जिमि फिलात निज खेत में जो मोवत सो होत ॥ ऐसे काया खेत
में करणी करत उदोत ॥ १२॥ मिश्रदोह पसतिय रुमण मिथ्या साखि
अलाज ॥ आतपाप बहव डिकरत ऊपर भक्तिसमाज ॥ १३॥ उरभुजा
दि माला धरे मालबिल मालिमास ॥ मिथ्या छल निबसत हृदय
आरिगये सकनाम ॥ १४॥ अंतर बाहिर पकरन अतभावी शुचिसि-
ध ॥ पर उपकारी ज्ञानसय तापद मन आराध ॥ १५॥ दयो उवारी
निज दाउको करत अतम सत्य ॥ और न सो सारथ नहीं तस

बुध आतम नित्य १२ घटके अंतर बाहिर देखिय प्रकट अकाश ॥
 घटफूटे घटहीनयै नाहीं गगन विनाश १३ तथा जीव अरु देह
 यह ज्ञानपथ गहि देखु ॥ अविनाशी अज अगुण है निज आपापद
 लेखु १४ जाग्रतमें ज्यों व्याइये त्यों स्वप्ना करुनेह ॥ करिय सु-
 धुसिहुमें वहै जो कर्तव्य निजदेह १५ बंधन काको जगतमें मोक्ष
 कौनको तात ॥ अविनाशी अद्वैतको यह अचरजकी छात १६
 जरै अग्निसों यहनहीं जीवपर्म अविनाश ॥ अस्त्रशस्त्रकरिकटत
 नहि सवविन पूरणभास १७ गहाजात प्रतिधिबनहि जिमिकर
 सो गुणकोटि ॥ त्योंही यहशुचि आतमा क्याकोउसकत अगो-
 टि १८ मस्थौ न मरिहै अमर अज भयो न होवन हार ॥ आपु-
 हि आपु प्रकाश कृत हरिमतयहै धिचार १९ जाकेरूप न रेखहै
 आवत जात न दीख ॥ ताहि स्वर्ग अरु नरकपथ यह कैसी मंत
 सीख २० कवि पंडित कोउ सत्यमग पंगधारै शुचि काम ॥ तब
 सदांग सत्यमंत गहिपावै विश्राम २१ श्रीहरि अर्जुन को किया
 कर्मयोगउपदेश ॥ सिद्धांतिन आतमबधो तबत्याग्यो भ्रमदेशर २२
 जो आतम नहि उद्धरत पाप पुण्यकी आस ॥ तेपुरुष निज आ-
 श्रयै करत द्विपदमेंवास २३ जीवकर्मवश विषयरत आसपास
 करैकाल ॥ भरमाका सब योनिमें जे कलेशके जाल २४ सार
 वस्तु सो खोजिये तजि असार निःकाज ॥ मोल अधिक स्वादो
 अधिक शुचि सुगंधि शुचिसाज २५ मूढ़ काचकरमें गहत तजि
 पारस पापाण ॥ तैसे तू विषयी गहत त्यागत पद निवीण २६
 व्याल चालि विकराल जग भवन सरल गतिलेत ॥ त्यों मंगल
 तू विषयरत हरिमगु चेलुकरि चेत २७ सबयोगनको योगहै स-
 कल मंत्रमय भूरि ॥ अछल प्रीति भगवानकी जो वायक सुख
 भूरि २८ करमाला जापक लिये मन विषयनके ध्यान ॥ मोक्ष
 लालता वृथाकृत अंत विषय सन्मान २९ यथा गंगजल घट
 भस्थो पावन पाप विनाश ॥ सुराविंदु कृत अशुचि तिमि जीव
 विषय संगभास ३० मायाको परपंच है नीच ऊंच कुलवान ॥

त्यों भोजन गोमांसते विप्रगवाय समान ३१ सुखीच कुरुचिकीज
 करे आतम तत्त्व विचार ॥ मंगलमत सिद्धांतके लहे मोक्ष क-
 रतार ३२ अमजबलंगि करिसकत नर तबलंगि हितसंधकर ॥
 शिपिलभये स्थागत सकल तूतजु तिनहिं सबेर ३३ जोकीबुद्धि
 प्रबोध मय ब्रह्माचार सुलोक ॥ तेबहुमोल अवधर्भव धसैज्ञानके
 धोर ३४ जो भारग भयंकार मने सिंह क्लेश अजघन ॥ जानि
 जात किन अपर पय भूलिजात कसतघ्न ३५ मै स्वपनेमहदीख
 यह जन्मा मो गृहसून ॥ मोहि लालसानंदमें जागिलखा सोकहू
 न ३६ यहैमोहको नींदहै ज्ञान दिवाकर नित्य ॥ प्रकटतैप्राची
 बुद्धिमय जागत पुरुष सत्य ३७ दुश्चिदिधि प्रकट प्रकाश है देखि
 लेह किन मोत ॥ अछत नयन कल अधविन तूती परम पु-
 नीत ३८ पाप पुण्य सुख दुखतुही छद्म अछद्म समान ॥ जो
 है सो तौ आप तू क्यों मग भूल भुलान ३९ यथा रुधिर
 सवांग में व्यापत तथा सुमुक्ति ॥ मनुज देह के संग संग हा-
 लतहै विनियुक्ति ४० विषय ध्यान नाशतसुमति यावत कुमति
 शरीर ॥ जासुप्रबलतावध वसेत अधो योनि सहपीर ४१ किर्म
 तीनिविध जानिये शत रज तमके भाय ॥ दीयतैजे एकैगहै रहै
 मोक्षकोपाय ४२ जिमिअर्काशमें नीलता दृष्टि सीवको लेखु ॥
 त्यो असत्य संसारके सकलपदार्थ देखु ४३ भानमान अनुमान
 करि वदेतसकल बुधिवत ॥ जानतप्ररण ज्योतिमय ब्राह्मणसेवत
 संत ४४ धीज नहीत गुलाबमें जामतअंग प्रताप ॥ जानु चतुर
 यो आतमा अंगअंगकेथाप ४५ अकरकहत दुविधालगत है असत्य
 जंगरूप ॥ याहिघनायो जासुने सोप्रभु सत्य अनूप ४६ तीनिकाल
 सबदिनरुहे तिमिभवेको भ्रमभूल ॥ द्वैपद तीसर जीवधर्म जो
 दायकबुखशूल ४७ बालकरचिके ख्यालसंब अंतमिटावतसर्व ॥
 तिमिपरमात्म चारिदश समयसमय निमिपर्व ४८ सूरज्योति
 जह विदितनहिं नखितमयूपन भास ॥ तत्त्ववस्तु गुणकालनहिं
 जहवाबदा बिलास ४९ लोकालोक न कहिसकत रूप अरूप न

कोइ ॥ द्वितनर्तहा प्रकायकृत जात एकही, होइ ॥ ५० ॥ यथा अग्नि
 तणकाष्ठसव जातिकरत निजअंग ॥ तिमि परमात्म जीव कहं
 तिजमय करत अंग ॥ ५१ ॥ ज्ञानवातको अगतमह कोमूरख मति
 हीन ॥ विषयभोगसह समबुवो भापतनिकर प्रवीन ॥ ५२ ॥ जाकी
 बुद्धिसंतो गुणी सेजानी मतिधीर ॥ याजगचाहो जससही अंत न
 पमकी पीर ॥ ५३ ॥ सकलवस्तुको जात डर शीलवान शुचिकास ॥
 भाया ज्ञानत झूठजो सुगति लहत परिणाम ॥ ५४ ॥ लेभ सहित
 ब्योहारसव मातबडाई चाह ॥ ताकी बुद्धि रजोगुणी व्रतअखि-
 लकविनाह ॥ ५५ ॥ आपनपद चीन्हत नहीं जडलों रहत सवाहि ॥
 मूढभावतम गुणविवश नहीं मुक्तिकी चाहि ॥ ५६ ॥ बुध मण्डली न
 जातखल विचरत सदाकुसंग ॥ ते प्राणी बहु जन्मलगि लखत न
 आपनरंग ॥ ५७ ॥ यत्नकरत सुरलोककी विषय वासनालीन ॥ को
 प्रावतपद अमरबुध दुविधालगी मलीन ॥ ५८ ॥ जातिन जन्मे जीव
 सब तादिन ते न मिलान ॥ भयोपितासंग यत्नकरि अवकरुमत
 पहिचान ॥ ५९ ॥ वारिधियथोन बढ़त असुं घटत न काहरीति ॥ तिमि
 परमात्म अकलअज बदनवाक्प श्रुतिनीति ॥ ६० ॥ इन्द्रवरुणयम
 धनर्षादिखि आदिकसब जगिनात ॥ इनके सेवनते चतुर कहां
 सोसकीवात ॥ ६१ ॥ क्यों व्यावत नरके चतुर जोषसीर तजिदेइ ॥
 बहु रिजन्म भवसंगहै लेति ज्ञातम सेइ ॥ ६२ ॥ साणी परिहरि मोह
 की रहु आतममें लीन ॥ बलज्ञान प्रतापते पावै मुक्ति अखीन ॥ ६३ ॥
 भायामहा अपारहै अक्षरवतसोइ प्रमान ॥ अक्षरपूरण कहाहै यह
 सिद्धांत सहान ॥ ६४ ॥ ओंकार सोहं वदत प्रणव अजय है भाव ॥
 संगलमनके बोधते संयक एक प्रभाव ॥ ६५ ॥ अकलकला विनुक्यों
 कहत करतलोक कर्तार ॥ लिख होत नहिं जलजल लखु करि
 ज्ञानविचार ॥ ६६ ॥ मां गिखात सहिसेजकृत नगरहत तजिलाज ॥
 मुक्ति होत संगल नहीं विनव्याये तनराज ॥ ६७ ॥ प्रीति प्रतीति
 सनेसनिता प्रीतमकी मनव्यात ॥ मोविजाय वाको मिलै तब
 पावै कल्याण ॥ ६८ ॥ काशी मगमें धम धडो मुक्तप्रेतहोय ॥ सोजाने

विनु आतमा जानते साधूंसोय ॥ ६ ॥ जानत आतिम भावजे परमा-
 तमके भाय ॥ ७ ॥ पोवत मिर्बाणपव दुविधा देतव हाय ॥ ७८ ॥ विना
 कर्मन हि सिद्ध भव कर्मफलित दुहुँ आर ॥ परमहंस कर्मन करत
 जानते विपप्रकठोर ॥ ७९ ॥ जोविनिआवे सहजही सो कर्तव नित
 साधु ॥ सत्यभाव श्रीरामपद जलजसदा आरोग्य ॥ ८० ॥ स्वर्ग रहे
 निजपुण्यसंग अमरपदारथ भोग ॥ दुविधामिटी न जन्मकी कथो
 करिभयो विभाग ॥ ८१ ॥ उडतपक्षि आकाशकह निजबल बुधिअनु-
 सारा पावत अंतन कोटिकृत माया तथा अपार ॥ ८२ ॥ जो जीत माया
 विदुष होइ ब्रह्मसो आपो ॥ स्वर्ग नरक क्यपै मही दुविधा जन्मसंताप
 ॥ ८३ ॥ मोहिनि गोजि गिउठयो लहिर विवह प्रकाश ॥ चीन्ही आपनि
 घस्तुसंब निकट दूरि चहुँ आश ॥ ८४ ॥ जैसे मिहं वीषानमेलीली लखी
 न जाय ॥ योग भये तत्तसंग के परत प्रसिद्ध लेखाय ॥ ८५ ॥ अथवा
 तिलमें तेल क्यो निवसत गधि प्रसून ॥ तथा निरंजन ब्रह्म प्रभु
 तन प्रति दोष बिहून ॥ ८६ ॥ या शरीर के मधन ते प्रकटत तासु प्र-
 ताप ॥ आतम ज्ञानी योग रत भेटत भवसंताप ॥ ८७ ॥ ब्रह्म गेत-
 न भूति रगि दुविधा वासि शरीर ॥ तत्पर क्यो न आतमा क्यो
 करि होइ संधीर टो ॥ पांच प्राण वासी धूपे पचि तस्व निरमा-
 श ॥ एक भारगमह सब चलि तो पावे निरवाण ॥ ८८ ॥ कमलापति
 की चाहनहि कमलाकी अति चाह ॥ मरुख समुद्रत अमर पद
 काल करि क्षणमाह ८९ ॥ तीनि पात्र पटली तजे भजे निरंजन दे-
 व ॥ समजाने लघु ऊंच कह लह मुक्तिको भव ९० ॥ पांचवीसको
 एक कति मनकी देइ भुलाइ ॥ समुझै आतम तस्व की ॥ आशुमुक्त
 है जोय ॥ ९१ ॥ गुरुवाणी प्राणी सुनै करै तासु धनुसार ॥ अर्म स-
 कल जगहेतु हित करै सबह्य विचार ९२ ॥ अपनी बुधिनिर्मल करै
 वैरागी मन होइ ॥ अरवन एकै रस रहे ज्ञानी कहिये सोइ ॥ ९३ ॥
 जी कुकर्म की चाह मन तो अर्चा जपयाग ॥ सिद्धि लहत नहि को-
 टि विधि धरयत भीति विभाग ९४ ॥ आश्र उपनिषद वेदली धर-
 यत पूरण ज्ञान ॥ सो मानित नहि दंभिजन कल्पत आनपुरीत द-

कश्यप-वाह्य के नाम हैं पदक्षत्री के नाम ॥ द्विविधि वैश्य-यक
 शूद्र है एक पुत्रि परिणाम २८ जिमि कंकण किंकिणि अपर नू-
 पुर त्रिकयेनाम ॥ मिलत नाम अर्जुन भरी समुद्रत बुध-गुणधा-
 म २९ प्राट एकही भूमि है खाते पानसो एक ॥ द्विविधा पितुमें
 कुंष्टनिहीं कलपे धरण विवेक ३० ब्रह्मा ते उपजे सकल ब्राह्मण
 धरणी सर्व ॥ करणी उच्चम अधम लघु धरणी जम कृतार्थ ३१
 नीचघातमा उद्धरे ब्राह्मण पदमें लाय ॥ ब्राह्मण षट्-कर्मन रहि-
 त अमिता नरु भरमाय ३२ युद्ध नाम सुनि तन कयो प्रजादण्ड-
 द्वाभूष ॥ कयो क्षत्री वासों कहत तन मन नीच स्वरूप ३३
 सजि स्वधर्म रत अपरमत जिमि पतिवत रत आन ॥ मंगल तू
 सर्वगत जिकरु जनि आन वखान ३४ सम्पूरण सर्वगमत या
 में नहिं सन्देह ॥ श्री-शुक व्यास वशिष्ठ भृगु मुनि ब्रह्म गहो वि-
 देह ३५ मान बडाई हेतु कयो कर्म करत जगभूरि ॥ आयुप्रद लौ
 सगी नही तजि दे दुखकी मूरि ३६ सात पांचके योगते निर्यय
 भिषक जहान ॥ मूल गहै शाखा तेजे सो साधू परमान ३७ मंग-
 ल मंगल चारि द्विधि परमात्म परसाद ॥ क्षणक व्यानते कृपा
 तिथि भेदत विविध विषाद ३८ मंगल मनहिं प्रबोधनहिं कौटि
 उपायन होइ ॥ विनु विराग मारग गहे करणी पूरण सोइ ॥ १०० ॥
 इति श्रीमत्सकलभट्टानहतायां संगसुबुद्धिकर्तायामंगलविनोदकार्यामंगल-
 दासविरचितायां निर्वाणज्ञानवर्यानां नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥
 ॥ १०० ॥ कर्म पात्र घटि बढि नहीं कर्म प्रधान सदाहि ॥ शुभ
 कांजी उरध धरत अशुभ अधोगति जाहि १ लोभ विवश मित्र-
 न झखत करि प्रपंच बहु भांति ॥ अन्त समय पातक संसहि अ-
 ध गति बलि पुछिताति २ कामवश्य परतिय रमण बेश्यारतनर
 जोइ ॥ दण्ड पाइहैं प्रसन्न पुर नरकनिवासि हैं सोइ ३ व्याक व-
 णिक पै रत्न जिमि जानत गुण नहिं तासु ॥ पारख कर परिख
 स्वइ निजगुण करत प्रकासु ४ तपा जीव भाया विवश जानत

सो न स्वतंत्र ॥ पारख अनुभव कुवतही प्रकट्यो पूरणमंत्र ५ वि-
 नुखायेइन्द्री शिथिल यथा विदित बुधिवन्त ॥ तिमिज्ञानी सत-
 सगधिनु पावत क्लेश अनन्त ६ कहाचहत निरगुण पदहि सर-
 गुण जानत कोइ ॥ मंगल ज्ञानीमौनभल ज्ञानवदै भूमसोइ ७
 पण्डितपाठ पुराणकिय मूरख मण्डलजाय ॥ कोहेतक चेतक
 भनै कहैं बडो बकवाय ८ कुजन मण्डली सुजन बसि पंथन
 पावतमीत ॥ दुखित रहत सो निकरगति यहै घात विपरीत ९
 चारिखानि भवभूतसब ब्रह्मअंश निरमाण ॥ अज हरिहर तत्पद
 बदै असिपदसोबिनुमाण १० जावदभ्रमउरमेंबसै मोहलालसासा
 थातबलगि मोक्ष न जीव कहैं जन्मै मरै अनाथ ११ जानोंचाहत
 ब्रह्मगति अजअनवद अनकाय ॥ चीन्हत नाहीआपुको कहाज्ञा-
 नकोभाय १२ वेद नेति भाषत सदा हरिहर सकत न जानि ॥
 लघु धी नर ता खोजमेंसहत अनेक गलानि १३ बालभांव धारै
 सदा छल प्रपंच तजिदेइ ॥ लिप्त रहै आतम विषे अमी पदार्थ
 लेइ १४ योग भोगमें कठिन पद पूरणताको तात ॥ लघु मति
 कटु गुण कर्म विनु दुष्ट और भ्रम खात १५ धुक बैपानस विषय
 रत धुक तपसी अविचार ॥ विनु परमात्म भजनबुध धुक नर-
 काय अगार १६ गर्भवासकी सुधिनही निज निबन्धगे भूलि ॥
 अबकोरक्षक होइगो का विहसत मन फूलि १७ समन चारके
 दरय ते मल तजिहौ अकुलाय ॥ वैतरणी महँ विविध विधि मन
 हिलोर तूखाय १८ सीख सुधासम सुनतनहिं गुणत नसति उप-
 देय ॥ सुधि आवैगी मन तवहिं जब यम देहै क्लेश १९ मित्र पुत्र
 रक्तीभये जग अनित्यमहँ आय ॥ ऊंचे मन्दिरकाय नर चढ़ि पुनि
 गिर झहराय २० जाकी बुधि प्रज्ञा गही विषय धरत नहिंताहि ॥
 ज्यों महीप के मीतको प्रजा न सकत सराहि २१ कोल भील
 काननवसत कबि गुण जानन योग ॥ विद्यमान ह्यानीनको कव
 अपनावत भोग २२ यथाअंगरबनमहँ जरत गंधिन जानतकोल ॥
 तथा ज्ञान निरवाण मत मूरख मनको झोल २३ जे शैवी मति

धीर हैं शुद्ध चित्त विज्ञानि ॥ ते उत्तम भ्रमहीन जग इमि शिव
 लिंग बखानि २४ व्यासदेव सब वेदमत जानि सिखायो शूक ॥
 सिद्धान्तन मत तिन गह्यो मतिमहँ परी न चूक २५ जनकराज
 गृहवासि भे विदितविदेह जहान ॥ यज्ञ अमित बलि भूपकिय
 भो नहिं मन अनुमान २६ नारद धूमत तीनि पुर करत पिशुनता
 काज ॥ दोपनलागत ब्रह्मपद लीलाकृत सुखसाज २७ वामन
 तनहरि धरि छल्यो वलि नरपतिको जाय ॥ दोष प्रपंचन ककुभयो
 रहे सदा यकभाय २८ परम रानेही रामके लक्ष्मण वन संग
 कीन्ह ॥ काल पाय पद प्रीतिको तुरत रामतजि दीन्ह २९ कुष्ठी
 चपबिन कर बिना आनौ इन्द्री हीन ॥ आत्म ध्यायो मोक्ष को
 पावै बढत प्रवीन ३० धायकिये बत आसुरी पूजे तिनके पीरा ॥
 क्लेश सह्यो निज अंग अति व्यथा न मिटी शरीर ३१ जो न बेव
 पौराणमें काव्य बतवै नाहिं ॥ तहां त्रैणव शैव कयो शाक्त ब्रह्मविद
 जाहिं ३२ पूजिय बेव प्रताप सों धूर्त प्रपंच ठलोग ॥ प्रकटे छल
 परिणाममें सब विधि होत अयोग ३३ तन धन अपै मित्रहित
 जीव लोभ तजि देइ । सो प्रीतम संसारमें विपति सहाय करेइ ३४
 जग नर प्रीति प्रतीति अति प्रभु पद प्रीति अलेख ॥ जो पुरवै नर
 नारिसो मेटै कलुष विशेष ३५ जन्मभयो सामान्य पद करणी
 कर्म द्वितीय ॥ सेवत पति बत कंथ भइ विना सेवा कुधितीय ३६
 कल्प कल्प कल्पित रहत ज्ञाती कर्मज माहिं ॥ बुधि बिनु नर
 रत विषय महँ पुनि पुनि आवहिं जाहिं ३७ कूकुर सुयो भूकत
 वृथा दर्पण बिम्ब स्वहेरि ॥ द्यो मति बिनु विषयक मनुज दुख
 पावत चहुं फेरि ३८ सिंह निरखि प्रतिबिम्ब निज मस्यो कूप
 परिसूढ़ ॥ तथा जीवमाया विवश लेखेत न तत्त्व अगूढ़ ३९ काक
 अस्थि लै भगि चलयो देखि पक्षि पछितात ॥ तैसे लखि हरि भक्त
 को विषयक नर पछितात ४० छर्दि रोग व्रण भोजनै वसन करत
 नर नारि ॥ श्वान स्वादसों भयत है निज मन महा सुखात्रि ४१
 तिमि संसारी संतजन परिहरि हरिरस लीन ॥ मूरख भोगत

स्वाव सों पापमूल को लीन-४२ व्यास वंश शुकदेव ज्यो वैद्य
 वंश प्रह्लाद ॥ पूजनीय पावन भये सुनुमन भजन प्रसाद ४३
 क्षुद्रनदी पावससमय चली कु भगहितुराय ॥ तिमि मूरखलहि
 सम्पदा हितु अरि लखत सदाय ४४ कोहीं अरु आयो कहां
 अंत कहा बिनाम ॥ निज पद खोजैं बुद्धि शुचि त्रासु विचारी
 नाम ४५ लघु दीर्घ एकै लखै निज आतम में लीन ॥ ता-
 हि कहत ससुभाव बुद्ध करै न कर्म मलीन-४६ दान दया उर
 वास मर्त निग्रह इन्द्रिय युक्त ॥ दम साधनको सिद्धि मत को
 न होत जग मुक्त ४७ सो विकार व्यापै न उर जो अलोकदा
 लोका ॥ चीन्है पूरण ज्योतिकर विम्व जीव विनुशोक ४८ अकल
 कलासो जगरच्यो गहाकला अवतार ॥ निगम संत पण्डित ब-
 दत सो प्रभु महां अपार ४९ नारायण जन्म्यो जदै ब्रह्म वास्य
 ते तात ॥ चतुरानन तानाभि ते ताते सब जग जात ५० माया
 ब्रह्म अपार द्वौ काया कर्म बिहीन ॥ माया चीन्है ब्रह्मको जानै
 मर्म प्रवीन ५१ मर्म बूझतहि जीव नशि ब्रह्म लीन हूँ जाय ॥
 को वरयै अद्वैतको भेद बुद्धि भ्रम खाय ५२ जाके जानतही
 मिटत जीव भाव भव भेद ॥ बिन जाने भ्रमवश फिरै यह मत
 अगम अखेद ५३ यथा कष्टके अंतरहि निवसत लिखिन प्रकाश ॥
 संघट ते प्रकटत तुरत तिमि तन ब्रह्म विलास ५४ इन्द्र जाल
 घश पंखते होत परेवा रूप ॥ यदपि असत्य न लखि सकत
 तथा जगत भ्रम कूप ५५ नट साचा झूठी कला समुझत भूमन
 नशात ॥ तिमि माया परमात्मा पै नहिं बुद्धि समात ५६
 दीप प्रकाशित घहियो खोजत लोचनहीन ॥ तिमि अज्ञानी
 ब्रह्म को क्यों लिखिपरै अक्षीन ५७ अपनी करणीते भयो चौर
 धन्दि महतात ॥ दीप लगावति विधि लिखनि यह सुनि मन
 पछितात ५८ सातदिवस जाने किये सप्तस्वर्ग फलवान ॥ एक
 रहै मर्याद जग सब जगयहै प्रमान ५९ आखर विरचे गुणिन
 जेतिनमें शब्द प्रमान ॥ तासों भव सब जीव मन पावत मोक्ष

महान ६० उँकार पद लौ चढ़ै अक्षर मारग लेइ ॥ आगम
 मरण नशाय पुनि जानै आपन भेइ ६१ भेव लखेविनु आपनो
 लहै न ब्रह्मज्ञान ॥ ताविन मोक्ष न जीवको भाषत वेद प्र-
 मान ६२ वारम्बार न मनुज वपु पावत जीव सुजान ॥ अथ
 कीचूके युगनि लगि भ्रमैयोनि सर्वांन ६३ दुविधा दोष मिटाय
 के सत्य प्रीति करु तात ॥ मंगल नेहप्रताप ते मित्र धाम लगि
 जात ६४ मित्र मिले आनन्द को तू प्रापति मनहोइ ॥ सम्यक
 मनकी कामना कहुप्रीतम सों सोइ ६५ कपट कतरनी कांखमें
 काटत प्रीति पटान ॥ अंत खुले मित्रत्वनश कहा मित्र सन्मा-
 न ६६ बहुयोजन पक्षीउडत संख्या आवत धाम ॥ त्यो सबदेही
 ब्रह्ममें लिप्त होत परिणाम ६७ बिन करणी शरणी भये मित्र
 द्वार बिनछद्म ॥ प्रीतिमानि आपन करत घासदेत निजसब ६८
 धर्म कर्मकी सिद्धि है अदाही के साथ ॥ अढा सात्विक बिन
 चतुर धर्म सैन बिन नाथ ६९ विद्यापढ़ि पंडितभये सब कोउ
 कृत सन्मान ॥ ईशभजन बिन सर्वथा दुखरूपी अज्ञान ७०
 पढ़ि दिंगल मंगलरचे छन्द कवित्त अनेक ॥ मनबश आव न वि-
 षय रत भूकतस्वान कितेक ७१ तूमंगलमन अंतरहि पूरणराखु
 प्रतीति ॥ बाहिरसों कछुकाज नहि यहै ज्ञानकीरीति ७२ न्हा-
 येधोये वपु के जापै होत्यउ मुक्त ॥ तौ पाठीन स्वजन्म भरि
 जल मधि रहत प्रयुक्त ७३ जोमाला बांधेत रत जन्ममरण शरि
 कोइ ॥ वसंत कीटतौ काष्ठनित परमहंसहै सोइ ७४ पूजेमूरति
 मुक्तिकों पावतकोउ संसार ॥ तौबहुनरनगबासिनी करतअमित
 व्यवहार ७५ सत्यप्रीति बिनु मूढ़मन मुक्त न होवैजीव ॥ दंभ
 कपट भव कोटिकर भरमिहि द्विपुर सदीव ७६ अछत अक्षणे
 सुतनके जवलगि बिघन दिखात ॥ दूधपियावत परिहरत उप-
 जत दुखकी बात ७७ जानिकरत दुर्कामको मानिन मानत ज्ञा-
 न ॥ मंगल तूसर्वांग ते पावैशुभ निजधान ७८ निंदा औरनकी
 करत आपु अशुचि वपुधारि ॥ शिखि बोली भोजन उरग विषय

ते बुधनर नारि ७६ जटा लटा तन पलित अति मौन साधना
कीन ॥ को उपदेश न करि सकत शिष्य समाज प्रवीन ८०
भीखकाज उरमाल शिर भूति जटारचि कोपि ॥ ठगत अबूझन
बूझमति संतकहावत सोपि ८१ अहकार धशमिप्रसन भुजगहि
छल रसकीन ॥ को ज्ञानी कर्त्ता करम यमचर त्यहि दुख
दीन ८२ पापी सातो स्वर्ग वसि अधोगिरत बिन चूक ॥ पाप
घासना उरवसी ज्यों चातककीकूंक ८३ तजत न कपटी कपट
को सतसंगतिहू पाय ॥ यथा नीम तरु मलयसँग कटुता
नाहिनशाय ८४ लोष्टसँग हाटक यथा खोयेनिजपदमोल ॥
नीचसंग त्यों सुजन परि ब्राह्मण मतलहकोल ८५ आतम आपु
अदृश्यहै दृश्यमान प्रतिबिंब ॥ यह सुजानजाने लहत शुचिमा-
रग न बिलंब ८६ लोकलोक मर्यादेहै वेदेवचनकी तात ॥ मूरख
सो मानत नहीं कहाँ मोक्ष दरशात ८७ कलिकठोर घायीसुनै
नीचनको कुलवान ॥ तिमिज्ञानी पापेढमत मन मनकृत अनु-
मान ८८ जिमिलोहेका ताउहै तिमिजीवन तूजानु ॥ परिहरि
आन भरोसभजु प्रभुस्वरूप विज्ञानु ८९ नभषिर हरिषषि चप
उभम भुजहरिहर धनबीजु ॥ उरविधि उदर सुलोकयह देहवि-
राट कहीजु ९० विश्वरूप आपुनधन्यो विश्वभर पुनिआपु ॥ मंगल
दूसर कौनहै जासुजपत तूजापु ९१ ज्ञानिनसोही प्रश्नकियएक
दोइकीतीनि ॥ कहामिलै पटएकरत दूसर परत न चीनि ९२
तवमंगलयों फिरिकहा नामभया रसकीन ॥ कहानाम सर्वांग
को घरयै मूरखतौन ९३ याजगमें विनुनामके वस्तु न जानी
जात ॥ यातेसघते अधिकम्बहिं नामप्रताप दिखात ९४ कमठ
पीठि जामेकवों केश न ध्रममनहोइ ॥ मुक्तिपदारथ भजनविनु
पावै अचरज सोइ ९५ कोपसमय बुधियिरनही रहत सत्ययह
घात ॥ जैसेनिंदक वादते ब्राह्मण आपुपलात ९६ मतिदृढ़ आ-
पनि कीजिये परमारथकोसेइ ॥ शुद्धमनीपी अंतमें शुभगति
जीवहिदेइ ९७ अमितपाप कारके सदा मंगल मतचांढाल ॥

किमिलागै सतपथमें विकल रहत त्रैकाल ६८ बीस विसेगति
 शुभलहै आतम व्यावैकोइ ॥ पूरणकला प्रकाशमय क्योंनलीन
 मनहोइ दृष्टमंगलबारे अपारत्वहि समुझाओ मननीच ॥ तदपि
 न मान्यो दुष्टतू फिरिगा बिषय नगीच ॥ १०० ॥
 इति श्रीमत्सकलभ्रजानुहर्ताया सर्वगमुबुद्धिकर्तायामंगलविनोदकायां
 ॥ १ ॥ मंगलदासविरचितोयाज्ञानोपदेशनिर्वाणपदवर्णनोनाम
 पंचमः प्रश्नतकः ॥ ५ ॥
 दो० ॥ चारिओर अथ ऊर्ध्वलौ नामप्रकाश दिखात ॥ सोजाने
 विनु मूढ़मन क्योंदुर्भाव नथात १ नामभेद जानतनही काम
 कल्पनाकोटि ॥ तिन प्राणिनकी जगतमे मेयाउत्तमखोटि २ विनु
 जाने हरिनामके कियेबिना गुणगान ॥ सतमारग सूझत नहीं
 जीव भूमतद्वैथान ३ जवलंगि नामप्रतापउर प्रकटत आइनतात ॥
 तबलगि भग विवरणकरब महाकठिन दुखगात ४ कालकराल
 सचेतको निजबध करत अचेत ॥ भवसागर मे जीवकहँ विविध
 हिलोरैदेत ५ जानत नाम न जासुको वपुनिरख्यो भरिनैन ॥
 जगतसांझ फिरिआनसों बरणत चतुरबनैन ६ नामअधारीकपट
 गत ममता रहिन सधर्म ॥ बिचरत पा संसारमे ब्रधतन कर्मा-
 कर्म ७ जपोनाम अजपा सदृढ ध्रुवलह अतुलस्थान ॥ श्रीप्रह-
 लाद सुनामबले कियोबिष्णु सन्मान टेकेनत्यागै ब्रह्मव्रत नाम
 जपै चितलाय ॥ पूरणप्रीति प्रतीतिसों हरिपुरसो चलिजाय ८
 जहांगये बहुरैनही पुरषक्षीण नहिहोइ ॥ शुभकारी सर्वगमति
 पावतहै पुरसोइ १० रामनामको बलबडो विदितवेदविज्ञान ॥
 ज्ञानदीप उरज्वलितकरि कीजिय ताकोव्यान ११ रासनाम
 प्रहलादध्रुव जण्योसधीर सज्ञान ॥ भक्तशिरोमणि होतभे क्यों
 गुणकरिय वखान १२ महाबली गुणवानकविसतमारगकेदास ॥
 योगक्रियाकरि नामको सबदिन उरदियवास १३ वालमीकि
 गति नामकी जानी ज्ञानप्रयुक्त ॥ तीनिकाल दर्शकभये आगम
 कीन्होउक्त १४ रामकास तरुवारिविधि रमण सकल तनकीन्ह ॥

पाप पुण्यकै तुल्यही सबजीवन फलदीन्ह १५ रमत, कीटते
 ईगलगि रामपरम शुचिवस्त ॥ भाववश्य सबठामहै देतमुक्ति
 जनहस्त १६ रामनामविन कोटिबिधि बुधनगहै विज्ञान ॥ वि-
 दितज्ञानविनमोक्षपद मिलत न कोटिउड़ान १७ रामकर्मकी
 दाम है रामसुध्यान समाधि ॥ निश्चयवश मुक्तिहिगहै बुधदे-
 खैआराधि १८ नाममात्र जे तीनपुर लखिवपु जानेजात ॥
 जानत कौन अनामको यद्यपिहृदय समात १९ अलख कहाजो
 लख नहीं अमल कहा मल, राखि ॥ सुमति कहा विन कुमतियों
 देत चतुर, कवि साखि २० रूप कौन अनरूपको जो नहिं जानन
 हार ॥ अकल विचारेत कला सौं जिनके विमल विचार २१ राम
 नाम उर धारिये मंगल सरलस्वभाय ॥ द्विविधादोष विहायनित
 परम तत्त्व ले व्याय २२ जासुनाम अज हर रटत योगसमाधि
 लगाय ॥ ताहि ध्याउ तजि दुष्टमति अंत मोक्ष हैजाय २३ काल
 कलाविनु लखि परत नारायणकोभाव ॥ कुत्सित दृष्टि नदीसही
 घटत क्रपय शुचि ठाकरे २४ ऊपर रटना नामकी अंतर समता
 सोह ॥ विचरै निज ईच्छा सरस नहिं न व्यापता सोह २५ आन
 नीच अरु ऊचकी निन्दा तजै सुजान ॥ जब लोदै तब आपकोसो
 नर ज्ञान निधान २६ आपनि करणी शुद्धनहि कहिदैवको दोष ॥
 खीझत भाति अनेक नर क्यो पावै संतोष २७ कोउ कहत सुर
 पुर सुलभ कोउ कहत सुरधाम ॥ मंगलमत तिरबुद्धिके नरकसुल-
 २८ परिणाम २८ देवायजै भक्तिहि कुरै बत तीरथ करिजाय ॥
 स्वर्ग लोकको बुधवरत नरक विनाशम आय २९ दंड जानि
 भोगी तजतनरकपयकी बाढ ॥ करतक्रिया सोहेतु ज्यहि बिल-
 सै सुरपुर हाठ ३० सन्यासी स्वर्गहि दरत पुनर्जन्म अनुमानि ॥
 यातमध्यावत कर्मविनु फलआभाकृतजानि ३१ जासु पुण्यपूरण
 उदय भव में परत लखाय ॥ जीवत ताको स्वर्गफल मंगल मत
 दंरगाय ३२ पापी जनको जीवतहि नरकजगत मूह होइ ॥ ज्ञान
 जान तू देखिले पुनि लखिके तनु सोइ ३३ एक दोउ पुरकी

क्रिया निजकर लेत सम्हारि ॥ जीवत भोगत विविध सुख जात
 अंत पुर चारि ३४ एक इहां अति दुखलेहेत तपमाकर मनमा-
 हिं ॥ लीन होत पद आपने दुखसुख व्यापतनाहिं ३५ एक प्रथ-
 म संचित, विवश भव भोगत कृतपाप ॥ अंत नरक वासै लहत
 अति कलेश, संताप ३६ एकन संचित कर्मकरि भोग लहत यहि
 लोके ॥ अरुन सत्य मारग चलत अंतनरकलहि शोक ३७ चारि
 भांति नरनारि जग मंगलमनकी ख्याल ॥ आन मरत अहिके
 डसे मोरहि बधतन व्याल ३८ जो परिणाम नफल मिलत कर-
 णी सम हरिद्वार ॥ तौयोगी भोगी अधम क्यों जगकरै विचार ३९
 विषय पाय, तन हठि तजै अमीषान मृतुहानि ॥ ऐसे, कर्मकर्म
 को फल लीजै अनुमानि ४० कनक रूप हरि भजनहै चूकेउ
 घटि नमिकाय ॥ पाप कांच फूटे चतुर कोउ गाहक ठहराय ४१
 क्यों संचिको त्यागि मन मग असत्यमें जाय ॥ आपनपौ पहिं-
 चान किन आपामध्य समाय ४२ निर्गुण सगुण सुलभद्वौ दंभि-
 नके मुखमाहि ॥ मंगलके मत कठिन अति दोनोपंथ सदाहि ४३
 प्रथमै साथै जगतमत पुनि करितर्वाचार ॥ सगुणरूप व्यावैप्रभु-
 हि नानाग्रंथ विचार ४४ श्रीराधा पति चरणरति गीताग्रंथ विचा-
 रि ॥ गहै बाट विज्ञानकी भवध्रम देइ निवारि ४५ पुनि, विवेक
 शम दमकरै योगअंग हठरूप ॥ तिद्धियोग पुनिताधिकै, पावैवस्तु
 अनूप ४६ शनै शनै, मारगचलै पहुचै मित्रस्थान ॥ कूदे एक-
 हि द्वारमें क्यों करिजाय सुजान ४७ शनै रचत कथा शनै पंथ
 तरबजल्यार ॥ शनैचित्त विद्यालहत त्यों, विज्ञानविचार ४८
 जे भूले हठपंथमें, तेनलहैगे, मोष ॥ त्यागिभूल सत्यहिगहैं तो
 पावै संतोष ४९ सतसंगति पारसमनुजहै, कुधातलहि संग ॥ रूप
 लहत, गगियवत अंत मोष गतिभंग ५० पारस सतसंगति, भई
 हरिगुण खानिप्रताप ॥ ताते सेइय, खानिज्यहि पारसहोइ अ-
 ताप ५१ वैद्य बुलावत रोगहर, करणीफल बिसराय ॥ विनुभोगे
 निजकर्मफल मंगल रोगनजाय ५२ मिथ्या, साखीदेतहैं परतिय

रमत भूमेः ॥ ५३ ॥ ज्ञानकर्म निंदककरते ते तरा धने सनेम ॥ ५४ ॥
 वेदयागामी जीवहा सखाद्रोह-छल कारि ॥ ५५ ॥ स्वपकाजीते भक्त-
 भव गलमाला-द्वैतारि ॥ ५६ ॥ काहिज्ञान मंगलकहत को अज्ञान-प्र-
 माण ॥ ५७ ॥ जानव भूलव द्वैकहत नागायण निर्वाण ॥ ५८ ॥ तदीपंधसह
 देखिकै भूपरचायो सेत ॥ ५९ ॥ त्यों ज्ञावीपथ धर्ममें अपेसेतवसहेत ॥ ६० ॥
 घलाजाम लघु प्रधुल कठ तामारण भ्रम हैन ॥ ६१ ॥ पहुचै इच्छा
 धाम मधि अथगरिगे कि सकैन ॥ ६२ ॥ विपति देखि अकुलायवहि
 सपतिमें न भुलाय ॥ ६३ ॥ कर्म ब्रह्मजातै संगै आतमरहै समाय ॥ ६४ ॥
 जीव हृदिदाता अहै प्रैपुर मालनहार ॥ ६५ ॥ क्यों मंगल मनतु भ्रमंत
 वेद तोहि सविचार ॥ ६६ ॥ नृपति प्रजाकिय आपुही सवमै रह्यो
 सुपुरि ॥ ६७ ॥ हरमानत ज्ञानको भजुकिन जीवतमूरि ॥ ६८ ॥ सव
 के अथरपर आपुही सदाविराजत आहि ॥ ६९ ॥ तेरी प्रतिपालना
 करिहि भजति किन ताहि ॥ ७० ॥ श्रीतिगई तारों कहा आवन सों
 का काम ॥ ७१ ॥ जेहै सोई धन्यहै भजुहरितजि सभ्रात ॥ ७२ ॥ बालक-
 वस्था सोह मय खेलतगई सिखाय ॥ ७३ ॥ कामकला कामिनि विवध
 ईश्वर भव्यो न भाय ॥ ७४ ॥ जरठभये उषावढी दृष्टि की बलधोर ॥
 गगवत नहि प्रस्मातमै कहत अखिल जग मोर ॥ ७५ ॥ वाणी बुद्धि
 सहितकहत है प्रहिचान्तनमोखान ॥ ७६ ॥ तदपि न व्यावतब्रह्मको आइ
 कालनियरात ॥ ७७ ॥ किये जन्मभर पापही धर्मरहित सवभाति ॥
 भमन चार हति सुदगरन जीवहि बांधेजाति ॥ ७८ ॥ कीवांथायम
 प्राप्तमें आरायो को भूल ॥ ७९ ॥ जानिबूझि मंगल जतुरा गहत भूल
 तरुमूल ॥ ८० ॥ इच्छाचाही जीवको असचर कर्मप्रताप ॥ ८१ ॥ ब्रह्म हेत
 हो अंतमें बह अचरन संताप ॥ ८२ ॥ या जगमें दुखहै अहो जित्ताको
 मृत शीत ॥ ८३ ॥ जाकेवषहुविधा रहत सोतन विपति अतीत ॥ ८४ ॥
 लाकी साया अति लड़ी अहिकिमि जानै कोइ ॥ ८५ ॥ आपन गति
 जानतनही क्यों सुखपूरण होइ ॥ ८६ ॥ खोजतजगकी कस्तुरी को
 जन्म तिरानोतत्र ॥ ८७ ॥ भव्यो न श्रीभगवानको अंतजीवकोपर्व ॥ ८८ ॥
 जाकी बुधिनिर्मलसदा ताकी मुक्तिदाहि ॥ ८९ ॥ सायावध कासी

रहत भ्रम परित्यागत नाहिं ७२ अंधकारमें अंधकी एक दयाद
 काल ॥ दृष्टाको भ्रम अंध सम तिमि मूरख गुणपाल ७३ सात
 स्वर्ग सुखकोल है क्षण संतसंग प्रसाद ॥ यथा त्रिवेणी न्हाइनरमे-
 टत पापविपाद ७४ चातकज्यों लवसों रटै निज प्रीतिम को
 नाम ॥ सिंधुगंग जलसों विबुध तासु नही कहुं कोम ७५ पापदृष्टि
 सों देखि है कयोतू पूरणरूप ॥ पापपुण्यको भावनहिं सो प्रभु अ-
 कल अनूप ७६ पुण्य पाप सबके लखत अंतर बाहर सोइ ॥ कोटि
 छिपावै कपट करि आपु बिदित जग होइ ७७ जो करणी गुण करै नो
 पावै सुरधास ॥ मंगल जग करणी बंध्यो आदिमध्य परिणाम ७८
 कर्मवान कयो भूलि है निज करणी को फाज ॥ ज्ञानवान ज्यों ज्ञान
 को खोजत तीनि समाज ७९ मात पिता त्रिय बंधु नत स्वारथ रत
 कब जानु ॥ विनु स्वारथ परमात्मा तासु भजन मन आनु ८०
 विताहृष भुञ्जनी नरतन बिलमे बास ॥ अमृत विवेक चोखि
 विधि कयो लखु ब्रह्म प्रकास ८१ आति विनो अज्ञान ही विन अद्वै
 नहिं मुक्ति ॥ शुभकारी आतम क्रिया यहै ज्ञान की युक्ति ८२
 समुझायो समुझै नही कामी रक्ति वाम ॥ ज्ञान गली विचरत न
 खल कयो आनंद परिणाम ८३ सांचे जोया जगत में ते प्रवीण तो
 रक्त ॥ आतम शेषत ज्ञाने मय निशि दिन त्यहि आसक्त ८४ भक्ति
 विनो विज्ञान की भक्तिसिद्धि नहिं तात ॥ भक्ति विनो आतम सु-
 खहि निरखत नहिं विख्यात ८५ कूकुर की जोदशा है त्रिय प्रस-
 गत काल ॥ सोइ दशा यहि जीव की संग आशा चौडाल ८६ ज्ञान
 कतरनी भीह पट काटत विविध प्रकार ॥ आतम शोधित तीनि
 विधि तेजि दुविधा व्यवहार ८७ यथा अम्ब किं विटप है तिमि
 द्विजने संसार ॥ फले परारे हेत है सब को सहत प्रहार ८८ जो-
 नि घत विभेद नहिं विन निज ज्ञासि हि ज्ञान ॥ तजै आशिषा शप-
 द से वैपद निरवान ८९ आपन पद आपुहि लखै अनिहि कयो
 तू भाखु ॥ तेजि हलुकाई जीव की गुरुता सों हितु राखु ९० वाको
 माया को करै जाके पुण्य न पाप ॥ स्वर्ग नरक चाहत नही शुद्ध चित्त गत

[illegible]

रहत भ्रम परित्यागत नाहि ७२ अंधकारमें अंधको एक दयाद्व
 काल ॥ दृष्टाको भ्रम अथ सम तिमि मूरुख गुणपोल ७३ रात
 स्वर्ग सुखकोल है क्षण संतसंग प्रसाद ॥ यथा त्रिवेणी न्हाइ नरमे-
 दत पापविपाद ७४ चातकियों लवसों रटै निज प्रीतिम की
 नाम ॥ सिंधुगंग जलसो विबुध तासुन ही कहुं काम ७५ पापदृष्टि
 सों देखि है क्यों तू पूरण रूप ॥ पापपुण्यको भाव नहि सो प्रभु अ-
 कल अनूप ७६ पुण्य पाप सब के लखत अंतर बाहर सोई ॥ कोटि
 छिपावै कपट करि आपु बिदित जगहें ७७ जो करणी प्रीति करै सो
 पावै सुरधास ॥ भंगल जग करणी बंधो आदिमध्य परिणाम उट
 कर्मवान क्यों भूलि है निज करणी को काज ॥ ज्ञानवान क्यों ज्ञान
 की खोजत तीनि समाज ७८ मात पिता प्रिय बंधु मुत म्बारधरत
 कब जानु ॥ विनु स्वारथ परमात्मा तासु भजन न मनै जानु ८०
 वितारूप भुंगती नरतन बिलमें वास ॥ अमृत विवेक की री
 विधि क्यों लखु ब्रह्म प्रकास ८१ आति विनो अज्ञान ही विन अद्वै
 नहि मुक्ति ॥ शुभकारी आत्म क्रिया यहै ज्ञान की युक्ति ८२
 समुझायो समुझै नही कामी रक्ति वाम ॥ ज्ञान गाली विचरत न
 खल क्यों अनंद परिणाम ८३ सांचे जोया जगत में ते प्रवीणता
 रक्त ॥ आत्म शोधत ज्ञान मग निशि दिन त्यहि आसक्त ८४ शक्ति
 विना विज्ञान की भक्ति सिद्धि नहि तात ॥ भक्ति विना आत्म सु-
 खहि निरखत नहि विख्यात ८५ कूकुर की जोद सो है त्रिय प्रसे-
 गत काल ॥ सोइ दृष्टा यहि जीव की संग आशा चीहोल ८६ ज्ञान
 कतरनी मोह पट काटत विविध प्रकार ॥ आत्म शोधत तीनि
 विधि तेजि दुविधा व्यवहार ८७ यथा अम्ब के बिट पहि तिमि
 हरि जेन संनार ॥ फले परारे हेत है सब को सहत प्रहार ८८ जा-
 नि घत वि भेद नहि विन विज जोसि हि ज्ञान ॥ तजै आशिषा शिष
 द्यो सेवै पद निरवान ८९ आपन प्रद आपु हि लखै अनिहि क्यों
 तू भाखु ॥ तजि हलु काई जीव की गुरुता सो हितु राखु ९० वोको
 माया का करै जाके पुण्य न पाप ॥ स्वर्ग नरक चाहत नही गुद विन गत

चन्द ॥ भजनविना देसूर्यथा विन सुगन्धि द्युतिमन्द ४ क्रम
 पदार्थ कौनभय समरकहा यहिलोक ॥ भजनभाव शुभ अशुभ
 द्वी दायक सुख अरुषोक ५ ज्ञाताको दाता कहा कोविद्याधरतात ॥
 निजुजाने दायो हृदय ईशगुणकी बात १० ठिगन ठगत जाने
 नरहि भयमानत पहिचानि ॥ पतिमिमाया हरिजिसकी मंगलमन
 अनुमानि ११ करणहीन वैतल सुनत नयनहीन महिदीख ॥
 योमंगलि अज्ञानित गहत न मेरोलोख १२ शास्त्रीकाभी याम चहु
 शमी सामीनाहि ॥ हिम अनुरागन मुक्तिको मंगले सन्तसदीहि १३
 ज्योनिज गृहेकोनेहहे त्योहरिपद किनलाह ॥ मंगल भव पद
 प्रीतिवश अन्तमुक्ति पदपाह १४ होनहार सो हेहिगीमिदैन
 कोटिपर्य ॥ मंगल मनक्यों शोचकृत भजुआत्म चितलाय १५
 ज्योकरिप पटमधरे बचन कलहु बिहीन ॥ द्योकुसंगमीनीचम-
 ति होतकहत परवीने १६ बारबार सिखवत अही मनखहि
 उत्तमज्ञान ॥ तूनतजत प्रारब्धवश यद्यपि महासुजान १७ लोभ
 घास उरमेकरत अपकीरति चहुपास ॥ मंगल देख्यो नयनयह
 तदपि नतजबिनयास १८ ज्ञाननयन देखै मनुज बारिचोर प्रभु
 रूप ॥ अज्ञानी मंगलसरस परेविपयकेकूप १९ सातस्वर्गअपवर्ग
 को सुखन मोक्षसमआहि ॥ मनुज ब्रह्मविद सोलहत यामहस-
 शयनाहि २० यातनमेअतिशोरहे पापिनको मनमूढ ॥ नुपकी-
 चत किन तिनहि तू देखन जामिअगूढर २१ अघुमित्रहीअंगमेमंगल
 करतबिलासे ॥ जानिहित सतसंगकरु करहिनअहित प्रकास २२
 चैरीके सतसंगमे कोपावत सुखदेखु ॥ तातेमंगल अरि न दिशि
 नेक दृष्टिजनिसेखु २३ पांचवतावत सातिह सातव्यामकेबासि ॥
 ज्ञानवत जानतअह तूदुविधावेनासि २४ कालप्राप्त जगधर्यो
 आवतजाति अथगो कहिज्ञान मंगलधरत खबससारि संपोर २५
 जानिसुनै चितलायकेव्यान आपुकेकोइ ॥ बिनुभूम मंगलधतमह
 पावत मुक्तिह सोइ २६ त्रियमल नरमल मिलिजमवो माया
 कृत भेदेह ॥ ब्रह्मअण करणी विषय निवसत भोजन सदेह २७

जठरानलकी ज्वालाओं विकल होत जवे प्राण ॥ गर्भसूत्र मेलगधि
 सों तब व्यावित भगवति ॥ २० ॥ जो पैतया अदहते आपुरक्षजग-
 दीश ॥ जन्मपाये तुर्यभजनतजि करीनककु विसवीश ॥ २१ ॥ हरि
 रक्षा सैव विधिकरी सुनि निवध सतिभाय ॥ जन्मकाल लंगि
 स्त्रो गहर जन्मदयो भुलार्य ॥ २२ ॥ उपजति अट के पेटमें दुविधा
 मोह प्रताप ॥ कीटोदिक कबहु वसत तवबहु करत विलाप ॥ २३ ॥
 बालवशगुड खेलसंग आइ तन तरुणाय ॥ काम कलामद धर
 वस्यो नहि हरिभजन स्वहाय ॥ २४ ॥ अभूषण पट चाहिये भोगहेत
 भिला नारि ॥ निजकर मंगल अधमनरे देवत धर्महि टारि ॥ २५ ॥
 जरा व्यवस्थमें भयो मोहवास उर आइ ॥ जावय नारायण भव-
 जन मंगल वृषो नयाइ ॥ २६ ॥ कोटिभोति मुरुगिपदई ज्ञानिन
 कहा बुझाय ॥ तदपिन स्थोगी दुष्टता गई आयु निधराय ॥ २७ ॥
 यमन चारकर पायलै आयता कैपास ॥ देखि भयान कवेपकोमल
 तजि जीव सत्रात ॥ २८ ॥ मारि सुदगरन घाघिपन दक्षिणचले घसी-
 टि ॥ व्याकुल कीन्ह विविध विधि लोह मोगरन पीटि ॥ २९ ॥ लै
 हाथो कुम्भी नरक भयो पीववत नीर ॥ कीटकाग अध जगध
 में गहत लहत वडिपीर ॥ ३० ॥ इट इकर कूकुर योनिमें नरकभीग अव-
 तार ॥ जानि न भयावत आतमा होय जन्मनिर्धार ॥ ३१ ॥ बल्लचार जो
 नरक ईतजि दुधियाको खेल ॥ सो प्राणी उत्तम महा करत मुक्ति
 पदमेल ॥ ३२ ॥ जोगहस्थ हरिभजन मि निरंतर है दिनराति ॥ दसा
 धर्म युत हरिभजे आशु मुक्ति हो जाति ॥ ३३ ॥ ज्ञान प्रस्थ कर्तव
 कठिन साधि जो अपावे कोइ ॥ नारायणकी कृपाते पावे मुक्तिहि
 सोइ ॥ ३४ ॥ संन्यासीकी सति सुगति जीवन मुक्तिसद्रोहिना को
 जानैता जीवको जन्म मरण है नाहि ॥ ३५ ॥ चारों आशुमें सूचित
 अति साधै कोउताप ॥ पावे मोक्ष प्रसास विनु शुद्धचित्त अनवाध
 ॥ ३६ ॥ या भवमें भय जाल है भागुमीत तू वेगि ॥ जातरु पावे वंद
 धिति और अदृष्ट अनेगि ॥ ३७ ॥ पापायी भाजुन यथा दूदत मृति-
 का तूली बुद्धि आसुरी में चतुर तैसे परत समूल ॥ ३८ ॥ घालकली

हीराम, ५४ कैरी गर्वे विद्यापेर ॥ त्रिवासी भा जीसु ॥ धर्मकर्म
 खोवत सरुल देवनरकमें बासु ॥ ५५ ॥ निरत दिवस निमिष विषयहित
 हरिहित घटीन एक ॥ क्यों सुख मंगल पाइ है गहै प्रियकी देर ॥ ५६ ॥
 बालदशमेशुद्धिकरि मनहि भजनमें लाइ ॥ तिनहे तीनों काल
 के पदनिर्वाणहि पाउ ॥ ५७ ॥ जे भूले निज आत्मा और धर्मको भावा
 तेनहि जन्म सहस्रलगि सुक होत ॥ त्रिगाव ॥ ५८ ॥ अतम विद्या
 गुणै साधारण सत साधि ॥ जगमें कैरोहु विधि रहै ताहि त प्रमकी
 व्याधि ॥ ५९ ॥ मंगलजनन कर्म शुभ, तस्याके प्रथकीय ॥ समुद्रावै
 गुरु कीटि विधि तद्विन मानै सो ॥ ६० ॥ मोछे दिन खोये प्रसे आगे
 देहै खोय ॥ मंगलमनकी आलिल रिमनमें दोहो खोय ॥ ६१ ॥ कीटि
 भाति शिक्षादर्ह सत प्राप्तीको सांचु ॥ तदपि दुष्ट प्रमालालसा ता
 चत विप्रपीताचु ॥ ६२ ॥ यों नहि होदत कंजदल कौनो विधिकी ला
 ल ॥ ६३ ॥ विषमरी दुष्ट मन तू नगही किहुं काल ॥ ६४ ॥ प्रवते मेरी
 कही सुनि सजि विप्रमनकी वाद ॥ गाउ सुकीरति प्रथमकी उरधरि
 सुंदर पाद ॥ ६५ ॥ जासुनामके भेदे ते नर त्रिजाता अभेद ॥ मंगल
 मन्त्र निज क्यात धरु तजि दे सव जग खेद ॥ ६६ ॥ सत सारंग सत संग
 करु आतमको अपन म ॥ क्यों सोवत मन मूढ़त आशु सुक हो
 जाय ॥ ६७ ॥ मंगलमन नहि मानि है विनु बांधे रजजान ॥ महउ प्रदेम
 प्रमाणा सौ किन करै सुजान ॥ ६८ ॥ दयदारे जो प्रकद है तितहि
 धंद करि देह ॥ मन सारंग पावै नही तब सत करै सनेह ॥ ६९ ॥ इडा
 प्रिंगला सुपमना या प्ररी कुतवार ॥ सव हित्यागि करु श्री वि
 हृद तिनसों ज्ञान बिचार ॥ ७० ॥ मोक्ष कुवारो जीव को सुपमन
 उदय प्रधान ॥ मंगलके सत पात सहि भजिले श्री भगवान ॥ ७१ ॥
 इति श्रीमत्संकेतज्ञानहर्ताया सर्वभूषणवृद्धिहर्ताया मंगलविनोदकाया मंगल
 विनोदसिद्धिदायिनी पदेषु निर्वर्णपदेषु नानासप्तमसप्ततक ॥ ७२ ॥
 ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥
 ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥
 ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥
 गगन अनिल जल अनल महि पंचतत्त्वकतलोक ॥ श्री
 व्यापतयह स्वासमह जानत होय विशोक ॥ जनेने ददता लहत
 सुने बोधन हिजात ॥ भोजन तिन खाये मिदत क्षुधात कीटि सुयान ॥

श्रांताको संवत्साल है तीनिलोक तिहुकाल ॥ ताहिलखै बुध
 दृष्टि सो लहै मोक्ष नरवाल ३ गुरुकर्ता सतसगते मोक्षलहत विन
 भेद ॥ यथात्राप उष्णतावश तनते चलत प्रसेद ४ कर्मकिये ते
 कामनाकोन करै बुधिमान ॥ इच्छावत फलकोल है परिपूरण क-
 ल्यान ५ आसन अमित कहे अहैं शकरमार्गयोग ॥ पद्मसिद्धि
 उत्तमदुवो करत शरीरनिरोग ६ प्रणवमंत्रको जानिकर प्राणाया-
 म सदाहि ॥ आयुवढ़ै अघगणनसै अंतवसै पदमाहि ७ आशाराखै
 मोक्षकी विप्रय धासनात्यागि ॥ सुखमनसाग हरिभजै रहै मोक्ष
 तटलागि ८ बावनतनु नभस्प्रोक्तुवै अंधलखै सुखरूप ॥ दूनों आ-
 तम ध्यानवशे यह सिद्धात अनूप ९ पगुवढ्यो आकाशलो अति
 अचरजकीवात ॥ जानेते कछु भूमनहीं मूरख मत पछितोत १०
 बातनेसे मुनिसमवने दभगलित मतजान ॥ तेपाखण्डीकौनविधि
 पावैगे कल्यान ११ दीनवसन विनशिशिरमें ज्यों निरखत विन
 नाथ ॥ त्यो आशाकरि ब्रह्मकी जगनरहोय सनाथ १२ तृपावन्त
 जस विकलमन खोजतकूप तडाग ॥ त्यो मंगल खोजहि हरिहि
 उदयहोय तबभाग १३ समरभूमि निमिन्नृपतिमन तिजजयकी
 अभिलाप ॥ तैसे मंगल मनवसै हरिप्रद प्रीतिअमाप १४ बोहित
 बूढतजीवज्यों भवावर्त विनजान ॥ मंगल अवतौ कठित अति
 शखिहि श्रीभगवान १५ मधुमाखी मधुकृत अमित भवतकूप-
 णतावश्य ॥ कोलछीनि लियदुखभयो ततधन लोभियवश्य १६
 यह सम्पति तुवसंगनहिं जन्मीसुनु मनमूढ़ ॥ अंतसंगिनी होत
 नहि कतदुख करत अगूढ़ १७ परवश धन्दी भवननर अर्थरहत
 सकलेश ॥ निमिहंद्री वशजीव्यद भरमत देशविदेश १८ ज्यों
 कुंठाल भोजनरचै ठव न तीव विचारि ॥ सगतिवश शुभअशुभ
 भोतयाजीवेनिरधारि १९ साधुसंग साधिमनहिं नीअसंग भूमखा-
 य ॥ शुभकारी कोउ जन्मनहि संगति मूलवता २० संगपाय
 चेततनहीं ऐस्यउमहा अचेत ॥ अहिमलयज वासीकहा अमृति
 बुद्धितनिदेत २१ सरितासर बापीकहीं कूपादिक जलधारि ॥ कास

हीखास ॥ ७४ ॥ वीर्य गर्व विद्याभिरुचि ॥ उरजासीमा ज्ञानता धर्मकर्म
 खोवतमकल ॥ दितनरकमेवासु ॥ ७५ ॥ निरतदिवसनि विविधियहित
 हरिहित ॥ पुढीनफले ॥ ७६ ॥ कर्मसुख ॥ मंगलप्राप्त है गहेप्रियकोदेक ॥ ७७ ॥
 बालदशमै ॥ शुद्धिकरि मनहि ॥ अजममैला ॥ ७८ ॥ निग्रहे तीनोंकाल
 के ॥ प्रदनिर्वाणहि ॥ पाउ ॥ ७९ ॥ जेभूले ॥ निवद्यातमा ॥ श्रीधर्मकोभावा ॥
 तेनहि ॥ जन्मसंहस्रलग्न ॥ सुक्तहोते ॥ त्रुतिगावा ॥ ८० ॥ अथातम विद्या
 गुणै ॥ साधारणसत ॥ साधि ॥ ८१ ॥ जगमें ॥ कैलेहुविधिरहै ॥ ताहि ॥ त ॥ यमकी
 व्याधि ॥ ८२ ॥ मंगलघनतन ॥ कर्मशुभ ॥ तृणाके ॥ वधकोय ॥ ८३ ॥ समुद्रावै
 गुरु ॥ कोटिबिधि ॥ तद्विन ॥ मानैतो ॥ ८४ ॥ पीछेदित ॥ खोयेघने ॥ आगे
 वेहै ॥ खोय ॥ ८५ ॥ मंगलमतकी ॥ मालिल ॥ विमनमें ॥ दोहोरोय ॥ ८६ ॥ कोटि
 भंति ॥ शिक्षादई ॥ सज्जगामीकी ॥ सांचु ॥ तदपि ॥ दुष्ट ॥ मालिल ॥ ना
 चत ॥ विपयीनाचु ॥ ८७ ॥ उद्योगहि ॥ तेदत ॥ कजदल ॥ कौनो ॥ विधिकी ॥ ला
 लना ॥ ८८ ॥ शिपमेरी ॥ दुष्टसन ॥ तूनाही ॥ किहुंकाल ॥ ८९ ॥ नवतेमेरी
 कही ॥ सुनि ॥ तजि ॥ विप्रयनकी ॥ वादा ॥ गाउ ॥ सुकोरति ॥ व्यामकी ॥ उरधरि
 सुंदरपाई ॥ ९० ॥ जासुनामके ॥ भेदेते ॥ तर ॥ तजिजाता ॥ अभेदे ॥ ९१ ॥ मंगल
 सुत ॥ निज ॥ व्यानधरु ॥ तजिदे ॥ सबजगखेदा ॥ ९२ ॥ सतसारग ॥ सुतसंग
 करु ॥ आतमकी ॥ अपन ॥ ९३ ॥ कर्मयोगत ॥ मनमूढ़त ॥ आशुसुक्तद्वै
 जाय ॥ ९४ ॥ मंगलमन ॥ नहिंसा ॥ निहै ॥ विनुवा ॥ धेरजज्ञान ॥ ९५ ॥ महउपदे ॥
 प्रसाणिका ॥ सोकिनकरै ॥ मुजान ॥ ९६ ॥ दयद्वारेजो ॥ प्रकट ॥ है ॥ तितहिं
 बंदकरिदेह ॥ ९७ ॥ मनसारग ॥ पावैतही ॥ तव ॥ सतकसै ॥ सनेह ॥ ९८ ॥ इहा
 प्रिंगला ॥ सुपमना ॥ सागरी ॥ कुतवार ॥ ९९ ॥ सवहित्यागि ॥ किरु ॥ श्रीति
 दृढ़ ॥ तिनसों ॥ ज्ञान ॥ बिजार ॥ १०० ॥ सोक्ष ॥ कुवारो ॥ जीव ॥ को ॥ सुपमन
 उद्वेगप्रधान ॥ १०१ ॥ मंगलके ॥ मतपात ॥ सहिभजिले ॥ श्रीसुवान ॥ १०२ ॥
 इति श्रीमत्संस्कृतज्ञानहर्तायां सुवर्णसुबुद्धिकर्तायामंगलविनोदकायामंगल
 उक्तिसाविरीचितायाज्ञानोपदेशनिर्वाणपुत्रवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ॥ १०३ ॥
 श्री ॥ दो ॥ ॥ गगन ॥ अनिलजल ॥ अनलमहि ॥ पंचतत्त्वकृतलोके ॥ सु
 व्यापृतयह ॥ स्वासमह ॥ जानतहोय ॥ बिभोके ॥ जानतेदेदता ॥ लहत
 सुनेहो ॥ प्रनहिंजाते ॥ भोजनहित ॥ खाये ॥ मिदत ॥ क्षुधातको ॥ दिसुयान ॥

आसाको सबरूपाल है तीनि लोक तिहुंकाल ॥ ताहिलखै बुध
 दृष्टि सो लहै मोक्ष नरवाल ३ गुरुकर्ता सतसगते मोक्षलहतत्रिन
 भेद ॥ यथाज्ञाप उष्णतावश तनते चलतप्रसेद ४ कर्मकिये ते
 कामनाकोनकरै बुधिमान ॥ इच्छावत फलकोल है परिपूरण क-
 ल्यान ५ आसन अमित कहेअहै शकरमारगयोग ॥ पद्मसिद्धि
 उत्तमदुवोकरत शरीरनिरोग ६ प्रणवमंत्रको जानिकर प्राणाय-
 म सदाहि ॥ आयुवृद्धै अघगणनसै अतवसै पंदमहि ७ आशाराखै
 मोक्षकी विप्रय वासनात्यागि ॥ सुखमनमारग हरिभजै गहै मोक्ष
 तटलागि ८ वावनतनु नभस्योकुवै अंधलखै सुखरूप ॥ हूनोआ-
 तंम व्यानवश यह सिद्धात अनूप ९ पगुचढ्यो आकाशलो अति
 अचरजकीवात ॥ जानेते कछुभूमनही मूरख मनपछितोत १०
 वातनसे मुनिसमवने दंभगलित मनजान ॥ तेपाखण्डीकौनविधि
 पावैगे कल्यान ११ दीनवसन विनशिशिरमें ज्योनिरखत दिन
 नाथ ॥ त्योआशाकरि ब्रह्मकी जगनरहोय सनाथ १२ तपावन्त
 जल विकलमन खोजतकूप तडाग ॥ त्योमंगल खोजहि हरिहि
 उदयहोय तबभाग १३ समरभूमि निमिन्पतिमन निजजयकी
 अभिलाप ॥ तैसेमंगल मनवसै हरिपद प्रीतिअमाप १४ वोहित
 बूडतजीवज्यो भवावर्त विनजान ॥ मंगल अवतौ कठित ॥ अति
 राखिहि श्रीभगवान १५ मधुमाखी मधुकृत अमित भखनकृप-
 णतावश्य ॥ कोलखीनि लियदुखभयो तसधन लोभियवश्य १६
 यह सम्पति तुवसगनहि जन्मीसुनु मनमूढ़ ॥ अंतसंगिनी होत
 नहिं कतदुख करत अगूढ़ १७ परवश धन्दी भवननर अथारहत
 सकलेश ॥ तिमिइटी धनजीवयइ भरमत देशविदेश १८ ज्यो
 कुलाल भाजनरचै ठवन तीव विचारि ॥ संगतिवश शुभअशुभ
 भोतयाजीवनिरधारि १९ साधुसग साधैमनहि नीचसंगुभूमाखा-
 य ॥ शुभकारी कोउजन्मनहि संगति मूलवता २० संगपाय
 चेततनहीं ऐस्यउमहा अचेत ॥ अहिर्मलयज वासीकहा अमृत
 बुद्धितजिवेत २१ सरितासर बापीकहीं कूपादिक जलधारि ॥ काम

आपतो चतुरजन सवते लेतेनिकारि २२ कहाकरैलै सम्पदा जो
 नहिजीवनआप ॥ मरणसमभरावणकुरुपधनहितकीन्हविलाप २३
 जिमिनिपंगमें सरभरेत्यकयक करिघटिजात ॥ तथाश्वासनिज
 जातहै चेतुआर्यु निधरात २४ कामीक्योंकरावेतिहैं चढेउडुप
 निर्बुद्धि ॥ चन्द्रइंद्र दुखअतिलह्यो कामविंश नहिशुद्धि २५
 कहानबशमें आपने विनपरमात्सएक ॥ जन्ममरण निजब्रह्म
 सदा करुनिजोचितविवेक २६ पांपराशि यमराजपुरकोटिभाति
 पछितायना धर्मोत्मा सुप्रयासविन हरिपुरकोचलिजायो २७ क्षर
 अक्षरको एकसम ज्ञानीकसैधिचार ॥ नित्यनित्य विवेकहर सब
 मंगकरैविचार २८ गंगाजल धावनपरम बढ़त वेदप्रौरान ॥ पैनहिं
 मातत निकटवसि जाहिकहत अज्ञान २९ अक्षत चखनमेधधवत
 निकटवस्तु नहिसूझ ॥ नानामतखोजतफिरैसतमार्ग नहिबूझ
 ३० जायोभांशोभित त्रिपुरजाआभाभवभूत ॥ मंगल मनबूझत
 नहींजगहिछलतजिमिधूत ३१ आशापूरण होइसबवासआपनेधा-
 म ॥ परमात्मा विज्ञानमया जन्ममरण निःकाम ३२ जिमिअज
 बाधकलाइगृह ताहि चरीवतेधास ॥ कौलन जानतसुधमतिमि
 नरतपणापास ३३ पढ़ेवेद वेदांतको विषयलीननरकोय ॥ ताहि
 महावातुल कहिय दादुरवक्त सोइ ३४ खगनिज मुखवाणी बढत
 नित्यप्रातहरि नाम ॥ नरमलीन भिनसारसै विषय भजत मति
 वाम ३५ मेरी बुधि अति बोधिनीसुन चंचल चैडाल ॥ तासु मरण
 हितयतनबहु कह्योन नार्यो काल ३६ मन जोमानै मत सुमतिजो
 मन चीता होय ॥ सत्यप्रीतिवश ईशभव बढ़त सचानै लोप ३७
 सांत सात को घासकरि गुणसोदीजियंटांनि ॥ शेषवस्तुकोखो-
 जिलेमन मलीनको डांढि ३८ जिमिचकारविन व्यंजनहि घोळि
 सकतनहिंकोय ॥ तिमि हरितजि प्राणीनकी मुक्तिन कैस्यहुहोय
 ३९ नारि आपने प्रतिहिजिमि सेवतिनेहसमेति ॥ अंत भुसमता
 प्रीतिवश हीति परमगतिलेति ४० ऐमीसांखी प्रीतिरंग प्रीतम
 के निरबाह या करै सोधु सो दृढ़दृतीमिलि प्रीतिम सुखलाह ४१

मोह लालसा त्यागि मत्त व्याउ प्रेमदृढ़ लाय ॥ हतो कर्तो आपही
 त्यांमतरहा समाय ॥ ४२ ॥ मांगत लागत लाज नहिं और नेसों मन
 तोहि ॥ प्रांचत सांचे मित्र सो अयो लजात कहु मोहिं ॥ ४३ ॥ जन्म
 नभो प्रथमै रच्यो माता कुचपय जानु ॥ मंगल पालिक सत्य हरि
 सर्वो विधि अनुमानु ॥ ४४ ॥ स्वीकृत तेली तेलको सुधावन्त वह
 पीन ॥ कोकाकी वाणो सुनै निज स्वारंथ लवलीन ॥ ४५ ॥ यथा
 अन्ध द्वेचारि मिलि गज चीन्हने मनकीन्ह ॥ करपेट पूछरु उदर
 छिताही सम कहि दीन्ह ॥ ४६ ॥ तथा प्रथम संसार के नयनहीन अनु
 मान ॥ द्रष्टा मत्त सर्वो गहै सो हाथी पहिचान ॥ ४७ ॥ ज्यो कवीर
 निज ग्रन्थमें धरयो पूरण ज्ञान ॥ नानक गोरख भगवरी सर्वो गी
 जग जान ॥ ४८ ॥ परस्यो पूरण तीनि विधि अपर धारिय ह ज्ञान ॥
 यथा गोसाई जी भये हरि प्रताप जग जान ॥ ४९ ॥ माणिके को जु
 प्रकाश है त्यहि न हुलावत वात ॥ तथा वचन सर्वो गी को हुलिन
 सकत विख्यात ५० ॥ मंगल अति मत्त तीनि पुर है परमात्मवास ॥
 चन्द्रभूर आदिक उदुपता सुतेज परकान ५१ ॥ लिप्त होत नहिं
 गगन जिमि मिला सर्वतमे देखु ॥ ऐसे तन तन ब्रह्म बुध ज्ञान चक्षु
 डरलेखु ५२ ॥ याखा दुल फल फूल अरु मूल विदित तरुनाम ॥
 तिसि जल धल न भवर अखिल कहिय ब्रह्म परिणाम ५३ ॥ कौन
 विचारत ब्रह्म पद पै नहिं पावत जानि ॥ जिमि पक्षी नभ अन्त
 हित चढ़त स्वयल अनुमानि ५४ ॥ सिन्धु पिपीलन गाहिया कौनो
 फाल सुजान ॥ तिमि न ब्रह्म के भेद की जानत जीव प्रमात्री ५५
 वाकी उपमा कौन जग जो अद्वैत अरूप ॥ उपमा विन ब्रह्मव
 कठिन कहत कविन के भूप ५६ ॥ कविपुंगव व्यासादि जे आगम
 भाखी थान ॥ सोपि ब्रह्म के भाव को भेद न करयो वखात ५७
 पांन तत्त्व करि मूढ मन यह शरीर रचि दीन ॥ तामें आपन विभव
 को प्राप्त कृपा निधिकीन ५८ ॥ तू उष्यो सर्वो गसत पंचतत्त्व के
 जानु ॥ ध्यान पंच अरु यो गति सोपि करी निरमानु ५९ ॥ अस्थि
 मांस त्वक रोम अरु नाडी प्रकृति ये सांच ॥ धरा तत्त्व के योग ते

गुणी मुनि सुजान कृतपह ॥ जीवत प्रावत मोदभल ॥ हरिपुर
 द्यागतदेह ॥ ६६ ॥ अनहदध्वनि वाजावजत गगन गुफामें हेरु ॥
 मंगलजाके सुनतही मिटै जन्मको फेरु ॥ ६७ ॥
 इति श्रीमत्सकल अज्ञानघर्तया (सर्वांगसुवृद्धिकर्ताया) मंगलविनोदकायामग
 लविनोदसविरचितायाज्ञानोपदेशनिर्वाणपदवर्णनो नाम अष्टमः शतकः ॥ ६८ ॥
 ॥ ६९ ॥ जो पै मंगल विमलमति तौ जनु ज्ञान प्रकाश ॥ अनुभववु
 धिधिरसों उदित प्रभु सूझै चहुं आश ॥ जो सेवन निर्वाणपदवनि
 नुपै मन मोर ॥ तौ तू भजु यदुनाथ पद होइ परम गति तोर
 कश्यप अदिति सुप्रथमही तप कीन्ह्यो प्रभु जानि ॥ १ ॥ वरमांग्यो
 तैपति द्विसे होहु पुत्र सम आनि ३ निजनिबंधके हेत अरु सुनि
 सुर विनय कृपाल ॥ जन्म्यो मथुरामें स्वयं भजुतापदत्रैकाल ॥
 जासुकृपाबंधनमुच्यो सवपहरे गेसोय ॥ तूमंगलताकमलपदभजु
 सुख दुविधारखोय प्रथमुनावाहपयात्रभो हूंक सुनततत्काल ॥ गये प्रा
 रवसुदेवलै नंदालय उताल ६ जानभेदनरनारिनहि प्रभुमाया ब्रह्म
 तात ॥ मंगलविनोदये हरि हियमपुर जडपछितात ७ जन्मकालते
 अल्पदिनवीत पूतनानाशि ॥ जानि भूषत मंगल कह्य ता यशरहा प्र
 काशि ८ शरुटासुर कागासुरहि वधो जानि खल आप ॥ मंगल भजि
 श्रीकृष्णपदमे दुती निबिधिताप ९ वधि साखन भक्षण कियो कौतुक
 निधि परधाम ॥ तासु चरण ध्यावत मिटत जरा जन्म परिणाम १०
 यमलार्जुन मोचन कियो नारद शाप विचारि ॥ मंगल ध्यावत तासु
 पद जात यमपुरहि हारि ११ नदयाम बलि अयासुख बधो बकादि
 कराल ॥ निजदामन हित बिदित भवमंगले भजुन दलाल १२ गो
 वरधन पूजन कियो सुरपति मान निहान ॥ कौतुकनिधि राधा
 रमण अति उत्तमता ध्यान १३ कालीमद मदन कश्यो रमण कही प
 पठाव ॥ मंगल कह्य ताचरण भजि क्यहिन ऊंच पद पाव १४ रास
 कियो नारिन सहित अकथ कृपानिधि श्याम ॥ रतिकुनाथके
 भजनते सुकिल है परिणाम १५ केशोद्योमादिक वधि निजजनके
 दुखदानि ॥ लाभमहाहरि पद भजे मंगल भूलेहानि १६ मथुरागे

अक्रूरसंगरजक दुष्टवधकीन्ह ॥ मंगल हरिअतिसरलगतिनीचहि
 निजपरीदीन्ह ॥ १७ ॥ लूली कुवरी नेहकरि चदेन अरयो आनि ॥
 कीन्हो शुद्ध स्वरूपप्रभु प्रीतिमैल्यपहिवानि ॥ १८ ॥ धनुर्भज्यो गज
 बलमध्यो मास्थो प्रबलचक्षुर ॥ परमात्म श्रीश्यामजू जासुअश
 षशिगुर ॥ १९ ॥ कंसदुष्ट दुखदातिजग सरयोस्वकर कृपाल ॥ मंगल
 मोहतेदासहितुपरिपूरणत्रैकाल ॥ २० ॥ सत्रहवार मरानिधिहि की-
 न्ह परोजमश्यामि ॥ भारउतोस्थो भूमिको यशपूर्त्योत्रैधाम ॥ २१ ॥
 कालयवनको मारियो सोवते भूपजगाय ॥ मुक्तिदई मुचुकुंदको
 भजतिनत्यहिवितलाय ॥ २२ ॥ मधुगतजि द्वारावती अतिकीन्है
 बहुव्याल ॥ सोवरणत पोधीवहै अजुमन ॥ मदन गुपाल ॥ २३ ॥
 जिमिबिधवा करि कुकृतपुनि गर्भरहे प्रछिताम ॥ तिमिमंगल तू
 विपयरत अंततोहि दुखेदाय ॥ २४ ॥ बाम प्रकृतितजि श्यामभजु
 कामकला विनुतितय ॥ मुक्तिहोइ संशयनहीं नाथैजगतविपत्य ॥ २५ ॥
 राधावरकी मनुजतम जानत नेरचंडाल ॥ तेपछितैहैं शमनपुर
 यथा नीचशिगुपाल ॥ २६ ॥ निष्ठाशुद्ध लंगायकरि मनविशिष्ट करि
 श्याउ ॥ मंगल हरिपद प्रीतिसो अतमुक्ति पदपाउ ॥ २७ ॥ श्याम
 श्याम हरिरामैकहु भाय कुभाय विहाय ॥ कोटियज फलकोलहै
 मंगल कहत बुझाय ॥ २८ ॥ श्रीहरिनाम प्रतापते मिटत पापकीर्ति-
 नि ॥ यथाकष्ट तणव्यूहकी श्वेकसिखिकृतहानि ॥ २९ ॥ आनआश
 तजि मीतमन आतम श्यामहि श्याउ ॥ क्योयहिझूठे स्वांगमेआ-
 यु अमोल गनाउ ॥ ३० ॥ कोटिजन्म जेपतपकियेछलप्रपंचयुतदंभा ॥
 सिद्धिलहै नहि मोक्षकी धारभीति कृतधर्म ॥ ३१ ॥ मानि प्रतीतिस-
 प्रीतिमन मासुदेव गुणगुण ॥ प्रीतिविवश हरिसर्वदा भणतविबु-
 ध कविराउ ॥ ३२ ॥ दुखसुख काल अकालमे नेहएकारसरारु ॥ भक्ति
 विवश श्रीश्यामजू तादाया भवनाखु ॥ ३३ ॥ कपटकुरीकरमैलिये
 छेदत अजविज्ञान ॥ मंगलऊपर साधुवत कयोपावै कल्याण ॥ ३४ ॥
 प्रातसंभय निर्व्याजमन श्याउरमाकोकत ॥ जीवत सुखसंपति
 अमित लहैमोक्ष पदअंत ॥ ३५ ॥ अनख आलसहु खोजिअरु श्रीक्षिभजे

घनप्रयास ॥ मंगल प्रापक मुक्तिको जापक संयुतवाम ३६
 आनओरहेरैनहीं तजिनिज मीत सुजान ॥ जिमिचकोर शशिको
 लखत सोपावन गुणवाते ३७ रटै निरंतर श्यामपद ध्यातलनेसुर
 राखि ॥ भुक्तिमुक्ति दोनोंलहै देत उपनिषदसाखि ३८ कालसुचक
 कुलालको घटसम जीवअपार ॥ भरमावत विधिकोटि पुनिउपजा
 वत संसारी ३९ जानरकी सेवा करत ब्रेतन सोदैदेत ॥ नारायणपदध्या
 नसो कोर्य अखिण कितलेत ४० जिमि पपाणकी आनतद्विपा
 सरित्तको जाय ॥ तिमि नरकी सेवा निफल मंगल कहत बुझाय ४१
 जिन समहारत आपकह भारसोयां भकिआन ॥ मंगल करणीतरक
 की तूकत आनहिं ज्ञान ४२ प्रथम आपको तिहकस तब औरन
 तिखदेहा ॥ जगतबडाई मुक्तिदो नहिं हरिपदभजि लेह ४३ काल
 कूट करणी अमृत क्यों करिहै अज्ञान ॥ तिमि पपी किमि सुकृत
 को निजउरु लावै ध्यान ४४ तेलसनेही तिलनको तेलीपेरि ति
 कार ॥ देखु मित्रता कठिनप्रण जीवत संगतहार ४५ लाली नेही
 मिहद्विदल काहुइपरी नदेखि ॥ बांढिनिकारी कोटिनिधि तदपि
 परी नहिपेखि ४६ मित्रमृत रुके संगही नरतनुलीन्हो लेखि ॥
 मित्रद्रोह उरवारि द्रवहि तनुमें गई प्रवेति ४७ प्रीति अथा शशि
 सिंधुकी पूरणलखि डमडात ॥ मंगल ऐसी प्रीतिदढ़ करु क्यों मन
 प्रछितात ४८ जानि श्यामपदनहिं भजत वृथा दादुरीबाद ॥ स
 गलयमपुरा विविध विवि जीवहि होय विपाद ४९ कहा सुदामाने
 किमोपायो हाठकधांस ॥ प्रीतिप्रतापहिविदितभव हरिअजु मन
 वसुधांसि ५० अर्जुनको स्वास्थ्य किमो कास्वास्थ्य यदुनाथ ॥ प्रीति
 वृष्य त्रैकालप्रभु यहै ज्ञानकी गाथ ५१ दुपदीको कर्तव्यकस्योबा
 द्योवसन अनंत ॥ मंगल महिमा प्रीतिकी ज्ञानतुको विदसत ५२
 कोमोरूप किम भारही गिरसो प्रंद हहरास ॥ ब्रचेतनयवल तमि
 तते पत्य प्रीतिके भाय ५३ दंभीपापी अपकृती अज्ञानी चंडाल ॥
 नामलेत विन भावदढ़ नहिरीगत गोपाल ५४ को पांडवके बल
 रहै लक्षनिकेत कुठाम ॥ प्रीतिविवश उवरेसकल गिरि भविगे

घनश्याम ५५ विकल रुक्मिणी व्याहृदिन लैश्याये जगज्ज्ञान ॥
 प्रीतिसत्य अनुमोतिहरि खलदल वधि मनमान ५६ वाणसुर
 को मानमथि लीन्हो अनिरुध व्याहि ॥ मानहरत संसारको तू
 मन्त्र मानहिंचाहि ५७ दुर्योधन आज्ञातजी दीन्हो वंशनथाय ॥
 मूर्ख हरीश्यायसु तजत पूजत प्रेतनजाय ५८ श्याम श्याम पुनि
 श्यामकहु राम राम कहुराम ॥ भटकत क्यो भवमें फिरत विनो
 मागे लहुदाम ५९ पेटखलाये जगफिरत मतिहीनो नहिं बूझ ॥
 राधावल्लभ भजनसो मिटै विपति स्वहिसूझ ६० काल कर्मको
 नाशकर दाता जनज्ञानंद ॥ कोदूसर सतधर्मके त्यागिन खत यहु
 चंद ६१ कोटि आपदा नामसुनि मंगल जात पराय ॥ यथाकेहरी
 नामसुनि वनचरव्यूहलुकाय ६२ सहस्रभातिके विघ्न ग्रथ हरियय
 सुनि नथिजात ॥ जिमिदिनमणिके उंदयते नभद्युतिमान छिपात
 ६३ श्यामशब्द सुनिकैपि उठै मृत्युकालयमदूत ॥ पुंडरीकरा
 नि करिविपुल जिमिशंकत विपुपूत ६४ श्रीराधावर नामको जपत
 जो हितचितलाय ॥ शिव आदिक सुर जयवदत तानरकी मुद
 पाय ६५ अमर सराहत मनुजवपु श्यामभक्ति दृढ़ज्ञान ॥ मंगल
 तू नरतन लहो भजुहरि धगिगुभव्यान ६६ उडत श्याम कहत
 हिअमित दोषकु कर्म सशंक ॥ शब्दभुंड़ी सुनियथा भोजतकाक
 भशंक ६७ गेहतजत पाखंडभ्रम श्यामशब्द सुनितात ॥ चंडपवन
 तण उडतजिमि निजथल पुनि न लखात ६८ बारबार शिक्षा
 करत ज्ञानीव्यानी साधु ॥ अपरमूलतजि सर्वथा श्रीहरिपद आरा
 धु ६९ बढत सकल आनंदसुख भजत श्याम भवमाहि ॥ जिमि
 राका शशि सिंधुलखि कृतप्रवाह भ्रमनाहिं ७० संपति तरुजल
 भक्तिजंग नारायणकी भीत ॥ शाखावाढत निचनित भजुहरिसदो
 ७१ सकल सिद्धिदा दिगवसै जो व्यावै नंदलाल ॥ जिमि
 सेष पावतकालकी मिलत सिंधुकीलाल ७२ आदरबड़पदमान
 ता ताचेरीहै जात ॥ कूकुर जो निज स्वामि राँग जो व्यावै यहु
 जात ७३ सबके उरमें प्रीति तेहि वसत जो व्यावत श्याम ॥

पूषण जैसे शरदः ऋतु संव चाहतं निजधाम ७४ बालक की
 वाणी यथा मीठी कटुवति लागि ॥ श्यामभक्तकी चारता सुनत
 विबुध अनुरागि ७५ जापै मानैतौ कहौ जो भंजक तुवमान ॥ जा-
 निदुष्ट पुनि मीत मम जाहन तेहि अस्थान ७६ मेरी भाई होत
 नहि नत त्यागतमनमोह ॥ श्यामश्याम श्यामा कहत त्यागि अ-
 खिल छलछोह ७७ को तजि श्यामा श्यामपद पूजै भूतनजाय ॥
 नरकवासको भ्रमहृदय अंतरूपुर पछिताय ७८ मेरे मत श्रीश्याम
 पद पारसके पितुआहि ॥ अंत आपु समहीकरत धदतबेद भ्रम
 नाहि ७९ हांक सुनत हनुमानकी कम्पत ज्यों खलजाल ॥ राधा
 मोहन नामसुनि तिमिके प पापकराल ८० वामावाम विचारिये
 धामाधाम सराहि ॥ नामानाम प्रवीणको यहशोचिय जियमा-
 हि ८१ पाठक मूरख मौनको कंछानंदप्रमान ॥ काठवृक्षको भेद
 है जानत पर सुजान ८२ ज्ञाताज्ञाता जानिये दातादातासोइ ॥
 भ्रामिकमत क्यों बूझिये परिपूरणहरि-होइ ८३ प्रभुआज्ञा शिर
 मानिकै अर्जुनमंढ्यो युद्ध ॥ जयपाई आनंदभयो सुन्यो सुमारग
 शुद्ध ८४ आनंओरते भूलतजि प्रभुसंगदे त्यागि ॥ मित्र आतमा
 आपनी ताहीसों रहुलागि ८५ विष्णुलोकमें ध्वंतभी जन्मत श्री
 यदुशाय ॥ परिपूरण अवतारशुचि वद्योब्यासमुनिराय ८६ सगु-
 णरूप सुंदरबपुष सुखदायक तिहुंकाल ॥ श्याम कृपाधि दास
 हित नाथक जगजजाल ८७ मारुमारु लावतभगत दलबिबेक
 विनुत्रान ॥ बर्मश्यामकी नामकरु कामप्रबलता भान ८८ गज
 चाहिन रथ द्रव्यगृह संपतिलखि मनभूल ॥ ध्यावतनहि यदुनाथ
 पद अंतश्मनकर शूल ८९ मातपिता त्रियबंधुसुत सखासुसेवक
 कोटि ॥ अन्तसगनहि देहहू समुझतनहिं बुधिछोटि ९० नीचन
 त्यागत नीचता कोटिभांति सिखदीन्ह ॥ यथानकटुता नीमतजि
 चंदनको संगकीन्ह ९१ जाकीप्रकृति प्रदोषमय सो नचहत हरि
 ज्ञान ॥ जिमि उलूक भागतबिकल उदयहोतही भान ९२ मन
 प्रवीध आवतनहीं विनुजाने गुणश्याम ॥ मंगल सांची मनकही

ध्यादिश्याम पुनि राम ६३ कौडीके दानीनहीं निंदत बलिकर-
णाहि ॥ मंगलतू सुनि सीखमम भजुहरि निज चित चाहि ६४
जयजय ध्वनि चहुओरहै सतमागकी मीत ॥ ताहित्यागि द्यो
दुष्टमन तूभरमत विपरीत ६५ पारावारन चारिदिशि आतम
अंकल प्रकाश ॥ प्रफुलित मनभा ताहिलखि पायो शुद्धविला-
स ६६ दिवसनिशां ककुहैनही महि अकाश के धीच ॥ आदिअंत
यकराधिमय को धमरहा नगीच ६७ अवतौ पूरण मतिभई
पूरणपंदको जानि ॥ क्योंभूलै मंगलचतुर करखी तरखीमानि ६८
कौटिजन्मको फलमित्यो रोधावल्लभनेह ॥ अवनचाहकोउ मन
रही मुक्तिलहौ तेजिदेह ६९ मुक्तिपदारथ करलगै युक्तिध्यान
निर्व्योज ॥ मंगलकी शिक्षासुधा मुनिभजु मनबजराज १०० ॥

इतिश्रीमत्सुकलअज्ञानहर्तायासर्वांगसुबुद्धिकर्ताया मंगलविनोदकायामग
लदासविरचितायांसगुणपद्मनिर्माणवर्णनानामनवमशतक. ॥ ६ ॥

दो० ॥ सर्वसिद्धिमय सिद्धियह मंगलदीख विचारि ॥ भग-
वद्भजन विह्वनमन अमितजन्मकी हारि १ स्वधर्मनकी धर्मयह
अखिल तत्त्वको सार ॥ आराधन भगवद्भजन दया सहितद्वयो-
हार २ मदिरापान अजानज्यों त्यों कुलीन धनवान ॥ महामूढ़
चेतनही करतन भगवतध्यान ३ ओंकारक्षररूपहै विरचेत्रिपु-
र स्वअंग ॥ कौकुलीन कुलहीन कहि यकरस घटत अभग ४ जो
विभूति चौदहभुवन सवते परक्षररूप ॥ जापक नीचसो ब्रह्मघर
ब्राह्मण भयोस्वरूप ५ प्रणवमंत्रको पाठकृत नासासग सविबेक ॥
पूरण प्राणायामकृत जनु कृतयज्ञ अनेक ६ ध्यावत जाके मन
तजत चंचलता सबभांति ॥ सोपद प्रणवभयेजगतवेदमातदिव-
राति ७ अजेषाको कारणरुठिन गेहिनकी दुखनित ॥ पाठकजाप-
क प्रणवकेपावतसदा सुकित ८ जासुअर्थते जानिहै परमतत्त्वकी
भेद ॥ आपुनूझिहै आपुम वदतवेद विठवेद ९ चारिओरहै सिद्धि
मन जबलगि रामदयाल ॥ विघ्नविष्टि दिगबूलखग दहिनहै ॥

तत्काल १० मूलवहै शाखासकल बीजईशसंसार ॥ उपजावक
 नाशकवहै एक आपुकरतार ११ तूही मंगल भीरुभट समरकाल
 धिकराल ॥ ज्ञानमान अज्ञान तू दूसर नहिं त्रिकाल १२ दया
 आपुहिमा तुहीनिराचार आचार ॥ ज्ञान-अवण, सुनि वाक्यमम
 लखु आपन व्यवहार १३ धर्माधर्म तुही-चतुर मूरख पण्डित
 मूढ़ ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य तू शूद्रतरुण सुतबूढ़ १४ गजवाहन
 को भेदहै जन्मशरीरप्रसाद ॥ तूही पूरण एकहै नहिं द्वितीयम-
 र्थाद १५ जीवईशतूहीअहै मायाछाया तूल ॥ अपनावतभागी
 फिरत ज्यो सरिताके फूल १६ मायाब्रह्म अद्वयद्वौ एकत आन
 प्रकार ॥ जलबीची छाया छिटप भूषणस्वर्ण विचार १७ माया
 शक्ति सुहावनी कीन्है जीववनाय ॥ बहुरिआपनेपंथकरि ब्रह्महि
 दियो लखाय १८ माया के नाशेचतुर कथा कधीनहिंजाय ॥
 छागाजस मध्याह्नकी इतउतनेहिं दरशाय १९ जब मायाको
 अन्तहै तब बुधिधाकोजान ॥ छाया नाशत वृक्षकी कौधी चतुर
 प्रमान २० ब्रह्मज्ञान गुडजानिये सेवक गुंगसमान ॥ कहिनस-
 कततास्वायको त्योंवर्णन, निर्बान २१ ज्योरहदामें, बन्धहै पैनाहीं
 लखिजात ॥ जीवभाव भासत हृदय कहत बनतनहिं वात २२
 फारण सूक्ष्मस्थूल त्रै धपुधारीप्रभुसोइ ॥ जानत अव्यातमचतुर
 त्रैपदलेत बिलोइ २३ तीनिबपुप ज्योईशके सोहतहै विज्ञान ॥
 तिमित्रैतन गाजीवके सततमभेद सुजान २४ ईशसतोगुणपूरहै
 जीवतमोगुणलीन ॥ उत्पतिकाया कर्ममे समतायहै प्रवीन २५
 ब्रह्मजीवएकै बुझौनयन दृष्टिनिहि दीय ॥ दृष्टिहीतहै नेत्रते ताबिन
 लखतन कोय २६ सूरदेवभापितजगतअन्धनिरन्ध प्रमान ॥ व्याप-
 क गव्यय अजप्रभूईशजीव द्वै धान २७ जीवअहैपरमात्मा जा-
 नत वेद विचार ॥ बुन्द तिनधुमें भ्रम कहा जलएकै निरधार २८
 खोजत भूली वस्तुको दीपक तमहि प्रकाशि ॥ जोपै दृष्टिहिहोइ
 नहिं को रथ दीपकराशि २९ माया धँस भरमत फिरत ऊरध
 अधविनज्ञान ॥ जोपैचीन्है आपुपद फिरिन भ्रमै बुधिवान ३०

प्रीति एकरस, श्वासमधि राखैजानीकोय ॥ तत्त्वदरश-पावैसही
 ब्रह्मलीन पुनिहोइ ३१ भेदन जानी आपनी मूरुखकर्तवलाख ॥
 जाना चाहत ईश्वरहि अन्धदृष्टि अभिलाख ३२ पूजत आपन
 देवता, मुधि, आई, जगकाज ॥ विकल शीघ्रपूजनकरत कवरीझै
 सुरराज ३३ जब लगि पूजनकरिचुकै तबलगि पानननीर ॥
 तृपा लालसा उरलगी, पूजन दृया यधीर ३४ तुलसी तरुमाला
 गले बांधे बालग्राम ॥ कपटहृदय, परस्त्रिय रमत भक्त कहावत
 नाम ३५ नीचपायकलिआपुकी कहतकुलीनसनेन ॥ मंगलतू
 चुप साधु किन करिघर हरिपदनेम ३६ जिनहि नही अधिकार
 है यज्ञसूत्रधर कन्ध ॥ मंगल अव मर्त्यादकी अन्यायीकुप्रबंध
 ३७ चंदन तिलकदिये, फिरत कोलभीलकलवार ॥ तेलीधोवी
 मीनहा पछितैहै यमद्वार ३८ गेहधर्ममहकीजियेत्यागिधर्मछल
 त्यागि ॥ कुलकरणी छोडत, चतुर चलत भलाई भागि ३९ बूझि
 जाइजो आतमा तौ ब्रह्मण है जाय ॥ पुनिनहिं पूछैज्ञातिको संत
 समाज सुहाय ४० ब्रह्म ज्ञानको प्राप्तभे, नीचन ऊच लखाय ॥
 समताको उरवास शुचि, मन भावितभप खाइ ४१ दंभकपटयुत
 गेह रत, तबलगिकर कुलकानि ॥ जब विवेक समता मिलै, तब
 न वर्ण कुलवानि ४२ व्यास वेदयहि हेतही कीन्है वरणविभाग
 ततवरण दूसर रहा परमहस अनुराग ४३ विद्या चौद्रहजानि
 के रतभो विषय विलास ॥ ताते मूरुखही भली-जोन धर्ममग
 पाम ४४ जानि जौहरी परिहरै हीरा काननवीच, ॥ ताहिकहिय
 द्रष्टाको, वणिक् परखनतासु, नगीच ४५ जेसपूत, मांचे जगत्तगहे
 वेद मर्याद ॥ ते आदर कृतगुणिनके मूरुखसग विपाद ४६ काग
 श्वानको पालियो, सुंदरभोज्य भपाय ॥ तदपिलालरा मांसकी
 तिमि नरनीच, सदाय ४७ शिक्षाकीन्ही ज्ञानकी, दिक्षाप्रणवसु-
 ध्यान ॥ तदपि नीच निजवरणसग भोन ऊचपदमान ४८ अहं-
 कारधारेकरत मंगलनरकुलहीन ॥ प्रावृटके नारेयथा बाटनदेतप्र-
 चीन ४९ ज्ञानवान लहिब्रह्ममत आपुहिदेत दुराय ॥ चलतचालि

पूरुवसरस ज्यों समुद्रके भाय ५० आनन आपन मगवदत शिष्य
 समोज अपार ॥ तेचाहत निज मान्यता सोनहिं हरिदरवार ५१
 ब्रह्मधासको ऊंचलख भजनाभजन प्रधान ॥ करणीहीं कुलवान
 है करणीवत प्रस्थान ५२ वापुरमें ब्राह्मणवने क्षत्री पायेराज ॥
 भजेउन पूरण ब्रह्मपद वापुर नीचसमाज ५३ पढ़िविद्या पंडित
 भये लिखिपोथी बहुजोरि ॥ रामभजनविनु नीचमन कहां मुक्ति
 हैतोरि ५४ अबते मेरी मानिशिप लखुतू नैनपसारि ॥ पूरण
 ज्योतिप्रकाशहै अध ऊरध दिशिधारि ५५ जानिन मानत नीचमन
 विषयवासना ध्यान ॥ आतमको नित ध्याउजपि सोहंहतः प्राण
 ५६ ज्यों अहिजामत चरण निज लखतन कोऊ नैन ॥ स्योजानत
 यह आतमा आतमभाव सचैन ५७ विपुलविहंग वनमेंवसत डरत
 श्येनको देखि ॥ तिमिलखि ब्रह्मज्ञान को इंद्रीव्यूह बिशेखि ५८
 ब्रह्मवेत्ता चतुरसो जोरत ब्रह्मज्ञान ॥ कोजानत ताबिन हरिहि
 जिमि रविबिन नविहान ५९ काल व्यालके मुख पत्थी जीव
 भिकके तूल ॥ विषयभोग माखीचहत यह याकी बडिभूल ६०
 वृश्चिकसुत ज्यो मातनिज भक्षिउदर बहिराति ॥ तथा जीववधि
 वासना ब्रह्मलीन है जाति ६१ करीयथा लखि सिंह को तजत
 जीवकी आश ॥ तिमि देखतही ज्ञानके मोहहृदय महंत्राश ६२
 तीनि भांतिकी कोसना सवदेहिनके गात ॥ दुविधत्प्राणि यक
 पंथलगु यहै ज्ञानकी बात ६३ गायत्री ज्यों छंदमें सुरमूधि यथा
 महेश ॥ सर्वज्ञानमें आतमा शोधवतपां विशेष ६४ ज्यो भारत
 पौराणमें गंग नदिनके माहि ॥ ब्रह्मज्ञान सवपंथ में स्योशिरताज
 सदाहिं ६५ पातपात सींचत फिरत मूलन डारतनीर ॥ डार
 पात यकवारही प्रफुलित होहि शरीर ६६ सुकृत पाप दोनोंतजै
 सो ज्ञानी परमान ॥ विननाशे सुरपुर नरक लहैन पदनिर्वाण ६७
 अपनीप्रीति प्रतीतिकरु साथमित्रके सांजु ॥ ध्याउ शुद्धमति
 आतिमहि आनरंग जनिरांजु ६८ ऐसीप्रीति सराहिये ज्यो पय
 पानीकेरि ॥ मिलत एकही होतदो दुवरण परतन हेरि ६९ शब्द

त आकाशमें ब्रह्मवायव्य शुभकारि ॥ ज्ञानश्रवणमंगलसुनत
 तदोष सबहारि ७० जेतेवाजा जगतके वज्रतएक मुरसग ॥
 नत वनत वरणत नहीं अद्भुत सुभग प्रसग ७१ हृदहीत सब
 स्तुकी अनहद सोन नशात ॥ मंगल यहजानेविना यमपुरनर
 छितात ७२ मारगके सरिता सरन नृपकृतसेत सुकाम ॥ तिमि
 ानीशिक्षावदत अपरहेत निजठाम ७३ उदय अस्त नहिं ज्यो-
 तकी आदिमध्य अवसान ॥ देखत ज्ञानी नैनबुधि दशदिशि
 क समान ७४ मंगल अक्की कपट तजि करुहरि ध्यान सचे
 ॥ मुक्तिलहै नत जन्मबहु उपजिहिकायाखेत ७५ क्षेत्रदेह
 ह जानिये आतनसो क्षेत्रज्ञ ॥ द्वितिय तबूक्षत मूढर्मति
 शिअबूझकी प्रज्ञा ७६ हरिमाया में जीवकी नाधिकार कह्यु आ-
 हे ॥ जिमिन भूपके काम में कह्यु अधिकार प्रजाहि ७७ बल
 विन उद्यम होतनहिं पूछत कोउनघात ॥ वृद्धापनकी यह
 ण्या मंगलमत पछितात ७८ सन्धसिंधु अव्यक्त अज अव्यय
 बरुलअमान ॥ ज्योतिनिरीह तिरंजनहिकरान करत मनध्यान
 ७९ समुदें बढत राकातिथिहिसोन बढत क्यहुंकाल ॥ घटतन
 कौनौभातिप्रभु दाससुखदगीपाल ८० अक्की निब्रह्मै एकरस
 ममप्रणकीजिय सोइ ॥ बारवार न भव भवैर ममभरमव प्रभु
 होइ ८१ परमहंस मंडल जुरेबहुज्ञानी लहुखानि ॥ पैमंगलपूछ-
 तभयो पूरणपद अनुमानि ८२ संसुझायोनव भजनबदि नवम
 गहयो मनमोर ॥ अवतौ आशा सबतजी हैभरोस प्रभुतोर ८३
 जिमिबढ़ियानपपीलकी सूझतआननधान ॥ तिमितुवशरणागत
 पस्थो मंगल जय भगवान ८४ सोहत कुलटा कर्म नहिं पति-
 वताकी जैस ॥ जगमंगलको ज्यामतजि सबकोउ दीसततैस ८५
 जय मायापति श्यामकी जयजय पालन हार ॥ दुखहरियेजु
 जानि प्रभु जयजयजग कर्तार ८६ जय सतवादी पापहा जय
 सुखदायक दास ॥ जयअनीह अजकाल विनु देम्वहिं निजथल
 वास ८७ जयनिरगुण जयसगुणकी जयअजहर हरिरूप ॥ जय

विश्वंभर विश्व वषट् जय जनेपाल अनुप ८८ जय अरूप जयरूप धर
जय अनेक जय एक ॥ जय नरतिथ जय पशु विहंग जय जय प्रभु
सविवेक ८९ जय अनाधपतिनाथ प्रभु जय प्रवीण त्रैकाल ॥ जय
गायत्रीमंत्रशुवि जय वैश्यक जय वाल ९० जय अहिमहि जय पव-
नशिखिनंभ जय जुय अहंकार ॥ मंगलके दुखशोकसब हरौ सक-
रकरतार ९१ जय अदेव जय देववत जय सर्वग विशाज ॥ थावर
चर प्रभु एकतू जय जय जय बजरज ९२ गुरुप्रताप निर्वाणपद
वरण्यो मंगलमूढ़ ॥ यथाबुद्धि विनुवकत कौड तिमि यह वक्र
अंगूढ़ ९३ धीरजधरि मनमेंसदा जो व्यावैसर्वांग ॥ ताकेकुशलहि
क्षेमनित होइन प्रणको भंग ९४ साधारण कविता करीमतवि-
वरन निर्वाण ॥ कविपंडित हरिजन क्षम्यो खोरिजानि अज्ञान
९५ दासनकोहौ दासहौ अतिपापी छठकारि ॥ मंगल मनको
मूढ़ अति कहौ संतप निरंधरि ९६ संतजानि निजसेवकरदीजौ
आशिर्वाद ॥ जीवत प्राची सौख्यरस अंतमुक्ति मरयाद ९७
सांगत मंगल जोरि कर नारायण सो दान ॥ भक्तिमुक्ति आनन्द
पद परिपूर्ण विज्ञान ९८ दासजानि राधोरमण हरी विपतिकी
जाल ॥ मंगल को निज भक्तिदै कृपासिंधु गोपाल ९९ उनइस
सौ तेइस गये संवत पौष सुमास ॥ कृष्ण चतुर्दशि अनौकिय
पूरण पुस्तक आसे १०० ॥

इति श्रीमत्संकेतज्ञानहर्ताया सर्वगमुबुद्धिकर्ताया मंगलविनोदकाया

१० मंगलदासविरचितायां सगुणपक्षनिर्वाणशिचामार्गवर्णनानाम

दशमप्रतक ॥ १० ॥

दोहा ॥

पाठके लोता ग्रंथ के गुण विज्ञान सुजान ॥

दोनोंदिशि आनंद लहै मिटै भूल परिमान ॥

रामराम पुनि राम कहि रामराम कहि राम ॥

मंगल तीनोंकाल यह राखु ध्यान सुख धाम ॥

इति ॥

योगेश्वरनाम ॥

सर्वसिद्धांतसप्तशतिका ॥

॥ पटपद ॥ एक वसन धरवसन विघ्न नाशन लम्बोदर ।
मदन-कदन सुतवदन नाग-सेवापति सोदर ॥ चन्द्रभाल गुण-
पाल यथनायक शुभकारी । सिद्धिधाम शुभधाम महामंगल अ-
धिकारी ॥ भणि द्वै मानुर हेरम्ब पुनिन्नन्दि विनायक कजचरण ।
मंगल-समोद तनमन वचन ज्ञान कथा चाहत करण १ आसन
कुत्रलप लसत भारती सुमति-प्रचारिनि । हंसवाहिनी सुभग
शास्त्रा-कुमति-तिचारिनि ॥ वाग्देवतालोप-विधातावाम बिला-
तिनि । सरस्वती शुचिवाक् वाणि-कवि वाणि प्रफातिनि ॥ पुनि
बन्दिवाक् शुचिवाक् वृद्ध्याय गिराश्वहरचरण । मंगल समोद
तनमनवचन-ज्ञानकथा चाहत करण २ ॥ कवित्त ॥ गातकी
त्रिलोकि-महि ज्ञात नाक वासकोन्ह बाल रविलीलिके मिटाये
अभिमानहे । सिन्दूर लुकाव नारि भाल तियत्याग जानिबिद्रम
समुद्र मोक्ष अधिक लजानहे ॥ आकर कुपान लालजाकर प्रकाश
देखिहृत्तिय दयाल नु प्रतिह खलभानहे । मंगल भरोसि कपिराज
हीके हरियश भावत सहायकर एक हनुमानहे ३ ॥ सेविया ॥
आदि अनादिकहे अति सज्जन पूरणरूप अरूप अग्रामा । धाम
अधाम विराजत आपु स्वतन्त्र अकथ्य अनीह अनामा ॥ चौदह
लोक प्रकाशित जो बहुभाति गुणी अगुणी अभिरामा । मंगल
दीनदयाल वह करजोरि को पदकजप्रणामा ४ दीन दयानिधित्त
प्रमातम वेद पुराण नवैसतिसाखी । पालत वास दशो दिशिमे
अति कथनते सरणागतसाखी ॥ व्यापत ताहि न मोह उपाधि
जो तू पदपकजकी अभिलाखी । मंगलहृपर होहु कृपालमनोरथ
पासरहे मन्दावाखी ५ लोच भनै प्रणठानि कृपानिधिहे विजदात

मनोरथदानी । वेद पुराण कवीश महासुनितैः वदै यहउत्तम
 वानी ॥ सोयविचारि प्रतीनिभई उरमोरि सुनौ दुकशरंगपानी ।
 मंगलकी मनकामनी पूरिय हौ सख लायक मोमनमानी ६
 देहु मनोरथ बेगि कृपानिधि सत्यमनोरथ दानि कहावौ । काहु
 के काजको बार न लावत क्यों ममहेतु अवार लगावौ ॥ हौदिन
 राति रदौ तुव नामहि जानतहौ पुनिकाहे भुलावौ । मंगलदीन
 पुरारत आरत आरा मनोरथ मोर करावौ ७ जानतहौ नहि स
 गुण निगुणनाम प्रताप लखौ दिशिचारी । ता हित नाम देखान
 करौ नितजापकरौ सुचिनाम विहारी ॥ ध्यानकरौ भलनामहि
 को अरु ज्ञान गुनी तुवनाम विचारी । मंगलनाम गहौतुव मोहन
 देहु मनोरथ हंगाम मुरारी ८ जौन मनोरथ लागि जवै जवतौन
 लखतुवनामते पायो । कौनहु काल निराश रहौ नहि सत्यकहौ
 नहि जात छपायो ॥ कीट मनोरथ दारुशरीर लग्यो पुनिआइ
 धनोभ्रमछायो । मंगल सो पूरवै करुणाकर त्यागिसवै शरणागत
 आयो ९ को असभूति विभूति तिहू पुर जो न मिले तुम्हरोयश
 गये । तीनिहलोक बनावत पालत नाथतहौ अपनो मतपायिगो

कारण सूक्ष्म धूलहु नामते तीतिप्रकार कहाया १३ सांचुवखा-
नत निन्दकवाजत झूठवखान किंयोनहिं जाई । तत्त्वमसोश्च-
तिसामवतावतकी तत्त्व असितीनिस्वभाई ॥ सन्तमहन्त कवी-
शु कोविद स्वंपद अतित ईश लखाई । मंगलवत्सवदे असिती
पुनिद्वैतरहा न अद्वैत गनई १४ सांख्यविचार कह्यो मुनिआदि
पंचोसप्रकार विधानहिगायो । कर्मप्रधानप्रमाणवद्यो भवजीवअ-
पार अनादि जनायो ॥ ईश्वरमय जगभासिरहा विनुई शं चंसांचर
नाहिलखायो । मंगलयोगसमाधि बिहाय कहांलखि कारुणतार-
णपायो १५ आदिनहीं भवकी अरु अत न नाहिं बनावनहारवता-
इय । पुरुष औ प्रकृतीहिसंयोगते होतसमस्त निरस्थिरगाइय ॥
भूतलनाक पतालनिवासहि देतनहीं यकरुसप्रभाइय । मंगल
कर्मअकारण होत न कारणतेकिसि मुक्तिददाइय १६ पूजतदेवन
कारणपाइकै इयावत देवन कारणलागी । तीर्थ औचित कारण
हीत न पन्थ अपन्थ जुतापतआगी ॥ देहरंगै नरकारणलागि चढा-
वतनीर सुकारणपागी । मंगलसञ्चितकारण देखत मोक्षन कारण
को अनुरागी १७ कोउवनो सुखियाइत डोलत कोउमहाविपदा
अधिकारी । भूपतिकोउ प्रधान चमूपति एकप्रतापवनोपवचारी ॥
पसिदत कोउ विमूढकुलीनमलीन कहाव प्रजीतअनारी । मंगल
मोहग्रस्थो निज आतम जानतनाहिं सहा अविचारी १८ आतप
को तपव्यापत काहुको अत सतावतहै दुखभारी । भोजितपा-
वससैं विनुकारण आग्रसुनावत लोग पुकारी ॥ अनंदलो नित
काल वितावत एककहावत दीनभिखारी । मंगल मोहग्रस्थो
निजआतम जानत नाहिं महाअविचारी १९ वाञ्छनके यकसून
वतावत एकमुषे तन देतजिवाई । एक करामत आप दिखावत
भूत पुजावत देवबिहाई ॥ एक प्रज्ञीव करावत ब्रह्माकी आपनहीं
मतिकीदुविताई । मंगल संत समर्थसदा जोकरैसी सहीमनक्यो
अमखाई २० वस्तु अनादि सबैजन खोजत चिंतन सूझत आपअ-
नाधी । शुद्धस्वरूप अनूप अनाय सो तो यक

भूलमिटाये गहगरपायसी देय लखाय नहोहि विप्रादी । मंगल
 द्वैतविहायन सर भापतहै मुनिहूसनकादी २१ तीरथके बशमूर-
 तिकेबशहै बतकेबशमे अतिभूखे । पूजनकेबश पाठनकेबश जा-
 पनकेबश धौलतहूखे ॥ ज्ञानहिकेबश ध्यानहिकेबश स्थानहिके
 बश वेदहिदूखे । मंगल सम्पत्तिकेबशमे नित आत्मकेधनतेअति
 खूखे २२ ऊधवाहु करतपएक खडपदएकरहै दिनराती । एक
 अधोमुख झलन झलत क्षीरपिय तजिअन्नअभाती ॥ ककरसेजरहै
 नितएक जुकाठत आयु विद्यावत पाती । मंगल आत्मज्ञान विना
 अपनेमनते यह स्वांगदिखाती २३ चामकुरग विद्यायरहै यकक्षारि
 सही पगवेत सदाहै । प्रातउठै निजदेवलजाय चढावतचावल
 ज्ञानकदाहै ॥ मौनरहै यकसैनबुझावत औषडवास सुराहि यदा
 है । मंगल जानत आत्मा जो नहितोषहु साचहुस्वांगबदाहै २४
 जागतमजस चेतन चेतन सोवतमे तसजागिरहाहै ॥ इन्द्रिनके
 व्यवहार अनकनसो नैलखै शुचिरूप मेहाहै ॥ आपहिजानत
 आपवखानत दूसरकौन विवेकलहाहै । मंगल जनिबिना भ्रम
 लागत जानतज्ञानअज्ञान कहाहै २५ जीबहिछूतिनपाकहुलीगत
 पूरणबह्य प्रभाप्रसरीहै । नीचकुलीन नही यह जीव कहावतमे
 अहि ज्यो रसरहीहै ॥ भूल बडी तनमान अमान कि छोडत सो
 नन पोढसरीहै । मंगल संतसमाजविना कउकाटिसके न गले
 फसरीहै २६ शक्ति पिपीलके अंगवहै गजते तनमे भरिपूरिरही
 है । देव अदेवनमे पुनिसोय मनुष्य पतंगकी शक्तिवहीहै ॥ नाग
 बनस्पतिमे फिर देखियपै दुविधायक चित्त सहीहै । मंगलडा-
 वरताल नदीयक नीर न रूपहै मदयहीहै २७ या तनमे इक
 नित्य निरंजन सत्यअहै मुनिसंत बखानै । बोलतडोलतसोवत
 रोवत जेवतहु निजध्यान प्रमानै ॥ बुद्धिनहीं जुबडो गुणखानि
 नही मन चंचलकी गतिसानै । मंगल आपुहि आपुधिराजत तू
 दशहु दिशिमे भ्रमठानै २८ कौन बतावत काहि बतावत कान
 लगाय सुनै पुनि करै । काहि चितावत कौन भ्रमावत ज्ञान न

यावत् ज्ञानवटारे ॥ जो प्रभु आपु प्रकाशिरहा न द्वितीय कहाविकि
 वेसने तारे । मंगल मौनगही अपने घर जो अपने सबके घरसारे
 २६ कामवशीभव भूतकिते असकेतन के मनको प्रजारे । लोभ
 लिये मन कोहुको डोलत मोहकि रज्जु बंधो । न सम्हारे । मान
 प्रमान हि धैर्य कोहुको कोउ महाभदको मतवारे । मंगल क्यो
 निबहै यह बुद्धिविकर विनानितही दुखमारे । मंगल न के अथत प्रेन
 के अथयन्त्रनके वषमेयके फूले । भूतनके वषि मूढपिपात्रनको वष
 मेधम पेलन झूले । वीर्यके वष लालनको वष लालनके वष बैठ
 झूले । मंगल भांडसो स्वांगनके वष आतम आपन आपुहि झूले
 ३१ धैर्यनके वष संधनके वष संधनके वष पाठकडूले । प्रेणन
 के वष भोगनके वष रोगनके वष मेसह झूले ॥ योधनके वष बोध-
 नके वष बोधनके वष ज्ञान झूले । मंगल पण्डित वेदनके वष
 आतम आपन आपुहि झूले । वाहिरमें मनसतसो लागत अन्तर
 अनिविचार विचार । ज्ञानके निशिवासरतू खलाकाम काला
 छुपिके अनुसारे ॥ बातविवेक कि गवित है नितसो हमयो मदिरा
 चित्तधारे । मंगल स्वांगनसो न सरै हरिकर्म कुकर्म समस्त निहारै
 ३३ क्योन भजे हरित्यागि विषयरस नीरसलौ किततू बजिजावे ।
 जन्मअमोल गवीवत क्यो तमुझायक है समुझो न प्रतावे ॥ ज्ञा-
 नत है पुनिमानत नाहि महाखलधी अपनी कति भवि । मंगल
 ध्याउ मनोहर मूरति अन्तरवाहिर जो प्रतिगावे ३४ काम अधात
 नही सुनिनावते नैन जु डालत न रूप विलोकी । ज्योरसना तायकै
 जुधिखावते नाक सुवासत नाहि संशोकी ॥ यो न त्रय परसेसन
 धाकत अद्भुतशक्ति सुधाचहुगीकी ५ मंगल पांचयके मन धाकत
 नातर कौनसके मनरोकी ३५ को असभूतभयो जगमें जेहि के
 मनमें स लगी विषयाशा । कामकि लोभकि क्रोधकि मोहकि
 द्रोहकि छेहकि मोद विलाशा ॥ खानकि पानकि आवन ज्ञानकि
 स्वर्ग अधागिकि मुक्ति प्रकाशा । मंगल इन्द्रिय स्वोमन जो लखुसो
 विषयी अटकयो धमपाशा ३६ ॥ दंडक । मालखकि बात समु-

ज्ञावे न गुनावै भ्रम वृथहि लखावै जाहिं लखत न कोई है । अम
 धतावै जो चलायमान बुद्धिबद्धि विधा दुःख शास्त्र सुमतिविगो
 है ॥ अगुणा सुतवै जोगुणानिकरि भांति भांति दंभकृतवात कै
 सुधिबुधि होई है । मंगल जो अकर बताय कहै कीन्ह लोक तो
 तौ हैत भाववश आपुसहा सोई है ॥ ३७ ॥ झूलना ॥ माला गलेदार
 फिरे रंग मालतन छालियै बैठै तहां बानी रै ॥
 कोजी आचारके बादी बडे प्रतिद्वारकाधनको खडै लै भागवत
 पोथी अडे भाषे सोहावन बातको ॥ एकादशम अर्थावही विज्ञान
 योग लखावही औरोंको तो समुझावही झूठे पिता हितु तातको ।
 मंगल भुलाने लोभमें माया महा मद क्षोभमें आकाश साधे धोम
 में कहु मुक्तिको दरशातको ॥ ३८ ॥ उठि प्रात झडिगेहको पुनिधो
 बैठै देहको पूलै विद्योता नेहको दुविधाको हीमें बास है ॥ एव
 मनोरथ नाहिने धावै जो धासै वाहिने तीरथ पिनालय साहि
 ने परब्रह्मको न प्रकास है ॥ विद्या विधान बखानही विज्ञान
 मोरग जानही दडता नहीं उर आतही पंडित कहै अनयस है ।
 मंगल विचारै योगको आशा लगी उर भोगको चाहै नहीं भ्रमरेण
 को बंधन सही भ्रमपास है ३९ गुणज्ञात को उर लेखना विज्ञान
 को उपदेशना वैरागको तन भेसना धारण क्रिये संन्यास है
 जानै तनेती धौतिको अष्टांग साधन होतिको भाषै निरञ्जन ज्योति
 को कारण लिये अन्धास है ॥ ४० ॥ श्वासानरोकी एक है योगीजन
 विवेक है शब्दै अनाहद टेक है वज्र रुहिये जप न्यास है । मंगल
 तन ध्यावै रामको पावै न सोमन कामको ठगता फिरै नैराशमको
 करिणाम प्रेमको प्रास है ४१ जब तत्त्वको उपचारना तिहुं लोक
 को विस्तारना करणी करम करतारना संश्रितान तीराजा हो
 अहेकार प्रेरुष प्रकृतिना शितकंठ पूरण शक्तिना कछु बोध भगता
 भगतिना आनन्द दुख लहि साथ होना मन बुद्धिको निरधारना
 विधातमा विषवहारना वैकुण्ठ नर्क विधारना पूरण कलागुनि
 गाथ हो । मंगल कहां तबतू रहै अवा सत्य कथों नाही कहै सत्य

कन मेरोदहे भूपति किनावत भावहो ॥ ४१ ॥ सवैया ॥ जीव अनन्त
 चेतिहुँ लोके एकसो दूसरनाहि वनी है ॥ एकसि बुद्धि न एकसि
 बुद्धि न एकसो ज्ञान न चित्त सनी है ॥ एकसो शब्द न एकसो तेजन
 एकसि शक्ति न मुक्ति मनी है ॥ मंगल धन्यवनावनहार जहांत है एक
 हरूपगमो है ॥ ४२ ॥ एकस्वरूपतिहुँ पुरडोलत रूप अनेक धरेचहु
 वानी ॥ ज्योवहु रूपिय रूपवनावत आनहि आन प्रकार प्रमानी ॥
 आपनमे ककुभेदन लागत स्वांग दिखाय प्रसन्नत प्राणी ॥ मंगल त्यों
 प्रभु रूप किये बहु एक प्रभा सब अंग समानी ॥ ४३ ॥ ऊपर को सिध स्वांग
 बिलोकत अंतर की न कथा अनुमानै ॥ साधु नही विकरूपे प्रप
 वित्त मूर्ति निचोल रगेत न आनै ॥ एकन छाप विभूति विमर्दित
 जानत पै मनमें अविज्ञाने मंगल अत हि भांति बतावत साधन
 की गतिकी पहिचानै ॥ ४४ ॥ शीघ्र जटा तने क्षार विमर्दित हस्त कर्म
 डल सेज कुठामो ॥ भाल प्रिपुंड गले बहुमाल ॥ भुजान दिये भल छाप
 सुपामो ॥ चाम कुरग विलापर है निते ज्ञान कथे सुकथा अभिरामो ॥
 मंगल ज्ञानिज भाव नहीं दृढ़तौ यह साधु किधौ छल सामो ॥ ४५ ॥
 ज्ञान जडाउ बिराजत शीघ्रहि भाल विचारिकी ॥ सोहत रीरी तौप
 निचोल गे दृढ़ता निशि धीरज के लग प्रीति न थोरी ॥ कीटि विवेक
 बिलोकत मारग राग बिहून कि धूमति खोरी ॥ मंगल व्यतिमत्री
 गुरु अत साधु महीतल मुक्तिकी धोरी ॥ ४६ ॥ प्रेठहु में न खरीदत तूमन
 कोनु अने ठकी घात चलावै ॥ वामलिये फेर काम न आवत घात न
 के मन मोद करवै ॥ जानिलियो पाहचानि भली विधि विधे बिबे
 झूठ हमें भटकावै ॥ मंगल ज्ञान विवेक विचारसों आपुनु ही कस
 आमधतावै ॥ ४७ ॥ कविता ॥ काहू थल पंडित स्वरूप धारिबे दपदे कोहि
 थल कवितन कृत कविताई है ॥ काहू थल साधु तन साधना अनेक
 कृत काहू थल मौनो वनि बैठो मौन लाई है ॥ काहू थल चातुरी सिखावै
 कहूँ सीखे आपे काहू थल विपुल करत गम पुणाई है ॥ काहू थल मंग
 ल दुचित्त कहूँ एकचित्त ऐसो प्रभु अलख ॥ अलख प्रभुताई है ॥ ४८ ॥
 सवैया ॥ जो दुख औ सुख यो भव जीवहि ॥ एक अदि ऐहि सी कहि दी

जिय । ताविन आनत होत मही तल जो निर्वारण को मार गली जिय ॥
 तौ दुख को सुख एक समान हिं । मानि स्व आत्म के रस भी जिय ॥
 मंगल ॥ ज्ञान गली सकरी प्रविष्ट सति धूल न कोटिक की जिय ॥ ४६ ॥
 ऊसर में न उगै तण कै सहु धारिद जोवर पै सु रपाना । धूहर वृक्ष न पात
 धिलो किय को दिड पाग्र न सों गुणवाना ॥ ब्रह्म विचार निरूपण ज्ञान
 को व्योक्त जो निज सत्य समाना । मंगल जन्म जरा पुनि ताहि न
 ग्रसत है धदसा धु सु जाना ॥ ५० ॥ जो यह जीव निरंकुत लाहिन है
 तन लिखहि को अधिकारी । क्रांति नही गुवि आत्म देव की है
 प्रगटो ककुपिंड बिकारी ॥ तौ हूँ विचारत आत्म ज्ञान समहारत
 आत्म ध्यान अकारी । मंगल न कर्तन स्वर्ग हि भ्रावत जाइ निवासत
 धाम सुराही ॥ ५१ ॥ सूरज जने प्रगटै जिमि आत्म प्रपय प्रदोष मिलै
 र बिजाई । कोटि उपाय विधान करै विनु भानु न आत्म द्वेति
 खाई ॥ त्यों सचराचर प्राण बिलोकिय ज्योति अमर ब्रह्म
 लखाई । मंगल अंत मिलै तिज नाथ हि कौन अपोष्य की गति
 पाई ॥ ५२ ॥ तीतिहु काल युगान सुचारिहु वेद पुराण कथा सरसाई ॥
 जेतिक जाहि समर्थ कयै तत देव अवे वन की प्रभुताई ॥ धर्म अधर्म
 क्रिया पुनि कर्म भने सत्ता भांति सनेक दुराई । मंगल संत महान्त
 भाषत बैठि रहै सब लाजि चुपाई ॥ ५३ ॥ संत कहै हरि मानुष भी
 अरु संत कहै लक्षणोद सुखानो ॥ संत कहै पद मूल भयो अस संत
 कहै लभगेय सकानो ॥ संत कहै यथि शीघ्र प्रगो पुनि संत कहै
 विधि पूजत हातो । मंगल संत कहै लोको हरि सादन ते प्रगटो
 जग जानो ॥ ५४ ॥ ज्यों रवि पश्य दिवा त त देखत दोष प्रभाकर को
 कि विहायत । न्हात हि गंगाने मल कूदत होत न उच्छ्वल धोवत
 ताय सना ॥ शुद्ध मनो गति होत नही तिमि धर्म सुतेरत इन्द्रिय
 शोधत ॥ मंगल को उपदेश मनोहर मूर्धन चेतन के दि उपायत
 ॥ ५५ ॥ सनातन वेद बखानत को बिद सौ कृतिता सका पावै
 आदि अतादि अकारण कारण सत्य असत्य न सोड लखावै ॥
 बुद्धि समान प्रमान विधान करै निरभारि निगूढ गुन वै ॥ मंगल

तू धियणा विनुक्यों कहं है जु सँविग्य नहीं विधिभावेँ ॥ ५६ ॥ जो पै
 सुपूर्व स्वरूप कृपानिधि तौ सुर तेरह मांतिन चीन्है । जो प्रभुमानुष
 आकृति गाइय तौ फिरि कोमंत घरि छाकीन्है ॥ कप्यो पशुकीट
 कहौ मनमूरख है खगमोन अकाशहि लीन्है । मंगल भूत पिशाच
 बन आसर दृष्टि परै नहि दृष्टिहि दीन्है ॥ ५७ ॥ तरव कहै मृत्तिका जल
 पावक वायु सनातन है प्रभु सोई । जो गुणतौ सतराजस तामस
 पूरुष औ प्रकृती नहि होई ॥ त्रैसुर तौ विधिविष्णु सहेशन आयु
 धितीतत कालक होई । मंगल शक्ति अशक्तिन भास्वर दृष्टिविये
 नहि सूझि परीछै ॥ ५८ ॥ वृक्ष खजूरि लगेफल दूरिकिये बलभूरिन
 पापरजाई । मूल बिना किमि धाय चढ़े महि टूटि परे नहि वेत विखाई ॥
 तातरु पात समीर कि सधिमें घूमत है नहि होत गहाई । मंगल
 रोजह चेतन है फल सतल है बिन पक्ष उडाई ॥ ५९ ॥ साधु कहा
 मन हाथ न जाकर ध्यान कहा चितचेत नहीनो । ज्ञान कहा मति
 गोधिर नाहिन भक्त कहा शुचि त्यागन लीनो ॥ कौन विवेक जो
 इन्द्रिय के बंध क्षेम कहा वध मोह न कीनो ॥ मंगल ब्रह्म विचार कहा
 जो पै आतम आपुन आपुहि चीनो ॥ ६० ॥ स्वर्ग निवास कहा मन
 तोषित नर्क कहा बहुआधि सताये । भोग कहा सुरवामन के संग
 सुन्दर बुद्धि समाधिलगाये ॥ नर्क कलेश महा कृमि चाटत आमिक
 ली बहुपथ न धाये । मंगल भूल दुवौ दिवि नर्क जो आतम ध्यान
 गहै मुद पाये ॥ ६१ ॥ आतम ब्रह्म निरंजन भाषत आतम देव अदेव
 भुलानो । आतम लोक अलोक अधीरज जंगम धावर रूप स
 मानो ॥ तरव अहंकृत है गुण आतम बुद्धि विधान समान
 बखानो ॥ मंगल ध्यान सदा कृत आतम संत समागम सोपहि
 चानो ॥ ६२ ॥ विष्णु भजै नर जन्म दुतीनि कु मुक्ति लहै जब सोहन
 जागै । शक्ति अनादि निरूपण जो कृत सोउ न जन्म अदृष्टि स्यागै ॥ ६३ ॥
 शंकर ध्यायल है शिव लोकहि अंतहु जन्म प्रदार्थ लागै । मंगल
 ब्रह्म विचारि कहै उर आवत मोक्षहि सो अनुरागै ॥ ६४ ॥ एक भवै फल
 रक्ष न जानत कौन दिशा कपहि देशहि लागो ॥ एकलिये फल

खोजत पादपः खात नही गुण औ गुण पागो ॥ एकते जानत पेह
 भलीविधि खात महाफलजी अनुरागो ॥ मंगल एकन खात न
 जानत कोतरु कोफलमूलको सागो ॥ ६४ ॥ बालक रूप महोशुचि
 सुन्दर देखनहारके चितहि भावत ॥ अंधप्रशंसित रूपन देखत
 टोवनकी निजहाथबढ़ावत ॥ सूक्ष्म स्थूलने लंबन ॥ चाकल लंबन
 नीच जो हाथहि आवत ॥ मंगल क्यो समुझै पुनिमूरख पाखंड
 के कर ज्ञान गहावत ॥ ६५ ॥ दृष्टि न आवत रूप मनोहर शब्द
 अनूपनदेत सुनाई ॥ आपि न आवत अद्भुत अर्थ है शुद्ध सुगंधिन
 वासहु आई ॥ सुष्ठुपदारथ है मनभावन कोटिहु भाति न होतगो
 हाई ॥ मंगल है नटवाकसमोहर देखेवनै नहि जात चलाई ॥ ६६ ॥
 मेवचले शशिमूढ बखानत नाचचले तरुजातलखाई ॥ बालक
 ज्यो बहुवारन घूमत वैठिलखै निजदृष्टि उठाई ॥ ६७ ॥ देशभ्रमै रह
 वाहर भीतर भूनभघूमत देखत भाई ॥ मंगल तयो मनकी भ्रमणा
 विपरीत लेखे भ्रमजात नशाई ॥ ६८ ॥ बालकता तरुणाई गई विर-
 धापन केशहु श्वेत बिराजै ॥ आनन दन्तबिहीन सुनै नहि दृष्टि परै
 जगधुंधसमाजै ॥ कमपत है करइ द्विज आनहु कोटि किये नहि आवत
 काजै ॥ मंगल मृत्युसमीप डरै नहि राम कहै नकु कर्महि लाजै ॥ ६९ ॥
 क्यो मन दुंदुत है दिशिचारिहु स्वर्गचढ़ै अपवर्गहि धावै ॥ तीरथमूर-
 ति जापन पाठन पूजनभोजनमे दुचितावै ॥ संतन पूछिमहतन
 बुझि सबै उपदेश मुनीश्वरगावै ॥ मंगल सत्यगुरु निजआतम आप-
 नभेद जो आपुवतावै ॥ ७० ॥ आठहुयाम प्रसिद्ध पुकारत शब्द मनोहर
 हंसकि धानी ॥ मूरखलौ दशहूदिशि धामिक अक्षर खोजत आखर
 दानी ॥ अति ॥ अजौ अपने घर वैठिय भूलि गये धन मूल किहानी ॥
 मंगल जोतिहु लोकमें पाइय सो अपने घर है भूलानी ॥ ७० ॥ पांचहि
 तत्वनते पुस्ती नहु है विरचे करतार सुजाना ॥ आपन अंश प्रवेगित कै
 सयरावर जीव किये विविनाना ॥ तीरथरीर सो पंचप्रभूत ते हैं लघु
 दीरघ केरि प्रमाना ॥ जोगुणसिंधुमें सो गुणविंदुमें मंगल भाव द्विती-

अरूपरूपवाल किरिकौनहै । अगुणवरखान कृतगुणहीकोलोपहोत
 अजरधताये जराप्रसितनतौनहै ॥ कहतअनादि आदिद्वितियवि-
 चारहोत भणेतअखण्डखण्डदूसरनजौनहै । पुरुषपुराणसवठास-
 नमेंएकभाव मंगलनजानिपरै द्वितियकोगौनहै ७२ पुरुषवरखान
 कृतनारिकोविभेद होत अवलाबतायेनररूपी कोऊआनहै । स्त्रीव-
 तनगाये बुधकप्रिसाधुमानै नाहि । प्रतितनवासभापे मायाकोमि-
 लानहै ॥ ऊरधनिवासकहीं प्रभुअधराजैकौनु श्वेतदीपसोहै । आन
 हीपकाकोथानहै । मंगलअपार किमि वरणिबतावै ताहि अधिक
 नहीनहरि सदाहिसमागहै ७३ कीट औ पतंग पशु खगनर नाग
 मुनि देवता अदेव जेते त्रिपुरविचारिये । सबमें विराजै एकभाव
 सवठासप्रभु सचनते न्यारोकरि ज्ञाननिरधारिये ॥ जैसेघटमठ
 धामतयनमेंनाकमिलो बुद्धिचपदेखेन्यारो चतुरसम्हारिये । बुद्धि
 मेंनआवै नबिवेकज्ञानगावै कैसे मंगलवतावै तातेचुप्पचित्तधारि-
 ये ७४ सवैया ॥ ज्ञानगलीचलि सूझिपरै कछु सोऊ धनैकहंतेन
 अनूपा । बुद्धिअचभित मोहितहै मन शुद्धिअशुद्धि परैभ्रमकूपा ।
 लोकमेंनाहि अलोकमेंनाहिन धोकमेंनाहिन रैयतभूपा । मंगल
 है तुवरूपवहै विनज्ञानगुरुलखि जातनगूपा ७५ दास अदासन
 दासकुदास विचारतहैप्रभु बहसनातन । पालतएकहिभावचरा-
 चरमोहनरूपवसै सवगातन ॥ नीचकुलोने गुणीअगुणीमहिदेव
 गवाशको भेदनजातन । मंगलतासुप्रभालखि जैनन त्यागंत संत
 विरयेत्रिपपातन ७६ आपनको सबज्ञानियजानत आपनकोसव
 ध्यानियलेखि । आपनकोसब भक्तप्रमाणत आपनकोशुचिहीअव-
 रेखि ॥ आपनकोसवसंतवरखानत आपनकोतपसीसमपेखि । मंग-
 लमान्यहैकहिये भवआपनिमूरति आपुनदेखि ७७ जोविधिहैकर-
 ताभवकी अंतवर व्यतीततकालमथावै । शंकरदेवसुरेशहुको मृतु
 नाशकरै यहवेदवतावै ॥ स्वर्गनिवास सुपर्वतजै तनकालविलोकि
 नरीरजआवै । मंगलभूल महाजगजालमें क्योनकृपानियिकेपद
 ध्यावै ७८ कश्यपगे कहि धामअरे मन तेरहनारिनते जगपूरी ।

श्री मन्त्रराज कहां अधतात्त रचेबहुअर्थ प्रबंध अधूरो ॥ मन्त्रकहां
 पुनि कन्धकहां मुनि दक्षकहां किधवांस समूरो ॥ मंगलतु मन
 मे नहि बोचत मृत्यु प्रताप सुने मुख भूरो ७६ त्यागत देह अधी
 सुकृती सब औसर पाय भयो मृत्युहाको ॥ जानि न जात कहां चलि
 जाति न घुमि कहै सुबुधी निज साको ॥ कौन दिशा क्यहि देष घसे
 तुर कौन के रूप अरूप प्रभाको ॥ मंगल मानिलयो मन तेतत का
 कह मोक्ष अयोगति काको ८० केतिक काल व्यतीत भये मन जैतु
 यथा अथलौटिनहाको ॥ आनि धरान कस्यो न दशानिज नक
 गिर्यो किधौ स्वर्गहिताको ॥ भोग कस्यो कि मरयो निज भूवहि
 रोग ग्रस्यो कि अरोगहिछाको ॥ मंगल लोग कहै सो सही क्यहि
 मोक्ष कहौ श्री अयोगति काको ८१ आव कहातेन आपुहि जानत
 लोगत को सुख सों सुनि मानी ॥ ब्रह्म ते कर्म ते खानि निगोधते आव म
 के तन रह समानी ॥ पुत्र पिता ते पवित्र सुजीव है पूरुष श्री प्र
 कृतीहि प्रमानी ॥ मंगल पै न पता कछु लागत खोजत आंधर खस्तु
 हिरानी ८२ ॥ यथा कवित ॥ कोरी को जमार्द्ध एक मूढ चल्थो
 सासुवर चीन्हत न सासु न ससुर निज सारेको ॥ गाँव के निकट
 जात नाम हूको भूलि गयो चकित भ्रमात पुर सकल दुवारेको ॥
 कोऊ चाहि जानै नाहि यहै पहिंचानै नाहि बिकल महान मन
 कीधी मत वारेको ॥ मंगल सकोचि मन लोगन सों पूछै लग जानत
 सजान कोऊ ससुर हमारेको ८३ ॥ सवैया ॥ मातु कहै सुत सोर
 अहे अरु तात कहै सुत सों निज पूता ॥ नारि बदै प्रति पुत्र पिता
 प्रपिता कहि नाति मचाव अकूता ॥ मित्र कहै हितु शत्रु कहै अरि
 शिष्य कहै गुरु आदि प्रभूता ॥ मंगल पै न पिछानत है कोऊ साहिब
 होइ कि किङ्कर दुता ८४ जीव चराचर जे परतीनि प्रकाशित है
 सब में पुनि आपू ॥ उयो सब वस्तु प्रकाशक भानुहि ज्ञान बिना
 भ्रम पूजन जापू ॥ शुद्ध सते गुण पूरि रहा निज अद्भुत मोगुण सजत
 वापू ॥ मंगल सोहन मूरति ध्यावत लागत है वरदान न आपू ८५
 ज्ञान बिना सिंग से भ्रम है नहि ब्रह्म मरुख सार अतारा ॥ दूरि बदै

भरिपूरि रहा अतिप्राप्त भनै प्रभुसत्य चकारा ॥ अन्तर बाहिर
 आवत जावत आपन भेद सो आपु पुकारा । मंगल पै नहि मानत
 न गुण पागत औ गुण होत प्रसारा ॥ ८६ ॥ कश्यप की दयती निजिमा
 तिन के सुत तीनिहुं लोक भरे हैं । स्वेद ज अड ज योति ज उज्जि ज
 आसिहुं स्वानिन में पसरे हैं ॥ एक ते रूप अनेक भये विनु कश्यप कर्मों
 कहिये बगरे हैं । मंगल कश्यप को जो पै दु द्विष तो नहि काहुं के
 धाम परे हैं ॥ ८७ ॥ जायत में दुख ही दुख देखिय है स्वपने महं जगद
 कराल । इन्द्रिय धूल तो जायत में अरु सूक्ष्म सो स्वपने कृत
 आला ॥ कारण रूप सुपतिहुं में चकि चौकि उठै बहिर भ्रम माला ।
 मंगल कर्मों निरधार ल है दुविधा तन तो निहुं में बिकसाला ॥ ८८ ॥
 कारण देह मिटे सुनुरे मन का कहिये बुधि में न ससाई ॥ वृक्ष कहां
 फल फूल सुगन्धि जो बीजहि हानि परै भ्रम ताई ॥ पांतिहि तत्त्व
 ने ते तिहु लोक जो तस्व विनाश तो लोक न भाई । मंगल कारण
 आवि चखानिय वादि समस्त अहै निपुणाई ॥ ८९ ॥ श्री परमात्म
 पूरण रूप जो अंतर बाहिर आपु विसाजै । जान अज्ञान प्रवीण स
 मूढ़ न पावत जाक सुद समाजै ॥ सो जगदीश बत आवत पासहि
 सन्त सहन्त कबीश अरु जै । मंगल अन्ध अज्ञान विना गुरु पंथ
 न हेरत आवत लाजै ९० ॥ बालक तामहं मोहन ही बडिभूल कि
 शाल लगी मन में है । प्रौढ़ भग्न कछु मोह स काम इतै उत हेरत भूजन
 में है ॥ वृद्ध वृषामहं मोह बढो उर ज्ञान कहा प्रभुता धन में है । मंगल
 अंतक अतम स्यो सव को डिगायो भव ही क्षण में है ९१ ॥ तीरे पको
 पग देत मिटे अवधों कवि पंडित लोग बखानै । स्वर्ग वृत्त अतकी
 फल पाय बिलास करै मखसों सुरधानै ॥ जो अंध भोग दुबो प्रसि
 त्यागत सो कृत तीरे प औ व्रत ठानै । मंगल मोद समेत भजै हरि
 मुक्ति पदार्थ करत ल आनै ९२ ॥ काम सतावत कोष जरावत लोभ
 भ्रमावत है चहु पाई । गर्व गिरावत दुम्भ रिखावत संत न आवत
 है जड ताई ॥ मोहन गावत ज्ञान न आवत चित्त चित्तावत आन
 उपाई । मंगल भक्त कहावत ऐसेहु एकहु भावन भक्ति लावा

ई ६३ सत्य न जानत झूठ धरानत मानहि मानत है कुचि
 तार्हि ॥ मूरति पूजत भोजन भूजत है ॥ बहु कूजत खाई अघाई ॥
 धर्म दुरावत कर्म करावत चित न भावत आज वडाई ॥ मंगल
 भक्त कहावत ऐसहु एकहु अरु न भक्तिले खाई ॥ ६४ ॥ जानत आ
 पनको शुचि आतम आननको अपवित्र विचारि ॥ आपन धर्म मनो
 हर है यहि नाहि भलो दृढ़ ज्ञान प्रचारि ॥ काठगढाय गले गहि बांधि कै
 मूरति पूजि गुमान हि धारि ॥ मंगल नेक दया उर में नहि भक्त कहावत
 ज्ञान बिसरि ॥ ६५ ॥ आतम वास शरीर वतावत लोगन को मन भक्ति
 ते डारि ॥ देवन नीद करै बकसावु न स्वादु लेगै मुख जो भव चारि ॥ बात
 न मानत संतन की न कबी शक्ति बाणि हिये ककुथारि ॥ मंगल जो हठि
 आतम पूछिय तौ फिर वत्ति सटांत निकारि ॥ ६६ ॥ ब्रह्म निर्जन ज्योति
 वतावत कोठ कहै निरबाण बिलासी ॥ श्वेत सुदीप वखानत को नहु
 शेष केशी श कहै मन भासी ॥ कोउ बदै हरि घाम सुआन हि जानत है
 मुनि ज्ञान प्रीति सी ॥ मंगल के उर में दुविधा फिरि है संमठा में ह को नु
 बिलासी ॥ ६७ ॥ ब्रह्म जो है नरकाय विराजत तौ पशु की ठे विहाय स
 को है ॥ देवन में नित संतन में प्रभु वास करै गुण पंडित सी है ॥ दैत्य
 असंतन में पुनिको नु बिराजिरहा गुण औ गुण जो है ॥ मंगल भूल कि
 कत कहोन द्वितीय कही इके आपुहि दो है ॥ ६८ ॥ एक वखानत है द्वि
 धावै यहि भाषिक है बकता पुनिकारि ॥ बाहि पुमान भनै यहि नारिन
 नारि पुमान गुमान के मोरे ॥ एक अपार द्वितीय अनदि धरानत
 केतिक है मति धरे ॥ मंगल सूरज धूप द्विभातिन ज्ञान बिना सब के
 कर जोरे ॥ ६९ ॥ कवित ॥ ब्रह्म ही ते माया ताते तौ निगुण पांचतत्त्व
 सूक्ष्म सधुल कवि दुविध लखावै है ॥ तत्त्व न ते सात नाक पद बास देखि
 यत सकल पता उच्यति ते तत्त्व करि गावै है ॥ आदि औ अनदि जग द्वि
 विध वखानै लोग मंगल के वत्त एक सांची बात आवै है ॥ मेरी जानि
 विश्वनाथ बालक स्वभाव जैसे रचि कै धरौ दा पुनि आपुहि मिटावै
 है ॥ ७० ॥ क्षमा मिटि गंधि हात गंधि नीर को गलेत ॥ आपर सूर पपाय
 रहत न लेगै ॥ पुनिर सपावक शरीर मिलि जात पुनि पावक हुरुष

होत कहत सुदेश है ॥ रूपपवमान होत कहत समीर पुनि परसमें
लीन सीतौ न भहि प्रवेश है ॥ नाक मुनि शब्द सो तो होत अहंकार पुनि
प्रकृति पुरुष हरि मंगल हमेश है ॥ १०१ ॥ सवैया ॥ केतिक पण्डित औ
कवि चातुर देव अदेव सुनीय सुजाना ॥ गाधत जाकरि कीरति रे मन
पावत पारन वेद धराना ॥ तीस कथा किमि जो नित कै धकवा दु कौरे
किचु पाये अमाना ॥ मंगल गूढ़ कहा कहिये करिये मन ही मन ताकर
ध्याना ॥ १०२ ॥ शेषमहेश चिरचिसुरे गहु जाहि भजै कछु भेदन पावैंग
देव अदेव, कवी शमुनी श क्षमाधर कोविद आनन गावै ॥ जाकर भेदन
भाषत संतन पीर गुरु कथि अंत वंतावै ॥ मंगल सो परमांत स अद्वय
धूर्त प्रत्यक्ष वदै औ लंखावै ॥ १०३ ॥ काकर क्यान ॥ कहै बुधितू अब ही
तुवरूप हिसों भन माना ॥ रूप नरेख अनोह अनाकृति श्वेत न पीत न
श्याम प्रमाना ॥ आविन मयन अंतन तत्त्वन मात पितो गुरु धुन
माना ॥ मंगल आपुहि आपु बिचारत जानत आपुन जानत आना ॥ १०४ ॥
एकहि पाद विछाय महीरवि बाल्य गूढ़ कुलीन रुनीचा ॥ तापरं
वैठिये न आवत जेवत खोवत ज्ञान विनीत नगीचा ॥ जो स मुझै मनमें
गुणधारि सो दूसर मानत ही मन हीचा ॥ मंगल तू मन आकर लौ जल
पान करै प्रथमै करि कीचा ॥ १०५ ॥ एक अक्षानि सुनी कबहू कहै
वेदन की हम जानत वानी ॥ आगम को नहि अक्षर जानत नीदत हैं
अयरूप अज्ञानी ॥ पाठक स्यो न श्लोक कबौ कहैं भापि पुराण
तुच्छ कहानी ॥ मंगल क्यों समुझै जड मूर्ख ॥ आपन ही मत मानत
माती ॥ १०६ ॥ सूर कही सब श्याम कथा तुलसी रघुनाथ क
गाध वरवाती ॥ दास कबीर बंधो सति रामहि नानक नाम भण्यो
रुनि माती ॥ दादो मलूक धना सदन अरु गोरेख धाणि भली
पाहि चानी ॥ मंगल मूढ़ कहैं इनते हम हैं अधिकै जो भण्यो निज बानी
॥ १०७ ॥ जे खल खोजत है धन को तन को रंगिके करवैत लगाये ॥
लोगन सो जगनाथ पुरी कर पंथ बताइव हैं भटकाये ॥ ज्ञान कथें
बदिवादे ब्रह्मो सुनिसाधु लखै जनु आनंद पाये ॥ मंगल ते ठगि जात
सही न कहै न कहै अपनी अनखाये ॥ १०८ ॥ वामन सो नित प्रेम

ब्रह्मावतवामनसौ अनवाय न वामी । दामगुलामे जो सेवकपेटके
 मांगत द्वारन वामन वामी ॥ रामे नही मा करी सन के भव धादि बि-
 वाद करै मति खामी । मंगल सूचुष कयो न गहै अस संग किये
 जगसैं बढतामी १०८ । शब्द अनाहद होत महीं जब सुदि सुनै
 वश्यहू तनद्वारा । वायुतिरोधत शब्द उठै यह ज्ञान अखंड प्रवीण
 विचारा ॥ जो स मुझो मन जानि परै तस जालरि अख मृदंग उचा-
 रै ॥ मंगल प्राण अपमि किये अलपयुन सै सुख सों करतारा ११०
 शून्य समाधि लगाय बिलोकत धूमिल धूमर रंग पसारा ॥ जो
 त्रिकुटी तट लौ चढ़ि जाय लखै सुत्रिवेणि कि पावन धारा ॥ अम-
 बदे ककु होत प्रकाश है भासत योग प्रचारत हारा । मंगल खोजत
 ब्रह्मतहां नहि आनख रूप जो आन प्रकारो १११ । द्विद्विफिरयो बहु
 तीरथ मूरति बूझि फिस्त्यो बहु पंथ अथार्थ । खोजि फिस्त्यो बहु शेष
 मया यख शोधि फिरयो कितनी गुरुवाई ॥ वाद विवाद अनेक कि-
 ये कहु लाजि गयो कहु आन लजाई । मंगल सांचु कहावत है यह कुं-
 छ पछारत जात उडाई ११२ । काहु कह्यो उठि प्रात हिंन्हाइ य पूजिय
 देव सुव्यान लगाई । काहु कह्यो कलिमाविन मोक्षन काहु बघो
 निखाण गुणों ॥ काहु भन्यो गुरु बिप्र प्रतारत काहु बखान स्वमंथ
 कथाई ॥ मंगल को नहि धोध भयो जस छे छ पछारत जात उडा-
 ई ११३ । योग वशिष्ठ पण्यो ककु सादर दास कबीर के मंथ मंगाई ।
 जीवत के ककु पंचक भाषि सुनी ककु सुन्दर की कबिताई ॥ वाद करै
 कवि प्रणित सो अरु नोदत है मुनि देव अथार्थ । मंगल सांचु कहा-
 वत है कुंन्हाडा मुख में न अजो के समाई ११४ । देवन को नित है परि-
 देवन सेवन की किमि वाता चलाई ॥ आतम भूत कुलाल सीमान है
 पालक विष्णु नटी कलाई ॥ शंकर को पिसंहास्त है एक ब्रह्म नही
 बहु ठाम दिवाई । मंगल सांचु कहावत है कुंन्हाडा मुख में न अजा
 के समाई ११५ । आपुन कर्म कियो न कवौ कहै कर्म कियो कहु होत
 न भाई । दास कबीर मलूक धना तुलसी गुरु नानक प्राणि सु-
 नाई ॥ यो शुक देव भन्यो गुरु गोख कर्म बशीजत मुक्ति न पाई ॥

मंगल पुढं प्रठान विजय वेहना निज भगन फूलितेमाई ॥ ११६ ॥
 श्रीगुरुनानके वासकवीरके आनहुं पंथमें लीन्ह मुडाई ॥ सानत
 हैं फिरि वेद पुराणने तीरथे औ व्रत देत उडाई ॥ वाद विवाह
 विशेष करै अरु भाषि कहै गुरुग्रंथ गुडाई । मंगल पै निज भेद
 न जानत खांड बंधावत ऊख पराई ॥ ११७ ॥ वेदकी अक्षर कान
 सुन्यो नहिं यादि कहै नृत्तिसार अक्षरा । आगमकी कहुं रूप
 न देख भनै झगडा बड आख विचारा ॥ यादि कहै हमा ब्रह्म
 ब्रह्मनिर्देत लखाये अखंड अपारा । मंगल आपन भेद न जानत
 भीति उठावत ईद न गारा ॥ ११८ ॥ उयो प्रवमान प्रसून के
 धागते आवत शुद्धसुगन्धि लखाई ॥ सोई समीर कुगन्धि निकेत
 ते बाहिरी होत कुवांस बमाई ॥ धोरकुजाइ सुगन्धि कुगन्धिनि
 शुद्ध स्वरूप सदा सुखदाई ॥ मंगल त्यों यह जीव अदोषित
 पापहु पुण्य असो नहि जाई ॥ ११९ ॥ लोचन हीन न अंध बिखा-
 निय नैनसमेत न देखनहारा । पगु नहीं पगहीन चलै नितपंगु
 यह पग नहि बिकारो ॥ गुड रहै रसना गुचि सोहर बोलत है
 नहि जीभ सहारा । मंगल है यह अद्भुत कारण जीवहिको करि
 देखु विचारा ॥ १२० ॥ दण्डचहुं दिगिते नहि रोवत रोवतहैं सुखके
 अपिकारा सोवतहू मह जागत देखिय जागत सोवत के अनु-
 सारा ॥ गावतहैं न बिवाहमें भीत अस्वार्थ ताल मृदंग पसारा ।
 मंगल है यह अद्भुत कारण जीवहिको करि देखु विचारा ॥ १२१ ॥ मूढ-
 न के सतसग बिहारत साधन संगतिते कहु न्यारा । ज्ञानिन स-
 नित संसकै कहु भ्रान लगोवत पार अपारा ॥ न्हात जम्हात
 स्वावतैं खांतेन पाठक पाठित शुद्धप्रचारा । मंगल है यह अद्भुत
 कारण जीवहिको करि देखु विचारा ॥ १२२ ॥ चेतन बस्तु सीही
 तनुमें विन चेतन चेतन दृष्टि न आवै । अंधहि दीप दिखावत
 सृजन खोजन को निजोहाथ बढ़ावै ॥ लोभ सबै हठिवाद बदै
 परमात्महै तनुमें न लावावै । मंगल मूलनि जातयहै ज्यहिरूप
 नही स्थहि देखनधावै ॥ १२३ ॥ औषड मप्रलिये एक डोलत अ-

मिष्टभोजि सुराकृतपाना । वातन मानत आननकी एकधाम
 कि सेवतही बधठाना ॥ एक तजे मविरा अरु आमिष दक्षिण
 भागलिये अभिमाना । मंगलहै रुद्रि आपनि आपनि जोपैकरै
 परमात्म व्याना १२४ काकर पापग्रसै कयहि कारण काकर
 पाप सुपुण्य प्रकासै । काकर पाप निवासत नरकन काकर पाप
 जो स्वर्गबिलासै ॥ काकर पाप भ्रमावत जन्मन काकर पापसु-
 मुक्तिप्रभासै । मंगल काकरपाप मिलावत ब्रह्म निरंजनमें अन-
 यासै १२५ यातनुमें एक चेतनहै ज्यहि शक्ति सबै तनु इन्द्रिय
 डोलै । चित्त अहंकृतहै मन बुद्धि न सूक्ष्म धूल न कारण खोलै ॥
 सोवत जागत जागत सोवत आपवखानकरै अनमोलै ॥ मंगल
 शक्ति अनंतवहै विन जानते पारस पाथरतोलै १२६ जाहिनहीं
 दुख औ सुख व्यापतनेह न नांत न पास न दूरी । जाग्रत स्वप्न
 सुषुप्ति तुरीयरहै एक भावन अल्पनभूरी ॥ जीवतहै न ग्रसै मृतु
 अंतक रूप अरूप रहातनुपूरी । मंगल सो यह जीव कहावत
 आदि अनादि कि जीवनमूरी १२७ कृति औ पाक कछूनहिं
 मानतनीच कुलीनबुधौ एकसारा । खात खयाइ ठठावत पेढहि
 रामभजै नहिं तत्त्व विचारा ॥ ऊपर हंतस्वरूप बनेसति भीतर
 कायस रूप अपारा । मंगल नावत वेपहिमाथ भलो रजतेकरि
 साँप पसारा १२८ श्रीगुरुकी कथनी तिज भावत बापकिगावत
 दाद्रे कि लावत । पंथकि आवत पंथसुनावत ज्ञानि कहावत
 बेद मिटावत ॥ कर्मनशावत धर्म भ्रमावत आन वतावत आन
 करावत । मंगल जो अपनी कहु पूछिये तो जमुहार्त वृथा मुख
 वावत १२९ ऊरध बाहुबने तनु पीडत पाँवबंधेनर झूलझुलावै ।
 भूतिवने अवधूति बने विन जूतिचूले प्रग कंटकधावै ॥ भूमि
 गड्डे तनु आगि जरेबिन अन्नमरे निज जीवसतावै । मंगल कर्म
 अस्वारथहै नहिं खोजनहारकें हाथन आवै १३० ब्रह्म कि वाणि-
 भरी सब वेद कलाम खुदाजो करान कहावै ॥ आगम वाणि-
 सुनीशनकी जुहदीस रसूलकि वाणिबतावै ॥ वाणि पुराणमहा

मुनि व्यास कि ब्रह्म निरूपण ज्ञान लेखावै । पुस्तक जैनसो
 पारसबाणि चहुदिशि मंगलबाणि जनावै ॥ १३१ ॥ जेतिक पंथ
 महीतलहै सबमे यकबाणि नेवीन भरीहै । एकबिलोकिद्वितीय
 घनावत सो उपमा समविषयरीहै ॥ १३२ ॥ यो यकराग अलापकियो
 सुनि आनहु तोसुकि कूक करीहै । मंगल बाणि विवाद चहुं
 दिशि ब्रह्मवखानित बाणिदरीहै ॥ १३३ ॥ बाणिकहै एक सर्गुणनि-
 गेण बाणिकहै एक ब्रह्म अमाया । बाणिबदे सबठाम कृपानिधि
 बाणिभने प्रभुहै यहि काया ॥ बाणिकथै यकसिर्जनहारहै बाणि
 कहै यक पालकपाया । मंगल बाणिगुणै यकहंतक आदिअनादि
 बतावत माया ॥ १३४ ॥ एक कि बाणि द्वितीय न जानेत एककि
 बाणि अनेक लैरै ॥ कूकुर भूकि उठोअम खाय सुनेत्यहि आ-
 नेहु भूकिपरै ॥ बालिमि बोलिअगालउठो सुनतेबहुतसंगही
 फिरै ॥ मंगल बाणि अजीते महाकछु नीककहौ तो बिमूढ
 जरै ॥ १३५ ॥ सूरज अस्त समय दिनहै किधौ रातिकहौ कवि
 पण्डित जानी । छाह औधूपके मध्यकहा किधौ धूपकि छाहवदौ
 गुणखानी ॥ ॥ पुछत मंगलसो बहुलोग बतावन मे अतिहोतगे-
 लानी । इंदुरजीवके मध्यतथा बडिसंधिपटो नहि जातघखानी
 ॥ १३६ ॥ चिन्ततचित्तगहै अहंकारगुणानिकरै मनबुद्धिदंडावै ॥ पाप
 अपापसैवहिजोवाहै कपोदुविधा अपनेमनआवै ॥ मोहनखायअ-
 घायसुभोजन सुंदरआपनपेटठठावै । मंगलभूलि बडीभवमेतजि
 साहिवसेवकराजबतावै ॥ १३७ ॥ चित्तकहाभवअशकहौ अहंकारकहा
 दुविधा तनुतापै । कौनअहै मनहैभ्रमणबुधिरूपकहा थिरतातनु
 आपै ॥ चित्तनहीं अहंकारनहीं मनबुद्धिनहीं यदिज्ञानप्रलापै । मंग-
 लहै यकतुविधिचारि विचारिहिये किनदोषनेडापै ॥ १३८ ॥ कारणदेह
 रहै जवतोगिनहीं तबज्ञान अज्ञानवखाना । इन्द्रिय ज्ञानन कर्मरहै
 मनबुद्धिनहीं गुचिब्रह्मसुखाना ॥ सूक्ष्मतत्त्व नदेखिपरै नहिमातु
 पितोगुरु नामहिजाना । मंगलसोकि अचेतकिचेतनब्रह्मकि जीव
 कहैबुधिमाना ॥ १३९ ॥ लिंगशरीर लियनवतत्त्व कहौ किमिसत्रहथूल

मिपु भोजि सुराकृतपाना । बीतन मानत आननकी यकबाम
 कि सेवतही बधठाना ॥ एक तजे मदिरा, अरु आमिप दक्षिण
 भागलिये अभिर्माना । मंगलहै रुद्रि आपनि आपनि जोपैकरै
 परमात्म व्याना १२४ काकर पापग्रसै कयहि, कारण काकर
 पाप सुपुण्य प्रकासै । काकर पाप निवासत नरकन, काकर पाप
 जो स्वर्गविलासै ॥ काकर पाप भ्रमावत जन्मन, काकर पापसु-
 मुक्तिप्रभासै । मंगल काकरपाप मिलावत ब्रह्म निरजनमे, अन-
 यासै १२५ यातनुमें यक चेतनहै ज्यहि शक्ति सबै तनु इन्द्रिय
 डोलै । चित्त अहंकृतहै मन बुद्धि न सूक्ष्म, धूल न कारण खोलै ॥
 सोवत जागत जागत सोवत आपवखानकरै अनमोलै । मंगल
 शक्ति अनंतवहै विन जानते पारस पाथरतोलै १२६ जाहिनहीं
 दुख औ सुख व्यापतनेह, न नात न पास न दूरी । जाग्रत, स्वप्न,
 सुषुप्ति तुरीयरहै एक भावन अल्पनमूरी ॥ जीवतहै न ग्रसै मृतु
 अंतक रूप, अरूपे स्थातनुपूरी । मंगल सो, यह जीव कहावत
 आदि अन्तादि, कि जीवनमूरी १२७ कूति औ पाक कछूनहि,
 मानतंनीच कुलीनदुवौ यकसारा । खात अयाड ठठावत, पेटहि
 रांमभजै नहिं तत्त्व विचारा ॥ ऊपर हंसस्वरूप बनेसति भीतर
 वायस रूप अपारा । मंगल नावत त्रेपहिमाथ भलो रजतेकरि
 सांप पसारा १२८ श्रीगुरुकी कथनी, तित्त भावत बापकिगावत,
 दाद्रे, कि लावत । पंथकि आवत, ग्रंथसुनावत ज्ञानि कहावत
 वेद मिटावत ॥ कर्मनशावत धर्म भ्रमावत आन, वतावत आन
 करावत । मंगल जो, अपनी कछु पूछिये, तौ जमुहार्त वृथा मुख
 वावत १२९ ऊरध बाहुबने तनु पीडत पांवबंधेनर झूलझुलावै ।
 भूतिबने अवधूति बने विन जूतिचले पग कंटकधावै ॥ भूमि
 गड्डे तनु आगि जरेबिन अन्नमरे निज जीवसतावै । मंगल कर्म
 अस्वारथहै नहिं स्वोर्जनहारके हाथन आवै १३० ब्रह्म कि बाणि
 भरी सब वेद कलाम खुदाजो । कुरान कहावै ॥ आगम, बाणि,
 सुनीयनकी जुहदीस रसूल कि बाणिवतावै ॥ बाणि पुराणमहा-

मुनि व्यास किं ब्रह्म निरूपणं ज्ञानं लब्धवै । पुस्तक जैनसो
 परसवाणि चहुदिशि मंगलवाणि जनावै ॥ ३१ ॥ जैतिक पंथ
 महीतलहै सबमें यकवाणि नवीन भरीहै । एकबिलोकिद्वितीय
 वनावंत सो उपमा । समचित्त श्रीहै ॥ ज्यों यकराग अलापकियों
 मुनि आनहु तासुकि कूक करीहै । मंगल वाणि विवाद चहुं
 दिशि ब्रह्मवखानित वाणिढरीहै ॥ ३२ ॥ वाणिकहै यक सर्गुणनि-
 गुणवाणिकहै यक ब्रह्म अमाया । वाणि वदे सबठाम कृपानिधि
 वाणिभनै प्रभुहै यहि कायो ॥ वाणिकथै यक सिर्जनहारहै वाणि
 कहै यक पालकपाया । मंगल वाणिगुणै यक हंतरु आदिअनादि
 बतावंत सायो ॥ ३३ ॥ एक कि वाणि द्वितीय न जानत एककि
 वाणि अनेक लरैजू । कूकुर भूकि उठोअम खाय सुनेत्यहि आ-
 नहु भूकिपरैजू ॥ वाजिमि बोलिअंगलिउठो सुनतेबहुतासंगही
 फिठरैजू । मंगल वाणि अजीत महाकु नौककहौ तौ बिसूढ़
 जरैजू ॥ ३४ ॥ सूरज अस्त समय दिनहै किधौ रातिकहौ कवि
 पण्डित जानो । छाह औधूपके मध्यकहा तिधौ धूपकि छाहबदौ
 गुणखानी ॥ ॥ पूछत मंगलसो बहुलोग बतावनं मे अतिहीतग-
 लानी । ईश्वरजीवके मध्यतथा बहिसंघिपछी नहि जातबखानी
 ॥ ३५ ॥ चिन्ततचित्तगहै अहंकारगुणानिकरै मनबुद्धिद्वंद्ववै । पाप
 अपापयसैयहिजीवहै क्यौदुविधा अपनेमनेआवै ॥ मोहनखाय स-
 घायसुभोजन नंदर आपनपेटठठावै । मंगलभूलि बडीभवमेंतजि
 साहिबसेवकरोजवतावै ॥ ३६ ॥ चित्तकहाभवआशकहौ अहंकारकहा
 दुविधा तनुतापै । कौनअहै मनहैभ्रमखाबुधिरूपकहा धिरतातनु
 आपै ॥ चित्ततहौ अहंकारनहौ मनबुद्धिनहौ यदिज्ञानप्रलापै । मंग-
 लहै यकतूविधिचारि विचारिहिये किनेदोपनदोपै ॥ ३७ ॥ कारणदेह
 रहै जवतोरिनहौ तबज्ञान अज्ञानबखाना । इन्द्रिय ज्ञानन कर्मरहै
 मनबुद्धिनहौ शुचिब्रह्मगयाना ॥ सूक्ष्मतस्त्व नदेखिपरै नहिमातु
 पित्तगुरु नामहिजाना । मंगलसोकि अचेतकिचेतनब्रह्मकि जीव
 कहैबुझिमाना ॥ ३८ ॥ लिंगगरीर लियेनवतस्त्व कहौ किमिसप्रहृष्ट

प्रसन्नाः । इन्द्रियकर्मज्ञानग्रहे दशबुद्धिहिरण्योमनपंचकप्रान्ताः ।
 कर्मप्रतापं विलासभयोलहि धूलशरीरभर्यो ज्ञमिमान्ता । मंगल
 कौनकहै मन्तकीगति सत्यअसत्य विवेकअयाजा ॥ १३६ धूलशरी-
 रयो ज्ञायतहै ज्यहिके कृतमान्तदेव अदेवा । लिंगविभेदजोस्वप्न
 कयाज्ञहै सत्यअसत्य लखेबहुभेदा ॥ कारणरूपसुपुति विचारिय
 सत्यअसत्य दुवौ तितितेवा । मंगलकरणके परकीगति सोइतुरी-
 यविलेखण एवा ॥ १४० बालकतामै । सतीगुणव्यापत शुद्धअशुद्ध
 ककूनहिजामै । प्रौढअये तरुणार्द्रगहे उरव्यापतमोगुण कोप्रसक्त
 वै ॥ वृद्धवैही क्रमहोतरजोगुण ज्ञानअज्ञान दुवौ भ्रमतामै । मंगल
 अतप्रदोषसिले, यहजीवा प्रबुद्धहै परधामै ॥ १४१ जोअजन्ता कि-
 मिजन्तमधरै अरुजोअनयोनि सोयोनिनधावै । जोविभुतो किमि
 होतअज्जा, अरुजौनु अनीहसोदेहन आवै ॥ अद्भुतशक्ति भयैकविष-
 णिदुत ताकरकीरक्ति कथोक रिगावै । मंगल शोचिरहौ मनहैमन
 नासप्रभावि वाणिवतावै ॥ १४२ कवित्त ॥ आशावश तीरथकिरत
 विशिञ्जोरिहु मै आशावशकरतसुव्रतमनमूढ़है । आशावशकीउपात
 आशावश तीरन्हान आशावश देतदानदूढ़तअदूढ़है ॥ आशावश
 ठाढ़रहै आशावश वेहदहै आशावश बालकबिलोकै ज्वानबूढ़है ।
 आशावशमंगलकवित्तकन्हदोहाकहै आशापरे जीपपावै बडोजान
 गूढ़है ॥ १४३ आशावश पाठजाप आशावश ज्ञानव्यान आशावशवि-
 पुल करतरणधावै । आशावशमोहजोह आशावशकामकोह आशा
 वशसामसाम रटतस्वभावैहै ॥ आशावशनातगोत आशावशवामहोत
 आशावशदेवजन्त कीरतिसुगावैहै । आशावशमंगलबुचितोनित
 भूमितल आशापरे जीवबडो गूढ़ज्ञानपावैहै ॥ १४४ आशावश विक-
 लनरकवाल पावैआप आशावशसुरपुरलहत निवासहै । आशावश
 उपजि मरत बारबारदेखु आशावश मोविजात प्रसुपदपासहै ॥
 आशावश पोपलागै आशावशपुण्यजागै आशावशसम्पदाको अधि-
 कविलासहै । आशावशमंगलमुजानता दिखावैनिज आशापरेगूढ़
 गतिज्ञानको विभासहै ॥ १४५ आशावश भूतनकोदेत बलिभागदेखु

आशावशदेवलमें देवपूजैथाइहै ॥ आशावशकविगुण आदरविचारै
 चित्त आशावश कुबचबदन भ्रमपाइहै ॥ आशावश योगदान होम
 सप्रसादिकृत आशावश ऊरुधूपवन ठहराइहै । मंगलनिशेधहोत
 पूजै मनकामनान भटकरति आशावश दुविधाकोभाइहै १२६ अट-
 वीनिजनिजोविलोकैराम सत्यभाव तौतौकेतेबनवाति, बनहीमें
 वासैहै । जोपैजलआयीभगवान भेटैसत्यताततौतौ जलमानुषको
 जलमेंझिलासैहै ॥ जोपै निरवास्तना मिलतप्रभु धायआय, तौतौ
 बालकोदिननगनचनत्रासैहै । मंगल, बिबेकीसाधु मुनिजनज्ञान-
 वाततिहैन स्वहाइदम्भप्रकटनिरासैहै ॥ १२७ उचैया ॥ वन्दनभाल
 बिषे, यकमन्दन एकत्रिपुहुं घड़ावत, माटी ॥ कप्रठवंधी, बहुमाल
 सुकाठिकि गोखरबी, तुलसी तरुकाटी ॥ रगिभुजाउरहंरितुलोच-
 नकोउरहैलपसी मुखचाटी । मंगलज्ञान उदोत, भये यह दम्भ
 लखाय, महा खटपाटी १२८ पावक-पूजत, ईश्वर जाति कोई
 कृतसागर, पूजतथाई । पूजत भूमि समीर, महीधर-सूरज
 श्रीविज्ञानि भलाई ॥ सूरति ताबुतसाहिब, मानत पूजन-में
 कति होत, सुदाई ॥ मंगल ज्ञान उदोतभये उर, आमिकहै यह
 दम्भलखि, १२९ जानि सकै हरिकी गतिती भ्रमजाने, बिना
 ते सहाजैभलागै । गाय कहै जु, अकथ बड़ों भ्रमगाये, बिनाउर
 प्रेम जजागै ॥ उचैति, निरजन नैन लखैभ्रम, देखे बिनाकत
 तरस पागै । मंगल तू इतही उतही भ्रमहै, इतही उतहीकिन
 खगै १३० देखत, नैनज आपन रूप अनेक, द्वितीय स्वरूपनि,
 हरै । कान सुनैनिज नाकुनहीं जगबाद, सुनैउर प्रेम प्रचारै ॥
 आपनि, गंधि न सुंघत घ्राण अनेकन गंधिकुगंधि विचारै । मंगल
 ज्योतु बिलोखैत नीरचहै पृत, आपुनआपु उचारै १३१ आदि
 कहोघो जनादि, कहा अरु सप्यकहा पुनिअत, कहाहैन जोपै अ-
 नादि कहो परमात्म, तौ फिर कौन प्रकाशिरहाहै ॥ जोअनु-
 मातकहाँ तो बडाभ्रम, आन प्रत्यक्षन रूप सदाहै । मंगल कसो
 निरधार लहै भ्रमज्ञान, गुरु मुक्ताज लहाहै १३२ वेदवदं वग

वेद धर्मे सध आगम और पुराण बतावैं । सन्तवर्दे जुमहंत व
 मुनिराज धर्मे कविपण्डित गावैं ॥ धृत वर्दे अवधूत बहैं बुधदे
 धर्मे अनुमोनि लखावैं । मंगल क्रूरवर्दे धिपरीतहि पूरपरै नम
 पछितवैं १५३ ॥ कवित्त ॥ कहत ज्वूरहै किताबें भगवान्
 किंलई केदाऊद सब लोगन सुनाई है । अपर भणत तौरैत भ
 वान् भापी लोई लाइ मूता कैती कीन्ही चतुराई है ॥ इसी
 ईजीलसुनी कहत महम्मद कि वडी क्रूरकान जो खुदाई
 बनाई है । मंगल किताब चारि एकही को हाल कहैं एकमत नहि
 बाते वडी भ्रमताई है १५४ ज्ञानसमुझावै कोई वेदन कि गा
 भापि आगम पुराण आदिसकल दृढ़ाई कै । चातुरी बतावैं बि
 योनिकी अनेक भाति आतुरी लखावैं रणकाज भलिभाई कै
 राजकाज वातनमें भेदभाव भाषिकहैं यवनादि विज्ञता सुना
 मोद पाई कै ॥ मंगल सुजान होत दुविधा लखात चित्त सुमति
 बिहीन मूढ़ रहत चुपाई कै १५५ कोऊ कहै मक्के औ मदीने
 निजाते होत कोऊ कहै काशी किधौ गयामें निजात है ॥ कोऊ का
 रोज औ नमोज बिन पारकही कोऊ कहै पूजापाठ सुमति दृढ़ा
 त है ॥ कोऊ कहै दाढी मेरी नूर है खुदाई पार कीऊ कहै धिखा
 कीधौ धरम बिभात है । मंगल कहत कोऊ सुन्नति ईमानदार
 कहत जनेऊ कोऊ भ्रमही कि वात है १५६ कोऊ पद ओट करि
 भोजन बनाई खात कोऊ खाइ अवत चौकहीमें तात है ॥ कोऊ
 तनु भूतिलाइ धसन बिहीन डोले कोऊ माला तिलक रंगत
 निजगात है ॥ कोऊ मारि पक्षी पशु कहत विहिश्त जात कोऊ
 घडो जैनी मांस मदिरा न खात है । हिन्दू औ मुसलमान आप
 आप पाकिजाने मंगल कहत सब भ्रमही कि वात है १५७ वेद
 वेद अंग इतिहास के बिबाद सुनै गुनै चित्त आपने कथान के
 बिधानको । सारासार बुझि मन बोधै बहुभाति नित्य सत्य ज्ञान
 आसवास रहत सुजानको ॥ वेदको बनायो औ चलायो कासुहार
 तात चलत को ताकी चाल मानत प्रमान को । मंगल महाने

मूठ कौनी भाति दूरि होइ गुरू सत्यवादी कौन शिष्य ज्ञान
मानको १५८ परम प्रधान वेद गावत कितेव जाहि कहैं थिर
ताज सब लोगन में एकहै । रविसित भानु जहां करत प्रकाश
नाहो रोशन सों आपकीधौ सूरज अनेक है ॥ अज शिव आदि
काल होत ज्ञाके क्षणहि मे ऐसा करतार सदा अनव्यतिरेक है ।
सीक ओट मंगल पहाड जैसे भापियत तैसे जीव पारब्रह्म वि-
बुध विवेकहै १५९ सात सुरवास सात नागलोक आदि धाम
काल अथ सकल नशात अति साखीहै । नभपदमान शिखि
नीर भूमि लोप होत माया अलगाय कीधौ कौनेधल गखी
है ॥ जीवन के पाप कृत दंड दानि कहां रहे ज्ञानिन के ज्ञान
जानै कौनी गली नाखी है । मंगलप्रदेव गुणतीनि एक
भावहोवै दुविधा दुराथाको विवेक अभिलाखी है १६० पुनि
उपजावै चारिखानि जीव देवासुर जहां तहा वासदेत ऊंचनीच
धामहै । काने पापकीन्हो काने सुकृत कमायो तवजाके फल
भोगराग योग अथ काम है ॥ अनुर वराक द्विज श्वपचकहायो
काहे करमप्रताप जोपै जाना अभिराम है । मेरे मन मंगल न
भूलैतू विवेक पाय कीधौ नाथिजात होत काकीधौ विराम
है १६१ तारागण द्वीपकहैं नभके प्रवीणकोऊ कोऊक है लोकत
को होवत प्रकासहै । कोऊरुहै अवल चलायमान सूरचाँद कोऊ
वदैदेवता प्रतापी तेजभासहै ॥ जाहिचपदेखै ताकी बातनाही लेखै
फिरि कैसे अवरेखै हरिअतनु अवासहै । मंगल विवेकसो विचारि
देखु आपुमांझ इतउत्त चारिओर मायाको विलासहै १६२ मात
पितुसोदर कलत्र सूरमोहरूप डारत समुद्र विषयान नेहनातेहै ।
आगे त्यागिजातकोऊ पाछेको विचारचित्त सकल समाज हितका-
रीनदिखातेहैं ॥ कायाआप प्यारीजाहि पालत सुभोजभोजि सं-
गतासुखतकाल कौनजीवपातेहैं । मंगल समस्त झूठ कारोबार
तीजलोक आपसाथ नेहलोरु नातेसबजातेहैं १६३ यरेमनसूढ़
तोहि अधिक डरातिरही जानिके प्रधानदेह ग्रामको सदाहीहै ।

सौतौ भाव तेरे नेक पायो न परीक्षा काल चेष्ट की चटोरनी च जानो
 सबेसाही हौ ॥ अवन भूमावैवात अलिङ्ग अल्लभापि ॥ शर्कमोनु
 मेरी भूप ॥ तेरो दामि नाही हौ ॥ नातो पछिता धमन मंगल ॥ अंधार
 भीति जवै शुद्ध भाव कहौ ॥ ज्यामाश्याम पाही हौ ॥ १६४ ॥ मनु जे धीरी-
 र गीन्ही ॥ सुख भोग हेतु नाथ सकल विभूति तांके लगै पंजाई है ॥
 जगदुखरूपी सब भांतिन विचारि विचि परम सुजान प्रभु कीन्ही मि
 पुंछाई है ॥ भोग भाग योग याग लोगन के ॥ योग लाग भूली मूल या
 त दूत प्रेणा प्रभाई है ॥ मंगल सजान जन मायामद ज्ञान हीन
 ईत उन कार्या मन धाया दुहुं चाई है ॥ १६५ ॥ सर्वैया ॥ शैबिक है शिव
 बोध कहै बुध जैनिक है प्रभु पारसनाथ ॥ विष्णु कहै कोठ शक्ति
 धरै ॥ गणनाथ पुरातन भापत गाथै ॥ ईसा कहै कोठ मूलाने कोठ
 फौहर सूल मुहम्मद साथै ॥ मंगल सांचु नै जैन गावत खोजन
 हार के लागन हाथै ॥ १६६ ॥ तीरथ नहान करै बत संघ मे दान अनेक
 न दै जो अनाथै ॥ औघड ध्यान पिषोम दिरा ॥ गुचि दूरि करै रुचि पाथ
 अनाथै ॥ सूरति पूजि बजावत घंटन दीप दिखाय संनो वत गाथै ॥
 मंगल कर्म अस्वारथ है नहिं खोजन हार के लागन हाथै ॥ १६७ ॥
 ठाढ़ रहै तनु दण्ड सहै मुख मौन रहै पगुली बनि जावै ॥ दुध पिचै
 तजि अन्न भस्वि ॥ तू धूम धुटे जैल वाल लु भावै ॥ नग्न रहै बहु जान
 कयै नित ध्यान धरै न सुनै न सुनावै ॥ मंगल कर्म अस्वारथ है नहिं
 खोजन हार के हार्थन आवै ॥ १६८ ॥ कीजिय बेगिदया जमयै हरि
 ये दुख रोग सबै यदुनायक ॥ औघड मूल प्रताप तुम्हार धनवत्तिरि
 रूप धरै शिष्यायक ॥ शूल मूल नशायै कृपा निधि ॥ रोखिय दार
 कहौ तब लायक ॥ मंगल टेक तुम्हारि गहै नित आन के द्वार सुहात
 न पायक ॥ १६९ ॥ शूरग भस्ति नशावत नीरन जो वृषकी तपता
 तन तापै ॥ लील प्रकाश बुझाय समीरन ॥ जो प्रकटीवत झंझ प्रता-
 पै ॥ कोदर युद्ध हरो वत वीरन जो बहु संगर के गुण थापै ॥ मंगल
 धर्म मिटीवत धीरन जो वृष युद्ध प्रसिद्ध प्रदायै ॥ १७० ॥ दारिद्री-
 न्वत है धनवान की जानतये ॥ अदया जग माही ॥ दीन न को धनवान

कहैं लघुतुच्छ कुचर्ण सदा भ्रम नाही ॥ एक भुलान महामद
लोभमें दूसरेके दिन धावत जाही । मंगल सोइ वडो दुहुंभांतिन
जासुहिये हरिभक्ति लखाहो १७१ ॥ वडक ॥ मनवब बनिहो
भोग चाहत न चित्त नेक कटुरस अस कि नाही पहिचानहै ।
भोगन किवात सुनि जिय अकुलात तात धाता सुरप्राता स्वाद
काग घीटमानहै ॥ शीतकाल ग्रीष्म समान भाव धारे रहै अ-
मित उदास रूप हरिरस सानहै । मंगल सुजान वदै सोई भूमि
भागवान सुरुचि विराग जाके ऐमो ज्ञान गानहै १७२ विपयी
समाज विपरूपी जानि भागै दूरि हाटकादि सम्पति विचारै मोह
यानीहै । नारी जग अखिल समान मातुजाके चित्त अरिता हिता-
ई दुरि ओई द्रोह सानीहै ॥ देखत तमाये सो धरातल अमोह
रूप हंसत ठठाइ कहूं रोयत अमानीहै । मंगल विरागी सोई
वेदभाव भाषियत रहत उदासी ज्ञान धाम अनुमानीहै १७३
वासना न व्यापै जाके जीव काहूभांति और कामना सतावै ना-
हि काजनमें जाहीहै । बसन बिहीन जैसे बासित जहानतैसे
सेज अनसेज मोवै शोकताप दाहीहै ॥ दीन हितकारी धनवान
कोन नेह चित्त जोईभाव मानै ताकी सुमति सराहीहै । मंगल
महीप कौनु दीन भूमिहीन राववाके एकभाव रागत्यागी त्रि-
विधाहीहै १७४ काम्बवाल दाहतन शुद्धचित्त शीतलको क्रोध
नाग काटत न बेकामन जाकीहै । मदकी मदई तट जात न
सजान जानि लोभतिन्धु बोहित विचारो ज्ञान बाकीहै ॥ मोह
तम बुद्धिमणि रूपी देखि नाथिजात माया दाया हेरि जासु द्वार-
हून झाकोहै । मंगल विरागी ऐसी विदित त्रिलोक सत्य गावत
प्रमाणसाधुवेदजाकोशाकोहै १७५ गुफाको निवासी वनवासी कहै
पर्यकुटी नातो नेह सांचो जाके नामको आधारहै । काहूसों न नेह
वैर जात काहूद्वार नाहिं रांति दिन भास किंवाँ एकही प्रकारहै ॥
देवता सिहात रागहीन देहधारि देखि यम अकुलात वाकेनाम
की पुकारहै । मंगल विरागरूप गावत सुजान ऐसी नातो वृम्भ

माया मोह प्रेरणकार है १७६ ॥ रावेया ॥ वा प्रभु के कछु जाति, न
 पांति न आश्रम धर्म विचार न कोई । देव अवेव न मानुष नाग
 विहाय सौ पशु कीट न सोई ॥ पांचहुत त्व परे गुण तीनि ते
 चौदह लोके निवास करीई ॥ मंगल बुद्धि ब्रितर्कने ते परमो परमा-
 तम वेद बंदोई १७७ ॥ जीवन मे निता आपु विराजत, जीवो सबै तन
 तालु समीही ॥ आपतयो मुनि प्रखंडत आगम है ॥ अत कायः अ-
 लिप्तु संदाही ॥ हरिमहा, सब ते अति पासहि है ॥ प्रतिठामन औ
 मुक्ति नोही ॥ मंगल के दुविधा सुनि लागत द्वैत अद्वैत ॥ दुवौ एक-
 ठाही १७८ ॥ बारारसे निशि देखि परै नहि ॥ जौ रजनी सेह दोस
 न भाई ॥ आगम एक निरागम दूसर, वर्ण अवर्ण अकथ्य, कथा-
 र्थ ॥ चेतन औ जड़ एक स्वरूप न है ॥ धिर अस्थिर की निपुणोई ॥
 मंगल के न संदेह रहा ॥ गहि एक द्वितीय कथा वितराई १७९ ॥ जो
 गुणवानि तो है कवि कोविद, जो गुणहीन तो मूढ़ महाना ॥ औ-
 तनहीन तो शून्य बताइय जो ॥ तत धारि तो धूल समाना ॥ जो
 विधि और निषेध बतावत तो वपु ॥ सत्य धरे अस ज्ञाता ॥ मंगल
 देखु बिचारि रावै विधि सत्य असत्य ॥ न जाति बखाना १८०
 छन्द ॥ सात द्वीप नवखण्ड धरातल भयो जित बहु कार्या है ॥
 सात मताल जीव बहुवासी, अस्मृति वेद लखाया है ॥ सातहु स्वर्ग
 वसत सब जीवहि आगम, ज्ञानिन गाया है ॥ मंगल पांचुत तबहु
 जीवहि जीव बिना भ्रम माया है १८१ ॥ वाण और निरवाण बख-
 नै राम धाम बरखाया है ॥ उत्तम पुरुष प्रकृतिकृत, तिहुं पुर प्रकट
 जीव पद पाया है ॥ जीव विहाय, मृतक जडरूपी को श्री काहि बना-
 या है ॥ मंगल जीव अमर, अविनाशी जल अल आपु समाया
 है १८२ ॥ जीव ईशयुत ब्रह्म बखानै ॥ साम वेद श्रुति बानी है ॥
 आनहु वेद भणै यह जीवहि पूरण पुरुष अमानि है ॥ जो कीइ
 जीव भाव को जानै सो परिपूर्ण जानी है ॥ मंगल जिन आत्म-
 निज खोज्यो माया, तिमहि डेराती है १८३ ॥ दाता मुक्ति वसत
 को कायल मुक्ति देत पुनि काको है ॥ फूटो पणव स्वरूप बंधन

जीवअलख जग थाकोहै ॥ दुखीसुखी नहि अध धाधिरो चले न
 अचला थाकोहै । मंगलस्वयंसिद्धि नित आतम वंदनमोक्ष न वा
 कोहै ॥ ८४ ॥ जितै देखिये तितभरि पूरो कोई दिशा न खालीहै ॥
 लीलाआपुलखैपा आपुहि कतहुँ पुरूप कहुँ आलीहै ॥ जडचैतन्य
 भाव भवभारी मालाको कृत मालीहै । मंगल मालधारिहूमाली
 कर्ताकर्मगर्वोलीहै ॥ ८५ ॥ सवैया ॥ सम्पतिके हित दम्भ दि
 खावत सम्पतिके हित जीवसतावै । सम्पतिकारण वेपवनावत
 सम्पति कारण देह जगवै ॥ सम्पति कारण सेवक साहिव स
 म्पति कारण मौन लखावै । मंगल सम्पतिके बगडोलत बोलत
 शब्द मजोहर भावै ॥ ८६ ॥ आपनही मगशुद्ध प्रचारत आपनही
 मगवक्र सिधारै । आपनही उपदेश बतावत आपनही उपदेश
 धिचरै ॥ आपनही अवि आतम ध्यावत आपनही मतिहीन
 पुकारै । मंगल आपनही बडज्ञानन आपतो दूसर कौनप्रसारै
 ॥ ८७ ॥ आपन जानत ब्रह्मवखानत आगमबेद पुराण विचारी ॥
 भूलबडी भवजाल भ्रमै नित दम्भकि प्रदति दीन्हप्रचारी ॥ सत्य
 अस्तित्व नमानत तूमन अग्रन आव न जातपछारी । मंगलशुद्ध
 स्वरूपन ध्यावत वयनमुक्त कि वाणि निधारी ॥ ८८ ॥ बंधनहै सुख
 इन्द्रिनको भवमोक्षहै नीररा शोकुल जोई । भावस्वभाव प्रभाव
 नजानत सेवत देवन स्वारयहोई ॥ जो दुविधा अपनी धिभरी
 त्यहि त्यागत जीव कृतार्थ कोई । मंगल ब्रह्मविचारन भाषि
 य भापत दूसर रूप कथोई ॥ ८९ ॥ जो प्रभु ज्योतिस्वरूप अरे
 मन तौ नहि तत्त्वशिखीकरि मानिय । शक्तिअनंत न जानिसकै
 बुधि ज्ञान त्रिवेक विद्यान प्रमानिय ॥ संतकहैं प्रभु दृष्टिआवत
 सूदनके लग रक्षकगानिय । मंगल भूलमिटै न विनागुरु कोटिक
 यथ सुनोजो बखानिय ॥ ९० ॥ देहधरे मनुजाव विषय रस देह
 धरे मनमोह दुरावै । देहधरे दुविधा वश आत्मिक देहधरे शुचि
 आतम पावै ॥ देहधरे खलरूप कहानत देहधरे मुनि पदतिभावै ।
 मंगल देहविना सिगरोधम धवन मोक्ष न मोमन आवै ॥ ९१ ॥

सार असार विचारन आवत त्यागत देह किधौ अनुमानी । जानत कोउन मानतहै मन यातन हीन दुबुद्धि सुजानी ॥ काल कलेवर लोक दृढावत हीन शरीर न जानतप्रानी । मंगलजीवन धन्य धरातल बंधन मुक्ति बतावत घानी ॥ १६२ ॥ आपन बोध भयो न अरेमन औरन कोकसंज्ञान सिखावै । गाठरिया तककी उर मंदिग बाहिर उज्ज्वलवस्त्र दिखावै ॥ ज्ञान विवेक के रंग रंगोनहि कातन में रज चन्दनलावै । मंगल सत्यवदै न सुनैमन ऐसे नहीं अपनो पद पावै ॥ १६३ ॥ आयुधटै प्रतिश्वासन शोचत मोहसंधी मतवारु लगीहै । कोटिन मारग या भव में मनक्यों तिनको मत तू अवगाहै ॥ अन्धकि दीपक राशि विलोकत नैन न बारहिये उमगाहै । मंगल त्योभव आत्म ज्ञानहै जानतसंत असंत खगाहै ॥ १६४ ॥ पूरवके कृतवद सभोगे बतावतहैं सबलोग सुजाना । ब्रह्म प्रभाकिधौ ब्रह्म विभागको जन्मसमै कृतनाहि बखाना ॥ जो प्रभु चाहत सोकृत जीवहि लागत है ग्रह अद्भुत ज्ञाना । मंगल पूरव पश्चिम को तजि कीजिय ध्यानसदा भगवाना ॥ १६५ ॥ राम कथा सुनि नींद सतावत बामकथा श्रुतिदेत अभागा । पारसको तजि पाथरमानि गहेकर कांच सचिक्कन लगा ॥ ज्ञानिन के ढिग भूल बतावत है व्यसनी संगजी अनुरागा । मंगलजाति कुजाति सुमानिय ऊपरहस जो अंतरकागा ॥ १६६ ॥ मान महाधन रूप गुमान सुबर्ण महामद जीव समानो । पौरुष मोह जो आत्मगर्व स्वपथको पक्ष अहकृतभानो ॥ फूलो किरै खल लोभव बीधिन ज्ञानिनके तट जात लजानो ॥ मंगल राम न ध्यावत जोनर सोइ महाजड़ जी अनुमानो ॥ १६७ ॥ झूलेना ॥ क्षर रूपको बिस्तारहै सो पुरुषप्रकृति विचार है नव तत्त्वको पुनि सारहै जानैजो संजजन काय है । माया जो अगम अपारहै बहुभाति त्रिपुर विहारहै करनी करम करतारहै सोई जो पूरण भाय है ॥ द्रव्य तीनि सुर अधिकारहै नर नाग पशुनभ चारहै कृमि अमित रूप विकारहै भवसकल तनसोनेगाय है ।

मंगल वस्त्रान्त सारं है अक्षर सबन के धार है सो आतमा नरि-
 धार है एकभाव जोन द्विभाव है १६८ जो ज्ञान अक्षर भाव
 को रसना विना गुण गाय सो आतम प्रकट वरशाय जो
 दृढ़ सुमति के आधीन है । भूलै न माया जालसो देखैसवी
 जग ख्याल सो करि योग विधिकहु काल सो निज आतमा मे
 लीन है ॥ सबकोन यह उपदेशिये उरज्ञानदीपक लेसिये चीन्हिय
 विदेशी देखिये तपजाप रत कि मलीन है । मंगल चुपकि घर
 बैठिये शुचिज्ञान मंदिर पैठिये मति शुद्धिनुनहिं होत यह कृत
 परमहंस प्रधीन है १६९ ॥ सवैया ॥ श्रीमुनि व्यास पुराण किये
 सबे द्वापरमें कबिकोविदगावै । सत्ययुगादिकमें न पुराण कथा
 इतिहास मनुष्य बतावै ॥ तौ द्विजराज पुराण बिना मृतकर्म
 कहौ किमि लोग करावै । मंगल अद्भुत दंतकथा नहिं बूझनहार
 के घैनन भावै २०० देखिय दृष्टि पसारि दशौ दिशि नश्वरही
 सबु देत दिखाई । जो अविनाश स्वरूप न ताकर है नवमें गति
 शब्द सुनाई ॥ मौन रहौ सब और कहौ जनिठौर न ठौरबडी
 प्रभुताई । मंगल आपन आपुन जानत खोजत ईश्वर है अधमाई
 २०१ ब्रह्मविहाय न देखिय कारण कारण रूप विचारिय माया ।
 माया बिहीन न ब्रह्म विचारक जानत ज्ञानधनी शुचिकाया ॥
 दोउन में नहि अन्तर भापत कोबिद ज्यों तरु औ तरुछाया ।
 मंगल बूझिपरै न बिना गुरु सोउ मिलै न दुराय दुराया २०२
 केतिक कल्पगये भवभ्रामिक आपन धाम न पाव सुखासन ।
 योनि कुयोनि सुयोनि फिस्थो अवऊरधकी पकरेमन आसन ॥
 जानि न जात गली निज धाम कि सत्य अमत्य कि धारि दुरा-
 सन । मंगल राम कथा कहु जानत मानतहैं नहि पूरण धासन
 २०३ पाखंडको तन बेर धनावत बातन में निजबोध फरावै ।
 आपनि बुद्धिभस्थो न कबौ गुरु आमनको नितसीख सिखावै ॥
 मोह मुयी मति है अपनी बहु लोगनको निरस्मोह जनावै । म-
 गल ढोल समान कहौ तेहि शब्द बडो उर खोखलखावै २०४

जाकहँ नेकहुज्ञानप्रबोधहै सो न मिलै हितसों हितकारी । दैत
 कि बुद्धि लगी, मनमूरुख को निरबाण बिलास बिचारी ॥ सं
 भ्रम बोध दुबो दरमो अपने चित कीन कहै विधिचोरी । मंगल
 चोरन साधुबखानिय जो नहि जीवनलेत उबारी ॥ २०५ ॥ राम
 नही तब रामजपै सबहै प्रहलाद कथा परमाना ॥ जानियराम
 अनादि कृपानिधि वेदपुराण विवेक बखाना ॥ राममुये तितराम
 रहे सग लोगनके शुचि आवत ध्याना । मंगल बूझबडी लघुता
 हिन आगिल पाछिल होत समाना ॥ २०६ ॥ विष्णु सतगुण रूप
 बखानत होय त्रिविक्रम सज नयायो । नाहिं सतगुण में छल
 चाहिय नारदको कपिरूप बनायो ॥ वासं जलधरको बतवालि
 बधो सुर भानु सुधा जब पायो । मंगल का कहिये रविये रूप
 सत्य असत्य न जात गनायो ॥ २०७ ॥ शंकर रूप तसोगुण गावत
 योग समाधि बसै बहुकाला ॥ जानत ज्ञानसुधी समता अरु
 वेषविवेक धरे गतजाला ॥ देत अभिप्रियदान सबै भवदान
 दया विनुको प्रतिपाला ॥ मंगल भौनरहौ दुविधा यहस
 त्यक्ततामस में कृतख्याला ॥ २०८ ॥ जो पुरुषोत्तम सो जनु
 भानु है घाम समान गुणो त्यहि माया ॥ घाम बिपेरबि देखि
 परै विनु घाम त पूषण को लखिपाया ॥ सूरज हीन ते घाम
 बिलोकिय जो धन मयतौ दोउ छपाया ॥ मंगल सो भ्रममोह
 कहौ ज्यहिजीव सदृष्टि निरक्ष बनाया ॥ २०९ ॥ ज्यो जलमें चिक
 नाहट देखिय कोटि मये नहि आवत हाथै । त्यो यहजीव वि
 हाय अरीरन नैत बिलोकिय ज्ञान कि गाथै ॥ ब्रह्म अपूरबस्तु
 न भापियमानिय सांच न झूठ न साथै ॥ मंगल तू किमि मूढ़बडो
 क्यहिनाथ बखानत जानि अनाथै ॥ २१० ॥ ज्ञान कहै तबमे हरि
 सापत ज्ञान कहै सबही विधिद्वारा ॥ शून्य रामानंद ई उपमा
 अवबोध आयो कि अवबोध चित्तारा ॥ तौकि अहै जड चेतना
 हिना ह्यांजड ते तन चेतन धारा ॥ मंगल ज्ञान गुणे उरमें भ्रम
 ज्ञान विहीनमहा अधिधारा ॥ २११ ॥ कवित ना सुखमान बैचन

वतावै हिन्दू कहै अनुपा है । दोनों के खोजते भारी किया किसी
 न निरूपी है ॥ चित्र विचित्र कहै मूर्तानु मध्य में कांहे कि भूपा
 है । संगल है कहने की नाही रूप बिना बहुरूपा है २१२ घट
 कबीर कमल में संपुट सत्य पुरुष अनमाया है । सो विज्ञान रूप धौं
 तत्पद चतुरमहामति गांया है ॥ सत्य लोक में शुद्ध सती गुण अति
 पद सीत कहाया है । जहँ लगु रूप होय नहि अति पद मंगल रूप
 न आया है २१३ सत्य हि थल वसत हंस बहु तेरे दरगि परशि सुख
 पाते हैं । अमृत भयै पुरुष अरु नारी उर अनुराग दृढ़ाते हैं ॥ सत्य
 नाम याद क तहँ सो है पाप रूप नहि जाते हैं । मंगल तीन होय
 बहु अति पद पक्षापक्ष लखाते हैं २१४ हंस हसिनी द्विविधि बं-
 तावै निज निज मुख आनन्दे हैं । भिन्न भिन्न रह सकल विलासी
 पुरुष अरु नित बन्दे हैं ॥ क्षुधा विषय अमृत आहारी माया मोह
 निरुद्धे हैं । मंगल अमृत वपुष जीवन को क्यों कर कहत स्वच्छन्दे
 हैं २१५ कहत कबीर पाय अनुमासज हम जग जीव बिताते हैं ।
 मलटि जाय भव कथा मनोहर तहँ सुरुचित सुजाते हैं ॥ त्रिवि-
 नि पद को दाता ठहरा राख सागर सब माते हैं । मंगल तत्पद ही
 यह कहिये अति पद कहा लखाते हैं २१६ जहँ लगि सुख दुख
 रूप अनूपा ज्ञान विवेक बंतावै जू । लोक अलोक हंसा औ हंसि-
 नि अमृत त्रिपद राखै जू ॥ तहँ लगु माया मोह ध्यानिय क्यों
 अपन मन भावै जू । मंगल समुझि धृष्टि गहु सांती द्विविधा व्याज
 न आवै जू २१७ सत्य असत्य लोक कोउ कहिये दुविधा अम
 विज्ञानी है । सत्य लोक में वसत हंस सब काग असत्य प्रमानी
 है ॥ जीवहि खात कोल यमरूपी जो पुरुषोत्तम जानी है । मंगल
 महा दुचित की कथनी अपनी अपनी मानी है २१८ शब्द
 मृदग बांधि यमराजा नुरत नरक में डारा है । रोगीत शब्द निक
 में बहुविधि पुरुष हुकुम बिधारा है ॥ तब कबीर करि महा
 परिअम शब्द हि जाय उवारा है । मंगल सुजन विवेकी देखै सत्य
 असत्य विचारा है २१९ एक नशत, रजतम को आगे शुद्ध सती-

२७७ शिष्यकरै धन आग्रही मन मानक पदतिचित नि-
 वासै ॥ पंथ चलावत वेद विवर्जित ज्ञान गुनावत है अन्यासै ॥
 ब्रह्मलखावत नैनसदा ज्यहिहेरि फिरे मुनिसंत उदासै । मंगल
 लोखलेखेरनके घर झूठनके मुखमें किधौ भासै २७८ बोहितपंथ
 भवार्णवमें बहु शिष्य चढ़ायलिये सुखमानी । आपुनहीं कनि-
 हारमहा भ्रमपच प्रभूत भ्रम्यो अभिमानो ॥ पारल है किमि मध्य-
 हि बूडत मोहबयारि उछालत पानी । मंगलभूल जहाज चढ़ौ
 जनि बैठिरहौ अपने घर आनी २७९ जो कनिहार मिलै युतवो-
 हित तौ नतजौ करिकै चतुराई । थाइनजाइ चढ़ौ बिनबूझ जो
 पारते आचत लाग लुगाई ॥ पुछितिन्है पुनि खेवट यांचिकै हेरि
 रावैतन बोहितभाई । मङ्गलशुद्ध समाज चढ़ौ गुरुदेव प्रतापलगौ
 छहिवाई २८० शुद्ध अशुद्ध न मानत नेकहु अंतरमें अपने भूम
 भारी । आननहु उपदेशत है जनुधर्म बिनाश कि मूरति भारी ॥
 एक संनातन ईश्वर मानत सो न मिलै अपने मतचारी । मङ्ग-
 लका कहिये हुगिदासुन । दण्डप्रणाम करौ सुखकारी २८१ वेद
 सुचारिक है ऋग्यजु साम अधर्वण धर्मपुराण । चारिकिताव
 जवूर है जीलकहौ तब रेतजु है फुरकाता ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय
 वैश्य जु शूद्रहु चारिहुवर्ण किये निरमाना । सैयद शेखजु मुल
 पठानसो एकते चारि कि भूडकि जाना २८२ जातिन पातिन
 वेद कितेधन पीरगुरु न मुरीद न चेला । होत भये मनुष्यो किधौ
 त्यागम तांदिनको मत अद्रुत खेला ॥ जाबिधि बाढ़िगये नरभू-
 तउ ताबिधि घन्यन मोक्ष प्रहेला ॥ मंगलजाति किताव भयेसब
 सुख अनेक कि ठेलमठेला २८३ ज्योति दिखायके मोक्ष
 चढ़ावत पावक तत्त्व न ब्रह्म अनादी । रेत पियाय घड़ै गति एक
 सौ चारिकोतत्त्व कि मोक्ष प्रसादी ॥ सप्रजपाय के मुक्तिवता-
 नत अक्षर रूपन तो अविनादी । मंगल मौन भली नबकौ अब
 अस्तु अकथन दूसर वादी २८४ जो श्रुतिके विपरीत भण्यो
 कहुबौध स्वरूप गमा अवतारि । विप्रन निंदक कीन्ह अपूजित

को पुरुषोत्तम धारिनिहारी ॥ श्रीजगन्नाथ सेवक ठामहिं भोज
जिमावत वेद विसारी । मंगल निढक कोउन भापत एकादशी
जहँठाढि पछारी २८५ छंद ॥ सेतुबंध शिवदर्शन कोन्हें देहद्वारि-
का लारी है । बंदी उदर कुंड जल पीकर मकल व्याधि निरवारी
है । पुरुषोत्तम पुर भात खाइके काशी करवा धारी है । मंगल
मुण्डप्रयाग मुढाप्ता तदपिने आशा हारी है २८६ मकैजायकरी
हुज अकबर सेवगुनाह चखयाये हैं । करी जियारत जाइमदीने
करवला फिरि आये हैं ॥ दबी कुरान बगलमें बैया हाकिजधड़े
कहाये हैं । मंगल कवनि जात जो दिलमें हिरसौ हवां कुपाये हैं
२८७ ॥ सुवेया ॥ श्रीजगदीश्वर तोहिं कोजानत आपनहीगति
जानिनपाई ॥ आवकहां क्योंहियाम निकेत को जावकहां तजि
काया स्वभाई ॥ क्यों ठहरे इतको ठहराइलि ज्ञान अज्ञान कि
वाणि सुनाई ॥ मंगल जानिसके अपनी गति तौ जन आपन धाम-
हिं जाई २८८ मारग भूलिगयो मेतिमें भ्रम पथिप्रमाय महा
विकलाई । क्यों अपने अचिमारग पावत जाननहार मिलेबिनु
भाई ॥ क्यों यह जीव विषयरमलपट जात जितैतितहीं भ्रम-
ताई । मंगल संत सुजान सुमारग जानत हैं अरु देतवताई २८९
॥ विष्णुपद ॥ हरिगति जाति सकत कीमारी । मायापति अज
अकर चनामय अलख देव असुरारी । अरतनु धरै स्वयं करुणा
करलखत न विधि विपुसारी ॥ मन भावित कृत करत जगत्
प्रभु धृति सयाद विधारी । धर्म सेतु जनहेतु चारि फल दैनित
करत सुखानी ॥ सुरु मणि सुवन काक कायाधरि सिय पगवोच
प्रहारी । कीन्ह मही अगमहा अजुवत वाधि तल्यो भीमारी ॥
वालि धव्यो परनारि निरत लखिभर्यो इंद्र अफवारी । मंगल
कोजानत प्रभुको गति तू भजु दयाम मरारी २९० मन भूल्यो
धरि कोत चितवै । अथम तोहिं इंद्रीपति कहियेत सेवकसम
नू धावै विप्रयभोगविष तुल्य वदत श्रुति सो अमृत करिपावै ॥
कुरुली इत उत धीमत है लाजनिही धरिचावै ॥ मम कहनी

॥ २७७ ॥ शिष्यकरै धन आगलगी, मन मानकि पदतिचिंत नि-
 वासै ॥ पथ त्रलावत वेद विवर्जित, ज्ञान गुनावत है अनयासै ॥
 बिहलखावत नैनसदा ज्यहिहेरि फिरे मुनिसंत उदासै । मंगल
 लाखेलखेरनके घर झूठनके मुखमें किधौ भासै ॥ २७८ ॥ वोहितपंथ
 भचार्यमें बहु शिष्य, चढ़ायलियो, सुखमानी ॥ आपुनहीं कनि-
 हार महा भ्रमपंच प्रभूत भ्रम्यों अभिमानी ॥ पारल है किमिमंथ-
 हि बूडत मोहवयारि उछालत पानी ॥ मंगलभूल जहाज चढ़ौ
 जनि बैठिरहौ अपने घरानी ॥ २७९ ॥ जो कनिठारमिलै युतवो-
 हित तौ नितजौ करिकै चतुराई । धाड़नजाइ चढ़ौ बिनबूझ जो
 पारते आवत लाग लुगाई ॥ पुछितिन्हें पुनि खेवट यांचिकैहेरि
 राबैतन वोहितभाई । मङ्गलशुद्ध समाजचढ़ौ गुरुदेव प्रतापलगौ
 उहियाई ॥ २८० ॥ शुद्ध अशुद्ध न मानत नेकहु अंतरमें अपनेभूम
 भरीना आननहु उपदेशतहैं जनुधर्म बिनाश कि मूरतिधारी ॥
 एक सनातन ईश्वर मानत सो न मिलै अपने मतवारी । मङ्ग-
 लका कहिये हरिदासत दण्डप्रणाम करौ सुखकारी ॥ २८१ ॥ वेद
 सुचारिकहैं ऋग्यजु साम अधर्वण धर्मपुराण । चारिकिताव
 जबूर हैं जीलकेहौ तव रेतजु है फुरकाना ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय
 वैश्य जु शूद्रहु चारिहुवर्ण किये निरमाना । सैयद शेखजु मुगल
 पठानसो एकते चारिकि झूठकि जाना ॥ २८२ ॥ जातिन पातिन
 वेद कितेवन पीरगुरु न मुरीदे न चेला । होतभये मनुष्यो किधौ
 आत्म तादिनको मन अद्रुत खेला ॥ जात्रिप्रिवाढ़िगये नर भू-
 तछ ता बिधि बन्धन मोक्ष प्रहेला ॥ मंगलजाति कितावभयेसब
 सुत्य अनेक कि ठेलमठेला ॥ २८३ ॥ ज्योति दिखायके मोक्ष
 चढ़ावत पावक तत्त्व न ब्रह्म अनादी । रेत पियाय बदै गति एक
 तरे वारिकोतत्त्व कि मोक्ष प्रसादी ॥ भग्नजपाय के मुक्तिवता-
 वत अक्षररूपन नो अविनादी । मंगल मौन भली
 अस्तु अरुथय ज दूतर वादी ॥ २८४ ॥ जो श्रुतिके
 कहु धौध स्वरूप गोपा अथतारि । विप्रननिंदक कीन्ह

रुचिमानि ॥ गुरुपंडित कवि संतबखानत काम क्रोधदुखदानी ।
 नूतिनको संसर्ग समोद्विग्न करत सुखद चित्तआनी ॥ क्षणक्षण भू-
 मतकिरत भववीथिन जिमिमृद्गी अज्ञानी । यिरनहोत पल्लेएक
 नीचतू विषय विषय छलसानी ॥ करत विचोर नीचवत इत
 इत लखितुहि लाज लजानी । मझल धारवार कहतोतन भजु
 कित ब्रह्म अमानि २६५ मनसुनु सीखमनोहरमेरी । भूमतकि-
 मर्थ अनित्य जगतमहं तजिदुविधा भक्तिकेरी । भजिले रामच-
 रण सुखदायक होइ सुगति सुनुतेरी ॥ अततमय नातरु पछि-
 तैहै पायप्रोत यमकेरी । माता पिता त्रियतात मीतहितु स-
 कै न कोउ निवेरी ॥ ज्ञानीगुणी मूढ़ पशुपक्षी देवदनुज चहुफे-
 री । कालबली सबहीको भवि है अदतवेद बुधटेरी ॥ काम
 क्रोध मदलोभ मोहअरि रहेबहुंविधिधेरी । मंगल ज्ञानखड्गसों
 बहुकिन करत कासुहितदेरी २६६ सुनुमन तोहिकही समुझा-
 ई । जो पूरणपदकी अभिलाषा तोभजिले सुरराई । मुक्तिल है
 अनयास बेइबुध वदत नआते उपोई ॥ चारिखानि धारिखेर
 प्राणीरवि विधि सृष्टि बनाई । तिनमहं अतिउत्तम नरदेही सो
 लहिकत कदराई ॥ वैभवसुख संमाज जंग जेतोअन्त सगनहिं
 जाई । कपटकि प्रीति प्रतीति करतहै अहतेरी जडताई ॥ ताते
 तजिदुविधा भ्रमसिगरे अनभव शुभ डरलाई । मंगल व्याउ युग
 लपद हरिके जो तिहुंकाल सहाई २६७ हरितजि फिरि पाछे
 पछितैहै । कामक्रोध मदलोभ मोहवश तू कुपंथ चलिजैहै । अ-
 न्तसमय रविपूत दूतसुनु अतिही प्राप्तदिखैहै ॥ सुतदारीआदि
 क सम्पति सब कोऊ कामन ऐहै । तजि सुरधाम कर्मवश अपने
 वास नरकमेंपैहै ॥ ताते मानुसीखशुभ मेरी जोहरिपद चितलैहै ।
 सुयंम ससौख्य रहैजीवनभरि यमको दण्ड नसैहै ॥ मोते हितू
 अपरको तेरो जोत्वहि सुमग चलैहै । मंगल सुधा सीखपीलेतू
 पीवतमृत्यु बिलैहै २६८ एकदिन मरण अहैतनजिनको हिरया
 कुंश हिरयाक्ष प्रबल जगहै प्रसिद्धकृततिनको । आकरुत्तरकेहरि

सुख खानि सकल विधि सोल्यहिं नेकन भावै ॥ कामादिकंतुत
 तोर प्रकट यह तिनके संगमजोवै । लखि । अनीति पधतजत
 सुमति सति अबुध किधौ मुदंछावै ॥ लोकरीति परलोकमत्तोरथ
 हूनों स्वकर नयावै । मंगल अवते मानि सीखमम हरि आतम
 क्रिमे धमावै ॥ २६१ ॥ मन अपने मन देखु विचारी । तजिबेगता
 द्यंगता गतिकी जैठीसपिर गुणधारी । जेखल महा शत्रुसम
 घर्तत तिनहि कहत हितकारी ॥ प्रीतम सुमति सुगति शुद्धि
 दायक त्यागत विषय प्रचारी । सूरज जातधाम अतकैवय जाइ
 हि देखु निहारी ॥ तेहंतुवहितुं शत्रु गति दाता साखीहोइ अंगारी
 महा मोह मय जानिधर्म विनुयमचरगहि कखवारी ॥ नरकमेलि
 बाधिहिदैताइना कोउ नंतह रखवारी । मंगल शोचि यहै भजिले
 किन प्रीराधिका विहारी ॥ २६२ ॥ यह संतार लखात अतार ॥
 केतिक धनी निधन समविचरत अधन धनिक दयबहारा ॥ वा
 संप्रति यहिकर दुखा डारिद कितगा करिय विचारा ॥ महाराज
 गहि राउ वदिकिय दीनराज वैठारा ॥ तासु विभव दीनतोयासुकी
 केहि द्विष्टि करत विहारा ॥ पंडित थिर पिशाविका लागी मूढ़प-
 द्यो गुणसारा । वाप्रांडित्य मूढ़ता याकी मिटैन लेशप्रचारा ॥
 सतन अतन विनुधाम गेहमुत होत सहजवहुंदारा । मंगल भजु
 प्रीराम रामप्रद पावै सबसुख न्यारा ॥ २६३ ॥ आपु आपनीभूल
 भुलाना । ज्यो गालामुग अन्नगहेकर धंदिपस्थो अनुमाना । तज
 त ताहि मोचैसो बँदिते नहि आवत असजाना ॥ अरुजिमि श्वा-
 न वर्षणी मदिर निज प्रतिविंब भ्रमाना । भुकि सस्यो हरिगि-
 र्यो कूयजिमि गजरद विनु पळिताना ॥ तिमि यहजीव विष-
 अमायावश मृषासत्य नहि जाना । सर्वस खोइदयोवैरिनकरअंत
 समय दुखसजाना ॥ अन्नहि सबेर चेतलखुने आपुहि मिटे सकल
 विषठानी । मंगल सुमति सतोगुण प्रकटै जेहि मंगलहु भगवाना
 ॥ २६४ ॥ लोग कहत भनतु बड़जानी । मेरीजान महा मूरखतू बि-
 पकबल अभिमानी । बेदपुराण विवर्जित जोप्य ताहि चलत

रुचिमानी ॥ गुरुपंडित कवि संतबखानत काम क्रोधदुखदानी ।
 तूतिनको संसर्ग समोदित करत सुखद चित्तानी ॥ क्षणक्षण भू-
 मताकिरत भववीथिने जिमिभृङ्गी अज्ञानी । थिरनहोत पलएक
 नीचतू विषय विषय छलसानी ॥ करत विचौर नीचवत इत
 उत लखितुहि लार्ज लजानी । मङ्गल धारवार कहतोसन भजु
 कितोब्रह्म अमानी २६५ मंतसुनु सीखमनोहरमेरी । भूमतकि-
 मर्थ अनित्य जगतमहँ तजिदुविधा मतिकेरी । भजिले रामच-
 रण सुखदायक होइ सुगति सुनुतेरी ॥ अतसमय नातरु पछि-
 तैहै पायप्रतीक्षासकेरी । मात पिता त्रियतात मीतहितु स-
 कै न फोउ निबेरी ॥ ज्ञानीगुणी मूढ़ पशुपंथी देवदनुज बहुफे-
 री । कालबली सबहीको भेपि है ध्वतवेद बुधटेरी ॥ काम
 क्रोध मदलोभ मोहअरि रहेमहंदिधिघेरी । मंगल ज्ञानखड्गसों
 बहुकिन करत कासुहितदेरी २६६ सुनुमन तोहिंरही समुझा-
 ई । जो पूरणपदकी अभिलाषा तोभजिले सुरराई । मुक्तिल है
 अनयास बेद बुध ध्वत नआते उपाई ॥ चारिखानि धांचर चर
 प्राणीरधि बिधि सृष्टि बनाई ॥ तिनमहँ अतिउत्तम नरदेही सो
 लहिकत कदराई ॥ वैभवसुख संमाज जंग जेतोअन्त सगनहिं
 जोई । कपटकि प्रीति प्रतीति करतहै यहतेरी जडताई ॥ ताते
 तजिदुविधा भ्रमतिगरे अतभव शुभ ठरलाई । मंगल व्याउ युग
 लपद हरिके जो तिहुंकाल सहाई २६७ हरितजि किरि पाछे
 पछितैहै । कामक्रोध मदलोभ मोहवश तू कुपथ चलिजैहै । अ-
 न्तसमय रविपूत दूतसुनु अतिहो प्रासदिखैहै ॥ सुतदाराआदि-
 क सम्पति सब कोऊ कामन ऐहै । तजि सुरधाम कर्मवश अपने
 घोस नरकमेंपैहै ॥ ताते मानुसीखशुभ मेरी जोहरिपद चितलैहै ।
 सुयग ससौरग्य रहैजीवतभरि धमको दण्ड तसैहै ॥ मोते हितू
 अपरको तेरो जोत्वहिं सुमग चलेहै । मंगल सुधा सीखपीलेतू
 पीवतमृत्यु मिलैहै २६८ यकदिन मरण अहैतनजिनको । हिरणा
 कुश हिरण्याक्ष प्रबल जगहै प्रसिद्धकृततिनको । ठूकरनरकेहरि

शरीरवर्षि कीन्हनाथ पापिनको ॥ रायण कुम्भकरण कंठादिक
 आनाथसुर कोटिनको ॥ राम कृष्णतनाविरविकृपातिविहृत्योभार
 आपितको ॥ राम उग्र प्रलसम श्याम जू सुग्रह रूपातमवेदन
 को । तेतनु त्यागिगयो निज रामहि गनैको नर नोरिमको ॥ श्री-
 पद्म पाखंड प्रवल धनुर्दर अरौ अन्यबलिनको । रहो जतन
 मझल भजिले हरिजीवन केति रुदिनको २६६ अलखगति लो-
 खिन परे भाई । अज जन्मयो अत भुज सप्तविभा अतन येरो स्व-
 हाई ॥ अमरमत्यो कर्तार श्रीरुत्ती दायाकृतरवताई ॥ एक अनेक
 रूपसों देखो जल रय मोझ समाई ॥ करण हीन जग विनय सुन-
 त है अक्षर हित दृष्टाई ॥ चरण हीन तीनों पुर नापै कर विनु सृष्टि
 उपाई ॥ लिंग रहित नवलिंग बनोये काल विना बय पाई ॥ सक
 ल भांति विपरीत देखि भर्त पै वरणी नहि जाई ॥ मझल नरक सींग
 देही को दुविधा देनो ठाई ३०० तनु मन विषय प्रसंग अतीरात
 दुविधा को मारग यहि जगमें छल प्रपंच व्यवहारा ॥ को सुख तो
 हिंमिले इनके संग सूरख बुधि न विचारा ॥ अक्की चूक हूक उर
 उठि है पहुँचत यम दरबारा ॥ करणी फल तो हिनर को मिलैगो विनु
 आत्म निरधारा ॥ जेलांचे मग के प्रगुधारी करत ज्ञान ब्यापारी न
 तित लो प्रीति रीति कह सांची करै सुमनि विस्तारी ॥ नीच छेली
 सत संग विवर्जित परिहरु तिनको द्वारा ॥ मगले भजु आत्म प्र-
 साया भुक्ति मुक्ति द्वौ बारा ३०१ सुनु मनतू विपरीत विवरी ॥ जो
 विपताहि कहत जीवनदा अरि तु देखु निहारी ॥ काक बुद्धिचेह
 विषय विष्टनित मति विनु होत दुखारी ॥ ज्ञान प्रय भज-जन्म
 नथावत तुही निरय अधिकारी ॥ दिनमणि उदय लखत जग रथा
 जान उलूक अंधारी ॥ गौरी सकल भूत सुखा सोवत खकड़हि
 पति दुख भारी ॥ चारि प्रकार चारि विधि जानै चतुरा अर्मन प्रवारी ॥
 प्रकट प्रतीप दिखात ब्रह्म को चहुँ दिशि ज्योति पसारी ॥ मगल
 मनत जि जालि विषय लखु ज्योतिहुँ होइ सुखारी ३०२ कहत
 वनत नहि काल कहानी ॥ एक संग जन्म मरणमें दुविधा वदेत वेद

धरानी । जासु प्रबलतावधे पुरतोनों बुझज गिरा भवानी ॥
 शोक सौरुष संयोग विंयोगहि देत सर्वहि अनुमानी ॥ कोतुरसूद
 मवन सेयो कुष्ण भोजी रजधानी ॥ धायु अग्नि मम इद्रसरुत
 पथि वदिपरे जंगजानी ॥ जगजित शुभ भति शुभ भवेरणा त्रीदु
 गी महरानी ॥ मंगल दुखमुख काल विंयशदो प्रावत भव सव
 रानी ॥ तूमन त्यागि भूल भजिले हरि जो कृत काल किहानी ॥ ३०
 कैसरे मति है मेन तेरी ॥ धिनु स्वारथ भैरमत भवरी धिन कुपय
 वलन भगहेरी ॥ कोतुरक अत वन्त जगमे मन तजि दुविधा बुधि
 केरी ॥ मात तै तन प्रिय वलु तन प्रयुत काल न सकत निवेरी ॥
 यमपुर कटपाय पछितै है मनि तोख गुवि मेरी ॥ राम प्राम पद
 नलित होहु अति दिन निषि भूल गहेरी ॥ मुक्ति प्रदार्थ शुभ प
 रागलहु कुमति कुनिधि मिटेरी ॥ आन उं प्राय जन्म कोटिहु लुगि
 कह जगमेरा फेरी ॥ मंगल मोक्ष होइ नहि कैतेहु बहत वेद बुध
 देरी ॥ ३१ ऐनोइ अज जीव भूम भाई ॥ जों यमि विमल प्रत्यो जल
 भीतर जलै हल हलत लखाई ॥ सूरज पोति जहै तहै शिखर नमह
 पै नगही कर जाई ॥ घटवहि रन्तर गगत विराजत कुम्भ तये नान
 गाई ॥ जल तरंग विवरण रूमि को जल प्रदुत कथा सुनाई ॥ परि
 पूरण पुराण पुरु रोतेन तन प्रति रहा समाई ॥ दरपण अथा विमल
 परि पूरिते तू जल रहै राई ॥ तजि गेरी रति मि जीवन देखि यको
 हुतर दोठ ठाई ॥ मंगल भजि अति म सुख दायक तजि नुरु मान ला
 ई ॥ ३० प्राम नाम तजि काम नी कोई ॥ भूपरु की हरि पुरु सुनु मन
 फती हरि ग बलोई ॥ जेम द्रव्य करत परमोडा दया शीलता खो
 ई ॥ तेरे हिलोक सुखो सुख कहिये नरक वास हां होई ॥ पछितै है
 पापी अन्यायी ते जे वेद मग जोई ॥ तवि कोविद सुनिवर ग्रह भाप्रत
 वेद पुराण लिखोई ॥ राम भजे दिन पूत नहै हो बुध मूरख विंय
 लोई ॥ जिमि धिन जल न जीव जीवन जल यह संक्षिप्त कहोई ॥
 मंगल तजि भस भूल पाय हरिलेहु मुक्ति भग टोई ॥ ३० ६ तजि
 धर राम नाम भजिले मन ॥ राम भजे पूरण सुख पावै नाथ लहे

कौन भगवानहै । मंगल विवादैः एकजीव आपु (ब्रह्मरूप) काको
 न्याय कौनकरै बैठो कौने थानहै ३४३ ॥ सवैया ॥ जीवभयो
 न अहै मन मूरख औनहिं होय सुजान अगारी । कर्मनके वश
 बद्धनहोवत नित्य अनित्य सकार अकारी ॥ ताहि अधोरथ वासन
 भाषिय है अधकरथ ज्योति पसारी । मंगल पाप असैनहिं आतप
 दोरकि सूरजकेतन भारी ३४४ तू परमात्महै सवठा मनकोटि-
 ननाम न लोग पुकारै । सो सुनि देत मनोरथ है नित शुद्ध अशुद्ध
 न चित्त विचारै ॥ कोउ न रूप न धर्म सुकर्म न जाति मतामन तो
 अनुसरै । मंगल यांचत तोहिं कृपानिधि सत्य मनोरथ दे अविका-
 रै ३४५ कासन जाय कहौ अपनो दुख चांभवमें प्रभु तोहिं विहा-
 ई । दूसरकी न समर्थ विलोकत मो मनमें जडता दृढताई ॥ पालत
 लोक चतुर्दश आपुन क्यों समकाज धरी निठुराई । मंगल मांगत
 जोरि दुवोकर देहु मनोरथ भेद नशाई ३४६ जौ लंगि चित्त मनो-
 रथ चाहत तौ लंगि शुद्ध सतोगुण दूरी । जो भव आश विवश्य रहै
 सुरलोक अलोक दुवो सुख भूरी ॥ बंधन मोक्ष दुवो मर्न भूल मनो-
 रथ है न सजीवन मूरी । मंगल जो बिपयी बिपनायत सो प्रभु सत्य
 रहं भरि पूरी ३४७ जानत है सबके मनकी प्रभु सत्य अहै मन अं-
 तर्यामी । तासन कौन मनोरथ भाषिय भापत ही नर जानत
 कामी ॥ देइ गो आपु क्षमानिधि तो कहै क्यों वकवाद करै नित वा-
 मी ॥ मंगल आउ सदा निज आतम जो सबमें सवते परधामी ३४८
 सुंदर मारग हू डरमानत तूमन क्यों भवपंथ चलैरे । देखि अशा
 दुबिधा उरलावत क्यों मृगनायक धाइ दलैरे ॥ काम सक्रोधन
 जीतिसकै फिरि मोह कियौ निज हाथ मलैरे । मंगल संत समाज
 न भावत ज्ञान कहा कियौ कौन थलैरे ३४९ ज्ञान दिवाकर शुद्ध
 प्रकाश तहां न सकै निज वस्तु बिलोकी । तौ फिरि भक्ति कि चंद
 द्वितीयको नेक विकाशत होत अलोकी ॥ मोह निशा अधियार कि
 अज्ञत नैन पसारत दृष्टि संधोकी । मंगल खोजिले सत्य पदारथ
 १८ सकै १५ जीव चरांचर आकर चारिहु

भूमिधरे अपनेधिरभासै । भूमिहि शेषधरेधिर सोहतकच्छप । छ
 किशेप बिलासै ॥ कच्छप वायु विमंडलमें नभमें पुनिवायु प्रवी-
 निवासै । मंगल है नभ शब्दकि शक्ति सुशक्ति सनातन ब्रह्मप्र-
 कासै ३५१ शक्तिविना कछुहोतनहीं व्यवसाय उपाय न कारण
 काजू । जौन अशक्ति सो कोकृत साधत मृत्यु किधौ जडलौतन
 साजू ॥ शक्तिअनंत अपार भगैश्रुति शक्तितेदेव त्रिलोक समाजू ।
 मंगल शक्तिहि चीन्हिलहै हरि कौन अशक्ति करै भवराजू ३५२
 सिद्धनकेतन सिद्धि न लागतवृद्धनकेमनवृद्धि न आवै । शरशरीर
 न आतप व्यापत ना हिमते हिमवान जडावै ॥ पावक तेज न
 पावकदाहत सर्पमुखै विप ना मरिजावै । मंगल त्यों मनबुद्धिअहं
 चितजीवहि क्योहु न लावहुपावै ३५३ जाकरवृद्धि न हानि न
 ताकरजाकरहानि न वृद्धि न ताके ॥ मावस औपुणिमाकि कथा
 शशिक्षीण औवृद्धि न कतप्रभाके । वृद्धिऔ हानिदुवोदुखदायक
 आवत जावत को समता के ॥ मंगल त्यों अध ऊरधमें भ्रमजो
 रस एक तोको दुखवाके ३५४ देखिसि काजो कहै सबमेप्रभुखो-
 जिसि का जोकहै इतनाही । व्याइसिका जोपै दृष्टिनआवबता-
 दसिका जो अकाय सदाही ॥ पाइसिका जोपै हाथ नलागतगा-
 दनिका जो अरुध्य कथाहीं । मंगल पूरणज्ञान उदय अपनेघर
 में न इतैउतजाहीं ३५५ पण्डितको नहि आतम चीन्हत कोक
 विता मन ज्ञानन जाके । सतकहा उर तोप क्षमा नहि भूपकहा
 भयसिद्ध नबाके ॥ योगकहा न समार्थिहि धारत भोग कटा धन
 नारिविनाके ॥ मंगल ज्ञानकहा धर्म तिमि जो नरजै मगमेंसम-
 ताके ३५६ औरनको मनतुच्छ विलोकत आपुहि तुच्छ न थोच
 तेरे । ध्यानन के गुण आमवदै नित औगुणको अपनेगृह ढेरे ॥
 चाहति पद्धति आपनिही खल निदतहै सबकोअथ तेरे । मंगल
 दीन कहैं हम साहन साह भयो धन वातन केरे ३५७ कर्म
 प्रताप बिलासकरै सुरधाम पगो दुविधा दुखदार्ष्ट । स्वर्ग अथोरु
 अथोपुनि स्वर्गते आवत जात वढी भ्रमताई ॥ त्यागि शुभाशुभ

कर्मसबै मुनि संतरहे निज अंग समाई । मंगल स्वर्ग न नर्कग्रसै
 तिनको अपने पदमें ठहराई ॥ ३५८ ॥ वाणविलासने है निरवाण
 वाप्रभुको मन क्यों भ्रमभूला । सृष्टिवनाय न पालत भारत है
 विपरीत कथा तरुमूला ॥ आदिकि शून्य किईश्वर आदि बताइ
 सकै कथनी प्रतिकूला । मंगलको भव जाननहार अभाव किवा
 त बकै लघु थूला ॥ ३५९ ॥ बारिजपत्र रहै जलमें नित धारि न व्या
 पत क्यों जगसाधू । औ जलजीव रहै जलराशिहि बूडतहैं नहि
 नीर अगाधू ॥ सर्प समाज रहै तरुचदन शीतलहीन यसै विष
 धाधू । मंगल ज्ञानितथा भववीथिन डोलंतनीर । सहीकृत नाधू
 ॥ ३६० ॥ गौरवमें गुरु लागि रहै अरु पीरनकेदिल लाग पिराई ।
 ईश्वर खोजलगे मुनिसाधु रसूल रसालतकी चतुराई ॥ एकदु
 तीनि विचारकरै वनिसंत महतरचै कविताई । मंगल ब्रह्मवरा
 नकरै नहिं पूछत क्रोधि कहै चुपभाई ॥ ३६१ ॥ वेद कितेव धर्यान
 विचारिय आगम और हदीशकि बानी ॥ आपुहि न्यायकरै सब
 को नित शासित कारक जीव प्रमानी ॥ है सुनता सबकी निज
 कानन तौ तनुधारि परै अनुमानी । मंगल बुद्धिधकै न बकै अथ
 जोककुहैं सो सहीन कहानी ॥ ३६२ ॥ दोरधमें लघुजानिपरै अरु
 है लघुमें परिनाहशरीरी । धावरमें धरदेखिय औचरमें पुनिधा
 वर सोगति धीरी ॥ थूलनमें अति सूक्ष्म आवंत लिंगनमें जनु
 धूलकिथीरी । मंगल क्यों कहिये प्रभुकी गति ह्यां भवकी गति
 में मतितीरी ॥ ३६३ ॥ ज्यों शिर औश्रुति मस्तक नाक सुलोचन
 औमुख दंत गनावै । जीभ कहै पुनि कंठभुजा उर पेटसनाभि
 गुणी समुझावै ॥ लिंग गुदा पंगस्यों नखते शिखलौं जिमि है तन
 नाम कहावै । मंगल क्यों तिहुंलोक अलोकहु नाम सनातनब्रह्म
 बतावै ॥ ३६४ ॥ जाहि कहै सबके शिरपै पुनि ताहिकहै सबके तन
 घासी भापि अजन्म अनादि ब्रह्म पुनिगावतहै रघुवंश प्रकासी ॥
 रूप न रेख न रंगभणै फिरिभावत शेषकेभीष बिलासी । मंगल
 द्वैत कियों एकभावन फूलत गालजो आवत हासी ॥ ३६५ ॥ सीख

कहू हमहीमन ज्ञानविचार विवेक लहौ सुख जातैं । तेहमको
 पुनि ज्ञानबदे गुणि कंद अनेक कथी कथितातैं ॥ आपनमें नदि-
 भाव धिलोकत नित्यसिखावत योगकि पातैं । मंगल सांचकहा-
 वतहै यह नानिकेआगे ननौरेकि बातैं ३६६ जोप्रथमयपितु तौ
 पुनि काकर पुत्रकहौ पितुहीन न सोई । वृक्ष बदे जिमि बीज
 रिना किमि बीजभणैविनु वृक्ष न होई ॥ कारणतौ विनुकारज
 नाहिन कारण कारण हीनकिकोई । मंगल शून्य न एकविना
 तिमि एकनशून्य विहाय वदोई ३६७ राम निकाम भयेसुत
 दोइ अक्रोध कहावत ब्राह्मणपाते । मोहविना बहुरोवत भातहि
 लोभविना शुचिराज सुहाते ॥ मानविना निजनारि तजीहित-
 कारक क्यो निज बंधुदुवाते । मंगलमित्रतजे सबबीचहि सेवक
 आप स्वधामन जाते ३६८ जासन भाषिय सत्यकथा अनखाय
 कहै बडनिदक तूहै । उग्रोतिपके मतमेअटको नभकीवरणै नहिं
 जानतभूहै ॥ बीजकि बाणि न वृक्षिसकैलपिटायअजानगहैमहि
 रूहै । मंगलस्वो समुझैखगहोरिल पांवदबीलकडीगतकूहै ३६९
 गोमलते जिमिकीटभयो नहिमातपितानिजजानत सोहै । त्यों
 प्रथमैमनुभे कियौ आतम बुद्धिसमान पितानिज जोहै ॥ जान-
 तनाहिबनावनहारहि कोटिकवेद किते बनिटोहै । मंगलपंखकबू
 तरहेरत कोकवितादुविधा न विमोहै ३७० जादिनसेमनु नारि
 समेत लिखा न पढ़ा तब अक्षरकोई । बाढीजवैअतिसततितक-
 र कीन तवै गुणि आगम सोई ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य नही
 तबनीचकुलीन दुधामति खोई । मंगल एकहिघर्य तहासब सों
 अघ भातिअपार कथोई ३७१ ठाकुर औ तुलसी एक भावहि
 ताहि धरे शिर कामिनिराते । बाद वृथा कृत साखि मृपा कहि
 जूप छलै निज धर्म कहाते ॥ माप तुला कृतकूटिसदा परनारि
 औ पातुरि के संगमाते । मंगल निंदक सोकिधौ सज्जन भक्त
 कहावत मूढमहाते ३७२ ॥ कवित्त ॥ तीरथते आइकहै हाथन
 लगतुमोप दुःख अति मारगमेंकहांलौ गनाइये । अमुक कुथान

कर्मसबै मुनि संतरेहे निज अंग सेमार्डे । मंगलं स्वर्ग न नर्कप्रसै
 तिनको अपने पदमें ठहराई ३५८ वाणविलासन है निखाणहु
 वाप्रभुको मन क्यों भ्रमभूला । सृष्टिवनाय न पालत मारत है
 विपरीत कथा तरुमूला ॥ आदिकि शून्य किईश्वर आदि बताइ
 सकै कथनी प्रतिकूला । मंगलको भव जाननहार अभाव किवा-
 त बकै लघु धूला ३५९ बारिजपत्र रहै जलमें नित बारि न व्या-
 पत त्यों जगसाधू । औ जलजीव रहैं जलराशिहि बूझतहैं नहि
 नीर अगाधू ॥ सर्प समाज रहैं तरुचंदन शीतलेहीन यसैं विप-
 बाधू । मंगल जानितथा भवबीधिन डोलतनीर । सहीकृत नाधू
 ३६० गौरवमें गुरु लागि रहै अरु पीरनकेदिल लाग पिराई ।
 ईश्वर खोजलगे मुनिसाधु रसूल ररालतिकी चतुराई ॥ एकदु-
 तीनि बिचारकरै वनिसंत महतरचै कबिताई । मंगल ब्रह्मवखा-
 नकरै नहिं पूछत क्रोधि कहै चुपभाई ३६१ वेद कितेव वखान
 बिचारिय आगम और हदीशकि बानी ॥ आपुहि न्यायकरै सब
 को नित शासित कारक जीव प्रमानी ॥ है सुनता सबकी निज
 कानन तौ तनुधारि परै अनुमानी । मंगल बुद्धिथकै न बकै अब
 जोककुहैं सो सहीन कहानी ३६२ दीरघमे लघुजानि परै अरु
 है लघुमें परिनाहशरीरी । थावरमें चरदेखिय औ चरमे पुनि था-
 वर सो गति धीरी ॥ धूलनमें अति सूक्ष्म आवत लिंगनमें जनु
 धूलकिथीरी । मंगल क्यों कहिये प्रभुकी गति ह्यां भवकी गति
 में मति सीरी ३६३ ज्यों शिर औ श्रुति मस्तक नाक सुलोचन
 औ मुख दंत गनावै । जीभ कहै पुनि कंठमुजा उर पेटसनाभि
 गुणी समुझावै ॥ लिंग गुदा पगरां नखते शिखलों जिमि है तन
 नाम कहावै । मंगल त्यों तिहुं लोक अलोकहु नाम सनातन ब्रह्म
 बतावै ३६४ जाहि कहै सबके शिरपै, पुनि ताहि कहै सबके तन
 घासी भाषि अजन्म अनादि बदै पुनि गावत है रघुवश प्रकासी ।
 रूप न रेख न रगभणै फिरि भापत शेषके शीघ्र विलासी । मंगल
 हैत किधौ एकभावन फूलत गालजो आवत हासी ३६५ सीर

कहू हमही तेन ज्ञानविचार विवेक लहौ सुख जातैं । तेहमको
 पुनि ज्ञानबदै गुणि छदअनेक कथी कविततैं ॥ आपनमें नद्वि-
 भाव धिलोकत नित्यसिखावत योगकि घातैं । मंगल सांचकहा-
 वतहै यह नानिके आगे ननौरेकि बातैं ३६६ जो प्रथमयपितु तौ
 पुनि काकर पुत्रकहौ पितुहीन न सोई । वृक्ष बदे जिमि बीज
 विना किमि बीजभणैविनु वृक्ष न होई ॥ कारणतौ विनुकारज
 नाहिन कारज कारण हीनकि कोई । मंगल शून्य न एकविना
 तिमि एकनशून्य विहाय वदोई ३६७ राम निकाम भयेसुत
 दोइ अक्रोध कहावत ब्राह्मणघाते । मोहविना बहुरोवत भ्रातहि
 लोभविना शुचिराज सुहाते ॥ मानविना निजनारि तजीहित-
 कारक क्यों निज वधुहुवाते । मंगल मित्रतजे सबबीचहि सेवक
 आप स्वधामन जाते ३६८ जासन भाषिय सत्यकथा अनखाय
 कहै बडनिंदक तूहै । उद्योतिपके मतमें अटकी नभकीवरणै नहिं
 जानतभूहै ॥ बीजकि वाणि न बुझिसकैलपि टायअजानगहैमहि
 रूहै । मंगल क्यों समुझैखगहोरिल पांवदवीलकडीगतकूहै ३६९
 गोमलते जिमिकीटभयो नहिं मातपितानिजजानत सोहै । त्यों
 प्रथमैमनुभे किधौ आतम बुद्धिसमाने पितानिज जोहै ॥ जान-
 तनाहिं वनावनहारहि कोटिकबेद किते बनिटोहै । मंगल पंखकबू
 तरहेरत कोकबितादुविधा न विमोहै ३७० जादिनभेमनु नारि
 समेत लिखा न पढ़ा तब अक्षरकोई । बाढीजवै अतिसततिताक-
 र कीन तवै गुणि आगम सोई ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य नहीं
 तवनीचकुलीन दुधामति खोई । मंगल एकहिबर्ण तहासब सो
 अब भातिअपार कथोई ३७१ ठाकुर औ तुलसी एक भावहि
 ताहि धरे शिर कामिनिराते । बाद-वृथा कृत साखि मृपा
 जूप छलै निज यर्म कहाते ॥ माप तुला कृतकू
 औ पातुरि के संगमाते । मंगल निंदक सोकिधौ
 कहावत मुढ़महाते ३७२ ॥ कवित ॥ तीरथते
 लगतुमोप दुख अति मारगमें कहांलौ गनाइये ।

जहां भोजन न लेख मिलै अमुक सुधानतहां षडो सुख पाइये ॥
 धीतकी कहानी भूपमेह वादु भाषिकहै मंदिरादि महिमावतवि
 शुधिताइये । मंगलनहानप्रात धकाधकी चोरठगे सीतकोमिलन
 गावै सुक्तिको न भाइये ३७३ माघमें सवार गंग दुवकीलगाइ
 खोजै जलमधि मोक्षन कृपालु निजपाइये । ठगनके मेलेमें झमेले
 परि भांति भांति बसनादिखोइ स्वाय घूमिघर आइये ॥ पांच
 ओर आगिबारि श्रीपमामें देहजारि सुक्तिनदिखानि रामरामरट
 लाइये । मंगल भ्रमातजीव आपुआपु भूलबध संधि न होत
 जाते दुविधा नशाइये ३७४ मूढ़ताको बासतन पंडित प्रसिद्ध
 भूमि गूढ़ता न जानै ज्ञान भक्तिकाको नामहै । गणक कहावै न
 गणित बात बूझै कछु नृपति न भूमिरंच सैनधन धामहै ॥ साथ
 करि ख्यातजानै साधना न एकजौन बाधक न मरै जीव सुमति
 सबामहै । मंगल तर्थाहि ज्ञानि विदित कुधाम देखु दृढ़तानज्ञान
 की न खतन विरामहै ३७५ एकजलबिन्दु बूझि मरत पिपीलि
 जौन मनमत करत पयोधिअवगाहिहौ । क्षणक उडात थकैम-
 संक विचारै चित्त गगन निरंत ताके अतलौ समाहिहौ ॥ आतप्र
 धिलोफि जातपारद बिलाइ सोऊ करत मनोरथ विनेश धाम
 गाहिहौ । मंगलविमूढ़ तैसे खोजत अगूढ़ वस्तु गूढ़ देखिभूमित
 कहत पूछीं काहिहौ ३७६ ॥ सवैया ॥ व्यास पुराणकिये कितने
 इक भावनसों बहुभांति पुकारैं । दायक सुक्ति बदैयक ब्रह्मकहैं
 यंक शकर जीवहि तारैं ॥ बिष्णुकहैं यकशक्तिभणै यकरामकथा
 किधौं श्याम विचारैं । मंगल भूलपरी मन प्रंडित आतमत्यागि
 फिरैं बहुद्वारैं ३७७ योगिनके मत योग समाधिरु जंगमके मत
 चेतन बानी । जैन अनादि कहैं भवकर्म सन्यास स्वआतमधी
 निरबानी ॥ वादि निराश भणै दुरधेश पुजावत ब्राह्मण पावक
 प्रानी । मंगल येषटराग किधौं कहराइत राग न आन कहानी
 ३७८ तीरथ वासि बदैं भुवि मंजन मूरति पूजक पूतरिब्राना ।
 जापक मंत्र विधान सिखावत पाठक पाठ शरांग प्रमाना ॥

ध्यानि स्वआतम ध्यान कहै निजज्ञानि गुणावत उत्तमज्ञाना ।
 मंगलशालि मुमुक्षु सवैयन पोषत ह्यंकहु क्षेत्रविद्याना ३७६
 ईश्वर अगसही यहजीवहै वेदपुराण कुरानवतावै । पै अबजाइ
 सकैद्विग तासुन अगमें क्यों कर जाइ समावै ॥ कोटिउपाय वि-
 धानकरै जपपाठ सुतीरथलौं फिरिआवै । मंगल शोच तजौ सि-
 गरे अपने घरमें निजवस्तु लखावै ३८० ॥ यथा ॥ ज्यों तरुते
 महिपातपरो फिरि ताहिलगैनहिं कोटिउपाई । ऊरध चौ अथ
 आवत जावत संधिसमीर भ्रमै बहुताई ॥ रोवतहै बिललात
 दगौदिधि क्यों निजखानि लहैदुचिताई । मंगल ब्रह्म नपावत
 जीव तथा उपचार वृथाहि लखाई ३८१ यातनकी पतिबाढ़ि
 प्रटैमन भूषणवस्त्र अवस्त्र अभूषण । जीवसदा परमानंद पूरण
 ताकहँ नाहिंविदूष विदूषण ॥ ग्रीपम भीतयथा गतिआतप छी-
 जत वृद्धतनेऊन पूषण । मंगल ज्ञानगुणी उरलागत क्योहुन
 मूरुखके मनतूरण ३८२ एरुदिशा विदिशा भरमें यंकऊरधऔ
 अथ खोजतंडोलैं । एकउपायन में अटके एककर्म प्रताप सदा
 गति बोलैं ॥ एरुभणै हरिकी महिमा यक आपन मे अपनी
 गढ़िछोलैं । मंगल एकसबै भ्रमत्यागत हैथिरभावस्वभाव निचो-
 लै ३८३ क्योंभटकै मनज्ञान विहाय विभासित रूपग्ररूप
 नदोहै । ब्रह्मअनादि सहीबंदसज्जन ठामेकुठाम दुधा किमिसो-
 है ॥ स्वर्गवहै पुनिनर्क वहै गुरुशिष्यवहै सुनिपडित मोहै । मंग-
 ल क्योंन तजैदुविधा उतसोइ विराजि रहाइत जीहै ३८४
 आयत काल जवैजत जाकहँ होततवै तसकाल बटाऊ । काल
 स्वभाव दुभातिरचरी प्रभुजानत सन्तसुभाव कुभाऊ ॥ कर्म
 कहावत धर्म विहाय न व्यापक रूप बिहीन दुठाऊ । मंगलको
 समुझावत शालक अक्षर पाठकवेद प्रभाऊ ३८५ कालमें केतिक
 धीनि गये युग आतम भूत सुरारि पुरारी । केते अकाश मही
 दिनमें सुगमानु दिनेय निशाचरवारी ॥ वेदपुराणविलान अनेक
 नानागम कारक ज्ञानविचारी । मंगल आदि अनादि नहीं ज्यहि

जहां भोजन न लेगमिलै अमुक सुधानतहीं बड़ो-सुखपाइये।
 धीतिकी कहानी भूपमेह बाहु भाषिकहै मंदिरादि महिमावत
 शुचिताइये। मंगलनहानप्रात धकाधकी चोरठगं सीतकोमिल
 गावै सुक्तिफोन भाइये ३७३ साधमें सवार गंग दुःखकीलाइये
 खोजै जलमधिमोक्षन कृपालु निजपाइये। ठगनके मेलेमेंमेले
 परिभाति भाति बसनादिखोइ खाय घूमिघर आइये॥ पाच
 चोर आगिवारि ओपम में देहजारि सुक्तिनदिखानि रामरामर
 लाइये। मंगल अमातजीव आपुआपु भूलबश स्थिर न होत
 जाते दुविधा नशाइये ३७४ मूढ़ताको वासतन पंडित प्रसिद्ध
 भूमि मूढ़ता न जानैज्ञान भक्तिकाको नामहै। गणक कहावै-त
 गणित बात बूझै ककु नृपति न भूमिरंच सैनधन धामहै ॥ साध
 करि ख्यातजानै साधना न एकजौन बाधक न मारैजीव सुमति
 सबामहै। मंगल तंथाहि ज्ञानि विदित कुधाम देखु दृढ़तानज्ञान
 की न खतन विरामहै ३७५ एकजलबिन्दु बूढिमरत पिपीलि
 जौन मनमत करत पयोधिअवगाहिहौ। क्षणक उड्यात धकैम-
 रंसक विचारै चित्त गगन निरंत ताके अंतलौ समाहिहौ ॥ आतप
 बिलोकि जातपारद बिलाइ सोऊ करत मनोरथ दिनेश धाम
 गाहिहौ। मंगलबिमूढ़ तैसे खोजत अगूढ़ वस्तु गूढ़ देखिभूमित
 कहत पूछौं काहिहौ ३७६॥सवैया॥ व्यास पुराणकिये कितने
 इक भावनसों बहुभाति पुकारैं। दायक सुक्ति बदैयक ब्रह्मकहै
 संक शंकरं जीवहि तारैं ॥ विष्णुकहैं यकशक्तिभगै यकरामकथा
 किधौं श्याम बिचारै। मंगल भूलपरी मन प्रडित आतमत्यागि
 फिरैं बहुदरैं ३७७ योगिनके मत योग समाधिरु लंगमेके मत
 चेतन बानी। जैन अनादि कहै भवकर्म सन्ध्यास स्वआतमधी
 निरवाती॥ चादि निराश भगै दुरवेष पुजावत ब्राह्मण पावक
 पानी॥मंगल येपटराग किधौं कहराइत राग न आन कहानी
 ३७८ तीरथ वासि ब्रह्म शुचि मंजन मूरति पूजक पूतरिव्याना।
 जापक मंत्र विधान सिखावत पाठक पाठ शरांग प्रमाना ॥

ध्यान स्वआत्म ध्यान कहै निजज्ञानि गुणावत उत्तमज्ञाना ।
 मंगलशालि मुमुक्षु सवैयन पोपत ह्यांकहु क्षेत्रविद्याना ३७६
 ईश्वर अग्रतही यहजीवहै बेदपुराण कुरानवतावै । पै अबजाइ
 सकैडिग तासुन अगमें क्यों कर जाइ समावै ॥ कोटिउपाय वि-
 धानकरै जपपाठ सुतीरथलौं फिरिआवै । मंगल शोच तजौ सि-
 गरे अपने घरमें निजवस्तु लखावै ३८० ॥ यथा ॥ ज्यों तरुते
 महिपातपरो फिरि ताहिलगैनहि कोटिउपाई । ऊरध औ अध
 आवत जावत संधितमीर भ्रमै बहुताई ॥ रोवतहै विललात
 दशौदिशि क्यों निजखानि लहैदुचिताई । मंगल ब्रह्म नपावत
 जीव तथा उपचार वृथाहि लखाई ३८१ यातनकी पतिवाढ़ि
 घटैमन भूषणवस्त्र अवस्त्र अभूषण । जीवतदा परमानंद पूरण
 ताकहूँ नाहिविदूष विदूषण ॥ ग्रीपम भीतयथा गतिआतप छी-
 जत वृद्धतनेकन पूषण । मंगल ज्ञानगुणी उरलागत क्योंहुन
 मूरुखके मनतूषण ३८२ एकदिशा विदिशा भरगै यऊऊरधऔ
 अथ खोजतडोलै । एरुउपायन में अटके यककर्म प्रताप सदा
 गति बोलै ॥ एकभरौ हरिकी महिमा यक आपन मे अपनी
 गढ़िछोलै । मंगल एकतवै भ्रमत्यागत हैथिरभावस्वभाव निचो-
 लै ३८३ क्योंभटके मनज्ञान बिहाय बिभासित रूपअरूप
 नंदोहै । ब्रह्मअनादि सहीबदसज्जन ठामकुठाम दुधा किमिसो-
 है ॥ स्वर्गवहै पुनिनर्क वहै गुरुशिष्यवहै सुनिषडित मोहै । मंग-
 ल क्योंन तजैदुविद्या उतसोइ विराजि रहाइत जीहै ३८४
 आवत काल जैजस जाकह होततवै तसकाल वटाऊ । काल
 स्वभाव दुभातिरचो प्रभुजानत सन्तसुभाव कुभाऊ ॥ कर्म
 कहावत धर्म बिहाये न व्यापक रूप बिहीन दुठाऊ । मंगलको
 समुझायत बालक अक्षर पाठकवेद प्रभाऊ ३८५ कालमें केतिक
 वीति गये युग आत्म भूत मुरारि पुरारी । केते अक्राश मही
 विनये सुरभानु दिनेश निशाचरवारी ॥ बेदपुराणविलान अनेक-
 न आगम कारक ज्ञानविचारी । मंगल आदि अनादि नही व्यहि

गावसकै न प्रवीण अनारी ३८६ शब्द स्वरूप वदे, एकजीवहि
 नाहिँ परै सुनि कान लगाये । एक भये परिपूरण ज्योतिनहाथ
 जरै भ्रमभूलगमाये ॥ आदि अनदि न जीवन गावत दूसरओर
 चलै मुदराये । मंगल जन्म अपारन खोजत वीतिगये न धरै
 फिरिआये ३८७ कोटि विचारि विचारि सरै कबितापट्टिकोटि
 बनाय सरैरे । कोटिन तीरथ धाइफिरै ब्रतनेम । अचार अपार
 करैरे ॥ पावक तापि तपाइ सरै पगएक दुपाद खडो विचरैरे ।
 मंगल बूझिपरैन विनागुरु वातन साधनसों न सरैरे ३८८ वेद
 ऋचा बहु बूझि भूमै बहु आयत बूझिकुरान पढ़ैरे । ब्राह्मण होइ
 कि शेखवनै चहु पण्डित आलिम नाम बढैरे ॥ आनगढी नित
 भापि रहै चहु चातुरिकै बहु आपु गढैरे । मंगल जानेबिना निज
 आतम या भवतेकबहु न कढैरे ३८९ साधनसाधिअनेक मही-
 तल वैठिरहे उरज्ञान विचारी । छंद कबित अपारबनाइ दुपाइ
 रहे विभुतान निहारी ॥ योगनमाधि तजेजलअन्नहि पै न लगा
 कछुहाथअंगारी । मंगलहै परमात्म सत्य न देखिसकै विपयी
 तन धारी ३९० जीवहि क्यों भरमावत तू जड आन किआन
 कथाकथि भारी । पारसकी खलपाथर गावतकांच गहावत बुद्धि
 बिसारी ॥ आंतन होत बिना दृढ़ता मति तर्क अनेककिये अवि-
 चारी । मंगल पूरिरहा सबही थल एकतुही न द्वितीय ब्यकारी
 ३९१ जन्मजरा न तजै अपनी मति ज्ञानधिवेक अपारनेगाये ।
 तीरथ न्हाय किये ब्रत संयम साधन साधि दशौदिशिधाये ॥
 जौलंगि आतम भाव गहै नहिँ पथकुपंथ सुपंथ चलाये । मंगल
 सन्त सबै निज गावत पै न बचै मृतु पायहि आये ३९२ अन्त
 समयजस आशुलहै तस्यों मुनि आगम वेद बतावै । भाषिवहै
 बहुसाधन गावत क्यों दुविधा अपनी मिटिजावै ॥ कर्म किये
 बिनु कर्म किये एक भाव पयान मनैनहिआवै । मंगल सिद्धि
 उपाय डतैजिमि पारस लोहकुये हरिभावै ३९३ त्यागि शुभाशुभ
 भव भाव उदासरहै चितधारे । काहुको धैर सनेहन

मानत मोहन मूरति चित्तपथारे ॥ ऊपरके तजि स्वांगसबै शुचि
 अन्तर पूरण ज्ञान विचारे । मगल साधु सही महिते जनसावर
 अन्त स्वच्छन्द विहारे ३६४ आनंद रूप रहै निशि वासर त्यागि
 सबै सुखदुःख अकारण । मौन रहैति भणै हरिकीरति अस्तुति
 सस्तुति जीवन मारण ॥ आपविबर्जित आषिर्वादनहीन तमस्त
 विरय विधिवारण । मगल सन्त स्वतंत्र विहारत सुंदर भाव
 किधौ भवतारण ३६५ एक नदीतट भेतु रचावत बूझतएक कहां
 जलथाहा । पैरत एकन पायत पारहि कूलहि एकरवहेदुखठाहा ॥
 बाधि घंटा अतिपारचलै यक दूमि कहै कि निरन्त प्रवाहा । मं-
 गल श्रीगुरु बोहित पायविनाअम एकतरै सरिबाहा ३६६ ऊ-
 मरि के फल वाति यथा नहि जानत दूसर देखवसैरे । त्योबहु
 जीव धरातल डोलत लोक अलोकन चित्त भसैरे ॥ लोकअपार
 किये करतार तहां बहु भाति गुणी बिलनैरे । मगल पै नलखै
 यहि लोकहि जीअनुमानन एकलसैरे ३६७ केतिक ग्रन्थपुराण
 सुनेपढ़िकेतिक पुस्तकभौनअपीरे । केतिक तीरथन्हायधक्योबहु
 मंत्रगयत्री सुभाय जपीरे ॥ केतिक पूजनपाठकियोव्रत नेमअचार
 कुचालि छरीरे । मगल आगन माधन तापनहाथन सूठीखुलीन
 ढपीरे ३६८ आपनसे करिये बहुतै परदोषबिबाद बढै उर वाको
 मौन भलीयहि कारण रेमन जीवनमृत्यु वृथानितताके ॥ अक्षर
 पाठक ग्रन्थपढ़ै किमि दीख उलूकन कंत प्रभाके । मगल क्यों
 उपदेशतअद्रुत बाहिर हेरतअतर काके ३६९ ज्यो जग लोग बढै
 तसभापिय अंतर आपनि वृत्ति बिराजै ॥ कर्मसुयर्मअकर्म विमोह
 कहावत सोकहिये सुख साजै ॥ निंदक मूढ़न बादि कथै ज्यहि
 कारण सो गुनि शुद्ध समाजै । मगलतत्य छिपाय धरौ उरझूठ
 बद्रौ भव आदर काजै ४०० क्यों मन झूठ कहौ भववीथिन
 आदरकौन निरादर कोरे । तू विषयी रसलपट रेमन संमत देस
 विषपरस भोरे ॥ अंत विभोग विलोकिय संसृति दुष्टमहाभ्रम-
 णा मनतोरे ॥ मगल सोनलगी अपने जलहाथ लगै न शिलाहि

निचोरे ४०१ लोक लिये, परलोकन भावत मोह विबर्द्धि लहै
 मनमाहीं । जो परलोक गहै तोरहै, कित लोकहिमें सबलोग
 सोहाहीं ॥ जीवनमें सबभांति सदासुख जीवनमें दुखकी परि
 छाहीं । मंगल ज्ञान बखानत टूटत है, गुण बेद कितेव कहाही
 ४०२ संमत साधु सदा सुखदामति नीच अधोगति दानिकहा-
 वै । जो जन सत असंतन चीन्हत सोदुखभोग कयौ नहिं पावै ॥
 आपनिवृत्ति समाधि रहीन द्वितीय विलोकति जीवहि आवै ।
 मंगल सोजग जीवनमुक्त न जात अधोरध ब्रह्म समावै ४०३
 त्यागि सबै भ्रम व्याउ सदाहरि आन भरोस, विहाय अरेमन ।
 ज्ञानसमेति सुकीरति ताकर गायकरै शुभकाज लहेतन ॥ मुक्ति
 पदारथ हाथलगै फल आनहुं पाय गुणै सुखकोगन । मंगलसत्य
 विवेक लियेनहिं स्वारथ सतनको द्वितियेंसन ४०४ मोहकुमार-
 गमें भटकै सविवेकन तूहरिको पदध्यावै । दानि अभिप्रिय दूस्-
 र नाहिन क्यो नहिं तूटढ़ता मनलावै ॥ नाम प्रताप दशो दिशि
 मंडित पंडित दान अजाकरवावै । मंगलभूल न जानत ईश्वरतू
 कल आयु अमोल गमावै ४०५ संगते पंडित होत महीतल सं ।
 ते दुष्टशरीर बनैरे । संगतेमूढ़ कुकर्मबिमोहित संगतेनीचकुली-
 न गनैरे ॥ संगते बेद विधान गुणैब्रत योग समाधि सुध्यानसनै
 रे । मंगल संग प्रकाशक ज्ञान कुसंगते उत्तम अष्ट पनैरे ४०६
 स्वांगनमें इत आयु गमावत रोगनको मनभोग बिचारै । संगति
 भावति मूढ़नको सतसंगति में न घटीकुविहारै ॥ स्वाद विषय
 रस चित्त वश्यो अवश्यो शुचिज्ञान हियेमें प्रचारै । मंगल चेति
 अज्ञौ भजिले हरिजन्मद्वितीय व्यकारहि टारै ४०७ जीवनहैष्टग
 याभवमें हरि त्यागि विषयरस जे लपटाने । कीट पतंगपशूखग
 भूयर तेपि भलेरस इंद्रिय साने ॥ जेनर कायहिपाय नध्यावत
 आतम शुद्ध स्वभावप्रमाने । मंगलतेजडतेजड जानिय क्योकर-
 तार तिन्हें निरमाने ४०८ तोहिं महाधिक है मनमूढ़न त्यागत
 आपनि चंचलताको । झूठविषयमेंप्रयुक्तरहै सतमारगपैन स्वजा-

नहिं हाको ॥ कामकला मदकी मदता-तजि लोभभजै-किनकंत
रमाको । मंगल सीख अपारदर्श नहिं तूजड शुद्धभयो दुखकाको
४०६ आतमही परमातमहै तटही नहिं दूरिफिरै दिधिचारी ।
वस्तुधरी अपने घरमे प्रतिद्वारकि खोजत ज्ञान विसारी ॥ पूछत
आन बतावत दूसर जोषिबदै परधाम विहारी । मंगल आपनि
नाकनटोवत मूरुख धावत काक पछारी ४१० आतमवास शरी-
र सहोकवि-सतन भापि बताय सकैरे । वाथल बुद्धिनहीं मन
कीगति कोटि कुयोजन धाड़थकैरे ॥ ज्योत्रियभीगकराय विना
न बखानिराकै चहुंकोटि बकैरे । मंगल आपुहि जानत आपुहि
ज्ञान द्वितीय न बुद्धिबकैरे ४११ याजग फागुन फागलगै अपने
गृह फागुकि बोरहमासी । लोग निलंजरहैं यकमास इतै नित
कामकरावत हासी ॥ नारि इतै फगुवागहि मांगत ह्यां नितलोभ
बयारि बिलासी । मंगल यातनते भवही भल जोमयाद गहेन
बितासी ४१२ जेतिकलागुल गाड रहेन बहू रसको अब कूटि
गयोरे । शुद्ध सतोगुण चित्तवसो तम मोहनदयो रविज्ञान उयो
रे ॥ खोजत जाहि सोआपुमिलो भ्रम भूलकिपद्वतिको बितयो
रे । मंगल मौनकि रामजपै रसनीरस नाम विवेकभयोरे ४१३
जोभ्रम आगिल पाछिलकी अरु सर्गुण निर्गुण को व्यवहारू ।
सोअब एक प्रमाण लखो दुविधा निज अंग बिकल्प विचारू ॥
निर्गुण नाहिन सर्गुण कोपि वहै सब ठाम स्वच्छद विहारू । मंग-
ल नागर आम्हवनी त्रिपु पूरुष एक विवेक निहारू ४१४
सौंपि स्वराज्यसबै निजमत्रिन भूषणयोवन ज्योमृगयाको । ज्यो
हरि आव इतै तनुधारि सुमोहन रूप बजै शुचिशाको ॥ कानन
राजहि जानत तेजन हैं जिन दीख कवीं नृपताको । मंगल संत
तथा पहिचानत ब्रह्म स्वरूपहि श्याम प्रभाको ४१५ चाहिय
आपन शुद्धस्वभावकहाच्युत अच्युतसो निजकाजू । ब्रह्महिश्या-
मजु श्यामहिब्रह्म स्वभाति दुभातिन ज्ञानसमाजू ॥ दोविधितो
भल एकहितो भलतू अपनीरहु त्यागिकुसाजू । मंगलहोइमही-

पतिकौनहुं दासकहाय न पाउव राजू ४१६ जाकर राज प्रजाहम
 ताकर जोहमहीतौ प्रजान नृपालू । कोअवतार धरैभवमें पुनि
 त्यागि कलेवर जात सख्यालू ॥ जानिवहै अतिदुर्लभ चीन्हवदु-
 स्तरभाव फँसा भवजालू । मंगल आपुहिभूलिकहा फलदूसरको
 सबबूझि हवालू ४१७ दूढ़तकाहिफिरै मनमूरुखदेशविदेश सक-
 एवटाऊ । सिंहपथ्यो पिंजराजिमि दौडत तोडतताहि न भूलप्र-
 भाऊ ॥ त्योअमपाय परीगलमें नहिंत्यागत चचलता द्यवसाऊ ।
 मंगलहैतौ तुहींनहिं दूसर अंतर बाहिर एकस्वभाऊ-४१८ मुण्ड
 मुडायगहे करवा दुखभोजनके घरअहेिकेआवै । जोन गृहस्थसो
 बंधनमें सुतनारि प्रयोजन वित्तमतावै । जोनहिंसंत गृहस्थनहीं
 तिनको कुदशा न कथेकथिजावै । मंगल कौनहुं भातिनहै सुख
 संसृतमें दुखहू दुखपावै ४१९ संतनटेक तजै अपनी भव व्याधि
 अपार सतायमरैरे । कोटिउपायकरे पितुज्यो प्रहलादसदाहरि
 नामरैरे ॥ जानिदुखी निजसेवक साहिव धाइसहाय प्रसिद्धक-
 रैरे । मंगलक्योखलदेखिडरै नितआपनि वृत्तिहिमेंसचरैरे ४२०
 दृष्टिदिये जगराग विलोकत कर्मवशी निरवाण विवादो । रामर-
 हीमबदै बुधपारस तारसको कुछजाननस्वादो ॥ मोहमयी मति
 बासुन आवत ज्योपशुपै शुचिचन्दन लादो । मंगलज्ञान वृथाहि
 धदै जडवानर जानत स्वादकि आदो ४२१ तालवजै न बजावन
 हारहै राग अलाप नगायककोई । देखनहार बिताचपमूरति नृ-
 त्यकपाद बिहीन लखोई ॥ शून्यगली तहँ आपुविराजत ग्राम
 तहां जनएकनहोई । मंगलसत्यन दन्तकथा गुरुगम्यलखै दुबि-
 धासब खोई ४२२ मारगमें सबदेववसै गणनाथ महेश रमापति
 देखे । शूरनिशाकर गंगतरंगिनि सूरसुता संगिरा त्रिपुलेखे ॥ दंड
 दुतीनि कुसाधनमें सब अद्भुत बातकिनैन निमेखे । मंगलयोग
 धदैसिधिसाधक अंधनबूझत वक्षुनपेखे ४२३ ॥ कवित्ता ॥ कोटिसमु-
 झावैगुरुमूरुखन बूझैबातपथाकाकश्चेतहोय धोवतनगंगमें जोपै
 नस्वभावी गुणबाहिरको रंगकाच ककुकसोहाथ जौलौरहत सु-

संगमें ॥ कूटिजात कालपाय कियौ मवजातहोत सुबुधि कुसंग
तजि नाफाज्यो'कुरंगमें । मंगल न भूलैज्ञान सम्पति अपारपाय
सत्यधाम पुरुष विलोकै निजअगमें ४२४-॥ सबैया ॥ को अव
ज्ञानगुणैसनमें मतिशुद्ध प्रकाश विचारि चुपानी । मारणहारन
पालनहारन तिर्जनहार त्रिपावकठानी ॥ एकस्वरूप अखड वि-
राजत तीनिप्रकार कयै भवज्ञानी । मंगलसिंधु कथान पिपील
वतायनकै ध्रमपथ भुलानी ४२५- वासरभानु उदोतकरै निशि
में, यगिखेचरहोत प्रकाशी । आदिअनादि दुअौविधि आवत शुद्ध
सुभावलिये स्वद्विलायो ॥ ईश्वरमय, सवभासिपरै विनु ईश्वर-
अव प्रभाकितनाथी । मंगल धन्यअहै करताररचोफिरि, ताहिर-
चोन दुभाथी ४२६, सत्यदयानिधि तूनबठामन रक्षतदास सदा
हितुमानी । को तुव कीरति गायसकै अति विस्तर रूप नजात
वखानी ॥ ज्ञानप्रकाश प्रभाकर मूरति मोह निशा ध्रम रूप ति-
रानी । मंगल जैति वदै करुणाकर, देहुस्वभाविक वस्तु अमा-
नी ४२७ श्रीगजटा न जडाउ वँष्यो नहिंमस्तकभूति न चन्द-
नरोरी । वासित अंग अवासित नाहिन तीरथ, औ व्रतते मति
भीरी ॥ मूढ़नमें गणना अपनी कविपंडित कीन कथा कछु
मोरी । मंगलदीख दशौदिशिमें प्रभु आइपरो गरणागतितोरी
४२८ मोहन मूरतिहै, परमानंद सत्य, विदानंद वेद वखाना ।
याभवभूल सबै त्रिविदेखिय काहि कहौंमनको अनुमाना ॥ एक
महीतल एकवसै सुरधाम दुअौकिमि एकसमाना । मंगल दीख
जहांतहँ मायहि हौगरणागति तू भगवाना ४२९ कोटिन भाव
कुभावे विचारिय कोटिन तीरथ धावतडोलै । कोटिन जाप जपे
अजपापुनि पाठरु कोटिन वाणिसुबोलै ॥ कोटिनपडित आलि-
महँ श्रु कोटिन वैयरसौरधि खोलै । मंगल ईश्वरकोकछुखोज-
न पावतहँ, कितनी गढ़ि खोलै ४३० जेगुरु के पदकी रज सेवत
तेपि सुज्ञान कहै कविताई । जे न गुरुगति जानत, मूरख तेन
सुज्ञान भयै ध्रमताई ॥ को गुरु सेवक नामइतै शुचि भाव भये

दुविधा मिटिजाई । मंगल मौन रहौ न कहौ कछु संत्य समाज
 करौ सेवकाई ॥ ४३१ ॥ जो दृढ़ता अपनी सतिमें न हितौ बत नेम
 वृथा तनपीडा । सिद्धि उपाय स्वभाव वहै नतसंत समाज उठा-
 वत ब्रीडा ॥ भोग विलास विषय भ्रमरूपक सोलहि जीव प्रका-
 शक क्रीडा । मंगल ब्रह्म बिधानको बूझत धर्मप्रवृत्ति किधौ गहि
 मीडा ॥ ४३२ ॥ गावत होत प्रयोग अहै ऋग् औ यजु अथर्वर जाहि
 बतौवै । सामभणै उदगात प्रयोगहि वेद अथर्वण शांतिलखावै ॥
 पुष्टि समोहन वश्य उचाटन मारण धंभन आदि गुणावै । मंगल
 वेदके धर्म सवाक्य बखानत सो अपनीपद भावै ॥ ४३३ ॥ जाग्रतको
 यकसार विचारत स्वप्नबिधानगुणै एकसारा । एक सुपुष्टि विवाद
 लगे पुनि एकतुरीय प्रमाण विचारा ॥ पै नहि जानत कौनु विमो-
 दतवादविवाद अखंड पसारा ॥ मंगल बूझमलीनहि आवत मूरुख
 खोजत सिंधुकरारा ॥ ४३४ ॥ जंगमरूप कहै एकसाधु वतावत । थाविरहै
 यकसंता । भेदन जानत वादिवखानत है दुहुभाव प्रमाण निरंता ॥
 आपनि भूल विवादत आन कि बोध न होत पुराण भनंता । मं-
 गल आतम शुद्धसतीगुण ताहि बिसारि भ्रमै मतिवता ॥ ४३५ ॥ सूय
 चपानन देखिसकै दृग मूँदि लखै बरुनैन पसारी । ऊलटि दृष्टि
 बिलोकत रूपहि सत्यकथा मुनिराज विचारी ॥ देखतही निज
 रूप मनोहर मोहमयी भ्रमदेत बिसारी । मंगल सानंद मुक्तम-
 हीतल उम्भ विलास कि बात नियारी ॥ ४३६ ॥ छन्द ॥ सातौ
 आसमानके ऊपर अर्धमुअल्ला कुसीहै । आपी तहां बिराजतमा-
 लिक हरसायत गति उसीहै ॥ जाननेहारा दूजा नाही यो कह
 वाणी फुसीहै ॥ मंगल हृदरही नहि वेहद स्वाम ख्याली पुसीहै
 ॥ ४३७ ॥ ऊपर को सबसैन बुझावै नीचेको सुधि नाहीहै । भटकत
 फिरै भूलिमायामें पूजा पाठन माहीहै ॥ कहता सुनता तर्कअ-
 नेकत गूढ़ अगूढ़ कथाहीहै । मंगल पै न बूझमें आवत है जैसा
 तैसाहीहै ॥ ४३८ ॥ यकनासूत वतावै संज्ञा यकजब रूत लखातेहै ।
 एककहै सलकूत देखिये यकलाहूत सुझातेहै ॥ यकचारीसेन्यारे

डोलें घरेहाहूत बताते हैं। मंगल भूली भटकी भावै ईतकी उत
 दरशाते हैं ॥ ४३६ ॥ जाग्रत सो नां सूतवतोइय खाबकथा ज्वरुंती
 है। है मलकूत खाब गुफलतमे निज ज्ञाता लाहूती है ॥ जहति
 आया तहासमाया सो आलम हाहूती है। मंगल पंचदश येचपती
 आनकहे मति सूतो है ॥ ४४० ॥ सूरजका प्रकाश जरीमानूर इलाही
 ऐसा है। सदी गर्मी कुछनहि उसमे मणि प्रकाश भी जैसा है ॥ वे
 नंजीर बेचून गाम है भया न होइ न चैसा है। मंगल समुझिली
 जिये दिलमें है वह जैसा तैसा है ॥ ४४१ ॥ अद्भुत मूर्ति क्यों कहि जावै
 हिय भावै जिये आवैजू। जिहा कहत वनतनहि कैतेहु रिरि क्यों
 करिस मुझावैजू ॥ सैन बुझावै बूझ न आवै कर्म किये नहि पावैजू।
 मंगल सत्य भणत मुनि साधू ज्यों गूंगा गुड खावैजू ॥ ४४२ ॥ सवैया ॥
 जे नहि जानि सैं कै गुण को। मेत ते किमि निर्गुण भेद विचारै। बेचत नित्य
 घराटि के जे नहि ते मणि माणिक मोल उचारै ॥ कर्मवशी भवभू
 तारजिते नहि ते गुचि आतम ज्ञान निहारै। मंगल खेल खिलारित
 के संग। मूसल के संग जीतत हारै ॥ ४४३ ॥ कंदखनै इक मूल भवै
 फल खायत मै इक क्षीर अहारी। ग्रीपम पावक मध्यदहैं तन धीत
 रहैं जलमें दुख मारी ॥ पावसमें तजि छाहैं रहैं जप पाठ करै भव
 याग प्रसारी। मंगल चीन्हत आतम जो नहि तौ भ्रम मेढिस बैन
 चनारी ॥ ४४४ ॥ ज्ञान गली न चले कबहू तिन को। कस सिद्धि सती
 गुण होई ॥ बाणिसुने निवाण विभास कि चक्रित वीधि रहैं बुधि
 खोई ॥ त्रिंश गुणै यह वंत कथा जप पाठ विधान न पूजति कोई ॥
 मंगल चतुर्निकारत सुंदत मूढ़ कि दर्पण को कपि जोई ॥ ४४५ ॥
 ब्रह्मिणे पूज्य गृहस्थन के पराधायक सवै जन पाहुँ परैरे। वेचपने
 मदमें अटके कहु ब्रह्म विधान न चित्त धरैरे ॥ ज्ञान ते बिद न भेद न
 भावन भक्ति ज्ञान तयाग धरैरे। मंगल भेदिय स्थान गही पंग
 पंच करै जस तैसा करैरे ॥ ४४६ ॥ वामव तापम नारित मी निरखे वम
 ता कहैं वीप लगावै ॥

दुविधा मिटि जाई । मंगल मौन रहौ न कहौ कहु सत्य समाज
 करौ सेवकाई ४३१ जो दृढ़ता अपनी मतिमें सहितो ब्रत नेम
 वृथा तन पीडा । सिद्धि उपाय स्वभाव वहै नत संत समाज उठा-
 वत ब्रौडा ॥ भोग विलास विषय भ्रमरूपक सोलहि जीव प्रका-
 शक क्रीडा । मंगल ब्रह्म विद्यानको बूझत धर्म प्रवृत्ति किधौ गहि
 मोडा ४३२ गावत होत प्रयोग अहै ऋग् औ यजु अंबर जाहि
 बतावै । साम भये उदगात प्रयोगहि वेद अथर्वण शांतिलखावै ॥
 पुष्टि समोहन वश्य उचाटन मारण थंभन आदि गुणावै । मंगल
 वेदके धर्म सवाक्ये बखानत सो उपनीषद भावै ४३३ जयितको
 यकसार विचारत स्वप्रविद्यान गुणै यकलारा । एक सुपुष्टि विवाद
 लगे पुनि एकतुरीय प्रमाण विचारो ॥ पै नहिं जानत कौनु विमो-
 दत वाद विवाद अखंड पसारा । मंगल बूझ भेली नहिं आवत मूरख
 खोजत सिंधु करारा ४३४ जंगम रूप कहै यकसाधु घतावत थावरहै
 यकसंता । भेदन जानत वादिवखानत है दुहुं भाव प्रमाण निरता ॥
 आपनि भूल विवादत आन कि बोध न होत पुराण भनंता । म-
 गल आतम शुद्ध सतोगुण ताहि विस्तारि भनै मतिवता ४३५ सूय
 चपानन देखि सकै दृग मूँदि लखै वरुनैन पसारी ॥ ऊलटि दृष्टि
 बिलोकत रूपहि सत्य कथा मुनिराज विचारी ॥ देखत ही निज
 रूप मनोहर मोहमयी भ्रम देत बिसारी । मंगल सानंद मुक्तम-
 हीतल दम्भ विलास कि बात निचारी ४३६ ॥ छन्द ॥ सातौ
 आसमानके ऊपर अर्धमुअल्ला कुसी है । आपी तहां विराजत मा-
 लिक हर सायत गति उसी है ॥ जानने हारा दूजा नाही यों कह
 वाणी फुसी है । मंगल हंवरही नहिं बेहद खाम खयाली पुसी है
 ४३७ ऊपर को सबसैन बुझावै नीचे की सुधि नाही है । भटकत
 फिरै भूलि मायामें पूजा पाठन माही है ॥ कहता सुनता तर्क अ-
 नेकन गूढ़ अगूढ़ कथा ही है । मंगल पै न बूझमें आवत है जैसा
 तैसा ही है ४३८ यकनामूत बतावै संज्ञा यकजध रूत लखाते हैं ।
 एक कहै मलकूत देखिये यकलाहूत सुझाते हैं ॥ यकचारी सेन्यारे

होलें परहाहूतं व्रताते है । मंगल मूली भटकी भावें इंतफी उत
 दरशातेहैं ॥ ४३६ ॥ जायतसो ना सूतवतीइय स्वावकथा जबरती
 है । है मलकूत स्वाव गफलतमे निज ज्ञाता-लाहूतीहै ॥ जहंति
 आया-तहासमाया सोआलम हाहूतीहै । मंगलपंचदशा येअपनी
 आनकहे मति सूतीहै ॥ ४४० ॥ सूरजका प्रकाश जरीतानूर इलाही
 ऐनाहै । सदीगमी कुछनहिंउसमे मणि प्रकाशधौ जैसाहै ॥ वे
 नजीर बेचुन नामहै भया न होइ न वैसाहै । मंगल समुझिली
 जियेदिलमें है वह जैसा तैसाहै ॥ ४४१ ॥ अद्भुतमूर्ति क्यों कहिजावै
 हियेभावै जिये आवैजू । जिह्वाकहत वनतनहि कैतेहु किरि क्यों
 करिसमुझावैजू ॥ सैनबुझावै बूझ ना आवै कर्मकिये नहिप्रावैजू ।
 मंगल सत्य भयत मुनिसाधु क्योंगूंगागुडखावैजू ॥ ४४२ ॥ तवैया ॥
 जेतहिंजानिसकैगुणको मनतेकिमिनिर्गुणभेदविचारै । बेचतनित्य
 धराटिकेजे नहिते मणि माणिकमोल उचारै ॥ कर्मवशी भवभू
 ताजितेनहिं तेशुचि आतमज्ञान निहारै । मंगल खेल खिलारिन
 केसंग भूसखके संग जीतत हारै ॥ ४४३ ॥ कदखतैं इक मूलभवे
 फल खायतयै इकक्षीरअहारी ग्रीषम पावक मध्यदहैं तनशीत
 रहैं जलमें दुखभारी ॥ पावसमें तजि छाहैं रहैं जप पाठकरै भव
 याग प्रसारी । मंगल चीन्हत आतम जौनहिं तौश्रम मेदिसवैत
 अगरी ॥ ४४४ ॥ ज्ञानगली न चले कबहू तिनको कस सिद्धि सती
 गुण होई ॥ वाणिसुनेतनिर्वाण विभासकि चक्रितधौधि रहैं बुधि
 खोई ॥ अचित्त गुणै महवतकथा जपपोठ विधान न पूजनकोई ।
 मंगल वस्तुनिकारत सुंदत मूढकि दर्पणको कपि जोई ॥ ४४५ ॥
 बाह्यपूज्या गृहस्थनके घर धार्यसवै जन पाहुँपरैरे । वे अफने
 मदमें अटके कहु ब्रह्मविधान नचित्तधरैरे ॥ जानते वेदनु भेदनु
 भावनु भक्तिंत ज्ञानत याग धरैरे । मंगल भेदधस्ती गहौपग
 पंथकरै जस तैसा करैरे ॥ ४४६ ॥ वासव तापसनाहि तमी निरखेवस
 ताकहैं दोष लगावै ॥ कौशिकापातुसकै संग मिलित क्षत्रियते
 शुचिबिप्र कहवै । विष्णुसलंघन शरिलगी शर्ब भवतैं कोडन

जीव लजावैं ॥ मंगल पंचकरैं, सोकरौ नत सत्यकहे जगनिन्दक
 गर्वि ॥ ४४७ ॥ दीख अनेकगुणी कवि कोविद जे रुविता सत्रितासम
 गावैं । आलिम फ़ाज़िल शेवरु आरिफ़ आयत जौन कुरानबता-
 वैं ॥ बातनके निर्वाण लियेवहु ऊपर केर विचार लखावैं । मंगल
 अंतरकी गति गावत आपुहि बूझत आपु लजावैं ॥ ४४८ ॥ जासन
 पुछिय मुक्तिगली सो बदै जप तौरथ पाठ अचारा । जोकरि
 कोटिन धांकिरहे फिरि क्यों भटकै मन ज्ञान प्रवारा ॥ हैतनमें
 सोमरै नतरै जोमरै औतरै सोधरीर व्यकारा । मंगल सिद्धसमा-
 धिन साधत बूझत आतम ब्रह्म विचारी ॥ ४४९ ॥ जोसबके शिर
 ऊपर सोहत तासुकथा किंनिजात वखानी । जो नचहै ततहोत
 तबै इत बंधनमोक्षकथा न कहानी ॥ जायपरै अस्यागतताकर
 जोकरैनाम जपै मुनिज्ञानी । मंगल भूलमिटै सिगरी अपतीपद-
 वी लहि होइ अमानी ॥ ४५० ॥ आपन बूझ बुझावत आनहिं सो
 किमि बूझिनकै मतिधूला । सूरज की द्युति होत नहीं सिंकता
 चमकौवतहै प्रतिकूला ॥ दंभ किमानता ज्ञान विधानहिं जो सब
 भांति नशावत मूला । मङ्गल भेडि चरावनहार चुकावत क्योंगज
 मोल अभूला ॥ ४५१ ॥ ईश्वरकी रचना लखिकै बुधि होत ठगीसिन
 बूझतभेदै । कोटिप्रपंचे करै व्यवसाउ यथा जल केदत होतन
 केदै ॥ बीज विलोकि निहारत पादप चौंकिउठे लहिकै उरखेदै ।
 मङ्गल क्यों करतागेति जौनत पंडित बैठिरहै तजिबेदै ॥ ४५२ ॥
 जोकहैनेमि कृपामिधिकी गति जानत सोमति साहिनबूझै ॥
 अंध कि संवल आपन देखत तापग पांवडिये मगसूझै ॥ नौमन
 सूत इतै अरुझौ सुलझावतहीं नितनित्य अरुझै । मंगल सोकिमि
 तोहि उबारिहि जोपहिले अपनैरण जूझै ॥ ४५३ ॥ पाहननाव न
 नीरतरै किमि पथिवद्वाय लगावत पारा । क्योंभ्रमि मूरुखसों
 भटकै निशिवासर व्याउ सदा करतारा ॥ पथअनेक प्रपंचप्रखा-
 नतहै कृत आनहिं आनविचारा । मंगल सत्यकहे नबनै इत
 भाषिय लोगनके अनुसारा ॥ ४५४ ॥ क्योंसुख देखिलहै सुदको

मनः औदुखः हेरिलेहै अथभारो । देवनकी शुचि आतमा मानत
 वैतथनके जडता व्यभिचारो ॥ एकस्वभाव सुवीतमधीनहि ज्ञान
 कितै केहिधाम बिहारो । मङ्गल सत्यविवेक लिखे निशिवासर
 नीरस एकप्रचारो ४५५ शुद्धसतोगुणज्ञान प्रकाशत बूझतही
 निरंवाणकि बानी । प्रहित शंखन घट बजावत गावतहै अपनी
 मतिमानी ॥ धाग बिहाय मुञ्जेजिन डोलहि लोगकहैं जडतावश
 प्रानी । मङ्गल जौलगि बूझन आवत तौलगि नेम अचार प्रमानी
 ४५६ निर्गुणवस्तु बिचार भयेउरें दंभ सवैं तजिदेत सुजानी ॥
 को निरखै दिशि पूरव पश्चिम आगम वेद पुराण कुरांना ॥
 तीरथ मूरतिमन्दिर सत्तजिद धायमजारफिरै भूमजाना ॥ मङ्गल
 जौलगि बूझन आवत तौलगि जौनकरै सोप्रमाना ४५७ काय
 कि घीणि अशुद्ध बिचारत शुद्ध बखानत धोलत तोता । यावत
 चित्त द्विभाव लग्यो मनतावत शुद्ध अशुद्ध समोता ॥ बोधभये
 दुविधा मिटिजाय विषय दधिमें पुनिखायनगोता । मङ्गल देखुतु
 ज्ञान कि आखिन जो इत सो उत क्योहु न होता ४५८ सत्य
 असत्य अपार न भायत लोगनको ठगिके धनजेरै । बाहिर हंस
 स्वरूपकिये अरु अतर लोभ सुकर्मनितोरै ॥ नीरस बाद बदैनित
 निर्गुण मोहमधी मतिधर्म न धोरै । मङ्गल याजगरूपप्रपचकजाने
 बिना दुविधा किमिछोरै ४५९ सिधुकि थाह पिपील न पावत
 थाहत आपनजीवगमावै । उयोमभ अत न संक्षिक जेवतकोटि
 उडान उडै फिरिआवै ॥ लक्षप्रकाशकरै सिकताकण नाहिदिनेश
 प्रकाशहि पावै । मङ्गल त्यों यह जीवन जानत ब्रह्म सनातन
 मूरति भावै ४६० क्यो मनबुद्धि गुणानिगुणै सुनि वेद पुराण
 कथा अनुमाना । मोहनिशा तजिदेखु दिवाकर आतमरूप अरूप
 प्रमाना ॥ हैतवमाहिंपरतु न दीसत या भूमको न कथा न पुरांना ॥
 मङ्गल बूझत आपनरूपहि वैठिरहै तजिमान अमाना ४६१ देह
 बिहाय न जीव त्रिलोकिय जीव बिहून रहै न शरीरा । जीवहि
 बेहअहै तनजीवहि सूक्ष्मयूल दुयाकृतपीरा ॥ बंधन मोक्षदुखी

ति तन घंवित जीव अवंध समीरा । मंगल तोहि न ज्ञानप्रले
 जो नहिं जानत जीव प्रथोरा ॥ ४६२ ॥ संपुट । पाठकरै यकप्रदित
 मृत्युंजय जापकरैरे ॥ गोशत दान दिवावित वाथल पर्वत
 लुटाव परैरे ॥ दान अजा शनि एक करावत गाय पुजावत
 हरैरे । मंगल हंस चलै परधामहि काहुके कर्म कछूनसरैरे
 एकहि लग्न नक्षत्र धरी तिथिवार ससंवतजाति विचारि-
 द्वैजनजन्मलियो यकठामहि एकहि योगकरन समहारिय ॥
 त भोगक मूढ़ द्वितीय धनीयक दूसर दीन भिखारिया मझल
 तिप बादसुआनहिं ईश्वरकी करणी कछु न्यारिय ॥ ४६४ ॥ दूरि
 खत धूललगे लघु ऊंचवढे लघुनीचमसेरी ॥ नैन दियेचममा
 दीरघ हेरत है दुविधा मतिधेरी ॥ भेदनही कछु अक्ष बिलोकि य
 हि दोषन है बुधिमेरी । मंगल आपन बूझहिमें भ्रम पंडितके
 बुद्धिकिहेरी ॥ ४६५ ॥ छंद ॥ पंडितवेद श्रवदरशावे विविध
 करि गावैजू । आलिम फाजिल बडामौलवी आयत बाधि
 वैजू ॥ जितवह वेद कितेव घनाई तिनकी गति नहिं प्रावैजू
 लसमुझि लीजिये दिलमें क्यों अवज्ञान सिखावैजू ॥ ४६६ ॥
 पाठ जापतीरिधवत वरणीअम मदभुल्लू है । मद्यविवाद दम
 की प्रियेवचन गतिभुल्लू है ॥ विद्याधन नृपताकी आफूसैदत
 कहूं खुल्लू है । मंगल है निर्गुणमत बिजया एकचुल्लूमेउल्लू
 ॥ ४७ ॥ बूझतही निर्गुण मतबानी सिगरीकथाभुलानी है प्रश्न
 उत्तरकुछ आनैदेत सुमति बौरानी है ॥ जिसको पहिलेहुए
 नै अवकह पूरण ज्ञानी है । मझल बूझ बिना पारस शिल
 त कीमति जानी है ॥ ४६८ ॥ जो कुछ वेद किन्तेव न जाना
 अव कौनुवतादैरे । बूझभये अपनेउर अंतर बाहिर क्यों करि
 रे ॥ जो कहने सुननेकी नाही कोअस ताऊह गावैरे ॥ मंगल
 देकी जीबीपरदा खुलैन पावैरे ॥ ४६९ ॥ सवैया ॥ सत्यकि
 बेट धीरज आवण ज्ञान जलोददया दिशि प्राची । वायु बि-
 क्षमामहि भर्षत बुन्द विचारसुधी खगनाची ॥ शालिबिब्रेक

संतोष लहा सुख पाखंड अर्कअपर्ण कुराची । मंगलसंत किसान
समोदित भापत है घरपायहसांची ॥ ४७० ॥ आखिनसों सबको नि-
रखेनहिं नैनन देखिसकै तेहिंकोई ॥ सुघत-वासु, सबै नितनाकत
वाकहँ वासित जातकहोई ॥ शब्द, अपारसुनै अतिद्वार न ताहि
सुनोअति कोटि धरोई । मङ्गल आतममोहविवर्जितमोहन रूप
वसैतन सोई ॥ ४७१ ॥ गावत ज्ञान कथाइतिहासहिबाणिसदा नहिं
त्राहिकथोई । स्वादसबै रसना बिलसै नहिं नीरसस्वाद । लखैकृत
कोई ॥ हाथनवस्तु अनेकगहैकबहु नहिवाहि प्रवीणगहोई । म-
गल आतममोहविवर्जितमोहनरूपवसै तनसोई ॥ ४७२ ॥ जोमन
औचितको भरमावत शुद्धअशुद्धगली मतिखोई । बुद्धिहिमोहि-
त नित्यकरै यदिबोधतहै तदिबोध न होई ॥ सर्वव्यकारि शरीर
लगावत आपुसकष्ट न देखिपरोई । मंगल आतम मोहविवर्जित
मोहनरूपवसै तनसोई ॥ ४७३ ॥ जाहि विचारि थकी मनकी गति
चित्तववाउते आपुचुपौई । ज्ञानकि मौन विवेकरहो उतजातन
दुसर भारग कोई । बुद्धिमहा जड़ता चितधारत जाहि नबूझ सु-
कोटिवदोई । मंगल आतम मोहविवर्जितमोहन रूप वसै तन
सोई ॥ ४७४ ॥ दमतिवादकिये कितने पढ़िवेद किताय चुपाइरहोई ।
बुझिफिरो बहु ज्ञानिनसो जेहिमोग समाधि अपार भनोई ॥ जाशु
कथासुनि आहिर देखत भीतर खोजत बाहिरजोई । मंगल आ-
तम मोहविवर्जितमोहनरूप वसैतनसोई ॥ ४७५ ॥ आतमजोनि-
वसैतनमें तेहिनाहिं क्षया न तप्रा कछु व्यापै । दुःखनताप जरा
न ज्वरा नित आनंद रूप विराजत आपै ॥ मोहनहीं सुत विच-
रितया धन आपुखंड स्वमत्र सुजापै । मंगल बूझत आतमभाघ-
हि ब्रह्म सनातन कौनुप्रलापै ॥ ४७६ ॥ दृष्टिविलोक्त रूपसबै नहिं
दृष्टिहिरूप विलोक्त प्राणी । बाणि धखानत वेद पुराणन बा-
णहि गायसकै अनुमानी ॥ ओत्र सुनैबहुशब्द यथा नहिं ओत्र
सुनै द्वितिये गुणखानी । मंगल त्यांनिज आतम है मन बुद्धिसकै
नहिं ताहि ब्रह्मानी ॥ ४७७ ॥ दृष्टिहि ब्रह्मजी देखतहै सबब्रह्मकिथों

वरदानि बताइय । कैश्रुतता जोसुनै सबवाद कि है मनब्रह्मसदा
 गति गाइय ॥ बुद्धिहि ब्रह्म जोचीन्हत ज्ञानहि पै भूम एक नहीं
 दृढ़ताइय । मङ्गलसर्व सुपुष्टि मिलै ग्रहिते जड भासत ग्रह न
 पाइय ४७८ उयो कविता कविते उपजै कविता कृतही कविना-
 महि पावै । मेघहिते जल नीरते मेघ धनी धरते औ धनी धन
 भोवै ॥ वृक्षतेबीज विवाहिते पादपको निरधार सुजान बतावै ।
 मङ्गलत्यों तनजीवकथा कहतेनवनै यदिचित्तहि आवै ४७९ जो
 महिनीर शिखीपवमान स्वभानुनिगेश नक्षत्रकहावै । लोकदि-
 शा विदिशा चपलाघन वेदसयज्ञ औप्राण बतावै ॥ वाणिसदृष्टि
 त्वचा श्रुततामन भास अभास जोशुक गनावै । मङ्गलजीव वि-
 लोकाजिते सबमें एक आतम आपुलखावै ४८० आतमवासेवि-
 हूनन जीवन औदृढ़तानहि देखिपरैरे ॥ जातत आतमकोन निवा
 ससोमृत्युग्रस्यो क्षणनाठहरैरे । कोटि उपायकरै व्यवसावहिबो-
 ल न डोल न सोनकरैरे । मङ्गलसन्तसदाशुचिभूतलजोनिजआ-
 तममें विचरैरे ४८१ लोको अलोक रावै नभमें नभहू अहंकारमें
 वासकियेहै । शक्तिमेंहै अहंकार जोशक्तिसो चेतनब्रह्मको बिम्ब
 लियेहै ॥ चेतनब्रह्म अनादि अपार बखानेत वेदसदा अविद्येहै ।
 मङ्गल तासुप्रभा निज जीव सोआनंदरूप विलास हियेहै ४८२
 तत्त्वनहीं महत्त्वनहीं अहंकार न शक्ति स्वतंत्र विलासी । ति-
 त्य प्रकाशित पै नहि भानुबसै मवठामन पौन प्रभासी ॥ नैनन
 देखत बाणि न बोलत काननहीं सुनता सुखरासी । मङ्गलताहि
 न दूसर जानत एक स्वच्छंद सदा अविनासी ४८३ जाहि विचा-
 रि न भावत दूसर कोटिकयै कवि कोविद बानी । देखनहार वि-
 लोकेतरूपहि अंगस्वरूप भनै अनुमानी ॥ दोउनमें एक भाव न
 आवत यद्यपि पूरणवस्तु बखानी । मङ्गल बूझव आन बताउव
 आनहिहै समुझै शुचिज्ञानी ४८४ जासन आपन ज्ञान बखानिय
 सो अनखाय रिसाध परैरे । मौनभली यहिकारण याजगसत्य कहे
 दुविधा पसरैरे ॥ उयो बक हंस कहै लघु धीनहि हंस कहै बुध

लोगुलरैरे । मङ्गल दम्भलिये उरजानन ऊपर, स्वांग अनेककरैरे
 ४८५ आवतहै मन उत्तम पूरुष एक अनादि त्रिलोक सजैरे ।
 हर्षअपार तरंगउठै उरपैसर बाहिर कोन भजैरे ॥ लोग कहैंहम
 को समुझाउरे मङ्गल तू कस देव जजैरे । सोनहिं बाणिमें आवत
 कैसहु संत विचारि विवादु तजैरे ४८६ कासमुझाइय रूपन रंग
 न धाम न नाम न मातपिता है । ज्योति न तत्त्वअमेय अमान
 अलिप्त अकथ्यपरे कविताहै ॥ ऊच न नीच, नथूलनसूक्ष्म, आदि
 न अत सदारमिताहै । मंगल बुद्धिनबूझिसकै, तिहुलोक प्रकाश
 नहीं सविताहै ४८७ ॥ दण्डक ॥ सरल समाज-चारिखानि-जल
 कृत देखुजलपवमान कृतसोतौ भूताकासहै । भूताकाश अंतरिक्ष
 चन्द्रलोकसूर्यलोक-सोऊतौनक्षत्र लोकपावत विलासहै ॥ भूपर
 वर्णावदेवलीकहीते देवलोक लोकगन्धर्वसोतौ प्रजापतिवासहै ।
 प्रजापति लोकसो वनायोब्रह्मलोकपाय मङ्गल अलोक आगेब्रह्म
 चिदाभासहै ४८८ देवकरि जानैताको देवसों विवेकहोत, भूतकरि
 जानैताके भूतरूप वासीहै । वायुसो विचारैताहि भासत समीर
 समनाकरूपवादे ताको नभसो विभासीहै ॥ भानु अनुमाने ताहि
 भावत दिनेशतुल्य, सगुणप्रमाणै वाकेसतनविलासीहै । एकरूप
 सोई न द्वितीयतात तीनिलोक मङ्गल विचारि देखा सत्स्रअवि
 नासीहै ४८९ जडवत रहत न जानत विधानवेद हंसरूपकाग
 होत अचरजवानीहै । जानिबूझि, त्यागिभूल सत्यपंथ लेतजौन
 तासुबात सबविधि, सुजन प्रमानीहै ॥ रतनको भावकोई जान-
 तीजवाहिरी, नजानत वणिक जौन बेचत भवानीहै । मंगल, सप्त-
 स्तंबस्तु, प्रथम विचारिदेखै फिरि परित्यागै सत्यभाव, चित्तआनी
 है ४९० जानेविनु भापत लजात जीवअपमूढ़, पूछत निकारैदांत
 अनहद बानीहै । ज्ञान, चौविवेक किथी, वसत सुठामजाहिबदत
 प्रमाणभापि कथाकि कहानीहै ॥ चलख वताय समुझावैसत्यभाव
 कहांअंयनमें राजाजाके एकआखि कानीहै । मङ्गल स्वरूपआपदू-
 सरी, कुरुपदेखै मूढ़ता किचातुरीवखानैकोई जानीहै ४९१ एक

घरवानि घटाइयं । कैश्रुतता जोसुनै सबवाद कि है, मनब्रह्मसदा
 गति गाइय ॥ बुद्धिहि ब्रह्म जोचीन्हत ज्ञानहि पै भूम एक नहीं
 दृढ़ताइय । मङ्गलसर्व सुपुति मिलै यहिते जड भासत ब्रह्म न
 पाइय ॥ ४७८ ॥ उयो कविता कविते उपजै कविता कृतही कविना-
 महि पावै । मेयहिते जल नीरते मेघ धनी धनते औ धनी धन
 भावै ॥ वृक्षतेबीज विवाहिते पादपको निरधार सुजान घटावै ।
 मङ्गलत्पो तनजीवकया कहतेनबनै यदिचित्तहि आवै ॥ ४७९ ॥ जो
 महिनीर पिखीपवमान स्वभानुनिशेष नक्षत्रकहावै । लोकदि-
 षा विदिषा चपलाघन वेदसयज्ञ औप्राण बतावै ॥ वाणिसदृष्टि
 एवंचा श्रुततामन भास अभास जोशुक गनावै ॥ मङ्गलजीव वि-
 लीकजिते सबमें एक आतम आपुलखावै ॥ ४८० ॥ आतमवात्सवि-
 हूनन जीवन औदृढ़तानहि देखिपरैरे । जातन आतमकोन निवा-
 सलोमृत्युग्रस्यो क्षणनाठहरैरे । कोटि उपायकरै ब्यवसावहिबो-
 ल न डोल न सोनकरैरे । मङ्गलसन्तसदाशुचिभूतलजोनिजआ-
 तममें विचरैरे ॥ ४८१ ॥ लोक अलोक सबै नभमें नभहू अहंकारमें
 वासकियेहै । शक्तिमेंहै अहंकार जोशक्तिलो चेतनब्रह्मको बिम्ब
 लियेहै ॥ चेतनब्रह्म अनादि अपार बखानत वेदसदा अविद्येहै ।
 मङ्गल तासुप्रभा निज जीव सोआनंदरूप विलास हियेहै ॥ ४८२ ॥
 तत्त्वनहीं महतत्त्वनहीं अहंकार न शक्ति स्वतंत्र विलासी । नि-
 त्यप्रकाशित पै नहि भानुबसै सबठामन पौन प्रभासी ॥ नैनन
 देखत वाणि न बोलत काननहीं सुनता सुखरासी । मङ्गलताहि
 न दूसर जानत एक स्वच्छंद सदा अविनासी ॥ ४८३ ॥ जाहि विद्या-
 रिन भावत दूसर कोटिकयै कवि कोविद वानी । देखनहार वि-
 लोकतरूपहि अयस्वरूप भनै अनुमानी ॥ दोउनमें एकभाव न
 आवत यद्यपि पूरण वस्तु बखानी । मङ्गल बूझव आत बताउव
 आनहिहै समुझै शुचि ज्ञानी ॥ ४८४ ॥ जासन आपन ज्ञान बखानिय
 सो अनखाय रिसाय परैरे । मौनभली यहिकारण याजगसत्य कहे
 दुविधा पसरैरे ॥ उयो बक हंस कहै लघु धीनहि हंस कहै बुध

जीभवखानै । नाकनसूय त्वचापरसैनहिं आनहुं इन्द्रिय कर्मन
 ठानै ॥ चिन्तहि चित्तनहीं अहंकारित औमनयावन बुद्धिप्रमानै ।
 मंगल चेतन आतमहीन नशैसिगरे नहि आपुहिजानै ४६६ जा-
 गि खिलारिखलो पुनि खेलहि तासुप्रताप सवैजन जागे । शब्द
 सुनै परसै अरु देखत चाखत सूंघतही अनुरागे ॥ कर्म कि इन्द्रि-
 य कामकरैं निजबुद्धि मनादि स्वमारग लागे । मंगल चेतनआ-
 तम आपुहि ताबिनहैं जडता सबेपागे ५०० आपन तेपुर तीनि
 पसारत ज्योंमकरी निजजाल पसारै । नेकघटै नसमेटिवटै ति-
 मि अंतसबै हरिअग विहारै ॥ सत असंत गुणीअगुणी सुरवैत्य
 कयाँ उतकौन बिचारै । मंगल एकहिभाव कृपानिधि जाननहार
 किआपुहिहारै ५०१ ब्रह्मसनातन ज्योति निराकृति पावकभानु
 निशाकर नाही । रत्नक्षत्र न वस्तु प्रकाशित प्राणप्रभासन भा-
 वि सकाही ॥ देखत जीवलहै पदआपन ज्यों परमातमकी पर
 छाहीं । मंगलकीउपमा जोअनूपम वैठिचुपाइरहौं घरमाहीं ५०२
 छन्द ॥ पहिला चक्र गुदाकेऊपर दितिय शिजनके आगैहै । नाभि
 स्थल तीजा चौथाहिय पंचम कठनभागैहै ॥ पष्ठम त्रिकुटीधाम
 अनाहद भनि जइसुनि सुखजागैहै । मंगल भगहोत नहिंकतहुं
 यकरसदय विधिलगैहै ५०३ यहध्वनि सुनतपरम पदपावै नि-
 जआतम अनुरागैहै । पुनित्यहिनाहि अविद्याव्यापै विधवा ल-
 हत सुहागैहै ॥ एकभाव चहुंखानि विलोकै चीन्हत हस न कागै
 है । मंगल चिदानन्द महि बिचरै नहिदाता नहि मागैहै ५०४
 जेहिध्वनि सुनी अनाहदनाही हृदय कमलमेंडोलैहै । विविध
 भांति दुखसुख ससृतमें खोवत आयुअमोलैहै ॥ मायामोह असै
 अनवाकी दुविधगिरा गतिबोलैहै । मंगल जौलगि आपुन जा-
 नत तौलगि नरपशुतोलैहै ५०५ ॥ दंडक ॥ अमित विधानश्रुति
 अगिम वखानदेखि बुधिपिर होतनाहीं दुविधाके थानमें । जा-
 नत प्रकाशरूप मानत बिभासजाहि मोहतविमोह आपुमनबुधि
 प्रानमे । तीनिदेह पंचकोप पाचप्राण भूलभाव एकआपु दितिय

अर्थ काहू विधि पाठ कीन्ह अर्थ हीन ज्ञानिनसे वादकरै बोलि
 बोलि धानीहै । ज्ञान औ विचार कौन बूझत न शुद्धचित्त त्वारि और
 मोह मोयतिन लपिटानीहै ॥ आपु सम दूसर न मानत विमूढ
 सने माधुता कि बाते दूरि बड़ी अभिमानी है । मंगल तमानै राउ
 सांचीतौ कहावत है विडिया के धाम धरी जैसे कौडी कीनी है ४८२
 संवैया ॥ तूमने जानत है अपनी गति तापर मारग वाम राधावै
 जो विभताहि प्रेजसिमे जानत को अवती कहं ज्ञान लिखावै ॥
 पावक नीर बुझावत है जो पै नीर जरे फिरि कौन बुझावै । मंगल मू-
 रुख संत सखावत संत भ्रमाय कहा वनि आवै ४८३ वेद विधान
 बतावत पंडित आपु दुचित्त विषय लपिटानी । बाहिर उज्ज्वल
 अंतर इयामरंगे पंगचोचन हंस प्रमानोषा और न को भ्रम रूप गिरा
 वत आपुने मूरुख ज्ञान भुलानी ॥ मंगल का कहिये छल बादिहि
 संत्य मिटाय अतत्य हिरानी ४८४ एकन के प्रण पाठ विना जल
 पान करै नहि वासर काहू । रोग ग्रस्यो प्रणेत्या गि पियो जल आनि
 परो उर अंतर दाहू ॥ बक्रित पाठ तृपा अति दबा पित जो जल में नहि
 पाठ उछाहू । मंगल दभ परित्यजि जो कृतसी सत कर्म बदे विबु-
 धाहू ४८५ अंतर श्री हरि ध्यान विराजत बाहिर काज विषयरत
 जोई । ता कह संत बखानत को बिद पाप अपाप असै नहि कोई ॥
 जा बिधि भावर है जगता बिधि कर्म सुकर्म न जात बदोई । मंगल
 संत समान सु गीनहि भाव द्वितीये धरे हिय सोई ४८६ चीन्हत
 सूरज पाप सवै दिन में निशि चन्द्र प्रकाशहि पाई न । अस्त भये दुहुं
 अग्नि प्रकाश सो पावक नाशत शब्द प्रभाई ॥ शब्द धिहू न नधी-
 निह स कैतब आतम की बुधि चेतन ताई । तावल लोक तिहू पहि-
 चातत मंगल आपु निवस्तु पराई ४८७ शक्ति दायो तम इन्द्रिय
 खीचिके पांचहु प्रण समेदि चले । चित्त अहं कृत लै मन बुद्धिहि
 स्वप्न प्रदेश रंचै स्वलैरे ॥ जाग्रत की संववस्तु दिखावत देखि
 प्रसन्नत सत्य छले । मंगल बाकि सुपुष्टि गहै इनहुं सब को तजि
 तौ न धलै ४८८ कोटि करै नहि नैन बिलोकहि कान सुने नहि

जीभवखानै । नाकनसूत्र त्वचापरसैनहिं आनहुं इन्द्रिय कर्मन
 ठानै ॥ चिन्तहि चित्तनही अहंकारित औमनयावन बुद्धिप्रमानै ।
 मंगल चेतन आतमहीन नशैमिगरे नहिं आपुहिजानै ४६६ जा-
 गि खिलारिखली पुनि खेलहि तासुप्रताप सवैजन जागे । शब्द
 सुनै परसै अरु देखत चाखत सूघतही अनुरागे ॥ कर्म कि इन्द्रि-
 य कामकरै निजबुद्धि मनादि स्वमारग लागे । मंगल चेतनआ-
 तम आपुहि ताविनहैं जडता सबपागे ५०० आपन तेपुर तीनि
 पसरत ज्योमकरी निजजाल पसरै । नेकघटै नसमेटिवटै ति-
 मि अंततवै हरिअग बिहारै ॥ संत अमंत गुणीअगुणी सुरदैत्य
 कथा उतकौन विचारै । मंगल एकहिभाव कृपानिधि जाननहार
 किआपुहिहारै ५०१ ब्रह्मसनतिन ज्योति निराकृति पावरुभानु
 निशाकर नाही । रत्ननक्षत्र न वस्तु प्रकाशित प्राणप्रभासन भा-
 वि सकाहीं ॥ देखत जीवलहै पद आपन ज्यों परमातमकी पर
 छाहीं । मंगलकीउपमा जोअनूपम वैठिचुपाइरहीं घरमाही ५०२
 छन्द ॥ पहिला चक्र गुदाकेऊपर द्वितिय गिरनके आगैहै । नाभि
 स्थल तीजा चौथाहिय पंचम कंठसभागैहै ॥ पंचम त्रिकुटीधाम
 अनाहद ध्वनि जहसुनि सुखजागैहै । मंगल भंगहीत नहिंकतहूं
 यकरसदश विधिलगैहै ५०३ यहध्वनि सुनतपरम पदपावै नि-
 जआतम अनुपगैहै । पुनि त्यहिनाहिं अविद्याव्यापै विधवा ल-
 हत सुहागैहै ॥ एकभात्र चहुखानि बिलोकै चीन्हत हग न कागै
 है । मंगल चिंदांनन्द महि विचरै नहिंदंता नहिं मागैहै ५०४
 जेहिध्वनि सुनी अनाहदनाहीं हृदय कमलमेंढोलैहै । विविध
 भाति दुखमुख संसृतमे खोवत आयुअमोलैहै ॥ मायामोह असै
 मनवाकी दुविधगिरा गतिबोलैहै । मंगल जौलगि आपुन जा-
 नत तौलगि नरपशुतोलैहै ५०५ ॥ दंडरू ॥ अमित विधानश्रुति
 आगम वखानदेखि बुविधिर होतनाही दुविधाके थानमें । जा-
 नत प्रकाशरूप मानत विभासजाहि मोहतविमोह आपुमनबुधि
 प्रानमे । तीनिदेह पंचकीम पाचप्राण भूलभाव एकआपु

ज्ञानिनमें न विलोकि परैरे । तर्कनमें न अतर्कनमें शुचिवक्रतमें न
 अवक्रचरैरे ॥ सूढ़नमें न असूढ़नमें गतिगूढ़नमें न निगूढ़ धरैरे ।
 मंगलयत्र विचारियतत्र न औ सबठा मनमे विहरैरे ५२०, जो
 मनतोहिं सिखावतज्ञान अनादि अनन्त विधान बतावै । ताकहँ
 तूनहिं चीन्हंत मूरुख कोटिन योजनलौं फिरिआवै ॥ तीरथ
 मूरतिमें हरिखोजत दोषअदोषनमें भ्रमखावै । मंगल लोग कहैं
 यहिकारण मूरखहै मनसत्यनखावै ५२१ पांचहितस्वनते, उपजैं
 सबजीव चराचर देखबिचारी । वृद्धिलहैंसुख दुःखसहै, बहुज्ञान
 विधानकरैं व्यभिचारी ॥ अन्तसमय मिलि जातसवै, अरतस्वहि
 में मुनिबाणि पसारी । मंगलबाण अवाण त्रिकल्पन भूलकि, प-
 द्धति भूतलन्धारी ५२२ यद्यपिजीव वनस्पतिहूमहँ पैमनहैतिन
 केउरनाहीं । पक्षिपतंग चतुष्पद नागमें जीवसही बुधिमा तिन-
 माहीं ॥ उत्तमकाय मनुष्य धरातल जामधिबुद्धि मनादिलखा-
 हीं । मंगलताकहँ पायनव्यावत आतमहै जडता परछाहीं ५२३
 तत्त्वरचे गुणदेवअदेव वनस्पति कीटपतंगवनाये । पक्षिसरीसृप
 औ पशुखेचर आदिविनाशम सर्वउपाये ॥ पै न प्रमादित भोकर-
 तातव बुद्धिस्वरूप कियौ मनुजाये । मंगल तादिन ते करतार
 चराचर जीवनहीं निरमाये ५२४ स्वेद प्रसादते स्वेदज होवत
 चीलढलीख जुआ जगजानै । अण्डतेअण्डज कीटखगामि पिपी-
 ल सरीसृप आदिप्रमानै ॥ भूजल भानु प्रयोग वनस्पति उद्भिज
 होतसदा निरमानै । योनिज मानवऔ पशुसम्भव सो नरनारि
 प्रसंग न आनै ५२५ जाग्रतमे मनआन, विचारत स्वप्न समय
 कछु आनकरैरे । सो तजिदेत सुषुप्तिप्रचारत आपनहूँ सुधिते वि-
 सरैरे ॥ तद्यपि ज्ञान न आवतहै, चितःकषों भरमाय, भुलाय, म-
 रैरे । मंगल मूरज तापनके वष क्योँ कहिये कथनी, विगरैरे ५२६
 आपनि बुद्धि अदोषित, चाहिस ब्रह्मसत्तै धूलभापि परैरे । जोदढ़
 ता बुधिमें नहि-तो लनुचित्रित पूतरि रंगभरैरे ॥ सूढ़ विलोकि
 प्रणामकरै बुध देखिगुणी गुणकोपकरैरे । मंगल का कहिये विषया

निज वृक्षत भाव न आन धरैरे ५२७ दायक वृत्ति समर्थ, कृ-
 पानिधि पण्डित सज्जन वेद बतावै । देतसवै, अन्याम सदानर
 जानि, न तोप स्वचित्तहि लावै ॥ नित्यभ्रमै प्रतिठाम विमोहित
 पालक भूलि न जीव लजावै । गंगल ध्याऊ सदा परमात्म-जो
 सब ठामनमें छविछावै ५२८ ॥ दण्डक ॥ शैवी शिव ब्रह्मवाहुँ
 जैनी अरिहन्त कहैं बौध कहैं बुद्धादिब्रह्म अवतार है । कर्मही प्रधा-
 न भनै जगवद्धमीमाता ज्ञानी न्यायी कहैं त्रिपुरको, एककरतार है ॥
 वदत वेदान्ती सत्यब्रह्म अजयोनि योनि सगुण उपासी गावैराम
 सम सार है । शक्ति शुचिवादी भाषै प्रणव प्रधानरूप-मंगल असत्य
 नाही दुविधा अपार है ५२९ वेद की न, अनै न, कितेवकी बखानै
 कहुआन अनुमानै धन्य मन्तनकी बानी है । सत्यन दृढ़ावै, न अ-
 सत्य मानलवै गुणिआनहीं सुझावै सुधीउलटी कहानी है ॥ जाहि
 वृक्ष आवै ताहि मोहन सतावै आपुरग रूपपावै नाहिरंगति रंगानी
 है । मंगल प्रबोध होत वीन्है सत्यनात मोतचढ़ै धाय ज्ञान पोत पार
 वाट जानी है ५३० ॥ गोपालकण्ठ ॥ एक उपदेश लखै न आप ।
 प्रणवमत्र अजपाको जाप ॥ योग बतावै करै न सोम । मंगल बुद्ध
 अविवेक न होय ५३१ पण्डित आगमकरै विचार । ज्ञानी क्षर अ-
 क्षर विस्तार ॥ पढ़ै मोलवी सुरुचि कुरान । मंगल आपु नपावै
 जान ५३२ कायरवाना वीरवनाय । समरभूमिसौ किमिठहरा-
 य ॥ त्यो पाखण्डी भवदरशाय । मंगल सन्त छलीनहिं जाय ५३३
 अग्निविनाशै जल बहुताय । बडवानल नहिसकै बुझाय ॥ मूरख
 कोदम्भी छलिखाय । मंगल ज्ञानी ठगो न जाय ५३४ ऊपरहंस
 अतरितकाग । मेउ मेउ बाणी भगनाग ॥ माला तिलकविभूति
 निचाल । उदर निमित्त घचन चढोल ५३५ वेद किताब न जानै
 जाहि । पाखण्डी बरशावै ताहि ॥ अलख बताय लखावै रूप ।
 मंगल ज्ञानी मूढ़ अनुप ५३६ बाणीमें तहि ब्रह्मसमाय । कोटिपुरा-
 ण कुरान कथाय ॥ जोहैसो न कथा इतिहास । मिथ्या मायारूप
 विलास ५३७ काष्ठान्तर पावककोवास । पवननीर करिसकै न

नास ॥ त्यां शरीरविच जीवप्रवीण । कालगृहे ककुपरे न क्षीण ॥ ३८
 वेद उपनिषद आगमज्ञान । अवरणकियो केवहू न हिंता ॥ पढाएक
 द्वैभाषा ग्रन्थ । मंगलवादी विचरत पन्थ ॥ ३९ ब्रह्म लखावैमोह
 मलीन । शुद्ध संतो गुणगहे गलीन ॥ निजविस्तार भेद न हिं पाव ।
 उपजत मरत स्वभाव अभाव ॥ ४० त्यागी भयो न त्यागे दम्भ ।
 रवि पवि मूढ बालुकृत धम्भ ॥ गेहिनमें नित हीत गृहीत । प-
 वन उडावत बालूभीत ॥ ४१ गुदंडी अलफी जटा लंगोट निगने
 अभूषण तरुवर ओट ॥ आयुविताई तनु दुखपाव । मंगलहाथ
 कछून हिं आव ॥ ४२ जेते गुणगण ज्ञान विलास । जिह्वाग्रहितूकरते
 प्रकाश ॥ सोकित धरे रहै तनु माहि । जोस मुझावै बूझै ताहि ॥ ४३
 ब्रह्मज्ञानी जो जंग आहि । वन्धन मुक्ति न व्यापत वाहि ॥ जीवो-
 द्धारण बोलै वैन । बैर प्रीति दुविधा मन है न ॥ ४४ निर्वाणी नि-
 गुण कृतवाद । जीभ चवाये लगत न स्वाद ॥ जो पुरुषोत्तम भा-
 वत सत्य । मंगलमेढत जन्म विपत्ये ॥ ४५ इष्टदेव फल देत समोढ ।
 फल आशा बन्धन चहुं कोढ ॥ निष्फल वृक्षन सेवत कोड । सेवत
 जैन निराशा होइ ॥ ४६ जादिन गुरु न शिष्य द्यवहार । क्रिया
 कर्म जवन हिं कर्तार ॥ तवधौ द्वैत कि ब्रह्म अकेल । शून्य किधौ यह
 अद्भुत खेले ॥ ४७ निराकार को उभये अकार । सेवठां कोड बैकुंठ
 विहार ॥ शिव नारायण ज्ञान विचार । मंगल होत न हीं निरधार ॥ ४८
 प्रथमै ब्रह्म कि माया होय । बुधजन हमें वतोवै सोय ॥ जो पैव
 ब्रह्म है आदि । माया विषय रूपिणी वादि ॥ ४९ तो विज्ञान कर
 वरणीय । समुझत दुविधा कथी न जाये ॥ मायान श्वर बदै प्रवीन
 चेतन पुरुष अलिप्त अरीन ॥ ५० मायानाशि पुरुष मिलि जाय
 चौदह भुवन विभूति नशाय । कौन बखानै जानै ताहि । मंगलय
 मन मता न आहि ॥ ५१ मार्ग एकचलै संसार । नहिं द्विती
 कारण विस्तार ॥ वहै पन्थ मुनि धारण कीन । चीन्ह्यो आत्म पर
 प्रवीन ॥ ५२ कथै विपर्यय धांणी एक । मूरख क्यों करि सकै बि-
 क ॥ एक अनाहत वचन प्रकाश । मंगल वाणी बुद्धि विलास ॥ ५३

क्षुधापिपास विवर्णदिनरैः । प्रतिथल फिरतप्रचारितवैः॥ आप-
 निमति थिरता गतिहीन । मंगल परमहंसपदलीन ५५४ जौन
 पुरुष पदजानैआप । वृथाप्रणव अजपाकोजापा॥ अविवेकी सबके
 घरखाय । प्रवचअहै तेहिते अघिकाय ५५५ यत्र तत्रकरि वृथा
 बखान । प्रतिकूलित वाणीनिर्वाण॥ आपुविषय रसभोग प्रयुक्त ।
 मंगलसोजगजीवन मुक्त ५५६ पयधृत मिलित भोज्य मिष्ठान ।
 पावै सदाप्रकाशै ज्ञान॥ व्यापैकाम वैसकिनहोय । निजकर रेत
 गिरावत कोय ५५७ करै बडाई आपनि आप । प्रतिथल मिथ्या
 वचनप्रलाप॥ जोसुगन्धिसो आपुवसाय । गन्धीमुख चीन्होनहि
 जाय ५५८ ॥ सवैया ॥ यातनवृक्ष सवैपरमातम जीव खगामि
 सदा सुखदाई । भोगबिलास किंयौफल रूपक जीवगहै मनबुद्धि
 स्वभाई ॥ तावय जीवनमुक्ति लहै भवभूतलयो अतिवाणि सु-
 नाई । मंगलहै परमातमगुह्य भवैफल नाहिन जन्मत आई ५५९
 जोमतिदेखिय दृष्टिपसारि कै तामहुं पाखंड देत दिखाई । गुह्य
 सतोगुण कोउगहेनहिं आपनि आपनि चाहबडाई ॥ एकद्वितीय
 को तुच्छवतावत कोबडछोट कहै भ्रमताई । मंगल ठीकन आ-
 वतं चितहि ब्रह्मसनातन देतलखाई ५६० वेदवदै सबकेथिरपै
 पुरुषोत्तमहै अविनाश अकेला । बायल दीनमता नरनारिन पं-
 डित आलिम औ गुरुवेला ॥ जानत वाकहूँ दूसरनाहिनहै अनु-
 मान महान अपेला । मंगलबुद्धि भसैनहि मूरति होतप्रकाश न
 भानुनवेला ५६१ ॥ छन्द ॥ जिनप्रकाश प्रच्छाहीदेखी तिनकी
 मति घोरानीहै । कोटिज्ञान पण्डित समुझावै कौनसुनै विपत्रा-
 नीहै ॥ गृहबाहिर अलमस्तविराजै आनंदमय प्रिज्ञानीहै । मंग-
 लकहा बुझावै औरहि अद्भुतकथा कहानीहै ५६२ ॥ सवैया ॥
 नामनही फिरिकाकहि गाइय धामनहीं कितबास कहैरे । देह
 नहीं केहि ध्यानबखानिय दैतनहीं जप एकलहैरे ॥ चेष्टितनाहिं
 जोनेह वताइय वस्तुनहीं करकाहि गहैरे । मंगल अद्भुतवाद
 बडो इतहीं सुनबैठि चुपाडरहैरे ५६३ तूमन जौनकहीसोकरी

हमयोजन केतिकथाय, चलेहैं । आसन वेदकितबि लिखेवतती
 रथमूरतिपूजि भूलेहैं ॥ छंदकवित् रचे नवभांति विषयरसभोगसु
 मत्रचलेहैं । मंगल बूझभये तजिपाखंड जानिवृथा निजहाथ मले
 हैं ५६४ मुक्तिकहूनहिं बन्धनहै मनतू अवही भ्रम पदतिधारे ।
 बंधनमोक्ष कहावत नामहि नरकरुरग वृथाहि विचारे ॥ जीवन
 मुक्त स्वरूपतुहीं लखुज्ञानके अक्षसुदृष्टि पसारै । मंगल बूझभये
 दुविधागतहै अरुनाहि दुवौभ्रमटारै ५६५ क्यों निरदोपरमै भव
 बीधिन पापकुदृष्टि दुराश्वसेरा । कोटिव्यकार विधातनव्यापते
 मानतहै नहिं कामे कीचेरा । जाहिवुझाड्यो ज्ञानसुमारग सोसुनि
 जानत दुःखयनेरा । मंगल आतम कौनविचारत दंभ बिबाद किये
 भटेभेरा ५६६ मोह बिलास विषय परिहास समोदित तूमन
 चित्तपधारे । आवइतै खलखांड खरीदंन खोरिखरीदत ज्ञान बि-
 सारै ॥ संतस्वभाव न भापतहै उर दुष्टक्रिया हितसो कृत न्यारे ।
 मंगल ऊपर छांपलिये स्वकमुक्ति होइवृथा उपचारै ५६७ कौन
 गृहस्थ जो इंद्रिनकेवश कौन प्रवीण जोबूझत ब्रानी । कौन गुरु
 जो बुझावत आतमा शिष्य कोहैं जो स्वभाव अमानि ॥ ब्राह्मण
 कौन जो हैसमधी पुनिकौन महत स्वआत्मनधानी । मंगल सत
 को है जो अमाने नहीं दुविधा ज्यहिकी मतिभानी ५६८ जेतिक
 लोगअहैं मन भूतल ज्ञानविना नहिं देखि परैरे । जासन भूढ़
 कहौ सो लडै उठिसाधुकहे हितसों बिचरैरे ॥ त्यागत है नहिं
 मोनकिंपदति ज्ञानिनको संगकौन करैरे । मंगल तूवड मूरखया
 जगमाने कुमारग पांवधरैरे ५६९ मानगहे भवबीधिन भ्रामिक
 आतहिये सुखआन कहैरे । वेदकितबिन अक्षरजानत आतमभाव
 हि धाम गहैरे ॥ आलसकेवश होलपुरिअमनाहिंन भिक्षकभाव
 लहैरे । मंगल शिष्य कियेधनके हितदंभ अरुयो नहिं सत्य अहै
 रे ५७० पीतलसंत स्वभाव सदानहिं कौधिकिपावक चित्तप्रजारै ।
 भोगविषय किन आशहृदयनहिं कामवतासु शरीरप्रचारै ॥ धैर
 बिसोहन व्यापत जीवहि बुद्धि मनीहर धारि उचरैत मंगल

होलततोरे विमण्डित खण्डित दम्भविवाद प्रकारै ५७१ वाद
विषमनहि भावतहै नितज्ञाने विवेककथै शुचिवानी । मौन्य रहै
मत्तध्यान हृदयहैरि शुद्ध संतो गुणी निरवानी ॥ हंस दशा जह
चैतनहै विधिपण्डित बालक चालिनजानी । मंगल आतम ध्यान
सवारति दूसरिबुद्धि न चित्तसमानी ५७२ सोहतनित्य स्वआसम
तोपित शुद्धसमाधि लिपेपटभांती । जो विचरै भवती मुदसंयुत
वृक्षत सुंदरजाति कुजाती ॥ तीनि निधान वसै गृह काहु के वेद
कि स्त्रीख सिखावते जाती । मंगल है तनु एकगहै नहि निन्दक
और प्रशंसक खाती ५७३ जायमिलै सतसगति संतन धायगहै
जनसाधु विचारी । आपनको सबते लघुजानत आनन को शुचि
ज्ञानविहारी ॥ मातप्रिया गणतात सबै नर ऐसहु एक गुणीन
अनारी । मंगलसंत महीतलहै असकोनु कथै महिमा बडि भा-
री ५७४ संतनको नितमोर प्रमाणहै संतनको नित नौमि सने-
हा । संतनको जनसंततहौ मनसंतत के पदमो उरयेहा ॥ संतन
की महिमा चितभावत संतनके हित आपनिदेहा । मंगलदम्भिन
ते गुरुदूरिहिरा विषमोहिं अहै प्रणएहा ५७५ कारणब्रह्म अहै भव
को उपजे तेहिते पुनि ताहिसमावै । कोउ भयो जगकारण कालहै
आपुनचै पुनिपालि मिटावै ॥ होत स्वतंत्र वैदिक कोविद अन्त
स्वच्छन्दनचै मनआवै । मंगलभूल मिटायसकै नहि कोटि पुरान
कुरान सुनावै ५७६ एककहै जगकारण कर्महि एकजु पाचहि
तस्ववतवै । हैकरतार सहीयक भापत पै नवतावनहार गुणावै ॥
गावतएक किशो प्रकृती जगअंत समेटि स्वयंग मिलवै । मंगल
भूल मिटायसकै नहि कोटि पुरान कुरान सुनावै ५७७ कंचनगर्भ
तेहै अपनी सबऔ परिणमतही मिलिजावै । योग सबैकर एक
कहै भवकारण मिश्रितवस्तु दृढवै ॥ आपनिवाणि भली सबही
वदिगुंगुहै तदिदंडन पोवै । मंगलभूल मिटायसकै नहि कोटि
पुरान कुरान सुनावै ५७८ योगियती तपसी बुधमौनि उदासि
कबी श्रवज्ञानप्रवीनो देव अदेव मुनीश्वर मूलख सुपति रफयन

बलहीनो ॥ संतगृहस्थः अधार्मिकः धार्मिकः आत्मज्ञानि, समा-
 हिभीनो । मंगलकोउ रहा न महीतल कालबली सधको त-
 स्त्रीनो ॥ ५७६ ॥ विष्णुभजै चहुध्यावधिवै चहुशक्ति सुनातन बह-
 विधरै । जैनधने चहुबौद्ध गुणै अपपंथवले कित पंथ विहारै ।
 त्याग-पढै चहु सांख्यगढै चहुदीन मुहम्मद को चितधारै । मंगल
 कोउ मृचै न महीतल कालबली सधको भविहारै ॥ ५७७ ॥ आतन
 भणि स्वप्रसन्न स्वरूप तवितानंद मंगल रासिकहावै । तकिर दूत
 बलै मनमोहन बाणिसुभोजन रूपलखावै ॥ दृष्टि सुमप्रवै नित्य
 विचारिय पापक इन्द्रिय कर्णगुणवै । मंगलजो अस्मानि भजै
 निज आत्म सोपरमात्तंद पावै ॥ ५७८ ॥ आपन भाव न जानतने
 कहु कर्म अपारपमारकरैरे । हैतिनको फलबंधन मोन न जस
 अनेकन धार धरैरे ॥ उक्ताकृतकीटा कुशलि स्वमविर आप
 र्हि मूर्ख बदिपरैरे । मंगलकर्म अकामकरै जगधर्मवदैं त्रज्जीव
 तरैरे ॥ ५७९ ॥ दृष्टिविहून यरीरकुटैनहि बाणिविना न कलेवर नाथै ।
 हीनित घाणतजै तनकयो कर्णेंद्रियहीन तकाय प्रितायै ॥ हस्तपदा
 विविहायरहै बपु नेकनही जो मलीन प्रकायै । मंगल प्राणबले
 तन ताथत साहिते प्राण स्वतंत्रित भायै ॥ ५८० ॥ जो प्रसुमति वसै
 जावप्राण तवै सब इन्द्रियकी गति नाथै । ज्ञानकि कर्म कि जेदथ
 भांतिहैं ज्ञानैनही तन कोटि कुत्रायै । बुद्धि मनाकिन भातिपरै
 कित जायु कि प्रोहठवित्तचित्तवायै । मंगल चेतत प्राण जगोसव
 साहिते प्राण स्वतंत्रित भायै ॥ ५८१ ॥ विष्णु त्रिरुचि सहस्र खण्डे
 दिनेश निशेषकणेश सुरेश गिरामसदयामी ब्रह्मसंति शुक्रपराश-
 ररामसहली निधिलेखा ॥ देतयगिष्ट गुणो प्रहलाद सहामुनि
 आनहुजे ठुचिभेया ॥ मंगल सर्वगृहस्थ सर्वाम भजै निज आत्म
 भाव सुदेया ॥ ५८२ ॥ कौनु गृहस्थ द्विगंवरको लीपै आत्मप्रातर-
 है चितारका । वधन मोपकि चाहन जीवहि आनंदमूरति शुद्धवि-
 वेकी ॥ यथिलयाथल भाव द्वितीय न शुद्धसंतोगुण पूरयटेका ।
 मंगल जीवनमुक्त यहै मत वंभिनकेतट भाव अनेका ॥ ५८३ ॥ मुक्ति

कोदोनि वहै परमात्म बंधनदानि वहै, करतारा । जन्मकोदोनि
 अजन्मको दानि अधोरधदानि नानुबिचारा ॥ आपनि भूलमि-
 टाय जै करुणाकर जानजो सांझ सर्वासा । मंगल जीवनसुक्त
 वहै सुचिजांत अमेव गहे अतिद्वारा ५८७ तू परमात्म सत्यसदा
 परिपूरण और त्रिलोक अतारा । तू सतता सतिभासत नश्वरवि-
 कृतसर्व तुहै अविकारा ॥ कारण कारज एकन होवत यद्यपिवेद
 षडैयकेंतारा । मंगल धन्य अहै परमानंद जाकृत अद्भुत लोक
 पसारा ५८८ जीयतमें भवकाजकरै निज शक्तिसवै तनइन्द्रि-
 पेरी । स्वप्न विलोकत है मनद्वार अलितरहै सैव ठाम अहेरी । जाय
 सुषुप्तिमें साखिरहै जब इंद्रियसर्व अचेतन हेरी ॥ मंगल सोतन
 आत्म जानिय जाकहै वेदवदै हरिटेरी ५८९ जैतिकव्याधिधि-
 पयरस होवत सोनहिं ताहिलगै भवमाही । संसृतके बुख, चौसुख
 धंधल कोटि विधान सतावत ताही ॥ मिश्रित इद्विनके सँग वे-
 खियमैनहिं लिप्त अलिप्त सदाही । मंगल सोतन आत्म भाविध
 बूझत जाहि सवै भ्रम जाही ५९० जानत तीतिहुं लोक विभूतिहि
 आपनयान रहै न थलैजू । चित्त अहंकृत धीमन का भरमावत है
 विप्रवी कुथलैजू ॥ काहुसमय गुंजान सिरावत सार असार
 फलै सकलैजू । मंगल सोतन आत्म जानिय जौनगहै अफलै
 सकलैजू ५९१ सूक्ष्म है मृत्तिका गतिते जल नीरते सूक्ष्म पाव-
 कगाइय । अग्निते सूक्ष्म धातु विलोकिय मारुत तेन भ सूक्ष्म प्रा-
 इय ॥ व्योमते सूक्ष्म शब्द सदा पुनि शब्दते सो अहंकार । लखाइ
 प । मंगल सूक्ष्म है अहंकारते लोकिमि बुद्धि प्रत्यक्ष वताइय ५९२
 देश विदेश दिशा विदिशा अध ऊंघ में भरि पूरि अतिहारिय ॥ है
 सबमें जै विचारत पंडित मूरखको दुविधा चित, धारिय । पै न मि-
 लै थलै काहु यथानभ कोटि से पायन सो तिरधारिय ॥ मंगल क्यों
 कसिगाइसके अतिनेतिवदै यह हेतु विचारिय ५९३ जाहि विलो-
 किय आभवमें यहिके सुख चाह उरस्थल व्यापै । याज्ञगकी सुख
 भोग विषय कर जाहिलहै अधजात सदापै ॥ जातत गूढ़न बूझत

मूढे फिरै मतिहीन न पाठ न जायै । मंगल संत सदानंद मंडित
 आननहीं सुखमूरति थायै । ५२४ केतिक मारगमें भ्रम्यो मन
 बोधमयो न विना गुरुपाये । आपनि आपनिवाट चलावत दूसर
 पथ निहारि लजाये ॥ क्यों फिरि आवत तोफ हिये जित वंभ
 तहां न विवेक सुहाये । मंगल मिश्रितकीर्ति बूझत मूलमिटै
 हरिकेगुण गाये ५२५ जोमम अतिनमें नहि लोगत सो उपदे-
 शत पदितसीही । आपनभूमि अनेक भ्रम्यो भ्रम भूरिमयो नरहो
 मतद्रोही ॥ क्योंहमें मानत जानत जाहिना जेतनको जड़रूप
 बढीही ॥ मंगल जानेविना गुविआतम बोध न होत कथा न
 कथोही ५२६ ॥ छंद ॥ माया जगत अपारद्वेखियत जो सधुको
 भ्रमातीहै ॥ फाहुड सुथल सुचित नहि हेरौ दुविधा ज्ञाननया-
 तोहै ॥ संतसंगतिते न्यारे डोलैं विषयक वानि सुहातीहै । मंग-
 ल जान ठगिनि ठग नाहिन अपनी धदन चुरातीहै ५२७ सेवा
 करै अर्थकोपवि । अर्द्धधर्म घंटावैजू । तपफल सकलै कामनापूजै
 भक्ति मोक्ष दरशावैजू । चारोक्रिया ज्ञानगत बुधजनगोभा सुथ-
 लनपावैजू ॥ ज्यों मंगल सुन्दरी नाकेविनु सदा निरादर भावैजू
 ५२८ ज्ञानी जिज्ञासु अर्थार्थी आर्तनाम कहावैजू । सुजनचारि
 ये प्रभुपद सेवक त्रिधावेद भरमावैजू ॥ ज्ञान कर्म श्रीहैं उपार्सना
 जितलित जेहि तेहि भावैजू । मंगल अतिमज्ञान विवर्जित निजपद
 कोक्यों पावैजू ५२९ अति विशिष्ट अद्वैत द्वैतवदिपुनि अद्वैत
 लखावैजू । मुक्त मुमुक्षु विषयरत त्रिविध आता सुनि हर्षावैजू ॥
 तीनोंकी प्रकभाव विलोकनि सो जेहि केमन आवैजू मंगलजीव
 न मुक्त भवस्थल सीद्धि स्वर्गल मिधावैजू ६०० ॥ मवैया ॥ आपनि
 भूल मिटाये सकैनहि औरनकी कस बुद्धि सुधारै ॥ आपुहि मूरख
 नूनमन देखिय रैन दिवाकर कोनु निहारै ॥ मानहि त्यागमिटा-
 य अहंपद क्यों निजआतम कोन विचारै । मंगल योंबहुलोगभ्रमे
 विनु ज्ञानन श्री हरिधाम बिहारै ६०१ ॥ आपनि घूँझ भली मन
 भावत आनकिघूँझ गुणै सउपायी । ज्ञान कथै न सुने द्वितियेकि

रहे विपरीत कुमाधन साधी ॥ वाणिगहे निर्वाणकि सारंग धाई
 चले जो पंतालकि कीधी ॥ मंगल साँखु कहावत एकहै आपनि
 श्रीजहाँन कि आधी ॥ ६०२ ॥ मैं सतमारगमें विचरौ सब मेरे जलैं
 सतमारग धाई ॥ सु अमिमान भरो जनि तोरहु जात कुवाव लखे
 बहु धाई ॥ मै अरु मोर जोतै अरु तोर गुणै श्री तिरुप सी है अम
 तवि ॥ मंगल धाहि निवास्ता जो जन सीवन सुका सी भूतल
 भाई ॥ ६०३ ॥ आग धौ कर्म बिना गिनि की ॥ अम औ मरु मालव
 की दुविताही ॥ घाहोण श्री जल उत्तम धाकर जीवत नृदयु लक्ष्मी
 विधि पाई ॥ ॥ देव अथेय गुणी अर्गुणी पुनि श्री अशौच कि भूल
 मिटाई ॥ मंगल एकहि भाव बिलोकि ते जीवन मुक्त मही तल भाई
 ॥ ६०४ ॥ उत्तम ज्ञान गहें प्रभु सेवत धनैकता न लगावल देहो ॥ आत
 ममें लवलीन संदात प साधन चोर कुकर्म न वेहो ॥ ॥ काहु ते जैर
 सनेहन धंषित दमिक है तिनको ठग देहो ॥ मंगल साँखु कहावत
 है यह जो चित्त आवत आगन देहो ॥ ६०५ ॥ एक बिमूढ़ कहैं हम पवित
 धर्म निरे स्वाकी दर आवै ॥ एक अपार वखानत कालहि उत्पति
 इ स्थिति नाश सभावै ॥ दोइनमें ननु जान बिलोकि जोजनि धन
 रिसुं वेस्तु बतवै ॥ मंगल सत्य संदा परमात्म जो सब ठा सुन दृष्टि
 हि आवै ॥ ६०६ ॥ जानि परै न बिना गुरु अद्भुत देखि सुनीन कनई
 निज आवी ॥ क्यों हठता मनिसों निवसै कुविधा बहु लोग नम्र
 न भाखी ॥ सारंग है ते जिभूल असार हि जाकर है निगमागम सा
 खी ॥ मंगल शुद्ध ततो गुण आवत बुद्धि रहै परमानंद आवी ॥ ६०७ ॥
 सिंधु कहै अगार्ध लगे अरु बिंदु बदे अति ही लघुताई ॥ सिंधु न
 बिंदु अहै जल सो प्रभु ओउ ममें इमि वाणि सुताई ॥ ताहि निचाहि
 सुजनि हेतु पि क्षीवर जीव हु भाव मिटाई ॥ मंगल को लघु दीर्घ
 वृक्षत आसको आन बिलोकि लजाई ॥ ६०८ ॥ सिंधु ज्यों अति थूले
 कलेवर पैवहु ज्ञानंत ही लघु ते ही ॥ तुच्छ पि पील गहे मुख अन्न कि
 वृक्षत ही सव ते बढि केही ॥ ॥ गज हेरि पि पील भई बह औ करि
 सो लघु ते लघु ते ही ॥ मंगल जीव दुष्टोपक भाव हि द्वैत लगे सुप्रि

आपुन एही ६०६ भा विष्णु पद ॥ प्रभु गति कहते नाहि बिजै की
 कहिये तो हृदय नहि धौलै जानी मूढ़ गिने ॥ है मधमे अरु कीहु
 मैं नाहि न ऐसी बेदे भनै मज्ज बवत कहेल गत चैतनता चैतन जे
 सने ॥ रूप बखान् अरु पदु अवित हुविधा बहुत मनै ॥ रा कहिस
 अकती ॥ हे पुनि कती चौदह पुर अपने प पालक लिखौ सैहारु
 सोई कयो यकतान् ठिनै ॥ इयह निरधार करन हित संतौ ॥ मुनि
 जनय के धनै ॥ मंगल गा किमि ॥ धौलै बतावै माया तोरि तिनै
 ६१० ॥ बहु मन धूषित भये अमर्यगै ॥ तजि विंगता विषय माया
 की स्वयं भान मै लागै ॥ जीपै जाय कतहु विषय पडिग तौने
 को अनुरगै ॥ दुष्ट के संग बसे रैन दिन पैन ॥ दुष्ट पागै ॥ मयल
 निज अति मरनत ॥ आवि चीन्है हंत न कागै ॥ ६११ ॥ जनम न गुह
 सतोगुण आधा ॥ जो धर्म रहै ब्रह्म माया को जीवई श विधिरुपा ॥
 सो अत्र एक भाव सौ देखित सकल एक ही कायो ॥ १ ॥ प्रिगुण नाम
 विधि हृदि हर भावत सग स्थिति लय कर्म ॥ सो त्रिभोति नहि
 एक ब्रह्म है ॥ तीनि नाम सौ गाथा ॥ स्वर्ग नरक अपवर्ग बासकी ॥
 सबै जग बांधा ॥ ॥ ब्रह्म त जीव गुह चित आतम कौतु ॥ त्रिभोगति
 धोया ॥ ॥ आत्म वेद ॥ उपनिषद देखौ ॥ क्या कहि जीवहि गावै ॥
 मंगल ॥ वीर भयो गुह पाये ॥ अमम त हुरि ब्रह्म पाये ॥ १२ ॥ मवेया भी
 केतिके ज्ञात सिखाय ॥ धके भेषि केतिके न्याय गुणी ॥ समुद्रावै ॥
 केतिके वस्तु प्रत्यक्ष बतयि पदार्थ ज्ञान किं सिद्धि लखावै ॥ केति
 कती रथ की चलि जाय ॥ न ह वाक् के मुक्ति सुपंथ ॥ बतावै मंगल आये
 विता ॥ तिज आतम कीटि करै मृता हाथ न आवै ॥ ६१३ ॥ मयल के
 सब काम सजे ॥ प्रिय धनु सुता सुत नारि ॥ दुहावै जग न रहै ॥ तजि लाज
 सबै जित भोजन ॥ हाय लखै तित खावै ॥ नित्य विवेकी ॥ अचार लिखे
 रहै ॥ औ व्रत मै निज जीव दुखावै ॥ मंगल ॥ धोये विना तजि आतम
 कीटि करै मृता हाथ न आवै ॥ ६१४ ॥ जाय सुपंथ मे ॥ मुह सुडा मध
 मयि दशोदिशि ॥ वायु सैसी ॥ ॥ वीध कि ॥ जैन कि ॥ शैव कि ॥ न्याय कि
 सोरथ के बिडु ॥ विचारक जातो ॥ मुक्ति पदार्थ खोजि मरे नतरै

चक्रं भवदोरि फलोत्तो । मंगल आतम होय विना । अधः करधके
 मोमेति वसोत्तो । ६१५-धौधन जानत नियाय कथा । अरु जैन न मान-
 त । येवकि मोती । सारख कल आदिल गो । अपतेमत । दूसर में नुहिं बु-
 दि । समानी । जो हठ वादि । किय दति जावत । सोने । महामुनि वत ।
 भगानी । मंगल मोर । गेहै सब को तब बूझत । आतम की गति प्राणी
 कर । फार कर सुल । बहंत रि । मिलत । चारि किताव कहैं । मत तारी ।
 आपस मे । बक बां दु । करिय क । दूसर को । बधि । काफिर । भारी । मान कि
 मोरि । प्रसै । विल में निज । पाकन । पाक । द्योमति धारी । मंगल एक
 सुशय । सही कृत वाकु । इतै जु । प्रवीणे । अतारी । ६१७-दूसर को । प्र-
 मातम है । तजि । प्राय कतेज । स्वरूप । त्रिलोका । जसु । प्रताप । तपै न भ
 में । भुवि जीये । प्रभाज्य हि । अथ । विलोका । तेज प्रकाश । जहां लुग है सनु
 वेदज । रास । वदेक । केशोका । मंगल । भूलय लेत । सुनै हठ । पप्रग हेजे ड
 प्रयो । भगि कोका । ६१८-व्योम हि । बह्य । विचारते । सौनहु । जिक्र अपार
 सुख दि । दिखार्ह । ६१९-वह लोकि । हरौ । हरिजू । अथि । भातु । सुरासुर
 वास । लोकाई । ६२०-दृष्टि न आव । अनावि । अमंत । अनीह । अरूप । अजन्म
 गनार्ह । ६२१-मंगला मद्द । द्विती प्रन । बूझत । किम त्रिके फल । कीट किनाई
 ६२२-सकोटी प्रभजन की । गति हेरि । भुलाय । सहे । त्यहि की । सुराई । ६२३-
 भान हि । स्वर् । जानत । नाहिन । खेवर । कौन । नमी । त्यागि । ने । जाई । ६२४-
 प्रगत । गोवल । मोह । उधम डित । फूजत । पूजत । प्रेम । बढाई । मंगल
 फौतु । बुझा । भनके । बिप्र । गौर । बुद्धे । अहि । दूपा । मिलाई । ६२५-संभव
 सर्वे । आवर को । जल योग । विना । नहिं । दृष्टि हि । आवै । जीर । अपार
 अजड । प्रमिडित । शिख । सतंत्र । सुजील । दृष्टावै । ६२६-पूजत है । लजल राखि
 समो । द्विती । आतम । सत्य नही । लखि । सावै । मंगल । प्रवास । मध्यास्थि
 चक्रोत्ता । दृष्टि । द्विती । त्यहि । प्रिया । मित्र । त्योवै । दर । पुतेवत । भातु । विचारि
 स्वतंत्र । विना । नहिं । जित । सा । प्रभातनी । प्रद्व । द्विती । म । न । सी । नते
 को । दिहु । धीन । वखानि । दुशा । इ । म । माता । जानत । तीनि । हुलोक प्रक
 मित । ६२७-इति तेज हि । आन । विभाता । मंगल । सूत्र । प्रकथित । लो । प्रभु
 ताहिन । बूझत । कयो । असनाता । ६२८-जीमिन् । द्वै । विक । प्राम । मंगल

मिटाइय ६३७ को करतार जो, सृष्टि नहीं अरु को भरतार को
 दास अभावा । ठाकुर कौनु प्रजाबिनु भायत उज्ज्वल कौनु अनु
 ज्ज्वल थावा ॥ कोधनवान जो रंकनहीं अरु सौख्य कितै जो वै
 दुःख न थावा । मंगल चित्त विचारु अरे मन ईश कितै धिन जीव
 कहावा ६३८ ॥ कवित ॥ मान को न त्यागै मन दीनता को, दूरि गन
 प्रीति न प्रतीतिसन संत रूप धारे है । लोभ को निवास तन हिरे
 नाहीं ज्ञान बन खोजै प्रतिद्वार धन कंत को बिसारे है ॥ तोप नाहीं
 एकक्षण वेद औ पुराण भण बाधै आन नारिजन दतक ध्व दारे है ।
 मंगल प्रवीणवन आनन को तुच्छ गन कुरधौ विनोदिरण अलबूरि
 दारे है ६३९ ॥ ब्रह्म को धखानै जाहि बेद हन जानै आनि वै निरखानै
 माह माया चित्त बासी है । ज्ञान गीत गानै औ प्रमाण कोटि आनै
 झूठी बात अनुमानै है त काधामे बिलासी है ॥ ऊंच नीच जानै
 हरिदासन पिछानै जो न क्षार देह सानै छोह छायाधौ विनासी है ।
 मंगल नठानै एक भावन समानै और दुःख सुख मानै ताते कैसी
 धौ उदासी है ६४० ॥ जहां देखौ तहां एकरूप को बिलास होत भांति
 भांति भापत प्रमाण ज्ञान सानी है । बिबिध किताब ग्रंथ एक भाव
 सत्य कहै है तनाहीं शून्य बादै बौध जैन आनी है ॥ पंचनकी बात
 कि प्रमाण भूमि स्वर्ग लोक एक नर बात तात कौने सत्य मानी है ।
 मंगल को भासै शून्य एक कोन भाव दासै बड़ो भ्रम भासै जाकी क
 धान कहानी है ६४१ ॥ जाको बुद्धि गवि ताको आनि न धता वै जाहि
 धारि समुझावै सो न बुद्धि हू प्रमानै है । कानन को काम कहाँ आंखि
 कर पावै अरु नैनन को काज कबै अवण खखानै है ॥ जाको जीत का
 जतीन करत स्वभाव नित्य दूसर न जानै व्यय सावै झूठ ठानै है ।
 मंगल सुजान सत जांचि देखै कोटि भांति शून्य को अभाव इहां
 एक ही पधानै है ६४२ ॥ एक तन सकल समाज भूमि देखिय तना
 कहूँ मे एकरूप तारागण भासै है । देव गुरु दैत्य गुरु होत न खगे
 प शूर कीट औ पतंग एक कायामे निवासै है ॥ एक भूमि नीस आयु
 पावक सव्योम हेरु द्वितीय न होत यदि मिलित बिलासै है । मंग

ल सुजान सग जांचि देखै बार बार शून्यको अभाव इहां एकही
 प्रकाश है ६४३ देह बिनु जीवको निवास कौन भाविसकै जीव
 होने काया कौन चलत उपाय है । आतप विहाय न प्रकाश भानु
 भावियत भानुहीन आतप न त्रिपुर लखाय है ॥ पितु बिनु सूनु न
 प्रमाण तन सूनु बिनु पितु कहवै ऐसी दुविधा को भाय है । मंग
 ल सुजान सत जांचि देखै बार बार तैसे ब्रह्म माया एक है तमें दृढ़
 य है ६४४ ॥ सवैया ॥ देवनमें मनस ब समर्थ जो देव यजै सोल है
 मनचीती । दुष्ट नमें जडता अति देखिय जेन भजै सुरमोह प्रती
 ती ॥ दानि अभिप्रिय देव फली बिनु पास गये कहँ द्रव्य चहीती ॥
 मंगल काम फलानि लिये नित ध्यावत देव विषय मति जीती
 ६४५ दीप सुगधि लिये जल गंग सप्रेम स्वदेवनको मन मोड़ि पाय
 मनोरथ होत समोदित कोटिक ज्ञान सुनै बिनोद ॥ ज्यो रसनी
 रस एहन होवत ह्यो इत काम अकाम प्रमोद ॥ मंगल एक गहे
 सुख होवत दीउनमें किमि जाय दुकोद ६४६ मुक्ति दई प्रभु को
 टिनको बिनु युक्ति वदै कवि कोविद ज्ञानी । स्वर्ग निवास अपा
 रनको तुम दीन्ह कृपालु स्वयीजन जानी ॥ केतिक गोपुर में बिल
 से बहु सय सुलीक घसे बर प्राणी । मंगल कौनहि नरक विहाय
 बसाय सकौ कहु शरंग पानी ६४७ पुण्य प्रभाव तेरे कितने नर
 केतिक भीक्ष भये वत धारी । पूजन पाठन नो अयमेदि भये बहुधा
 जन स्वर्ग विहारी ॥ योग वियोग लिये भव केतिक जाय समीप
 घसे सुखकारी । मंगल के शिर पातक गाठरि क्यों तुम तारि सकौ
 गिरिधारी ६४८ जाकर पूरव पुण्य प्रकाश कृपा कर ता कहँ तारि
 धो है । वाजेहि कर्म किये भव उत्तम ता फल उच्च अवास लयो
 है ॥ पूरव पुण्य न जीवत के कृत जन्म कुमारंग में बितयो है ।
 मंगल को कृत तारि सकौ प्रभु या भ्रम में जिय मोच भयो है ६४९
 कौन दुराव अहै तुम सों प्रभु जानत हौ मन की सध मेरी । आठहु
 यामन भावत है जग पाप विहाय विषय मति घेरी ॥ ज्ञान विराग
 विवेक नशावत काम कथा कि उल्लाह घनेरी । मंगल कौन गली जग

सोपकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५० कर्मकिये जगनर्कनिवा
 सके क्यों अब होउ सुधामवेलेरी । निंदक प्रथ गृही निशिबास
 र त्यागि सुबाद जो मुक्ति कि देरी ॥ नीच प्रसंग नसाधु समाज
 विवाद किये बहु ज्ञान निवेरी । मंगल को न गली जग मोपकि
 आनिपरो शरणागत तेरी ६५१ जात जितै तित मोह पयोनिधि
 काम समीर कुषीचि करेरी । मुक्ति उडौ भरमैन रहैथि र खेवक
 ज्ञानधको बुधि प्रेरी ॥ कर्म विवादे उडै पतवार सहाय नकोउ
 कहौ जेहिदेरी । मंगल को न गली जग मोपकि आनिपरो शरणा-
 गत तेरी ६५२ शुद्ध स्वभाव नहोत स्वधी इत कर्म उपायतसौ
 चितहेरी । जो समुझावत सोनगुणै मन आनकि आत अवैवहुते-
 री ॥ सत्य असत्य गुणानिकरै चुप औकतहं बरणै खल देरी । मंग-
 ल को न गली जग मोपकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५३ जो जत
 जानि दयाकरिकै करणीय धरौ पकरौ भुजमेरी ॥ तौ अमहीन
 तजौ भवसागर जाय नथाय अधोर्ध फेरी । नातिरु योहि भूमौ
 भव बीधिन संसृत में दुखसौ भटभेरी ॥ मंगल को न गली जग
 मोपकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५४ कोउतरै करि तीरथसेव
 नकोउतरै अत साधन साधी ॥ कोउतरै करिनेस अचारनि कोउ-
 तरै मनकीहत व्याधी ॥ कोउतरै पढ़ि वेदपुराणि कोउतरै प्रभु
 नाम चराधी ॥ मंगल कैसेतरै करुणाकर कीन्ह सुकर्म नहीं क्षण
 आधी ६५५ ज्ञानगुणै तरिगे कितनेकरि योग समाधि तरे कितने
 हैं । तापसरूप बनायतरे बहु गायतरे बहुनाम सनेहैं ॥ पाठकिये
 बहु मोतिगसे करि जाप अनेक स्वमुक्त भनेहैं । अंगल कैसे मुचे
 करुणाकर एकहुभाति न कर्म बनेहैं ६५६ समाजहि तेइमुचे
 बहु पूजत मूरति मुक्त भयेहैं । मंत्र वह
 गुणभैरूप हयेहैं । अवाण
 शिवै चितयेहैं ।
 ६५७ धंधनकी
 विचारि वि

एकन मूरति तीरथ मानत व्यापक जानि, भलीगति पावै । मंग-
ल कैसे, तरे करुणाकर, एकहुभांतिन जीवददावै ६५८ पण्डितके
बल बुद्धि प्रसिद्ध, कीहै कंविकोबल, प्राणि-सुहावनि । गौरवको
गुरुकेबल देखिय शिष्य सुमंत्र लियेदढ़-भावनि ॥ ज्ञानबली
धनवानबली, बलवान बली पदउच्च प्रभावनि । मंगल कौनुभरो
सकरै प्रभुदेहु बताय, परीमंत तावनि ६५९ विष्णुपद ॥ सबविधि
विषयक-मोमन स्वामी । यत्नेअनेक किये, याभवतल होहुं नाथ
अनुगामी ॥ पैत सुदढ़ मनभयो कृपानिधि-हौतुम-अंतरयामी १
कादुराव तुमसन करुणाकर मोह मलिनहौं कामी । कियेअपार
कुर्म वेहधरि, अजामीलको नामी २ सोअव समुझि होत मन
बावर भूतकाल गति-धामी ॥ क्यों निर्वाह होइगो हरिजू कूर
भये संगामी ३ अखिल ज्ञान विज्ञान निरस रत बूझिधाम-पर
धामी । मंगल शरणगही प्रभुतेरी तारिय द्विजवर गामी ६६०
आन कौनकी शरण गहीहौं ॥ देखिन परत द्वितिय दायानिधि
दीनपाल पुरतीनों । निज स्वारथ रत सकल बेदबद फिरिकल
सुगम लहीहौं १ कैतिक जन्म बूझ-विनु भटक्यो ते बतचरण
थकानों । हरिमनि तुवपदरज-धन्दी अब अधभोये दहीहौं २
जो भयरहै नरक सुरपुरको सोमनते मिलरायो ॥ बधन मुक्तिद्विची
करुणानिधि तुवपद-तजिन, चहीहौं ३ दुख सुखको व्यवहारवेह
धरि नरक स्वर्ग स्वइगाथो ॥ मंगल प्रभुपदरजशिर लावत कोमुद
धरणि कहीहौं ६६१ जानिपरी तुमहौं जनतारण ॥ अबलगरि रहै
महाभूम चितमें विविध ग्रंथ सतिलागी ॥ सोभूम सिटयो भयो
तवपद रजनेह, समोद अकारण १ दास विपति नाशकन द्वितिय
भु त्यागि तुमहिं तिहुंलोकनि ॥ दासवकोप जानि रक्ष्यो बज
गिरिकीन्हो नख धारण २ लक्षधाम सुतग्रंथ विरचि तहं प्रांडुसुत
न दियवास्ता ॥ पावक प्रबल अर्द्धनिधि प्रबलित तुवप्रभु कीन्ह
निवारण ३ द्रुपदसुता लज्जा गोपिनप्रण तुमंरारुयो धनवारी ॥
मंगल शरण गही करुणाकर अब करिये ६६ २ आपत

मोपकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५० कर्मकिये जगनर्कनिव
 सके क्यों अब होउ सुधामविसेरी । निंदक पंथ गही
 र त्यागि सुवाट जो मुक्तिकि देरी ॥ नीच प्रसंग नसाधु समाज
 विवाद किये बहु ज्ञान निवेरी । मंगल को न गली जग मोपकि
 आनिपरो शरणागत तेरी ६५१ जात जितै तित मोह
 काम समीर कुबीचि करेरी । मुक्ति उड़ी भरमैत रहै धिर खेवक
 ज्ञानधको बुधि प्रेरी ॥ कर्म विवाद उड़ै पतवार सहाय नकोउ
 कहौ जेहि देरी । मंगल को न गली जग मोपकि आनिपरो शरणा
 गत तेरी ६५२ शुद्ध स्वभाव नहोत स्वधी इत कर्म उपायतसो
 वितहेरी । जो समुझावत सोनगुणै मन आनकि आत बदैवहुते
 री ॥ सत्य असत्य गुणानिकरै चुप औकतहुं बरणै खल देरी । मंग
 ल को न गली जग मोपकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५३ जो जत
 जानि क्या करिकै करणीय धरौ पकरौ भुजमेरी ॥ तौ अमहीन
 तजौ भवसागर जाय नशाय अधोऽध फेरी । नातरु योहि भूमो
 भव बीधिन संसृत में दुखसो भटभेरी ॥ मंगल को न गली जग
 मोपकि आनिपरो शरणागत तेरी ६५४ कोउतरै करि तीरधसेव
 नकोउतरै जत साधन साधी । कोउतरै करिनेस अचारति कोउ
 तरै मनकीहत व्याधी ॥ कोउतरै प्रदि वेदपुराणि कोउतरै प्रभु
 नाम अराधी । मंगल कैसेतरै करुणाकर कीन्ह सुकर्म नहीं क्षण
 आधी ६५५ ज्ञानगुणै तरिगे कितने करि योग समाधि तरे कितने
 हैं । तापसरूप बनायतरे बहु गायतरे बहु नाम सनेहैं ॥ पाठ किये
 बहु मोविगये करि जाप अनेक स्वमुक्त भनेहैं । मंगल कैसे मुचे
 करुणाकर एकहु भाति न कर्म बनेहैं ६५६ संत समाजहि सेइ मुचे
 बहु पूजत मूरति मुक्त भयेहैं । मंत्रप्रभाव लही बहु मुक्ति अगूढ
 गुणै भूमरूप हयेहैं ॥ वाण अवाण विवेकमुचे बहु व्यान अखंड
 गिवै चितयेहैं । मंगल कैसेतरै करुणाकर एकहु अंगन शुद्ध भयेहैं
 ६५७ अंधनको यक झूठवखानि सुखद प्रमाणत शुद्ध कहानि ।
 शून्य विचारि विमोचत है यक आपन अंध प्रसिद्ध सुताये ॥

एकन भूरति तीरथ मानत व्यापक जानि भलीगति पावै । मंगल कैसे तरे करुणाकर एकहुभातिन जीवदृढावै ॥ ६५८ ॥ पण्डितके बल बुद्धि प्रसिद्ध कोहै कंबिकोबल वाणि सुहावनि । गौरवको गुरुकेबल देखिय शिष्य सुमंत्र तलियेदृढ़ भावनि ॥ ज्ञानवली धतवानवली बलवान बली पदउच्च प्रभावनि । मंगल कौनुभरो सकरै प्रभुदेहु बताय परीमन तावनि ॥ ६५९ ॥ विष्णुपद ॥ सधविधि विषयक मोमन स्वामी । यत्नअनेक किये याभवतल होहुनाथ अनुगामी ॥ १ ॥ पैत सुदृढ़ मनभयो कृपानिधि होतुम अंतरयासी १ कादुराय तुमसन करुणाकर मोह मलिनहीं कामी । कियेअपार कुकर्म देहधरि अजामीलको नामी २ सीअव समुझि होत मन आवर भूतकाल गति वामी ॥ २ ॥ क्यों निर्वाह होइगो हरिजू कूर भये संग्रामी ३ अखिल ज्ञान विज्ञान निरसरत बुद्धिधाम पर धामी । मंगल शरणगही प्रभुतेरी तारिष दिजवर गामी ॥ ६६० ॥ आन कौनकी शरण गहीहौं ॥ देखिन परत द्वितिय दायानिधि दीनपाल पुरतीनी । निज स्वार्थ परत सकल वेदवद फिरि फल सुगम लहीहौं ॥ १ ॥ केतिक जन्म बूझ विनु भटक्यो से वतवरण थकानों । हारिमानि तुवपदरज घन्दी अब अधशोध वहीहौं ॥ २ ॥ जो भयरहै नरक सुरपुरको सोमंजते बिसरायो ॥ वंधन मुक्तिहुचौ करुणानिधि तुवपद तजिन चहीहौं ॥ ३ ॥ दुख सुखको व्यवहारदेह धरि नरक स्वर्ग स्वइगाथो मंगल प्रभुपदरजशिर लावत कोसुव शरण कहीहौं ॥ ६६१ ॥ जानिपरी तुमहौं जनतारण ॥ अबलगि रहै महाभूम चितमें विविध ग्रंथ मतिलागी ॥ सोभूम मिट्यो सयो तवपद रजनेह समोद अकरिण ॥ १ ॥ वास विपति नाशकन द्वितिय प्रभु त्यागि तुमहि तिहुंलीकति ॥ वासवकोपा जानि रक्ष्यो ब्रज गिरिकीन्हो नख धारण रलक्षधाम सुतअंध बिरचि तहंप्रांडुसुत न दियवासा ॥ प्रावक प्रबल अर्द्धनिशि प्रबलित तुवप्रभु कीन्ह निवारण ॥ २ ॥ दुपदसुता लज्जा गोपिनप्रण तुमराख्यो घनवासी ॥ मंगल शरण गही करुणाकर अब करिये ॥

मोह कहीं अब कासन ॥ वेदपुरान कुरान ग्रंथबहु
 गुणिहीमें ॥ त्यहि मारग विचरत सुख भवसल होत
 दासन १ जो विपरीत चलत निजपथते तजि मर्या
 त्यहि विलोकि जगकरत बतकेही यहजड धर्म दिन
 तित अब निवकमत देखिय गहत सकलजन हीते
 अति कलिदिशि चारौ युग प्रभाव है तासन ३ प्रथ
 मचल संचलअब संचल अबल पहिचानो ॥ मंगल ॥
 जनि भाष्यो त्यागि नाम गरुडासन ६६३ निजमन
 चुराई ॥ गुप्त प्रकट इतद्वै मत देखिय दूनौकी निपु
 अंतर प्रक धाहिर हेरत निजनिज बूझ बड़ाई १
 सरगुणकी गणना यथा अग्नि युगरूपा ॥ एकदृश्य य
 है कयोबड छोट लखाई २ कएसहित यकमिलत सु
 दगुप्त मिलिजाई ॥ सन्त सुजान ज्ञान मूरतिजे ते
 लाई ३ अगुण सगुण तनजीव कथाहै यकविनु द्वि
 मंगल यहिकारण तनुधरिकै भजिय सदा यदुराई
 काहिन सेवक जानी ॥ जिनहि देखि शिव धलतहि
 गोप्रबधकारी ॥ समरभूमि तिनकी रक्षा हित प्र
 मानी १ भिक्षा द्वारवेत कोउनाही द्विज व्याकुलयु
 भरिभेंटि दई संपति त्यहि गिरान सकत धरवानी
 गृह भूमिपाल गणबन्दि परे दुखरूपी ॥ ते तुमही
 अबमय जरासन्ध खलभानी ३ यहि प्रकार अगणित
 पांले पांलत पालौ ॥ मंगल दोन शरणतव मोहन
 सुखदानी ६६४ अबको आन भजौ गिरिधारी ॥ ज
 बल्लभ श्रीप्रभु धनौमूढ अविचारी ॥ सीहवत्यागिगेह
 तकहै भूमभारी १ तजिमदारगही धदरीतरु कामदुध
 गंगत्यागि पुष्कसी पानजल ज्ञानकि बुद्धि व्यकारी
 मदलोभ मोहवशरही सदा भूमनाही ॥ सुगति पं

स्वतंत्र सबलायक ॥ मंगलके दुख दोष नाशिये समर्थ आपसुरा-
 री ६६६ करि बहुदंभ धकी मति मेरी ॥ काहुबिधिन भयोथिर
 मनप्रभु विषयक खल अवकारी ॥ प्रतिक्षण वामपंथ जडधाव
 त निहर इद्रियन प्रेरी १ शास्त्रविहित मग गहतन जडमतिकृत
 विपरीत पसारै ॥ यद्यपि सीख दई सुन्दरहीं होतन स्वधलवसे
 री २ मोह निशा सोवत सुख अपने जानि मोहिं धकबादो ॥
 विषयभोग सुनि उठत सुदितप्रभु कितै ज्ञानकीढेरी २ बततीर-
 थ सपम जपपूजन पाठध्यान बधनाहीं ॥ मंगल विकल हरिय
 दुख मोहन परी शरण प्रभु तेरी ६६७ ॥ सवैया ॥ काल अनन्त
 धन्योबहु पंथविचार अनेकन भांति विचारे ॥ जो जत जानत सो
 तत भापत अर्थ निरर्थ समर्थ बिसारे ॥ ब्रह्मतहीं मनतोष न आव-
 त जानकि आनक्रिया चित्तधारे ॥ मंगल त्यागिसवै मग मोहन हीं
 शरणागत द्वार तुम्हारे ६६८ दृष्टि पसारि लखे सबमार्ग येकित
 सर्व अशंकन कोई ॥ क्यों भटकौ फिरि भूमि वृथा जित लाभ
 नहीं तित हानिहि होई ॥ मुक्त गृहस्थ उदासिनमें मतकी दुविधा
 बुरि सत्य बिगोई ॥ मंगल भापि धंकी बहुज्ञान परी प्रभुद्वार
 दधीमति खोई ६६९ पूजत देवन बैठिके एकखडे येक पूजत
 मोहप्रसी मति ॥ बैठिउठै एक नाचत गावत धूप जलाय स्वच्छद
 कथै अति ॥ वैबलिभाग पिझावत एक करै बतयोग सुयोग लंगीर-
 ति ॥ मंगल मौनित स्वांग बिलोकि चहौसोकरौ प्रभुहीं शरणागति
 ६७० काहुको होइरहै भव आइकै मूढकहै कवि कोविद गावै ॥
 सो मनबुझि विवेक किआखि लखे सबपै नहिंदृष्टि समावै ॥
 त्यागितुम्हें करुणाकर नाथ द्वितीयन रक्षक मोमन भावै ॥ मंगल
 भूल मिटापपरी तव द्वारकरौ जोतुम्हें वनिआवै ६७१ कीरथा
 ललनी लटकी कपि अन्नलिये करबन्दि परीहै ॥ भूकत आनकि
 दर्पण मंदिर मत्स्य किकांट सुलोभ धरोहै ॥ त्यों इतधर्म लिये
 नर भ्रामिक फूटन कीन उपाय करोहै ॥ मंगल त्यागितुम्हें बुविधा
 अब आपहि आपकेद्वार परीहै ६७२ ज्ञानि

मोह कहौ अब कासन ॥ वेदपुरान कुरान भयबहु रचेगुणिन
 गुणिहीमें ॥ त्यहि मारग बिचरत सुख भवसल होत मोद भवि
 दासन १ जो बिपरीत चलत निजपथते तेजि मर्याद पुरानी ॥
 त्यहि बिलोकि जगकरत बतकेही यहजड धर्म बिनायन रजित
 तित अब निंदकमते देखिय गहत सकलजन हीते ॥ मिटीमें
 अबु ति कलिदिशि चारौ युग प्रभाव है तासन ३ प्रथम मोरमन
 अबल संचल अब संचल अबल पहिचानो ॥ मंगल चुपकि रहौ
 जनि भाष्यो त्यागि नाम गरुडासन ६६३ निजमनकी मनधरौ
 चुराई ॥ गुप्त प्रकट इतई मत देखिय दूनोंकी निपुणई ॥ एक
 अंतर एक बाहिर हेरत निजनिज बूझ बडाई १ तिमि निर्गुण
 संरगुणकी गणना यथा अग्नि युगरूपा ॥ एकदृश्य एक काष्ठान्तर
 है क्योंबड छोट लखाई २ कष्टसहित यकमिलत सुलभही प्रक-
 टगुप्त मिलजाई ॥ सन्त सुजान ज्ञान मूरतिजे ते समुझैं धित
 लाई ३ अगुण सगुण तनजीव कथा है यकबिनु द्वितिय कौजानै
 मंगल यहिकारण तनुधरिकै भजिय सदा यदुराई ६६४ पारम
 काहिन सेवक जानी ॥ जिनहि देखि शिव थलतजि भागे जाति
 गोप्रबधकारी ॥ समरभूमि तिनकी रक्षा हित प्रयत्न्याग्यो रुनि
 मानी १ भिक्षा द्वारदेत कोडनाही द्विज व्याकुलयुत नारी ॥ भु
 भरिभैटि दई संपति त्यहि गिरान सकत बखानी ३ मगधनी
 गृह भूमिपाल गणधन्दि परे दुखरूपी ॥ ते तुमहीं मोचे लो
 अबमय जरासन्ध खलभानी ३ यहि प्रकार अगणित जनभवत
 पाले पालत पालौ ॥ मंगल दीन शरणतव मोहन हरिय बिप
 सुखिदानी ६६५ अबको आन भजौ गिरिधारी ॥ जानिबूझि ज
 बल्लभ श्रीप्रभु बनीमूढ़ अबिचारी ॥ साहबत्यागिगहौ सेवककद
 नकहै भूमभारी १ तजिमदारगहौ बंदरीतरु कामदुधा तेजिआवै
 गंगत्यागि पुष्करी पानजल ज्ञानकि बुद्धि व्याकारी २ काम
 मदलोभ मोहबध रहौ सदा भूमनाही ॥ सु
 आवत अबहीं शरण तुम्हारी ३ जो जी रु

देवदाता तुम्हीं वेदधाता तुम्हीं सर्वत्राता अवादी सवानी ॥ तुम्हीं कौतुकी बोद्धी एककाया तुम्हीं दिग्गजौ द्वैत्यमातापमानौ । नहीं दूसरो चारिपेष्टोस हरो । धंदौ श्याम श्याम ज्ञानानुमानौ ६८० तुम्हीं ओहमै कौनु एकत्व भासै तुम्हीं ओहमै द्वैतकोमूढ गावै । तुम्हीं ओहमै स्वामिऔ भृत्यदेखै तुम्हीं ओहमै देवता पुंसभावि ॥ तुम्हीं ओहमै कोअनीशोष जानै तुम्हीं ओहमै बूझि आपैसमावि । तुम्हीं ओहमै जोनजोने महाराज सोई महामूढ द्वैपंध धावै ६८१ तुम्हीं ओहमै गोइके बोधपावै तुम्हीं ओहमै व्याय भेटेदुभावि । तुम्हीं ओहमै पूजिके जन्महारै तुम्हीं ओहमै याचि दारिद्र्य धावै ॥ तुम्हीं ओहमै बंदि धंदेनआनै तुम्हीं ओहमै एकही चित्तलावै । तुम्हीं ओहमै जोनजोने महाराज सोई महामूढ द्वैपंध धावै ६८२ तुम्हीं ओहमै बूझतै द्वैतनामै तुम्हीं ओहमै शोचतै द्वैतआवै । तुम्हीं ओहमै सत्यऔ झूठ जानै तुम्हीं ओहमै धन्य बाणी सुनाव ॥ तुम्हीं ओहमै एकही रूपदेखै तुम्हीं स्वामिजुजो हमै त्यागि गावै । वहै संत ज्ञानौ गुणौ ब्रह्मण्यानी न तौ मूढ भूलौ दुवौ पंध धावै ६८३ करै जोई तूनाथ सोई भलीगाथ कोई नहीं साधमाया वसरो । परो द्वारसेरे न जानौ दयी भाव याची न दूजो सदा दासतेरो ॥ इहां औइहां आसतेरी दया सिंधुपापी बडोहीं कियो मोहचेरो । बंदौ दीनवाणी सुनो श्याम श्यामा गहौ बांहमेरी रहै मान मेरो ६८४ अहो नाथतारे किते तारिहौ सांचुमो कौलखे क्यो गही मौनवानी । बडो भिक्षु हठठी टरींगो न टारो सुभिक्षालहौ जो किते धावखानी ॥ नतौभी तजौ द्वारैहो परो आरि बाढी सुतैका करोगे अमानी । यहै शोचिके पोषिये सुनु श्रीश्याम दीजै वसरो निजै राजधानी ६८५ ॥ दोहा ॥ समर्थ सव विधिनाथ तुम भाषत वेद किताव ॥ मंगलको दुख दारिये अब न सहैनी ताब ६८६ जय श्रीगुरुजय श्यामजू जय तिसंत छलहीन ॥ जय तिसार बाणी कथन जय जन हरिपदलीन ६८७ उक्ति युक्ति करि सप्तमत सार कहा चितलाय । मिलित सातहू विबुधजन बूझिहि बाणि सुभाय ६८८

नष्पाति बुद्धावत म्यांन नही है ॥ तर्क किये कब भासत चित्त कवि-
 त्त से वित्त प्रतिष्ठ मुही है ॥ अंत समय जे पपाठत पूजन केवल ज्ञाने
 कि वृत्तिक ही है ॥ मंगल तीन बने अपनी यहिते प्रभु की शरणाई
 गही है ॥ ७३ ॥ बालक नारि हितू पितु मातु मे ही धन धाम सब अप-
 जी है ॥ त्यागि सुधा हरि नाम विषय रत सेवत मृत्यु कि ज्ञान धनो
 है ॥ अंत जितो परिवार सकाय विहाय स्वधर्म किधौ संपनो है ॥
 मंगल शोचिय है मन मोह त सेतुन रंक अरंक बनो है ॥ ७४ ॥ मोह मते
 कुर्म तो सुमतो सब काम मते तपसा सब फीकी ॥ क्रोध मते भ्रम
 शांति स्वभाव जु लोभ मते कविता लघु ही की ॥ गर्व मते सब कर्म
 अकार्य है पचकूट फसी ॥ मति जी की ॥ मंगल ताते इतै न बनै ककु
 मोहन की शरणा गति नीकी ॥ ७५ ॥ पक्ष मते नहि ज्ञान विभाति अप-
 क्ष मते नहि धर्म सोहाव ॥ भोग मते नत जे मन आधि अभोग मते
 बुद्धि की रुखि जावै ॥ आन मते अर्पनी मति नाथत आपु मते अति
 निंदक नावै ॥ मंगल सत्य बनै तब ही जय ही प्रभु की शरणा गति
 आवै ॥ ७६ ॥ सहामुजंग प्रयात ॥ सहामोह में बुद्धि है मिथ्य ही लीन
 कैसे बनै इयाम को ध्यान जी में ॥ बंध्यो लोभ के दोमज्यो कीट
 कै धाम मोचै यथा सोन है ज्ञान ही में ॥ जरै क्रोध की आचना चै वृथा
 नात्र जामे बचै सांव नारूपान धी में ॥ इतै कामे मातै रयी धी काल
 कूटै ॥ कितै भागिये ठौर है ज्ञान सी में ॥ ७७ ॥ कहाँ कोहि पारखंड की
 वृत्ति जी में तिवारै न भासै कृपा सिंधु जौने ॥ कथौ काव्य विज्ञान
 अज्ञान ही ॥ चित्र संताप कास्युदिको सत्य ध्याने ॥ अही मोक्ष रथ्या
 कहूँ दृष्टि आवै जितै ही चलाक सुधी शुद्ध जौने सबै आश को त्यागि
 हौ ॥ पाहि श्री श्याम सो योग जो होई सो देहुथानै ॥ ७८ ॥ कहा कीजि
 ये जाइये धाड़ को आश कोऊ नही मुक्तिको पंथ देखी ॥ बसो दंभ
 आचार हेरो निराचार अद्यापि निमोह मो ग्रंथ लेखी ॥ बनै सोन मो
 सो जु है वेद गाये पुराणादि भाषा सुकर्म निविरोखी ॥ यहै शोध के प्रा-
 हि है पाहि श्री इयाम हौ दूसरी मुक्ति दाता न पेखी ॥ ७९ ॥ तुम्ही सत्य
 संज्ञा तुम्ही सत्य वाणी तुम्ही अव्ययी आदि अंतावसानी ॥ तुम्ही

देवदाता तुम्हीं वेददाता तुम्हीं सर्वत्राता अवादी सवानी ॥ तु
 म्हीं कीर्तकी बोर्दयो एकाया तुम्ही दिग्गजो द्वैत्यमानापमानी ।
 नहीं दूसरो चारिषछास हेरौ । वदी । श्याम श्रीश्याम ज्ञानानुमा
 नी ६८० तुम्हें श्रीहमें कौनु एकत्व भासै तुम्हें श्रीहमें द्वैतकी मूढ़
 गावै । तुम्हें श्रीहमें स्वामि श्री भृत्य देखै तुम्हें श्री हमें देवता पुंसभा
 वि ॥ तुम्हें श्रीहमें कीअनीशीश जानै तुम्हें श्रीहमें बूझि आपै समा
 वि । तुम्हें श्रीहमें जोनजोने महाराज सोई महामूढ़ द्वै पंध धावै
 ६८१ तुम्हें श्रीहमें गाइके बोधपावै तुम्हें श्रीहमें व्याय भेटे दु
 भावै । तुम्हें श्रीहमें पूजिके जन्महारै तुम्हें श्रीहमें याचि दारिद्र
 धावै ॥ तुम्हें श्रीहमें वदि वंदै न जानै तुम्हें श्रीहमें एकही चित्तलावै ।
 तुम्हें श्रीहमें जोनजानै महाराज सोई महामूढ़ द्वै पंध धावै ६८२
 तुम्हें श्रीहमें बूझतै द्वैतनाथी तुम्हें श्री हमें बोचतै द्वैत आवै । तुम्हें
 श्रीहमें सत्य श्री ब्रू ठं जानै तुम्हें श्रीहमें धन्य वाणी सुनाव ॥ तुम्हें
 श्रीहमें एकही रूप देखै तुम्हें स्वामि जूजो हमें त्यागि गावै । वहै संत
 ज्ञानी गुणी ब्रह्मव्यानी न तौ मूढ़ भूलौ दुवौ पंध धावै ६८३ करै
 जोई तूनाथ सोई भलीगाथ कोई नहीं साथमाया बसेरो । परो
 औरतेरे न जानौ द्वयीभाव याची न दूजो सदा दासतेरो ॥ इहां
 औ उहां आशतेरी दया सिंधु पापी बडोहीं तकियो मोहचेरो । वदी
 दीनवाणी सुनो श्याम श्यामा गहौ बांह मेरी रहै मान मेरो ६८४
 अहो नाथ तारे किते तारिहौ सांचु मोकी लखे क्यो गही सौनयानी
 बडो भिक्षु हट्टी टरी गो न टारो सुभिक्षालहौ जो किते धाबसानी
 न तौ भी तजौ दारै हो परो आरि बाढी सुतै का
 यहै शोचिके पोपिये सूनु श्रीश्याम दीजे वसेरो
 ६८५ ॥ दोहा ॥ समरथ सव विधि नाथ तुम
 मंगलको दुख दारिये अब न सहैनी ताव
 श्यामजू जयतिसत छलहीन ॥
 जन हरिपदलीन ६८७ उक्ति १९
 तलाय । मिलित सातहू विबुधजन

निजमत परमते बहुमतो पक्षअपक्षवखान ॥ शिक्षामतसर्वांगयु-
 तकियेसात परमान ६८६ समुद्धि-सप्तमत सतजन बुझैसहित
 विवेक ॥ बुझभये सर्वाङ्गी तजै वादिनीदेक ६८७ मूढपदै समुद्धि
 नही निंदककरै विचार ॥ कीमति गुणजानेविना ज्यों मणितजै
 गवार ६८८ आत्मवादी ब्रह्मविद-विज्ञानी जोप्रवीन ॥ सोसमु-
 द्धेगो मुदितमेन मणिजौहरि कबदीन ६८९ सत्यवस्तु औसत्य
 मत सत्यरूप सतकाय ॥ क्योसमुद्धे मायाग्रसित कर्मबशी भवे
 आय ६९० गोपुरमें प्रभुशरणपरि जीवकृतारथ होता ॥ इहांध्या-
 य श्रीश्यामपद पावत परम उदोत ६९१ अपनी करणी सबतरै
 हरिकरणीसंसार ॥ मंगलयहजानेविना मायाबन्ध यमद्वार ६९२
 जोअपनीमति मोहमय औसतसंग विहीन ॥ तौ नबोधनीया-
 डये रहैभवस्थल दीन ६९३ राजाराम सुनामशुभ जीवासीका-
 यस्थ ॥ वसतग्राम सरहोसदा निजमतक्यासुस्थ ६९४ बुध
 गणेश तिनको तनय हरिसेवक प्रयकोल ॥ तिनकोसुत निजमत
 मढढ भये विहारोला ६९५ महाशुद्धमति छलरहित तिनतन
 बकनीराम ॥ तिनको बालक मूढ गति ही मंगलमसतास ६९६
 कियेकाठ्य बहु हरिकथा ज्ञानमार्ग अतिस्तारि ॥ बोधमये यह
 सप्तमत धरनो सुमन विचारि ७०० ॥

सहिगुणसंयवर्गभूमियुत संव्रतग्रन्थिनमास।

प्रतिपदशुक्लावाररवि पूरणग्रन्थनिवास

इतिग्रामसमस्तअज्ञानोतिमिरसुरप्रकाशिकामव

सप्तशतिकामालदासविरचितसमाप्ता ॥

मुंशिनवलकिशोरके छापखान मुकाम लखन उमें छपी :

छोड़ने का फल, प्रीतिमान, बड़ाई के फल, अहंकार, भ्रम और छल के
 घुरे फल, त्यागकावर्णन, सन्तोष, भय, आशा, निर्धनता, वैराग्यविचार,
 प्रेम, नियम के फल ऐसे ही अनेक विषय इसी मोक्षदायक पुस्तक में हैं ॥

बीजककबीरदाससटीक

जिसमें आदिमंगल, रमैनी, शब्द, ककहरा, वसन्त, चौतीसी, साखी
 इत्यादि अनेक दु खी जीवों के उपकारक योग और उपासनादि मतका
 प्रकाश और श्रीरामचन्द्रजी के स्वरूप का ज्ञान है इसमें टीका महा-
 राजाधिराज रोवा राज्याधिपति श्री १०८ विप्रवनाथ वैकुण्ठवासी की है
 यह अपूर्व पुस्तक भी युगलानन्य शरणजी के स्थानापन्न उन्हीं के
 पुस्तकालयाध्यक्ष श्रीजानकीवरशरणजी के द्वारा बड़े परिश्रम से प्राप्त
 हुई थी ॥

ब्रह्मप्रकाश

भगवत्प्रसाद रचित जिसमें वैराग्य, पुरुषार्थ, त्रिगुण योग, उत्पत्ति
 चित्त त्रिपुटी पांचों अवस्था सत्तेपसे वर्णन की गई है ॥

आनन्दामृतवर्षिणी

आनन्दगिरि रचित यह पुस्तक मानों वेदात का मूल है इसमें सब
 वेदातकी धार्मिकिया लिखी हैं और हरमन्त्रके समझने के वास्ते कथायें भी
 साथ हैं ॥

युगलसम्वादबोधप्रकाश

मुन्शी युगलकिशोरजी रचित जिसमें योगशास्त्रादि वेदातके ग्रंथों से
 अध्यात्मविचार वेदातरूप कथनपूर्वक आत्मस्वरूपब्रह्मको लखाया है ॥

सुन्दरविलास

श्रीपरमहंस सुन्दरदासजी रचित जिसमें ज्ञान, भक्ति, वैराग्य पूर्वक
 नानाप्रकार के विचार, तृष्णा छोड़ने के उपाय, धीर्य रखना, विश्वास,
 गारी की निन्दा, मनका जीतना, नीतिविवेकस्वरूप, विस्मरण की
 निषेधता, अद्वैत ज्ञान है ॥

सत्यनामविहारवृन्दावन

महात्मा वृन्दावन जी आचार्यरचित जिसमें मनुष्यके
 उपकारक पद्य में उपदेश और उनकी टीका, छहों ॥

तत्का आशय और उनमें अपनी मातका प्रकट्य और उनका नियम का लिये दृष्टांतपूर्वक विचित्र कथा, वेदातका परिपूर्ण आशय, नाद की उपासनाका परिणाम अंतमें चौपाई, छन्द, कंकहरी, बिनती, वारहमासा, होली, रेखता आदि रागों में श्रीमद्भगवद्व्यंश है इसमें सबो का विशेष करके उपकार है ॥

भगवद्गीतानवलभाष्य

जाका सनातन निगम, पुराण, स्मृति, साख्यादि का सारभूत परमरहस्य है जिसकी प्रसिद्धावाद निवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजीने गीता भाष्यानुसार संस्कृत से देशभाषा में रचना किया जिस में भगवद्गीता का मूलश्लोक उसके नीचे संस्कृत शंकरभाष्य तत्पश्चात् आनंद गिरि और श्रीधरस्वामिकृत टीका और सबसे पीछे शंकरभाष्य का भाष्यानुवाद नवलभाष्य नाम में वर्णित है इस पुस्तकको जिसने अवलोकन किया है अवश्यही उसने मोलली है यह पुस्तक देखनेही के योग्य है ॥

इष्टितहार ॥

माहमार्च सन् १८८६ ई० से मुमालिक मगरवी व शिमाली का बुक- डिपो इलाहाबाद ब्यूरोटर बुकडिपो से भतवा मुन्शीनवलकिशोर मुकाम लखनऊ में आगया है इस बुकडिपो में मगरवी व शिमाली एजुकेशनल बुकडिपो के सिवाय और भी हर एक विद्या-की किताबें मौजूद हैं इन हर एक किताबोंकी खरीदारीकी कुलशत कीमत के सहित इस छापे- खाने की छपी हुई फेहरिस्त में दर्ज है जो दरखास्त करने पर हर एक चाहनेवाली को बिला कीमत मिलसती है को इन किताबों का खरीदकरना होवे इसे खरीदकरे

